GANADARPANA

EDITED

BY

RAMATARANA SHIROMONY

HEAD PANDIT

OF THE

KANDEE SCHOOL.

FIFTH EDITION.

गगदर्पग:।

पाणिनोयधातुसहितसक्ताधातुक्पात्मकः।

कान्द्रिसराजकीय-विद्यालयाध्यायकेन श्रीयुत्त रामहारण शिरोमणिना

प्रणीतः।

पञ्चमसंस्करणम् ।



कालकाताराजधान्यां

नारायणयन्त्रे

सुद्धितः।

सन ५३११।

া প্রকাশক - প্রভাষতারণ শিরোমণি কাশি-ধণ।

প্রিণ্টার—প্রীরসিকলাল পানু নং ৭০ ত্রাপটা, নারাইণ প্রেল—ক্ষিকাতা।

প্রথমবারের-বিজ্ঞাপন।

ধাত্বাংল এত জটিল যে, মহামহোপাধান্তগ্ৰেও এ সহলে ছলিভপদ হইতে দেখা হিয়া থাকে; অন্নতি বালকগণের ত ক্যাই নাই। অতএব এই হুর্ফোধ ধাত্বদ্ধ যাহাতে স্থাম করিতে পারী যায় লে বিষয়ে সকলের যত্ন করা কর্ত্বা। আমি যথাসাধ্য চেটাও পরিপ্রমানীকার করিয়া সকল ধাতুর অর্থ ও রূপ সংগৃহীত করিয়া এই পুত্তক মুদ্রিত ও প্রচারিত করিয়া। কিন্তু কি প্রায় কন্তবার্গ হইয়াছি ভাষা বিজ্ঞ পঠিকগণই এলিতে পারেল অক্ষতাবদতঃ আপনি বিভূই ভির ক্রিতে পারিলাম না।

্বাছ-সাংখ্যপ-ক্রণার্ব আমন্ত্রা নির্মালবিত নির্মে ধাতুর রূপ প্রদর্শন করিয়াছি।

্ । তা দি, দিবাদি, উদাদি পুচুলানিমণীয় বাত্র লাথিতাজতে কোণ কাঠা হয়, লোট্ দিও, ও লড়, বিভজিতেও সেইব্ল কার্য্য হয়। এজন্ত আমবা ওড্লাণীয়ন্তলে লটের প্রথম পুক্ষের একবচনের পদমান দিয়াছি।

২। আদাদি আদি প্রভৃতি গণীয় পাতৃর প্রকারেৎ সার্থাতৃক-বিভক্তিমাতেরই প্রায় একরাপ কাষ্য হইয়া থাকে এবং পিং ভিন্ন সার্ধাতৃক-বিভক্তিমাতেরই প্রায় একরপ কাষ্য হয়। এই মিমিড আমরা লট, লোট্ ভ্রতির ভাবৎ পদ না লিখিয়া কেবল সেই সকল পদ লিখিলাম, যভাষা অবশিষ্ট সমন্ত পদও কলিড ইইতে পারে।

• ৩। লিটের প্রথম প্রথমের হিন্চনে যে যে কার্যা হয় আর সমস্ত বিভক্তিতেও সেইরপ কার্যা হইয়া থাকে বেবল প্রায়েপদের একবচনে রূপান্তর হয়। এই নিমিত্ত আমরা প্রথম প্রথমের একবচন ও হিব্চনের প্রমাত দিলাম। এবং লিটের ব্যঞ্জনাদি বিভক্তিতে নবল ধাতুর উত্তর ইট্ হয়। যে হয় খলে ইটের নিষেধ অথবা বিকরে বিধি আর্ছে, সে সমস্ত প্রদাশিত হইয়াছে।

৪) সূট্ৰ্ট্ৰিভজিতে জায় এবই কাৰ্যা, এই নিমিত ভাষাদের এক একটা প্ৰ আদৰ্শিত হইয়াছে।

া। • আশীর্লিঃ বিভক্তিতে যে যে স্থলে কার্যাবিশেষ আছে—তত্তৎপদমাত্র দিয়াছি।।

৬। লুঙ, বিভক্তিতে প্রায় সকল খাতুর প্রথম প্রথমের কপ প্রথমিত হতীরাছে। বি যে যে কার্য্য হয়, অভাতা বিচক্তিতেও সেইজণ কার্যা হয়। অতথ্য বিশ্বচনাত্রপথের অভাতাপন করিত হঠবে। সমস্তাদি পথের ভ্রিপ্রয়োগ দেখা যায় না, এখন একটারাত্র প্রদত্ত হইয়াছে।

कांनी विलालय। थीः ১৮৬१।

এরামডারণলর

দ্বিতীয়বারের বিজ্ঞাপন।

প্রথম বাবে গণনর্পণে ধাতু সকল অন্তঃ অকারাদি বা অনুসাবে প্রাণিই ইনাছিল।
তাহাতে ঝটিতি বাতু বাহির করা সকলের পক্ষে অতি সহল হইত না। এই হেতু
বাতু সকল আন্য অকারাদিক্রমে সন্নিবেশিত করা ইইবাছে। বিশেষ এছলে ইহা লো বা
বে, গত বার আপেকা এবার সম্বিক পরিপ্রম স্বীকার করা ইইবাছে। তানে
সংক্ষিপ্ত বিচার ও স্থানে স্থানে আবশ্যক্ষত বছবিধ প্রদান প্রয়োগ বিজ্ঞে কর্
নাই। (শোধনকার্যাও পূর্নাপেকা প্রশংসনীয় ইইবাছে।) এই সম্বাহ বিজ্ঞে প্রবার প্রস্থাছে। এমন কি পুরাপ্রেকা লাম চার পাঁও কর্মা হ
ইরা পড়িরাছে। স্কর্মাং এরার ইহার মূলাও কিন্তিং অনিক পরিমাণে নির্দেশ কা
বাধা ইইরাছি। গতবার ১০ এক টাকা চারি আনা ছিল: এবার সাল এক টাকা
আনা মাত্র নির্দ্ধারিত ইইল।

कांनी विद्यानम् । ১२৮० मान ।



জ্ঞীরামতারণশর্মণ

তৃতীয়বারের বিজ্ঞাপন।

এই সংশ্বনে ক্ৰিবহন্ত ও ধাত্প্ৰনীপ হইতে প্ৰমাণ সংগ্ৰহ ক্ৰিয়া ইয়াৰ অন্তৰি ক্ৰিয়াছি। পূৰ্কাপেকা ইহা বিশেষরূপে সংশোধিত হই য়াছে।

कोन्ती-विलानय। " > ১৮৮१ मान।

<u> প্রিরামতারণশর্মণ</u>

पाणिनौया विभन्नयः।

तिप्तम् सि। सिप् यस् य। सिप् वैस् सम्भा त पाताम् भा। यास् प्रायाम् ध्वम्। इट् विह सहिङ्॥ पा ३, ४, ७८ ।

चाटिष्टा विभक्तयः।

बर् खर् परस्रोपदम्

प्रथम पुरुष: । अध्यमपुरुष: । अत्रमपुरुष:

ए॰ डि॰ ब॰ ए॰ डि॰ ब॰ ए॰ डि॰ ब॰ तिप् तम् चन्ति। सिप् धम् घ। सिप् वस् सम्। हाति **ै : •वालनेपदम्** होताः (इस्तार स्टाइट स्टाइट

थाते भन्ते। . से याथे ध्वे। ए वह महै।

पर्योगस्म 🔪 तुप् ताम् घन्तु। डि ृतम् 🥒 तः। प्रानिष् प्रावप् प्रावप्।

यात्मनेपगम्

ताम् जाताम् जन्ताम्। स्त जायाम् ध्वम्। ऐप् जावद्रैप् जासदैप्।

मिख् परसी पदम् यास् यातम् यात्। याम् याव

षात्मनेपदम्

यात् याताम् युम्।

केत देवालाम् देरन्। देवाम् देवायाम् देध्वम्। देव देवदि देमहि।

ं पादिष्टा विभन्नयः। वह तुइ एड परक्रीपदम् मध्यमपुरुषः प्रथमपुरुष: ् ए० हि॰ . . ब॰ U o fa• व॰ ताम् अन्। मिष् तम् त। चालनेपदम् त बाताम् चन्ता वास् पावाम् धन्। निट् वरस्रेवदम् बतुन् डम्। यज् बष्ट्न् म। चासनेपदम् से पाये भी। पाते इरी तुर् परपोपदम् ता तारी तारम्। तासि तास्त्रम् तास्त्रां तास्त्र तास्त्रम् षातानेपदम् तारी तारम् ताचे ताचाचे ताच्चे। ताचे ताचाचे ताचाचे /कार्यीविङ् ं परसोपदम् यात् यास्तान् यासुम्। याम् यास्तम् यास्त। यामम् यास्त यास ा पात्मनेपदम्।

सीष्ट सीयास्त्राम् सीरन्। सीष्ठास् सीयास्थाम् सीध्नम्। सीय सीविष्ट सीमाष्टिङ्

गगदर्पगः।

भ्वाद्यदादी जुहोत्यादि-दिवादी खादिरेव च। तुदादिश्व कथादिश्व तनक्रादिचुरादयः॥

(事)

श्रक्-भ्वा. प।

कुटिजगितः। वक्रगितः। सट् धकति। सिट् धाका। धाकतः। सुट धिकता। सुङ्धाकीतः। धाकिष्टाम्। पिच् धक-यति। घटाटिः।

श्रम्—श्रम्, श्रा, प।
१ व्याप्तिः। २ संइतिः, वो। लट्
श्रम्भति, श्रम्भाति, पा ३, १, ७५।
सङ् श्रामत्, श्राम्भात्। सिट् श्राममः।
श्राममतुः। श्राममिय, श्रामुष्ठ । ९
२, ४४। लुट् श्रमिता, अष्टा। सट्
श्रमिव्यति, श्रम्भाति। शुङ् श्रामीत्।
श्रामिष्टाम्, श्राष्टाम्। श्रामिषुः, श्रामुः।
इड्शावपम्ने वृद्धः। सा भवानामीत्।
सन् श्रमिव्यति, श्रमिव्यति। शिन्
श्रमव्यति। श्रामिव्यत्। श्रमित्वा, श्रष्ट्या।
त श्रष्टः। तिन् श्रष्टः। श्रमि श्रमम्
श्रष्टी। सम्—प्राप्तिः।

र्थग्—(श्रक) स्वा, ए। वक्रगति:।श्रगति।श्रामः।श्रगिता। गिच्शार्थितः।श्रटाद्दिः।

श्रव─चु, प। श्रदन्तः। पापकरणम्। खट्श्रवयति। श्रङ्—श्रक्ति, श्राः, १ श्रङ्गम्। चिक्रीकरणम्। २ गृतिः, वो। नट् अङ्गते, अङ्गते पुग्यतीर्थेषु इषयुग्भानि मित्ततः। अङ्गयत्यित्तिन्यानि
युधि पृष्ठेषु सायकैः॥ नित १६०। निट्
भानञ्जे। नुट अङ्गिता। नुङ् भाङ्गिष्ट।
सन् अञ्चित्तिषते। अङ्ग-चु, प।
भदन्तः। १ गितः। २ नचगम्। अङ्गयिता अङ्गपयित। अङ्गयामास्
वतान्, भारत। भित्तं, वो। अङ्गयित।
भङ्गति। अङ्गनम्। अङ्गितः। अङ्गः
"नाङ्गाराज्ञा नन्। रेषुः"मनुः ८, २५०।
भङ्ग-भगि, स्वा, प। गितः।

लट् यङ्गति। निट् मानङ्गः। प्रकः (यङ्ग) चु, प। मदन्तः। १ गतिः। २ यङ्गनम्। यङ्गयति। यङ्गपयति, वो। यङ्गम्। यङ्गना।

मङ्— जिस् स्वा, मा।
१ गितः। गमनारमः। २ माचेपः।
निन्दा। ३ जारमः, वो। लट् मङ्कते।
लिट् मानङ्को। लुट् मङ्किता लुङ्।
माङ्किष्ट। मङ्कः।

श्रमु (भ्रम्बु)

श्रज्—स्वा, प। १ गिति:।

२ चेपणम्। जट् श्रुजति। जिट् विश् वाण, पा २, ४, ५६०। विव्यतुः विष-यिथ, विवेध, श्राजिध, की ४०। विवाय, विवय। विव्यिश। जुट् वेता, श्रजिता। स्टट् वेष्यति, श्रजियति। श्राधिवि, वीयात्। जुङ् सवैषोत्। स्रवेष्टाम्।
स्रवेषुः। पचे स्राजीत्। स्राजिष्टाम्।
स्राजिषुः। सन् विवोषति। यङ् वेषोन्
यते। सस्य यङ्जुग् नास्ति, कौ २१६।
चिच् वाययति। प्रवायकः। प्रवयणीयम्। प्रवीतः। प्रवयनः, प्राजनः, पा
२,४,५७। संवीतिः। समजः। समानः,
स्राजः। वातमजः। स्रजिरम्।

र्वं प्रव्यन्तु, स्वा, प।

१ गति:। २ पूजनम्। अन्चु, अचु श्रचि, भ्वा, छ। १ गति:। २ याचनम्। ३ अव्यत्तशब्दः, वो। चट् अञ्चति। ०ते, खतन्त्रा कथमससि, भ ४, २२1 बचु, बचित। ०ते। चिट् प्रानच। बानचे, राममानचुर्यीचया सगाः, भ १४, ८८। तुर् पश्चिता । स्टर् पश्चियति । •ते। प्राधिष, प्रश्वात्, पा ६,४,३०। गती तु अचात्, पा ६, ४, २४। लुङ षाचीत्। पाचिष्टाम्। प्राचिषु:। प्रा-च्चिष्ट। प्राञ्चिषातीम्। प्राञ्चिषतः कः स्रोणि, अचते। यदि, अञ्चाते। सन् य-श्चि चिषति। • ते। णिच् अञ्चयति। धन्च, चु, प। विशेषणम्। श्रञ्चयति। चच्चित। सुदमच्चय, गौतगो १०११) (छ) प्रश्चिता, पा ७,२,४३। प्रश्का पूजायाम्। यन्यत यज्ञा। यज्ञः, यश्चि तः, अञ्चितविक्रमः, र ८,२४। उचेर-चित्रलाङ्गलः पिराऽचित्रतेव संवहन्, भ ८,४०। प्राङ, सध्युङ्। पूजायां प्राञ्चा, प्राङ्भ्याम्। अव अधोगतौ अवाङ्। **उद्—उद्रति: । इद्धिताद्य:, भ १,३१।** इदत्रमुद्वं क्पात्, पा ७,२,५३। सम्, समझी यकुने: पादी, पा ८,२,४८। नि न्यग्भावः। न्यच्यसुदच्यपि, मः हाना, ३,५१।

पक्-धन्त् स, प।

१ व्यक्तिः। प्रकागः। २ सर्घणम्। ३ स्रज्ञाणं, यो। ४ कान्तिः। ५ गतिः। स्ट धनक्षिः। चङ्काः। चन्त्रन्ति। सीट यनक्षु। यङ्ग्धि। यनजानि। किङ् यश्चात्। लङ् यानम्। आङ्गाम्। पाचन्। लिट् पानचा। पानचित्र, यानक्ष। नुद् यश्चिता, यक्षा। सद पश्चित्रति, पश्चात। सुद् पाञ्चीत्। षाश्विष्टाम् । भाश्विषुः पा ७, २, ०१ । सन् चिच्चित्रियात, पा ०,२,०४। विच् मञ्जयति। पाञ्चित्रत्। सानाची रा-चसामीयाः, भ ८,४८। यज्ञयन्ती सर्वे नेत्रे, सनुः ४,४४। चनि, च, प, दोसिः। पञ्चयति। पञ्चिता, बङ्काः, मक्ता, पा ६.४.३२ । मताः । मश्चि—च-भ्यकः। वि—व्यक्तिः, प्रक्षिश्वनत्वं सथ-जंब्यनिता: रघु ४।१६। व्यनिति यन्त्रः रीरस्यं नचण् मावभीमताम्। व्यञ्जवन्ति च मोदानं यहेंगे थात्रिका विजाः ॥ कवि २२८। संजन्नाः व्यव्यन्ते संविधः फणस्ये:, र ११,१२। चमिति—धमि व्यक्तिः, तां प्रचिम्बक्तमनीरयानाम्, र 4, 17,14,24 1

षद् भा प। गतिः।

भसणम्। लट् घटति। लिट् घाट।
घाटतुः। धायमानार, भ ४,१२। तुर्
घाटता। छट् घटिषाति। तुङ् घाटीत्।
घाटिष्टाम्। घाटिषुः। कविराटीद्
ग्टहाद् ग्टहम्, भ ५,४२। सन् घाटिष्टिति। यङ् घटाव्यति, घा ०,४,६३।
घटाव्यमानीऽरखानीम्, भ ४,२। चिन्
घाटव्यति। घाटिटत्। परि—पर्याटनम्। तीर्वाम् पर्याटक्स, भारत। घट्,
च, प (अह)।

षह्— चहर, घत्र, घह। स्वा, घा।
१ ष्रांतक्रसः। २ सिंसा। सर् ष्रहते।
सिट् घानहे। सुर् ष्रहिता। सुङ् ष्राहिष्ट।
सन् ष्रहिटिषते। षरिहिषते।
"धितिहिषते"। घह— च्, प। प्रनाहरः।
ष्रहयति। ष्राहिटत्। षर— घाट्यतीति
रमानायः। सिप् षर् 'धत्'। • •

• चठ्-भ्वा, चा। (चएड)

* षड्—भ्वा, प। उद्यमः।

नर् चडति । निट् चाड । चाडतुः । सुट् चडिता । नुट् चाडीत् ।

घडड्-घदुड, खा, प।

१ श्रीभयोगः। समन्ताद् योगः। १ निर्वोद्धः, वो। सद् श्रव्हति। सिट् श्रानुद्धः। सुद् श्रव्हिता। सुद् श्राव्होत्। सन् श्रद्धिष्ठवित। श्रव्हिडिवित, वो। शिच् श्रव्हयति। श्राव्हिडत्। सिप् श्रत्।

षण्—भ्वा, प। ग्रब्हः।

दि, या। प्राणनम्। जीवंनम्। जट् यणित। यखते, न प्राण्यते पुरं तस्य प्रतिकृतं करोति यः। कवि १७२। जिट् याण। याणे। जुट यणिता। जुड् याणोत्। याणिष्ट। सन् यणिणियति। वते। णिच् याणयति। यन्, यन्यते द्रस्थेने। याणकः।

ष्रग्र्—षठि, षठ, आ, षा।

गति:। लट् अग्छते। लिट् घानग्छे। लट् घरिष्ठता। लुङ् घाग्छिष्ट। सन् घरिष्ठिषते। गिच् घरेष्ठयति। पाण्डि-ठत्। घठते इति काशिका। घठति, वो।

भत्—भ्वा, प। भ्रमंणम्। सततंग्रमनम्। सट् भतति। सिट्

यात । याततुः । खट् यतिता । खट् यतियति । जुङ् यातीत् । सा भवा-•नतीत् । यातिष्टाम् । यातिः, खातिः, पदातिः, यतसी ।

षद्—बदा, प। भचणम।

लुट् यति । यतः । यदन्ति, विम-दन्ति सङ्गः, विदग्धसु। हि अबि। निङ् प्रदात्। निङ् प्रादत्, पा ७,३, १००। पात्ताम्। प्यदन्। प्रादः। बिट् जवास, पा २,४.४०। जचतुः। जघ-सिय। पचे, घाद। घाटतुः। घादिय, पा ७,२,६६। चस्त्रेरादिय मस्त्राणि, मः ८,४८। जुट् यत्ता। ल्टर् यत्स्यन्ति नरानत्स्यन्ति, भ १६,३२। जुङ् प्रघ-बत्, पा २,४,३०। चुध्वन्तीऽप्यवसन् व्यानास्वामपानां क्षयं नवा, भ ५, ६६। कमणि, अदाते। अनेनात्सामहे वयम्, भ ७,८२ । सन् जिचत्सति । णिच् प्रादेवति। ०ते। जग्धा। जग्धः। वर्वामिति संचिप्तसार: । बद्दार: वासः। त्रतुं माहिन्द्रियं भागम्, भ ५,११। नि-निघसः, न्यादः।

प्रमृ— घटा, प। अन्, (प्रण्) दि, या। प्राण्नं जीवनम्। सट् प्रनिति, पा ७,९,७६। प्रनितः। प्रनन्तः। दि, प्रन्ते। दि, प्रनितः। प्रनितः। दि, प्रन्ते। दि, प्रनिदः। सिङ् प्रस्थात्। सङ् प्रानीत्, प्रानत्। प्रानिताम्। प्रानन्। सिट् प्रान, प्राने। सुट् प्रनिता। स्ट प्रान् प्रानिष्ठः। प्रानिष्ठः। प्रानिष्ठः। प्रानिष्ठः। प्रानिष्ठः। प्रानिष्ठः। प्रानिष्ठः। प्रानिष्ठः। प्राणिति, पा प्राणिति, पा प्राणिति, पा प्राणिति यत्प्रजा। स्वि १७२। प्राणिति प्राणिति, पा प्राणिति यत्प्रजा। स्वि १७२। प्राणिति प्राणित, पा प्राणिति यत्प्रजा। स्वि १७२। प्राणिति प्राणित, पा प्राणिति यत्प्रजा। स्वि १७२। प्राणिति प्राणितः, पा प्राणितः, पा प्राणितः, पा प्राणितः यत्प्रजा। स्वि १७२। प्राणितः

प्राणिवस्तव मानार्थम्, भ ४, ३८।
प्राणीदुदमीलीच लोचने, भ १५, १०२।
प्राणितम्। प्राणनम्। "प्राणीऽपानः ।
समानचोदानव्यानी च वायवः" इत्यसरः।

श्रन् श्रन् देन् श्रित, श्रिट, देति।
स्वा, प। वत्थनम्। नट् श्रन्ति।
श्रन्दित। देन्ति। निट् श्रानन्त।
श्रित, श्रेदि, विदि, गांड् पश्चैते
न तिङ्विषया दितं काश्यपादयः। श्रन्थे
तु तिङ मधीक्षेन्ति। श्रन्तः। श्रन्तकः।
श्रन्दुकः। श्रन्दूः।

श्रम-चु, प। श्रदन्तः।

१ दृष्टिरिहितीभावः । २ उपसंहारः । अन्ययति । आन्द्रधत् । अन्यितः ।

श्रस्—स्वा, प। गतिः। र श्रभति। लिटं श्रानभा। श्रान-

सत् प्रस्नति। सिट् प्रानस्त । पान-सत् । वनेषानस्य निर्भयः, म ४, ११। सुट् प्रस्निता। सुङ् प्रास्नीत्। मा भवानस्त्रीत्। सन् प्रविश्चिषति। सिच् प्रस्नयति। प्राविस्त्रत्। प्रसम्।

श्रम्—स्वात्य । १ गतिः । २ शब्दः । ३ सन्धितः सेवा । सट्

यमति, अमन्ति व्याधयोऽप्येनम्, कवि १८०। लिट् याम। यामतः। लुट् यमिता। ल्टट् यमिष्यति। ल्ड् यामीत्। यामिष्टाम्। विच् याम-यति। यम, चु, प, रोगः, यामयति, यामयन्ति यम्, कवि १८०। यमितः। यान्तः। यस्यमितः, यस्यान्तः, पा ७,

श्रस्ब्-अवि, स्वा, श्रा। शब्दः।

२, २८। श्रीयमितः श्रभ्यान्तः, पा ७,

-२, २८। प्रध्यमी। प्रसः।

सर् प्रस्ति। लिट प्रानस्ते। ल्ट् प्रस्तिता। सूङ् प्रास्तिष्ट। प्रस्त्, स्ता, प्र।गति:। प्रस्तित, तो। षय् - भ्वा, या। गतिः।

सद् अयते। सिट् अया खन्ने, पा १, १, ३०। नुट् प्रयिता। लट् प्रयिवते। षाणिष, बरियौद्धम, बरियौध्यम्। नुङ् बाविष्ट। बाविषाताम्। बाविषत। वायिद्वम्, बायिध्वम्, वा ८,३,०८। मन् प्रविधिषते। णिच् प्राययति, प्रायः। प्र-प्रा-पनायनम्। द्वायते। पत्ना-यते, पा ८, २, १८। दुरितच पदायते, कावि २५८। पलायाच्चको, स ५ १०६। तमादाय पनाधिष्ठ, भ १५, ५६। पलायितः। निर्-निलयते। हुर— दुल्यते। उदयति बिततोर्दरिमरजी, मा ४, २०। श्रयगताविति खरितेतं केचिदिच्छन्ति, सन्नी। वस्तुतस्तु इ ग-तावित्यस्य रूपम्।

चर्च्— च्रु, प । १ स्तुतिः । २ तपनस् । चर्जयित । चर्कः । द्रमृद्धे— श्या, प । १ डिसा । २ क्रयः । ३ पूजनम्, वो । चर्चति । चर्चः ।

बर्-स्वा, प। छ, वी।

बर्ननम्। पूजा। नट् अर्चति। बते, वो। निट् आनर्च। नुट् अर्चिता। नुट् अर्चिथति। नुड् आर्चीत् आर्चि-ष्टाम्। आर्चिषुः। आर्चीद् दिजातीन्, भ १, १५। सन् अर्चिविषति। चु, प। पूजा अर्चेयति। अर्चात। युजादिषु पाठफलं कर्षे भिषाये जियाफले आत्म-नेपदार्थमिति प्रदीपः। भन्न्याऽच यति त्यो विषान् गुरून् देवांस्त्याच ति। अर् च नते चर्षो यस्य, कवि ११६। आर्चि-चन्ने चर्षो यस्य, कवि ११६। आर्चि-

२, २ पर वित्वा फलेरची भ ८,७०।

षवी। षवीना। ष्रवितः। ष्रिमि— षाशीभि रभ्यची, मृ१, २४। प्र— प्रानचुरची। जगदवीनीयम्, भ २, २०। सम्—सामन्यांच समर्चयन, भ ४,८।

षर्ज्-मा, प। अर्जनम् 1 *

. उपार्जनम्। लट् मर्जित। यद्यमः जैति, ने ५, ८८। सर्वीऽप्यज्ञेयति द्रव्यमालनः प्रीतिन्तिने। प्रजेते मास्तिने की ति यम्र प्राप्तिनेति । प्रजेते मास्तिनेति । प्राप्ति यम्र प्राप्ति यः स्थिरम्॥ कित १००। लिट् प्राप्ते । प्राप्तितः। प्राप्ति । प्र

षर्थ— चु, प्रा। पदन्तः।

उपयाच्या। याचनम्। प्रथंयते, पर्यापयित यास्ताणि नार्थमर्थयतेइन्यतः। कित २६४। प्रात्तंयत। तमिध्याचने योदुम्, भं१४, ८८। वेखां
गत्वाऽर्थयस्व धनम्, भारतः। प्रथः।
पर्था। पर्थितः। पर्थियत्व्यः। प्रभि—
प्रभ्यर्थना प्रार्थना। प्रवकायं किनोदन्वान् रामायाभ्यर्थितो ददी। र ४,
५८। भ ६, ३। प्र—प्रार्थना। तं प्रार्थः
याचने प्रियाकर्त्तम्, भ ४, १८। गावस्वृण्यितार्थ्ये प्रार्थयन्ति नवं नवम्।
प्रार्थयन्ति ययनोस्यतिष्याः, द्रत्यःदौ
तु (प्रार्थनं कुर्वन्तीति प्रार्थनस्वनम्।
णिच) की १८०। सम्—समर्थनम्।

भदु-भा, प। '१ गति:।' २ याचनम्। ३ पौडनम् लट् ऋदेति, षदिति दिषतां दपेमर्दतं दुरिताद्यम्। यशार्वयति द।रिद्राम्, कवि ११८। यर-इनं नार्देति चातकोऽपि, र ५, १०। निट् जानदे। जानदेतु: । लुट् प्रदिता। स्टर् पादिषाति। लुङ् पर्शीत्। पादि-ष्टाम्। प्रादिषुः। रचःसहस्राणि मे प्रा-दींत, भ १२, १६। . सन् चार्देदिषति। बर्द, चु, छ। घा, वो। हिंसा। यदं-यति। ० ते प्रदेति। ० ते । प्रादिदत्, येनार्दिद हेत्यपुरं पिनाकी भ २, ४२। चर्दनम्। चर्दितः। चति-प्रवीड्नम्। प्रत्यादींद् बालिनः पुत्रम्, भ १४, ११५। प्रभि—प्रभ्यदितः। सन्निकर्षे, प्रभ्यर्थः। नि—निपीड्नम् । न्वर्णः । वि—व्यर्णः । सम—समर्थः, पा ७, २४, २५।

चर्नु—स्वन्, प । १ मति: । २ चिंना। चर्नेति । चानर्ने । चर्निता । चर्नु, स्वा, प । चिंसा । चर्नेति ।

षह् — भ्वा, प। १ पूजा।
२ योग्यता। समर्थीभावः। लट् सहित।
धर्मान् नो वत्तुमहंसि, मनुः १, २।
स्कृष्णोकाधिपत्यं नेदमास्त्रविदहीत,
मनुः १२, १००। लिट् मान्हे। लुट्
पहिता। स्टट् महिष्यति। लुङ् माहीत्। माहिष्टाम्। माहिष्टा। सन्
मर्जाहिषति। सही, सु, प। पूजा।
महियति। माजिहत्। राजाजिहत्
तम्, भ ११, ७। भही, सु, प। पूजा।
महियति। महित। सही। महिषा।

चन्-भ्वा, प्। १ घनङ्गरणम्। २ निवारणम्। ३ पर्व्याप्तिः। साम-र्येऽम्। सट् चन्ति। ०ते, वो।सिट

कान। तुट् चिता। स्टट् चलिखति। लुङ् त्राबीत्। यालिष्टाम्। यातिषुः। सा भवान लीत्। पलम्। पलकम्। पनो।

प्रश्

श्रव, -- भ्वा, प। १ रचणम्।

२ गति:। ३ शोभा। ४ प्रोति:। ५ हिंस: इच्छानाश:। ६ अवगम:। ७ प्रवेश । ८ यवंगम्। ८ ऐखयंम्, खा-मिलम्, सामर्थम्, दी। १० याचनम्। ११ करणम्। अनुष्ठानम्। १२ इच्छा। १३ दोसिः। १४ प्राप्तिः। १५ प्रांबिङ्ग-नम्। १६ इननम्। १७ बादानम्। १८ त्यागः। १८ वृद्धिः। एकोनविंगतिरयोः लट् अवति, न सासवति सद्दोषा रत-स्रिप सेदिनों, र १, ६५ । लिट् याव। पावतुः। जुट् प्रविता। जुट् प्रविष्यति। लुङ् यावीत्। मा भवानवीत्। पावि-ष्टाम्। प्राविषु:। जः ववी, जितः प्रविषः ।

ू भवधीर—चु, प। भदन्तः।

अवज्ञा। अवधीरयति । अवधीरणा। श्रवधीरित:। ज्ञा, श्रवधीर्थ। हित-वचनमवधीर्था। दितो। दतीव धारा-मवधीर्थ। नै १, ७२। नित्यम्ब-योगः ।

त्रश्—पश्, खा, पा।

् व्याप्तिः। प्राप्तिः। पूरणम्। पाच्छा-द्नम्। २ संघातः। राशोकरणम्। बट् श्रमुते । श्रमुवाते । श्रमुवते, रामा-ट्रचांसि विभ्यत्यश्रुवते दिशः, भ ५, १८। असुते च् परंतपः, कवि २६६। तिङ् अभुवीत। बङ् यासुत। यासु-वाताम्। प्रायुवत । लिट् चानमे, पा ७, ४, ७२। प्रानिधिषे। प्रानिचे। प्रान-शिष्वे, प्रानष्ट्वे। खपाटी: खमानशे, भ २, ३०। च्रीयन्त्रणा मान्यिर, र ७,

२३ । जुट् चिता, घष्टा । जुट् चिता-व्यते, प्रस्थते। वाशिषि, प्रशिषीष्ट, त्रचीष्ट। लुङ् श्राधिष्ट, श्राप्त। साधिः वाताम्, प्राचाताम्। प्राणिवत, पा-चत। सन् प्रशिशिषते, पा ७, २, ७४। यङ्चमाध्यते की २०६। णिच् षाश्यति। पाशियत्। पशित्वा, पद्या। षष्टः। वि—व्याप्तिः। धोषो स्थानश्रे दियः, भ १४, ८६। व्यशुवाना दियः प्रापुर्वेनम्, स ८, ४। ते तं व्यागिषत, स १५, ४३।

त्रम्-क्रमः, । भोजनम्।

लट् प्रश्नाति । पश्चीतः । पश्चन्ति । प्रश्नाति ग्रविसाद्वारम्, कवि २२६। देवता मांसानि चन्नन्ति, भ ६ १४। ६, ४४। लिङ् प्रश्नीयात्। डि प्रधान। लङ्बायात्। बायोताम्। बायन्। सिट्याम। यामतः। सुठ्यमिता। लुङ् चात्रोत्। चात्रिष्टाम्। चात्रिषुः। तन् अधिशिषति। यङ् अधायते। णिच् सामग्रति, पा १,३,८१। सतिथि। पूर्वमात्रयित्, मनुः, ३, ८१। उप-उप-भोगः। प्राप्तिः। खगनोकमुपाश्रीयाम्, रामा। न फलं तदुषाश्चाति, भारत। प्र-ी-भोजनम्। प्राय चुताञ्चिष्टम्, भ ९, १३। प्रायोत्, भ १५, २८। सम् भोजनम् । यतं समयीयात्, मनु: ६,१८ । खंश—(संम)

यम्-प्रव्, स्वा, छ। १ गति:। २ दोप्ति:। ३ चादानम्। लट् चसति। •ते। भ्रषति। •ते । जिट् भास। भासे। नावण्य चत्पादा इवाम यतः (दिदोपे) क्कृश, ३५ । लुट् यसिता। प्रभि—य-भ्यासः । वेदमेवाभ्यमेत्, मनुः ४, १४७। नि—निचेप:। न्यसेत् पादम् सनुः ६. ४६। सम्, नि-संन्यासः 🛌 वेदान्तं - मुला संन्यसेत्, सनुः ६,८४। विनि— विन्यासः। विन्यसेत् पूर्वं भूमी, सनुः २,२२६।

षर्व-चदा, प। सत्ता।

विद्यमानता। स्थितिः सट प्रस्ति। स्तः । सन्ति, पा ६, ४, १११ । पस्यूत्त-रस्यां दिश्चि देवताला। कु १११। अस्ति-बांबोति वानरः, भ ६, ८८। चिस, पा ७, ४.५०। लिङ् स्रोत्। स्रोट् बस्त । डि एपि, पा ६, ४, ११८। एपि कर्मकरस्वं मे। भ २०,६। जङ्चा-मीत, पा ७, १, ८६। बास्ताम्। बा-सन्। बासीदिदं तमीभूतम्। मनुः १, थ्। लिट् बसूव, पा २, ४, ५२। दवास यतः। तिङलप्रतिक्पमव्ययम्। ক্ত १। लुट् भविता लृट् भविष्यति। लुङ् अभूत्। सन् बुभूषति। यङ् बीभूवते। व्यति—व्यतिस्ते। व्यतिसे। व्यांत हे, पा ७, ४५०, ५२। अन्यो व्यतिस्ते त ममापि धर्मः, भ २, ३५। श्रीम-श्रीमधात, पा द, 'इ," दर्श यदव समाभिष्यात् तहीयताम्, पा १, ४, ८१। प्रादु:-प्रादुर्भाव:। प्रादु:-थात्। प्रादुरास ताड्का, र ११, १५।

श्रम्—श्रमु, दि, प । सीपसर्गः (उ) [

चिवणम्। अवनीदनम्। लट् अस्ति। लिट् यासः। यासतः। यस्तास्यासः पर-स्वरम्, भ १४, ७७। स्त्रीणामास त्रमम्, नलीदयः ४, ३६। लुट् यस्ताः। लृट् यसिष्यति। लुङ् यास्यत्, पा ७, ४, १७। तस्मिनास्यदिषीकास्त्रम्, र १२, २३। सन् यसिस्यति। णिच् यास-यति। यासिसत्। (७) यसिल्याः, सर्वा। यस्तः। यस्यमानं महागदाः, सर्वा। यस्तः। यस्यमानं महागदाः, सर्वा, ५१। पा ३, २, १२८। अप-

पपसारणम्। त्यागः। प्रपास्यति। •ते। किमिल्यपास्याभर्यानि, कु ५, सुरानपास्य तं निषेविरे, सा १, 88। यदि समरमपाख्ना चाला चली-भैयमः हितोष । श्रमि श्रमासः। चेपणम । अभ्यस्त्रति व्रतम, र १३. ६७। षम्यस्यन्ति तटाचातम्, क्र २, ५०। सगनुतं रीमत्यम्थयत्, प्रकु। वेदं सदाभ्यस्येत्, मतुः रं, १६६ । बैभ्य-खतो बाणान, भारत। नि-निचेष:। त्यागः। प्रयोग्ये न महिषो चस्ति भारम, भ १, २२। स्नातरि खख मां यातः, भ ५, ८२। जीवितं न्यस्य यम-चयं व्रजेत, रामा। न्यस्तमस्तः, भारत। विनि-विन्यासः। विभागविन्यस्त-महार्घरतम्, भ २, ३। निर्-निरस-नम्। अपसार्थम्। वाणेन रचःप्रध-नाविराखत्, भ २. १६; १, १२, १४, ३५। यशांसि सर्वेषुस्तां निरास्त्रत्, भ १,३। परि—चेपणम्। पतनम्। घटं पर्यास्थेत पदा, मनुः ११, १८४। पूर्य-स्ताः पृथिव्यामञ्जविन्दवः, र १०, ७५। चनेन पर्यासयता श्विन्द्न, र ६, २८। विषरि—विषयीसः। विषयीयः। प्र-प्रचेप:। कुषां प्रास्थेयुजीबायये, सनुः ११, १८५ । वि-श्रपनयनम् । विभागः । व्यस्ववृदन्यां शिशिरे: प्रयोभिः, भ ३, ४०। चतुर्घा व्यस्य प्रसवः, र १०, ८४। व्यस्य वेदान्, भारत। सम्—संचेपः। समामः ।

शंस—प्रंश्र—चु, प्राध्वती। विभागः। श्रंसयति। श्रंसापयति। श्रंगयति।शंशापयति। श्रंस, चु, प्रः। समार्घातः। श्रंसयति। श्रंसः, श्रंशः। श्रंशः।श्रंशी।श्रंथितः।वि—विश्लोषः। श्रंस्थामास तत् सैन्यम्, भारत। , પ્રાય્ : દ :

शंह्—प्रहि, स्वा, प्रा। गितिः।

"सट् पंहते। सिट् पानंहे। प्रानंहिरेऽद्रिं प्रति, भ ३, ४६ । सुट्
ग्रंहिता। सृट् ग्रंहिष्यते। सुङ् प्रांहिष्ट । प्रांहिपातां । सुन्याप्ती गरभङ्गाश्रमम् भ ४, ४। सन् प्रश्चिहिषते।
प्राचमित्विहिषाच्यते, भ ४, १५।
चित् ग्रंहयति । प्राञ्चिःत्। तमान्धिहसीयस्य ग्रंहयति । प्रांहिः।
(प्राज) सु, प। दीक्षः। ग्रंहयति। ग्रंहः।

.20

(आ)

षाञ्च्-प्राक्ति, भ्वा, प।

प्रायामः। दैष्यं म्। लट् षाञ्छति, प्राञ्छति प्रतूणां पृलिपद्यतिः, कवि २१६। लिट् प्रानार्ञ्छ। (प्राञ्छ दति न्यासकारः)। लुट् प्राञ्छिता। लुङ् प्राञ्छीत्। सन् प्राञ्चिष्ठपति, पा६, १,३। णिच् प्राञ्छयति।

श्रान्दोत्त — चु, प। घदन्तः । दोलनम्। यान्दोत्तयति । हिन्दोत्तयति । हिन्ना-त्तयति ।

षाप्-षाष्ट्र, खा, प।

व्याप्तिः। प्राप्तिः। लट् श्राप्ते । श्राप्ततः। श्राप्तदान्तः। श्राप्तितं देखतां लोकात्, भागतः। लिङ् श्राप्त्यात्। स्वर्गेषलसाप्त्यात्, भारतः। लङ् श्राप्ताः प्राप्ताः श्राप्ताः। श्राप्ततः। प्रम् श्राप्ताः। लट् श्रापः। श्राप्ततः, श्रवरी-मापतुर्वते, भद्धः, ५८। श्रापुरच्यां फलम्, र २.११। लुट् श्रापः। लृट् श्रप्स्तिः। लुङ् श्रापत्। श्रीपताम्। कर्माण्, मया त्वमाप्याः शरणं भयेषु, वयं त्वयाप्याप्-साद्विधमें वद्धे, भ १, २१। सन् इंप्रति, पा ७, ८, ५३। ईंप्रतं सागलं विद्धिः

र १, ८०। गिच् पापर्यात । पापिपत्। बाह्न, चु, पा नक्षनम्। पापणम्। या-पायति । भापति । भापने दति कथित्। यः प्रापयति सर्वेत्रं समानं सनुराजवत्। प्रापति प्रत्यहं तेजः कोच्या प्राप्नोति रोदसी॥ अवि ६६। प्रास-ग्राहम-भीषता, मनुः ४, १३६। नान्यदत्तसभी-पामि स्थानम्, भारतः। अव-पाप्तिः। नाभः। सिंहादथाव दिवदम्, ब १८, ३५। इह की सिमवाद्रीति, मनु: २, ८। परि-पर्याप्तिः, र १४, १८। प्र-प्राप्तः। गति:। प्रापदात्रामम्, र १, ४८। जटायु: प्राप रावणम्, स ४,८६। एव गजः प्राप्त:, शक्का सम्प्राप्ति:। संप्राप्य तीरं तससापगायाः, भ ३, २८ । श्रेपाप्रवन्ति दु:खानि तासु योनिषु, मनु: १२, ०४। वि—व्याप्तिः। खं व्यायदपुषीऽस्थाः भ १४, २२, ७, ५६। गिनियाम: ऋथाद्वि:, भ ६, ३८। सम्-पाप्ति:। विश्विसमाप्र-यात्, भारत । णिच् समाप्तिः। व्रतमेषं ं समावयेष्, सनुः ११, १५८। चन्दल-नाजुरागं मसावया. र १७, २४। समाध्य मास्यञ्च विधि दिलीयः, र २, २३। त्राम्—बटा, त्रा। १ सत्ता। २ वासः।

मान्ध्य विश्व दिलायः, र २, २३।

श्राम् - श्रदा, श्रा। १ मत्ता। २ वामः।

३ उपवेशनम्। ४ स्थितः। लट्
श्रोस्ते। श्रामति। श्रामते। तस्य पुत्र
श्रास्ते मोमत्रवा नाग, भारत। सम
प्रयादागच्छन् श्रास्ते, दितीप। कोट्
श्रास्ताम्। श्रामने भगवानास्ताम्,
रागा। सुल्यमास्स्य, गामा। किङ् किन्
मामीत व्रजेत किम्, भगवद्गीता २, ४४।
लङ् श्रास्ता। लिट् श्रामाञ्चत्रे, पा ३,
१, २०। श्रात्रमे कश्चित्रामाञ्चत्रे,
भारत। भयादासाञ्चित्ररे, भ ५, ८५।
लुट् श्रासित्रा। लुट् श्रासिश्वते। गुङ्
श्रासिष्ट। श्रासिष्यताम्। श्रासिष्यत।

(**इ**)

मुपासते ये तु, स्राति:। श्रावनहोत्र-

सुपासते, मनः ११. ४२। पर्यंप-सेवा।

भुजङ्गाः पर्यवामते, क २, ३८। सम्-

उपवेशनम् । पूर्वा मन्यां तिष्ठन पश्चि-

मान्तु समासीनः, मनुः २, १०१।

प - भ्वा. प। गति: I

नट् प्रयति । निट्-इयाय । ईयतु:। ईयु:, नी ५३ । इययिथ, इयेथ । इयाय, इयय । नुट् एता । प्राणिषि, ईयात्। नुङ् ऐषीत् । उद्—उदय:। उदयति विततीद्व रिक्सिक्जी, मा ४, २० । प्रय-सुदयति सुद्राभञ्जनः पश्चिनीनाम् ।

इ—इग्, भटा, व । गति:। प्राप्ति:। चट एति। इत:। यन्ति, पा ६, ४, ८१। दि दहि। लिङ् द्यात्। लाङ् ऐत्। ऐताम्। प्रायन्। लिट् इयाय । ईयतुः । ईयुः, पा ७, ४, ६८ । इयिय, इयेष। ईयिव। सुट् एता। लृद एवाति। लुङ् ऐवात्। प्राधिति, इंबात्। निरियात्, पा ७, ४, २४। मसीयःदिति प्रयोगस्त भीवादिवस्य। लुङ् भगात्, पा २, ४, ४५, ००। भगा-ताम्। अगुः। वार्मणि ईयते। ऐयत्। एता प्रायिता। एखते, प्रायिखते। एवीष्ट, बायिसीष्ट । बगायि । बगा-सत्। अगायिषत्। अभ्ययोध्यमगात् भ २, ४८। निवीतम्, भ ३, ४०। समा-जम्, र ४, ७६। सन् जिमसिषति, पाः २, ४, ४७। बोधने तु. प्रश्नीव-वति। विच् गसयति, पा २, ४,४६। बोधने तुप्रत्याययति। इता। • इत्य। इतः। अयनम्। अति-अत्ययः। अति-क्रमः। अतील हि गुषान्, हितीप। त्रतीतः। व्यति—त्रतिक्रमः। यं यं व्यतीयाय सा. र ६, ६७, ५२। तस्य दिनानि व्यतीयुः, र २, २५। व्यतीतः। व्यक्ष्यः। भनु—भनुगमनम्। भन्वयः। भर्तेति श्रुतमन्वेति, दायभागः ८०। पन्वितः। समन्वितः। अप-अपगमः। चयः । धर्मोऽपेति पादशः, सनुः १, ८२ । स्विपिति यावद्यं निकटे जनः। स्विप-मि तावदहं किमपैति ते। "श्रपेत:। व्यप-व्यपगमः। निवृत्तिः। पुत्रं टदतः स्रधा व्यपेति, मनुः ८, १४२। व्यपेतः भोः। श्रीम-प्राप्तः। ततोऽभ्यगाद गाधिसुतः चितीन्द्रम्, भ १, ४७। प्रव — ज्ञानम्। भवानधीदमवैति, र २, प्द। कस्तवावैति कार्यम्, भ ४, ८७।

["गणद्यंण:]

17

बा-बागमनम्। प्राप्तिः। बत्तुं मार्च न्द्रियं भागमैति दुषावनः, भ ५, ११। ऐति रासम्, भ २, ५०। ७द्— ७द्थः। **उद्गमनम् । उद्भवः । उद्योगः । सम्मा**-नोब्दियाय घूमः, र ७, २६। उदा विव तसीयइ: ६, ११०। उद्यन् प्रभा-वेण स राजा राजां वसून, र १७, ७७। न • प्रभातर लें ज्योति बदेति वसुधा-तलात्, शकु । डदितः। श्रभ्युद्—उदयः। षभ्युदयः। जनतिः। षभ्युदियात् चूर्यः, मनुः २, २२०। प्रस्युदितः। उप - श्रीसगमनम्। प्राप्तिः। सन्त्रीः पुरुष सिंडसुपैति, डितोप। सेनापत्यः सुपेत्य वः, कु २,६१। स्तियम्, ६, १३६। डपेतः। उपायः। षभ्युप—उपस्थितिः। स्तीकार:। यद्येतमा न गणितं तदि हाभ्यपैति, महाना। प्रभ्यपेत्व। प्रभ्य पैतः। पश्यपायः। प्रति—प्रतीतिः। प्रतिगमनम्। विवातेषु वानाइंसमानाः प्रतीयिरे निनादैः, भ २, १८। प्रतीयाय सुरी: सकायम्, र ४, ३५। प्रतीत:। प्रत्ययः ।

•

इ-दिक् पटा, प। सारणम्। षयं नित्यमधिपूर्वः। सद प्रध्येति,

यदध्येति तदचयम्, कवि, २, १४०। षधीतः। षधीयन्ति। समीतवी राघः षयोरधोयन्, भ ३, १८। प्रधियन्तीति केचित्, की ११८। येषं इखत्।

इ—इङ्, घदा, या। यध्ययनम्।

नित्यमियोगः। सट् प्रधीते। प्रधी-याते। प्रभौधते। यत्किश्वदप्यभौते-अती, कवि रंधुः। लिङ् अधीयीत। चंड प्रध्येत। प्रध्येयाताम्। प्रध्येयत। अधीय अधीवति। बिट् अधि जगे, पा २, ४, ४८। प्रधिजगिषे। जुट् ष्ययेता। स्टर् पध्येचते। स्टल् प्रध्ये-

खत, प्रध्यगोद्यत, या २, ४, ५०। षाभिषि, प्रथेषीष्ट । प्रथेषीरुम्, पा ८, ३, ७८ । सुङ् वध्येष्ट, वध्यगीष्ट, या २, ४, ५०। अध्येषाताम्, अध्यगीया-ताम् । अधीवत, अधागीवत । अधीदम, प्रध्यवीहुं, या ८, ३, ७८। सीर्ध्य प्र वैदान्, भ १, २। कर्मीण, वैदीध्यगाः यि, भर, १६। सम् चिधितगोसंते. पा २, ४, ४८। चिच् घष्यापैयति, पा प, १, ४८, ७, ३, ३६। प्रधाविषत्, प्रध्वजीगपत्। प्रध्यापिपयिषति, प्रधिांज-वापयिषति, पा २, ४, ५१। भधीयानः। षधीतः। षधीत्य। षध्ययनम्। प्रध्या-पना। प्रध्यापितः। प्रध्यापिपद् गाधिः स्तः चितोन्द्रम्, विद्याम्, भ २, २१। नीतिमध्यापितस्य, कु ३, ६। दख्-दङ्-दक्षि, स्वा, प।

14

गमनम्। सट् एखति। इङ्गति। सिट् द्येख। दहाचकार। लुङ् ऐकोत्। पेडोत्। प्र⊸डिताः। प्रेड्वत् चुसिता चितिः, भं १७. १८।

इक्-इगि, (धरिंग) भ्या, प । गमनम्। दक्षति । दक्षाञ्चकारः। ऐ कीत्। इक्तिम्।

इट्-स्वा, प। गमनम्।

पटित । इयेट । ईटतुः । एटिता । रन्-तु, चु, प।

विनाशः। यः प्रेणत्यात्मनोऽचम्, कवि १८। नायसंन्यतं दृश्यते।

इन्द्—इदि, खा, प परमेख्यम्! लट् इन्दति। लिट्

इन्दाचकार। लुट, इन्दिता। लुङ् ऐन्दीत्। सन्, इन्दिदिषति। इन्द्रः। द्दिरा।

दर्स्-जिद्दसी, र, या।

दीसिः। चट्द्रस्ये, पा 🚓 ४, २३)

इन्व—इति, भ्वा, पा १ व्याप्तिः। २ प्रीणनम्। इन्वति। इन्वाञ्चकार। इन्विता। ऐन्वीत्।

दल्-तु, प। खद्रः।

निद्रा। २ चेपगम्। जट् इजति। जिट् इयेन। ईनतः। जुट् पुनिता। लट्ट पनिष्यति। जुङ् ऐनीत्। इज, जु.प। प्रेरगम्। एनयति। ऐजिसत्।

दव्-दवु, तु, प। दच्छा।

प्राकाङ्गा। लट् रच्छति, पा ३, ००।
प्रच्छामि संवर्षितमान्नयाते। कु ३,३।
लङ् ऐच्छत्। लिट् रयेव। रेवतुः। रयेविष्य। लुट् एविष्यति। प्रधिष्ठि, रथात्। लुङ् ऐवीत्। ऐविष्टाम्। ऐविषुः। मधूनि नैषीत्, भ ३, २०।
कभीषि, रखते। सन् एविष्यति, भी
२००। पिष् एषयति। ऐविषत्। (७)
एषिता, रष्टा। रष्टः। रच्छा। रच्छन्।
प्रच्छः। प्रतु—प्रमिताषः । निरूपणम्।
प्रन्येषणम्। राजतो धनमन्विष्यत्,

मतः ४, ३३। घन्वेषयामि सुमुखीं
विभावा, सहाना ४, ६०।
प्रति—यहणम्। स्रीकारः। ततः प्रतीच्छ प्रहरेति भाषिणी, नै १, ६८।
यदां प्रतीयेष, भ १४, ३६। प्राज्ञां
प्रतीषुः, भ ३, ४३। प्रेषः। प्रेषः,
की ४५। निक्षष्टस्य प्रवर्तनं प्रेषणम्
प्राज्ञा। समानस्य प्रधिबास्य वा प्रवर्तना
प्रध्येषणा प्रार्थना।

दृष्—दि, पं। गमनम्।

द्रष्यति। द्रयेष। एषिता। ऐषीत्। ज्ञा द्रषितः। एषितुं (ज्ञातुम्), स ४, ८२। प्रमु—ग्रन्वेषणम्। न रत्नमन्त्रिष्यति स्रग्यते द्वितत्। कु ४, ४५। म—णिच्, प्रेषणम्। ज्ञेपणम्। प्रेषिषत् प्रासम्, स, १५, ७०। प्रेषितः।

द्व्-कारा, प। बाभीच्याम्।

पुनः पुनः करणम्। सद् रणाति। सिङ् रणीयात्। सङ् ऐणात्। ऐणी-ताम्। सिट् रयेष। सुद् एषिता। वाक्तिकतारमते, एषिता, एष्टा। सुङ् ऐषीत्। ऐषी: पुनर्जनाजयाय यस्तम्, भ १,१८। रस्कृति ब्राह्मणै: सङ्गान्वष्यति सतां गतिम्। रणाति धर्मकार्योषु यः सदीवतिमीयते। सिव १६।

(量)

🖫 (इ) म्बा, प। गति:।

सर्भयति। सिद् भ्यासकार, कौ ४५ । सुर्पता। सङ्ग्रेपोत्। ऐष्टाम्। सर्—सर्यः। सर्यति।

दे—(वी) भदा, प । १ गति:। २ इच्छा । ३ व्याप्तिः। ४ चेपणम्। ५ भीजनम्। ६ गर्भग्रहणम्। सट्पति। ईत:। इयन्ति। लिङ् ईयात्। निट् अयाञ्चलार, की ५४। नुट् एता।

ईज्

्रई—ईङ्क्, दि, श्रा। गति:। र्हेग्रते। जिट्ट श्रयाञ्चले, जी १३

लट् ईयते। निट् श्रयाञ्चले, कौ १३५। जुट् एता। ल्रट् एष्यते। लुङ् ऐष्ट। खटीयमानं दिनाटी. भा १, ४६। राजा-युद्यते चन्द्रो दिवोदय्ति भास्तरः। खटेर्न्तियः सर्वेदीर्व्यां नोदीयन्ते च वि-दिषः॥ कवि २३।

ईच्—स्वा, आ। दर्शनम्।

पर्यालोचना। लट् ईचते। हिता-हितं प्रजानां यः प्रेचते, कवि २२४। तत्तदनपरिपूर्णमीचते, महाना ४, ३७। लिट् ईचाश्वते। ल्ट् ईचिता। स्टर् देविषते। सुङ् ऐसिष्ट। ऐसि-षाताम्। ऐजिषत्। देवदत्ताय ईचते (तस्य ग्रभाग्रभं पर्याकोचयति), पा १, 8, ३८। ऐचिष्ट गोष्ठान्, भ २, १८। ऐिच पाडि सुइ: सुप्ताम, म ६, १८। मन् देचिचिषते। णिच् देचयति। ऐचिचत्। ईचमाणः। देचितः। ईच-णम। अप-अपेचा। त्वामपेचते, क् ३, १८। श्रव-श्रवेचणम्। परिदर्श-नम्। शालोचना। तेऽस्य कार्याण्यवे-चेरन्, मनु: ७, ८१। उप-उपेचा । निर्-निरीचणम्। परि-परीचा। मया परीचितोऽसि, र २, ६२। प्र-प्रेचणम्। उत्-प्र--उत्प्रेचणम्। सम्भा-वनम्। वि-दर्भनम्। सम्-परिदर्भ-नम्। प्रात्मन्य परेषाच यः समीच्य बलाबलम् । हितीप ।

र्वेङ्—ईर्खि, (इक्) स्वा, प। गतिः। ईङ्घति। ईङ्घाञ्चकार। ईज्—ईञ्च्ईजि, स्वा, धा। १ गतिः। २ जुला। निन्दा। ईजते। ईजाजने। ईजिता। ऐजिष्ट। ईजाते, बी। ईड-चटा, चा। स्तृतिः।

सद् देहें। देवाते। देवते। देविये।
देखिये। देखिया। देखियाम, पा ७, २,
३८। दहें विधिष्ठ पद्माने यद्मुणांथारणव्रकः'। सर्यं पुनकितो द्ययंदिहोना
देववव्यि॥ कवि १४८। निद् देवाद्यत्रे। नुद् देखिता। सद् देखियते।
नृद् ऐडिष्ट। ऐडिपाताम्। ऐडियत।
देखिये काकृत्याम, म ८, ५०। मन्
देखिद्यते। चु, प। स्तृतिः। देड्यति।
ऐडिड्न्।

दन्त्-देति, स्वा, प। वी, बन्धनम्। देन्तति। देनाःचकार। (इ) दन्धते। देर्-धदा, पा। १ गतिः।

२ कम्पनम्। लट् ईर्लं। ईराते। ईरते। इत्ते यतकोशिरेन्द्रं प्रमनवरतं प्रेश्य-त्यन्तरात्मा, यं धर्म प्रेरति थीः, कवि १८। अङ् ऐसं। पेराताम्। पेरतः। सिट् देराखंको। सुट् देरिता। साट देरि-थते। लुङ् ऐरिष्ट। ऐरिषाताम्। ऐरि-यत। सन् देशियते। देर, च, प। पे-रणम्। चेपणम्। परयति। परित। पेरिरत् समुद्रम्, भ १५, ५२। प्रैया-माणी माला, भ १२, ६। परणम्। देरितः। उद्-उणिः। उचारणम्। उत्चेपयम्। पकायः। जयगब्दम्दो-रयामासः, र २, ८। पश्चामुदीरया-मास, र ६, १८। धर्माकक्षमम्दी रविष्यति, र द, ६२। न्याये स्त्रिभिद्दी-रचम्, कु २, १२। महिमानसदी-रयन्, कु २, ६। उदोरितः। प्रभ्यद्—

विताः। ऋषिणाभ्यदौरिता, मा १, १८।

प- णिच् प्रेरणम्। यात्रायै प्रेरवामास

् गण्डमणः ।

उक् .

24

तं गरत्, र ४, २४। सम्—विचेपणम्। कथनम्। समीरयाञ्चकाराय राज्यस्य कपि: शिकाम्, स १४, १११। रघुणा समीरितं वचै:, र ३, ४३। समीरणः।

र्थ-रेर्च- खा, प। रंघी।

यन। निः। नट् इंखेति। इंखेति देवदत्ताय इंखेति, पा १,४,३०। निट् इंखोचुकार। नुट् ईंखिता। नट् ईंखि-खति। नुड् ऐखीत्। सन्। इंखिय-षति। ईंखिष्विति। शिच् ईखीयति। ऐखियत्। ऐखिषत्, की ८०। ईखी।

र्ग-बदा, था। १ ऐखर्थम।

प्रभुता। र यथिष्टविनियोगः। नट् इष्टे। इंगाते । इंग्रते। इंग्रिवे। इंग्रिवे, पा ७,२,७०। सर्पिव इष्टे यथेष्टं विनि-युड्ते, पा। धनानामोगते यचाः, भ ८, २०। विषयाणां निगिषे, भ १८,१५। यदोगिषे त्वं न मिय स्थितेऽपि, भ ३,५३। इष्टे इरिणान्, प्रचीतुम् (ग-स्नोति), र १८,१३। न तत् सीकुमीगे, र १४,३८। सिङ् ईगीत। सङ् ऐष्ट। निट् ईग्राखके। सुट् ईग्रिता। सुड् एशिष्ट। ऐशिषाताम्। ऐशिषत।

र्मप्-भ्वा, प। उब्बह्तिः।

र्रष्, स्वा, घा। १ गतिः। २ हिंगा। ३ दर्मनम्। ४ दानम्, बो। देवति। ०ते। यः सदोन्नतिसीवते, कवि ३६। देवाचकार। देवाचको। ऐवीत्। ऐ-विष्ट। देवा, सनीवा, सनीविषः। प्रवः।

देह्-स्वा, थाः। वेष्टा।

देश। इच्छा। सट्ड हते। सिट् देश-खक्ते। सुट् देशिता। स्टट् देशियते। सुङ् ऐदिष्ट। ऐहिषाताम्। ऐशियत। इन्ह्रमोद्दासकाते तो प्रसारम्, भाष, १०६। ऐडिष्ट तं कार्यितं क्रतुम् स १,११। मन् इंजिडियते। गिच् ईइ-यति। ऐजिडत्, सुत्रोवसैजिडत, भ १४, ४१। देडा। खार्यं समोइते। (त्रतुसन्यते) साराद्ध।

⋅(ਬ)..

ष—षड्, स्वा, प्रा[।] प्रब्दः।

श्रवते। जवे। श्रोता। श्रोधते। श्रीष्टं। सन् जिषिवते। शिच् शावयति।

डच्-स्वा, प। सेचनम्।

षादींकरणम्। वर्षणम्। लट् उचित । षीचन् षोणितमसोदाः, भ १७, ८। लिट् उचाचकार्। उच।म्पृचक्र्नंगरस्य मार्गान्, भ ३, ५। लुट् उचिता। लुट् उचियति। लुङ् षोचीत्। ष्रभि— प्रभ्यंचणम्। प्रभ्यंचा। प्रभ्यंचितः। प्र—पोचणम्। प्रोचितं भचवियांसम्, मनुः ४, २७।

चल्—उङ्—उलि (इल) भ्वा, प।

गति:। पोखति। उदोखः। प्रोखिता। प्रोखीत्। उङ्गति। उङ्गाञ्चकारः। उ-द्विता। प्रोङ्गीत्। प्रोचिखपति। उ-प्रधाकार्थें दिलात् प्रवस्तिमित गुणे सर्ते दिवेचनमिति प्रदोप:। उखाः।

डच्-दि, प। समवायः।

सङ्ग्राः। सित्रणम्, बी। उच्चति। उदोव। जवतुः। ग्रोचिता। ग्रीचत्। साभवानुचत्। पुषादिः। उचितम्।

• छ्— उच्छी, भ्वा, प्रा १ विवासः। • । समाप्तिः। २ निवासः, बो। ३ विवासः इति प्रदीपः। प्रायेणायं विपूर्वः। लट् व्युच्छति। सन् व्यक्तिष्ठिषति। (ई) 64

ध्यष्टम्। उकी, तु, प। समाप्तिः। बंभनम्। त्यागः, वो। उच्छति।

। उन्म्-उद्भा, तु, य। त्यागः।

बट् उकाति। बिट् उका। चनार। सर्वाद विगतनिद्रस्तस्यमुका। चनार। र ४१७४। बुड् योक्तोत्, प्राचानी क्तोत्, भ१४, ८४। उक्सितः।

' व्वक्—विक्ति, भ्वा, तु, प।

उञ्छः। सण्यं प्रादानम्। कणियाप्राजनम्। यिलम्, भूमौ पतितानामकैकस्रोपादानम्। लट् उञ्छति।
लिट् उञ्छात्रकार। लट् उञ्छति।
पन् उन्निः स्कित्। णिन् उञ्छयति।
उञ्जल्तो। तुदादेस्तु, उञ्जल्तो, उञ्जली। प्र—मार्जनम्। प्रोञ्छन्ति प्रतुरेयेषामन्नेन दोनतां प्रजाः, कवि १६२।
उञ्जष्टमच्यवदुन्छिप्टप्रोञ्छने इति विविकः।

्र बठ्—जठ्, ध्वा, प । चपघातः । बट् । प्रोठति । बिट् डवोठ । बुट् प्रोठिता। जठति । जठाचनार । जठिता।

उप्रस् (प्रस्) क्या, चु, प।

चञ्च्हितः। उभ्रस्नाति। उभ्रसृष्यः कार। उभ्रामयति।

उन्द्—उन्दी, त, प। क्लोदनम्।

षाद्रीभावः। त्र उनितः। उन्तः। उन्दन्ति। तिङ् उन्दात्। त्रङ् प्रीनत्। प्रीन्ताम्। प्रीन्दन्। प्रीनदम्। तिट् उन्दाचनारां, तुट् उन्दिता। तृट् उ-"न्दिष्यति। तुङ् प्रीन्दीत्। प्रीन्दिष्टाम्। प्रीन्दिषुः। सन् उन्दिदिषति। णिच् उन्दयति। ग्रीन्दिद्त्। (ई) उन्नम्। उन्दयति। ग्रीन्दिद्त्। (ई) उन्नम्। डम्—डस्—उन्मः तः पः।
पूर्णम्। सट्डमति। सिट्डबोमः।
समतः। सट्घोमिता। सुड्घोमीतः।
समतः। स्थायकारः। स्थाता।
सोभोत्, तमीभोत्तोस्यः मिनोमुखेः म १७, ८८।

जब्ज्—तु, प। चाजंबम्।
सारत्वम्। कट् जब्जति। निट्
जब्जाकार। नुट् जब्जिता। नृट्
जब्जिक्यति। नुड् चोज्जीत्। सन्
जब्जिक्यति। चिच् जब्जयति। चौब्जिः
जत्। नि—कौटिक्यम्। न्युक्यः।

दर्-मा, था। १ मानम्।

परिमाणम्। २ कोडा । ३ आसादः, बी। तट् जर्दते, पा ८, २, ७८। तिट् जर्दाश्वके। तुट् जर्दिता। तृट् जर्दि यते। तुङ् भीर्दछ। भीर्द्धाताम्। भीर्द्धित। सन् जर्दिद्धते। सिष् जर्द्धति। भीर्दिदत्।

जुर्व्ः — जर्वी, भ्या, प्र। धननम्। जर्वात । जर्वासकार (४) जर्वम्। जः।

उप्—उष्ठ, श्री। स्वा, प।
१ दाइ: १ २ इननम्, श्री: सट्घीः
पति। सिट्घीपाधकार। उश्रीष, पा
३,१,३८। भोषाधकारः। जयतः।
उश्रीपय। भोषाधकारं सामाम्नदंगः
वक्षमङ्गियम्, भ ६,१। सुट्घीषिः
ता। सुट्घीपिथति। सुङ्घीपितः।
प्रीष्टाम्। भौषिषः। सन् भौषिकः।
पति। विच्घीषयति। (उ) भोषिताः

, उद्-उद्दिर् स्वा, प । वधः । यदेनम्, वो । योदति । उदोह । पोदिता । (इर्) योदत् । योदीत् ।

उष्टा, बी । भोषः । जमा, यच्नवदनाद्

दीर्घः ।

(ज)

जद्—(इट)। जन-मु, प। यदन्तः। परिशामम्। जनय्ति। भीननत्। जनितः। जय्—जवी, भ्वा, ग्राः

. तन्तुसन्तान:। सोवनम्। लट् जयते। भिक्ताबिताणि वस्ताणि व्यूयन्ते यस्य कौत्कात्, कवि २१३। निट् जया-स्रक्ते। लुट् जयिता। नृट् जविष्यते। नुड् ग्रीयिष्ट। सन् जयियिषते। (ई) जतम्।

जर्ज — नु. प । १वलम् । २प्राणनम् । जर्जेयिते । चीर्जिनत् । जर्जितम् । जर्गे — जर्गेज, श्रदा, छ ।

षाच्छादनम्। सद् जगीति। जगी-ति, पा ७, २, ८०। जगुवते। सिङ् जण्यात्। जणुवीत। जज् श्रीणीत्, पा ७, ३, ८१। भौगुत । लिट् कर्ग माव। जग्निविय, जग्निविय, •पा १, २, ३। जणुनुवे। लुट् जर्गावता, जग्विता। ऌट् जगैविष्यति। ०ते। जगुँवियति। •ते। श्राशिषि, जगुँ-यान्। जर्णविषीष्ट, जर्णविषीष्ट। मह शीर्णवीत्। श्रीर्णावीत्, पा ७, २, ६। योण् बीत्। योणिवष्टाम्। योणी-विष्टाम्। श्रीग्विष्टाम्। श्रीग्विष्ट। श्रीण्विष्ट । सन् जण्नुपति । •ते, पा ७, २, ४८। जणनिवयति। ०ते। जणे-न्विवति। ०ते। यङ् जणीन्यते। जः योनिबीति। अणीनीति। विच् जर्णा-वयति । घोणुं गुवत् । जणुं नाव शकाचे-रना जानीस्, स १४, ११०३। हड्डाम् द्वा-नान्। वाजामी बलीय। इ. भ३, ४०। म--भान्छादनम्। देवः प्रीणाविषु- भुवम्। दिशः प्रोणीविषः, भ ८, १०।

• श्रव्रून् शरवर्षेण प्रोणीवीत्, भ १४,

११८। प्रोणीविक्तं दिश्रो वाणीः, भ ५,

५६। प्रोणीति श्रोकिवर्तं मे, भ १८,

२८। श्रस्तीष्टः प्रोणीनूयते विद्विषः। भ
१७, ७५।

ज्ञष्—स्वा, प। रोगः। ज्ञषति। ज्ञषाञ्चकार। जोषोत्। ज्ञप-रम्।

जह-भवा, घा। वितर्वाः।

श्रधाहार:। सन्भावनम्। लट् जहते। लिट् जहाचक्रे, जहाचक्रे जयं न च, भ १४, ७२। लुट् जिन्ता। खट् ज-हिचते। प्राधिष, जहिषीष्ट। स्ङ् चोहिष्ट। चोहिषाताम्। चाहिषत्। चौडिष्ट तान् वीतविवबन्डीन्, भ ३, ४८। सन् जिजिहिषते। थिष् जह-यति । श्रीजिद्यत् । तावीजिद्यतां जनम्. भ २, ४१। जहित:। जहनम्। ज-ह्मन् अप-अपनीदैनम्। उपस्ती-दास्तनिपदं विति वक्षव्यम्, की २४०। भवीह्हा ग्वषं तद्भक्षे:, भ १६, ८३। तानपोद्योत्, भ १४, ११६। एते व्रतेर-पोहित पाप स्तेयक्कतं दिजः, मनुः ११, १०३, १०८। उत्सवसपी हदुत्सवः, र १८, ५। व्यप-विनागः। श्रादित्यस्तमो यपोडित, भारत। ब्रह्महर्सा व्यपा-इति, सनुः ११, ८१। प्रति—विचातः। प्रत्युष्टिचारिकाषु जित्याः, सत्तः ५, ४८। प्रतिवाचस है प्रत्युद्ध, में ६, १०१। वि-रचना। विन्दासः। एतान् व्युष्टेन व्युष्ट योधरीत, मनु: ७, १८६ । व्यू दम् । सम् या। हाते। समृह्य गतः, पा ७, ४, २३। याशिव, त्रश्च सम्जात्। यनि ससु-च्चात्। सस्दः। सस्दः।

परप्

१८ प्रिक्

(चर)

ऋ—श्वा, प। १गितः। २प्रापगम्। लुटऋच्छति। तसृच्छन्ति सम्पदः,

लट् ऋच्छति। तस्ट्यान्त सम्पदः,
"भ १८, ५। चण्डालपुकसानाञ्च ब्रह्महा
योनिस्ट्या्ति। मनुः १२, ५५। लङ्
याच्छति, पा ७, ३, ७८। लिट् यार।
यारतुः, पा ७, ४, ११। यारिय, पा
७, २, ६६। लुट् यत्ती। ल्डट् यरिः
यति, पा ७, ४, ७०। यागिषि, ययात्, पा ७, ४, २८। लुङ् यापीत्।
यार्थान्, की ८७। सन् यरिरिष्ति,
पा ७, २, ७४। यङ् यरार्थिते, पा ७,

यृतः। वने किसरार्थ्यमे, स ४, २१। णिच् अर्पयितः, पा ७, ३, ३६। अपये पदमप्रयन्ति, र ६, ७५। चार्पियत्। तां नार्पियः, स १५, १६। अर्पितः, स

४, २०। अर्राती। अरियासी। अर-

रीति। शरियरीति। श्रन्देतः। शरि-

८, ११८। ऋतः। यातः। यतु—यनु-सद्यम्। सम्—या। सम्बद्धते, वा १, ३, २८। सासस्ता सासस्वाताम्।

त्रर—हा, प। गतिः। लट् इयत्तिं। इयतः। इयृति। यस्य

की तिरियति द्याम्, कित ४५। इ४-निप् इयराणि। लिङ् इयृयात्। लङ् ऐय:। ऐयृताम्। ऐयक्:। लिट् द्यार द्यारतु: क्यारिय लुङ् द्यारत्, पा ३,१, ५६। सीतां जिघांस् तावारताम्, स

६,२८। समारन्त समाभीष्टाः, स ८,१६। मा समरत। सा समरताम्। मा समरन्त। ऋग्-तुः प। स्तृतिः।

ऋचिति। भानचे। भाचीत्। ऋक्। ऋच्य् तुः प। १ गतिः।

२ इन्द्रियप्रलय:। ३ मृत्ति:। ४ काठि-न्यम्। ५ भाव:। सट्ऋकति। सङ् पा ७, ४, ११। लुद् सर्व्याता। नुङ् प्राच्छीत्। सन् वर्धिच्छणति। चिन् सरच्छयति। सर्व्यः, स्त्रा। प्रच्यतीति केवित्। सन्-प्रा। सस्व्यति, पा

चार्च्छत्। निट्यानच्छे। यानच्छेतुः,

१,३; २८ । ऋज्—स्था,पा। १ गतिः । २ पित्रतिः ।

् यजनम्। ४ जजनम्। सट् यजते। सिट् पानुने। सुट् पानिता। स्टट् प्रजियते। सुड पाजिष्ट। पानिपा-ताम्। पाजिपत। सन् पानिपते। पिन् यजीवति।

न्द्रज्—क्रांज, स्वा, चा। भजेनम्। पार्वावयेष:। नट्न्रक्वते। निट् न्रहन्ताचको (चानृष्टे)। नुट्नराचिता।

मुङ्गा वार्ता । मुङ्गा वार्ता । सन् नरिवा जिवते । विष् नरुवा यति । नरुव — नरुवा, तना, उ । गतिः ।

श्रणीति। भूणते। परणीति। परणते, की १६९ । चरणीति धरणी जरसाम् कवि ४५ । चिट् भानणे। भानणे। जुट् भणिता। चट् भाणभाति। की। जुङ् भाणीत्। भाणिष्टाम्। भाणिष्ट। भाने। भाणिष्ठाः। भाषीः। सन् भणिनिष्ठति। की। (उ) चरत्वा, भणित्वा। चरतम्। चरणम्।

म्हत् स्वा, प । मीत्रधानुः ।
१ जुगुषा ष्ट्रणा २ कवा । लट् म्हतीथते, पा २, १, २८ । लिट् म्हतीयाचले ।
१ यङ्गावपचे, घानने । धानृततुः । लृट् घतिनामि । म्हतीयितामे । मृट् धाने घृति । म्हतीयियाने । मृट् धानीव् । घृति । म्हतीयियाने । मृङ् धानीव् । घार्तीयष्ट । म्हतित्वा, धान्तत्वा ।

नद्ध्—ऋधुः दि, स्ना, प । इश्वः । सद् ऋष्यति । ऋष्रोति, ऋष्रोति धीः ' सदा यस्य ऋष्यति योख भूनती, कवि
२८६। निट् यानर्द। यान्धतुः।
नुट् यदिता। नृट् यदिष्यति। नृङ्
यादित्। साः यादित्। यादिष्टाम्। सन्
यदिष्यति, पा ७, २, ४८। इंस्ति,
पा ७, ४, ४५। यदिष्युर्यंगः कीर्तिसीत् सं वृच्चेदताइयत्, स ८, २२ । विस् यदिष्यति यादिषत्। (उ) यदिषाः यदिष्यतः व्यदिष्याः स्टित्।

ऋष्—ऋम्फ,— "शिम्फ्" — तृ. प । चिम् । लट् ऋफिति । जिट् घानफे लुट् घिफेता । लुङ् घाफीत् लट् ऋम्फिति । ऋम्फाञ्चकार । ऋम्फिता । शिम्फिति । *

म्ह्यू — ऋषो, तु, प । गति: । महपति । घानर्षे । घान्युतः । घर्षि-ता । घषियति । घार्षीत् । घषिता । (ई) महरः । महिषः ।

ऋ - क्रा, प। गृति:।

मट् सर्गाति, यस्य को क्रिक्कं गाति कि पानां पुरम्, कवि ४५। जिल् ऋगी-यात्। जल् बार्गात्। जिट् बराब-कार्। जुट् बरिता, बरीता। ल्टट् बरिष्यति, बरीष्यति। जुल् बारीत्। बारिष्टाम्। ता, दंगी:। उदीर्गीः।

(**v**)

एज् एज्, स्वा, प। वस्पनम्।
स्वा, स्वा। दीप्तिः। सट् एजति। ०ते।
एतते शाजविद्धेयैः एजयस्यख्यसं जगत्।
कवि २६८। सङ् ऐजत्। ०ता सिट्
एजाखकार। एज खक्ते। सुट् एजिता।
सुङ् ऐजीत्। ऐजिष्ट। सन् एजिजियति।
०ते। सिन् एजयित। ऐजिजत्।

प — प्रेजते, पा ६, १, ८४। जनमेजयः। प्रक्रमेजयः।

पठ्—स्वा, पा। विवाधा। आळाम्। पठते। एठाचक्को। एठिता। ऐठिए। सन् एटिठिपते। चिच् एठयति। ऐटि-ठत्।

एष्—स्वा, घा। हिद्दः।

लट् एधते, एधते यः श्रियाधिकम्, किव २६८। यधमाँगेधते, मनः ४, १७४। लिट् एधाञ्चले। लुट् एधिला। लट्ट् एधिला। लुट् एधिला। एधिला। सन् एदिधिलते। णिच् एधयति। किं नेदिधः स्वपराल्यमम्, भ १५,१८। मा भवानिदिधत्, प्रदेशः। खागीभिरेधयामासुरस्विनाम्, लु ६,८०। ल्लानः समिधिनस्त शेयेभूतेः, भ १२,२०। प्र—प्रैधते। उपैधते, पा ६,१,८८।

एष्—एषु, स्वा. षा। गतिः । एषते । एषाच्चक्रे । इषिता । ऐषिष्ट । सन्वेषते । सध्येषते ।

(भो)

श्रीख्—श्रीखृ, श्रा, य। १ श्रीषणम्।

केंद्र हितीभाव:। २ श्रतमर्थ:। भूष-गम्। ३ सामर्थ्यम्। ४ निवारणम्। लट् श्रीखिता। लिट् श्रीखीत्। सन् श्रीचिखिषति। णिच्शीखयति। श्रीचि-खत्। साभवानोचिखत्। ग्र—शोखित

भोज चु, प। बो । शटन्तः।

१ बन्नम् । २ तेजः । जीजयित् । भ्राण् — ग्रीणृ, स्वापः। भ्रयनयनम् । भ्रोणितः। भ्रोणाञ्चकारः। भ्रोणितः । , बज्

20 (

धीणीत्। घोणयति। घीणिणत्। मा भवानी विणत्। सनिष्यवावा। श्रीलञ्ज् -श्रीलजि, भ्या, प। वी। सत्वेष:। श्रीकञ्चति। श्रील्जतीत्यन्ये। ब्रोलग्ड्—ग्रोलंडि. चु, प। उत्तचिपः। चीलगडयति। चीलगडति। चीलगडः यति। खगडित इस्टेने।

ं (बा)

कक्-भ्वा, या। १ की स्वम्। चञ्चलीमावः। २ गर्व। इच्छा, वी। नट् जजते। निट्चकके। लुट् किता। बुङ् अविषष्ट । कावयित । कावः । कक्क्-कक्व्. भ्या, प। बी। इमनस्। अक्तति। अवस्ति। वाख्—वाखे, स्वा, प। इसनम्।

कवति। चकावा चकवतः। कचिता। (ए) आककीत् पा ७, २, ५। णिच् काचयति। घटादिः।

का-वारी, खा. प। यसनादयी बचवीऽर्थाः। नानार्थीऽ-

यम्। कगति। चकागा चकागतः। कांगिता। (ए) अकागीत्। गिच् कंग-यति। घटादिः।

बाङ्-विकि, भा, आ। गति:। वाङ्कते। चकङ्के। काङ्किता। अकाङ्किए। कच्-भा, या। १ बन्धनम्।

२ दीसि:, वो। लट् कचते। लिट्

•वक्षे। लुट्क वितः। लुङ् अक्षिष्ट। या- वज्जमाचनचे, भ १४, ८४। नच्, भा, प, वी। शब्द:। काचिता काच:। विकाचः। काचः।

कल्-भा, प। सदः। काजति। काजसदे इति कथित्।

कज्-काल, अवि. काचि, भा चा। १ दीसिः। २ यथनम्। कथते। पः

कचे। कचिता। वाचते। घवाचे। काची। काचनम्।

कर-करी (रहे) शुर, च । गति:। सटे, भा. प । १ वधवाम् । १ चाव-

रणम्। बटति। चकाट। चकेटतुः। कटिता। व्यवदीत, चकादीत्। (ए)

चकटोत्, पा ७, २, ५ । प्र⊸िणच्, व्यक्तिः। प्रकटयति। प्रकटिनः। प्रक टनम्। (ई) (जहः)। कटि, कप्टति इति

कथित्। कण्डकः। कटु, चकाटीत्, बो । कटः। कटकम्। कटौ ।

बर्-भा, प। फलाजीवनम्। कठित । चकारु । कठिता । घक्ठीत्. चकाठोत्। कठितः। कठिनस्।

कर्-मृत् सु, या १ महः। मन्त्रीभावः। २ मचणम्, यो । यङ्गति।

चकाह। फलिता। चक्छोत्। चका डीत्। कडड - कट्ड, मा, ए। कड भीमावः।

कड्डित । चकड्ड । कड्डिता । किप कत्। कळाचः।

सग-(शय) भा, प। शब्दः।

प्रात्तेनादः, वी। कण् भा, प। गतिः। लट् कणित। लिट् चकाण। चकणत्ः। सुट्क गिता। सट्क गिर्यातः। मुड

श्रक्तणीत्, श्रकाणीत्। सन् विकाश पति। गिच्यागयति। शती कगयति, घटादि:। क्षण, चु, प। निसीजगम्

काणयति। अयोकगत्। अयकाणत् को १७०। लग, (कुग) चु, या। सङ्घोद:

काणयते। अत्यः। कणिका।

शोकः। धाध्यानम्। उत्कर्णाः सर् कर्णतः। जिट्। चकैर्छ तुर् क्षिष्ठताः। सर् कर्णिष्ठवाते। तुड् धक्षिष्ठद्यः। किर्, सु. प। श्लोकः। कर्णवितः। कर्णति। कर्णः। उद् — उत्कर्णाः। नीद्रक्षिष्ठ-ध्नाऽत्वर्षम्, स ५, ७२। उत्कर्ण-यन्तिः पथिकान् वनदाः स्वनन्तः, घट-वर्षाः। उत्कर्णिवतः। वितनीतक्तत्वे चेतः समृत्वर्णते। नीत्कर्णते पर-दृष्ये नीत्वर्णते। परिक्षयम्। यस्योत्-कर्णद्रपति द्राष्ये धमे एव मनः सद्।॥ कवि पट।

कण् कड़ि (कड़) खा. प।

कडि, खा, चा। मदः। इपः। कगडति। की। चकण्ड। कछि। कण्डिता। चकण्डीत्। चकण्डिट। कडि,
चु. प। भैदनम्। बितुमोकरणम्। २
रचणम्, चो। चण्डियति। खर्गेङ्गा सघलेन गान्य दव खर्ग्योचियः कण्डिताः, सद्याना है, है। कण्डिनी।

कत्र — कर्स — कर्त, चु, प। घटन्ताः। ग्रेथिच्यम्। कत्रयति। कर्चयति। कर्त्तयति।

क्य — कय् — भ्या, श्रा । श्राघा।

प्रशंसा। लट् कयते। यः खंधेनापि नाक्षीयं गुणं कुवापि कयते।
क्षययखादिराजानां चरितानि सदः
स्त्राः॥ कवि २२०। निट् चकस्य।
लुट्क खिता। खट् कस्यिष्यते। कृत्याः
कास्ययतेन कः, भ १६, ४। लुङ् अकास्यया वि— विकस्यनम्। श्राघा।
विवास्थै। कस्यनः।

वाय—चु, प। श्रद्धन्तः। वायनम्। वर्णनम्। वाययति। वाय- याचिकिरे गुणान्। भारत। अचकथत्। गाकटायनमते कथापयति। कथाय-त्वा। •कथय, पा ६, ४, ५६। क-थितः। स्त! अकथिनोऽपि जायत प्वायमाभीगस्तपावनस्य, प्रकु १, ५६। कथा। कथनम्। कथकः। सम्वर्णना। मिथोभाषणम्।

कन्-कनी, भ्वा, प्रश्रहीतिः ।

र कान्ति:। इ'गिति:। लट् कनित। लिट् चकान। चर्चानतः। लुट् किन्ता। ल्टट् किन्छिति। लुङ् भक्नीत्, धका-नीत्। (ई) कान्तः, धा ६, ४,१५। कानकम्।

कत्य-(कत्य)।

कन्द्—किंदि, स्व', प। १ प्राह्वानस्। २ गेदनम्। जुट्कान्दित। जिट्चकान्द। जुट्कान्दिता। जुङ्ग्रकान्दीत्। कन्दः। कान्दरः। कन्दरा। कन्दलः। कन्दली।

कन्द्-कद्-कदि, आ, भा।

१ वैक्सन्यम्। विवयता। २ वैकस्यम्। कन्दते। चकन्दे। कन्दिता। कदते। चकदे। कदिता। णिच् कदयति। घ-टादिः।

• वाब् कह, भ्वा, ग्रा। १ वर्षः।

श्रुत्तादिकरणम्। २ स्तुति:। कवते। चकवे वी।

वाम् - वासु, भ्वा, श्रा। १ कान्ति:।

२ मिनाषः। इच्छा। स्प्रहा। नट् कामयते, पा ३, १, ३, । स्थन्यं का मयत का, भ ८, ८१। निट् कामया-स्रते, चकमे। निष्कुष्टुमधे चकमे कुषै रात्, र ५, २६। कामयाच्छितरे का-न्ताः, भ १४, ५३। नुट् कामयिता, कमिता। नुट् कामयिष्यते, कमिष्यते। ्वाद्

2 (

ङ् घचीत्रसत्, ग्रचकमत। णिङ गवपचे न टीवंसन्वदावी। सन् वि· ामयिषते, चिकामिषते। यङ् चङ्गः वते। चङ्गित। णिच्कामयति। (उ) हमिला, कान्ला, कामयिला, कान्तः। कसः। कासुकः। कामी। कमिता। क्रमनः। कामः। प्रकमनीयम्।

कस्यू—कवि, स्वा, शा । चलनम्। किस्पेनम्। लर्ट् कस्पते। लिट् चकस्पे, चनम्पे प्राग्च्योतिषेद्धरः, र ४, ८। लुट्कम्पिता। लृट्कम्पिष्यते। लुङ् ग्रकस्पिष्ट। ग्रकस्पिषाताम्। ग्रकस्पि-षत। भूरकस्पिष्ट, भ १५,७०। सन् चिकस्पिषते। यङ् चङ्गस्पाते। चङ्ग-म्पति। णिच् कम्पर्यति। श्रचकम्पत् कस्पः। कस्पितः। कस्पनम्। कस्पः। कस्पनः। अनु — अनु कस्पा। कपा। धन्चकस्पिरे सुरा वायुना, मा १, ६१। रतिमन्वत्रम्ययत्। कु शह्ट। समनु अनुग्रहः। समनुक्स्पा सपत्वपरिग्रहान्, र ८, १४। उद्-प्रक्रम् नम्। उत्क-म्पते सा. गीतमी, ४, १८। प्र-प्राच-कम्पदुदन्वन्तम्, भ १४, २३। वि प्रकस्यनम्। रावणां श्रयमिष व्यकम्य-यत्, र ११, १८। उपतापाङ्गविका-रयोः, विकपितः। अन्यत्र विकस्पितः।

काख -भा, प। १ हिंसा। २ गति:, वो। कस्वति। खस्व, खस्व-ति। गरव्, गरवति। घरव्, घरवति। चान्, चम्बृति।

कर्ज्भा, प। १ व्ययनम्। २ पीड़नम, वी। कर्जात। चकर्जी। ्र कर्ण-(किंद्र) प्रदन्तः। चु, प। भेदनम्। कर्णयति। ग्रा-श्रवणम्। घाकर्णयामास न विद्नादान्। भ ३। 201

वार्त - वर्त (बत)। घटलाः। कर्द्र — भा, प। कुक्तितगदः। कुत्सितकुचिशव्दः। कर्रति। वार्यमः। ् अर्वे ्-भा, प। गतिः।

कर्वति। सर्वे, सर्वति। गर्वे, गर्वति। घर्व, घर्रति। चर्व, चर्वति। तर्व, तर्वेति।

कल्-भा, भा। १ गव्दः।

ः २ संख्यानम्। गगाना। चट्कलते। निट् चकते। तुट् कतिता। तुड् य-किन्छ। क्रज, चु, प। चेषणम्। पेर-णम्। कालविति। बालवसाय या गावः कालयामास ता चिप, मारत। निष्का-लन्ते स्वाद् यस्य नासीलवर्षा गिरः। उत्कालयति यो यगः, कवि ७०।

⊸ ा वन — चु, प । घटनाः। १ गति:। २ संख्यानम्। गणना। कालिः कामधेतुः। कलयति। प्रचकः जत्। विस्याः वाजयन्यनेवानयम्, सा ४. २६ । वालयहमानमनमम्, मा ८, ५/५। ंकलधार्मि मणिभूषणे बण्डूण-गम्, भीतगी ७, ७। गरनमिव ननः यति सस्त्यसमीरम्, गीतगी ४, २। यदेनां छाया दितीयां कनया चनार. नै ३, १२। स्त्रेक्कृनिवडनिधने कन-यसि सरवासम्, गीतगी १, १४। वा बंध बलुधयोगी पागी, गीतगी १२. २६। सरकत-प्रकल-कलित-कलघीत-कियः, गीतमो ८, ४। मधुपकुनकिः तरावः, गीतगी ११, १८। या—श्रीधः। वस्थनम्। विज्ञसस्यया भूदयं तथाः वालयामि, गीतगी २, ७। सुवर्णस्वा-क्रजिताधरास्यराम्, सा १, ६। जघनः स्वतीयरिसरे रसनाःकलायकगुणेन सकरः खजिद्दिसाकतायत्, मा ८, ४५। परि जानम्। स्त्रीसोकः परिवत्तयायः

कार तुलाम, माट, १। सम् सङ्घ- विश्वत्। लट् कंस्ते। कंसाते। कंसते। लग्नेम्। व्यव व्यवक्रवनम्। विष्टु चकंसे। लट कंसिकाते। हाल

कल् भा, था। १ घव्यत्रग्रव्दः। २ घणव्दः। तृष्णीकावः। ३ कृजनम्,

यो। कलते । चक्ते । कलिता । कलोतः । कय्—(कय्) ।

. वार्वे — स्वा, या गर्वेः। कार्वे नि । खर्वे, खर्वेति । गर्वे, गर्वेति । कार्य् स्वा, या शब्दः। कार्यात । चकाश्च । कश्चिता ।

वाप्-भ्वा, प। हिंसा।

वाणित। चकाष। कणिता। श्रक्त-पीत्, श्रकाषीत्। सम्मूलकाषं चक्षुः, भ ३, ४८। "(परीचा) क्टह्म कष-विव वापपाणाणिमी नभस्तले, नै २, ४८। खण्, खषति। जण्, जषति। जेषतुः। सर्वेद्वयः। कषः। निक्रषः। कष्टम्। पत्काषी।

वास् भ्राः, प । गतिः।

चट् कर्वात । चिट्र चंका सः । •चकाततः । चुट् कसिता । चुड् प्रवसीत्,
प्रकासीत् । सन् चिक्रसिष्ठति । यङ्
वनीकस्यते, पा ७, ४, ८४ । चनीस्ति । गिच् कासयित । यस्य खन्नीवक्षित । वि—विकासः । यस्य खन्नीवक्षित प्रकाधसँग रचितुः, कवि
३२ । विक्रसिद्धास्त्रक्षमत्तः, सा ८,
७ । कोपकुसुमं व्यचीकसत्, सा १५,
२ । विक्रसितीत्पना, स, ८, ६२ । प्रविकाशः । प्रविक्रसितीत्पना, स, ८, ६२ । प्रविकाशः । प्रविक्रसितित्पन् स्या, सा ११, ६३ ।
कामी । विक्रस्यः । क्रयतीत्येक ।
काम्बरः । विक्रितम् । निर्णिच्
सःसारणम् । निरकासयद्विस्पत्वसम् ।
। ८, १० ।

वंस्-, तस् — कण्, घटा, घा। । वि— विकाशः। विकाशन्ते च रगितः। रगासनम्। प्रातनसिति । गुणाः, कवि २३२। घाकाथम्।

किया। लट् कंस्ते। कंसाते। कंसते। लिट् चकंसे। लुट् कंसिष्यते। लुङ् भकंसिष्ट। भकंसिषाताम्। प्रकंसिषत। कस्ते। प्रकासे। कसिता। तालव्या-न्ताऽपि। कष्टे। कचि। कड्ट्वे। चक्रो। कशिष्यते। कांस्यम्।

नाइ — नाचि, स्वा, प्रश आनाक्षा।

लट्काङ्गित। मंधुव्रतः काङ्गित।
विद्योम्। सा, द। लिट्चंकाङ्ग। लुट्
काङ्गिता। लुङ् भकाङ्गोत्। सन् चिकाङ्गिपति। यङ् चाकाङ्ग्यते। चाकांष्टि। णिच्काङ्गयति। भचकाङ्गत्।
आ—भाकाङ्गा। प्रत्याध्वसन्तं रिपुमाचकाङ्ग, र ७, ४७। नाकाङ्गित परख्रियम्, कवि १६४।

काञ्—(कञ्च)।

काण्-काण्, भा दि, ग्रा।

दीप्ति:। प्रकाश:। काश्रते। काश्यते। भादो। दन्यान्तोऽपि । नासते। निटू चकाशे। कासाञ्चले पा ३, १, ३५। कासाचको। पुरा सार्थः, भ ८,३८। लुट् काणिता। लृट् काणिष्यते। लुङ् घकाशिष्ट। घकाशिषाताम्। घकाः शिष्त। चनाशिरे तत्र सता विलोलाः, भ र, २५। तया दुडिवा सविवी चका ग्री, कु, १, २४। ४७, २१, २४। सन् चिकाणिषते। यङ् चाकाण्यते। चावाष्टि। णिच् कामर्यात। अचकाः शत्। प्र—प्रकाशः। प्रकाशते यथा व्योचि चन्द्रः, प्रकास्त्रते न्तवा भूभी प्रजानां नयनोत्सवः, कावि १५३। विखासिवायम एष प्रकाशते, भारत। प्रकाशयन्ति निगूइनीयम्, भ १४, ३१। प्रकामयात लोकं र्वि:, गीता १३, ३३। वि-विकाशः। विकाशन्ते च भूगांनी

काम्-कारह, भूा, आ।

कुल्लितगन्दः। ग्राभार्यस्तु उत्तः। नट् कासते। निट् कामाञ्चले, पा ३,१, ३५। लट् कामिता। नृट् कामियते। मुङ् श्रकामिष्ट। श्रमीतो रावणः कामा-ञ्चले (कुल्लितमभिद्यतवान्), भ,५, १०५१ मन् विकासिषते। यङ् चाका-स्रते। चाकास्ति। विच् कासयित। (ऋ) श्रचकासत् कासः।

किट्—भा, प। १ व्रासः। २ भीषणम्, वो। किट् (इट्) भा, प। गतिः। केटति। केटिता।

कित्-भा, प, आ, आभरणमते।

१ व्याधिप्रतिकारः । रोगनिर्णयः । र नियहः । ३ श्रपनयनम् । ४ नाश्रनम् । ५ संश्रयः, को १०१ । लट् चिकित्सति । ०ते । रोगिणम्, पा ३, १, ५ । चिकित्-स्ति जगद्याधिम्, किव २५० । लिट् चिकित्साञ्चकार । लुट् चिकित्सता । लुङ् श्रचिकत्सोत् । चिकित्सकः । चि-क्वित्सातः । सया न पठिता चण्डी त्वया नापि चिकित्सितम् । वि—संश्रयः । विचिकित्सा तु संश्रय द्रत्यमरः ।

कित्भा, चु, प।

१ निवासः । २ इच्छा, वो । कीतति । कीतयति । निकीतयति । निकीतनम् ।

ू किल्—तु, प। खऐत्यम्।

ग्रुक्तीभावः । २ क्रीड्नम् । विज्ञति । विज्ञान्त बाध्यकाः कामम्, कवि २३३ । ि चिकेल । केल्लिता । विज्ञ, चु, प, वी । चेपणम् । प्रेरणम् । वेजयित । केलिः । किष्य्—चु, श्रा । हिंसा ।

> किष्क्रयते। इिष्क् हिष्क्रयते। हिक्कयते। . उचा कोट्— चु, प वर्णः। भा, बन्धः वो। चिति।

कोल्—भा, प। बन्धनम्। कोलितां विकोता। कोलिता। कोतः। कोलकः। कोलितम् ब्रद्यं सम शरकोलितम् (विद्यम्), गीतगो ७, ४, १२, १४।

नु च

ं कु—कुङ् (जङ्) भाः, या।

प्रक्रः। प्रवासगण्य इति प्रदीपः।
कु, प्रदा, प। गण्यः। नट् क्रवते।
कीति। नवीति, प्रियमितः। गोकान्यः
कीति कुवते न भयाच किष्यत् यकागण्जि जनपदः कवते च चुत्रम्, किः
२०! कुतः। कुवित्ता। निष्ठः कुयात्।
निष्ठः प्रकीत्। निटः पुकाव। चुक्वतः।
चुकुविय, पुकोय। चुक्व। मृद्रः कीता।
नृट् कीष्यति। ०ते। भागिषि, क्रिः
यात्। कोषीष्ट। नृष्ठः प्रकीषीत्। भयाप्रात्। कोषीपः। प्रकीष्ट। मन् पुन्
प्रति। ०ते। प्रदेशः मन् पुन्
प्रति। ०ते। प्रदेशः प्रवास्यते। प्रकीकः
विष्ठः सेन्यम्। प्रनायिष्ट चाकुनम्, भ
१४,११८। चोक्रवीति। यिचः काव-

यति। श्रम्भवत्।

कु-त् - सुड्-सुड्, तु, था।
१ शब्दः। २ पार्तनादः, वी। कुवते।
चुकुवे। कुता। श्रकुत, पाद, २, २०।
श्रकुषाताम्। श्रकुषत, श्रुरा घकुषत दिजाः, स १५, २६। भोषावते। तु। कुवते। चुकुवे। सुविता। श्रमुविष्ट।

क्रुक्—भा, गा। पाटानम्। ग्रहमम्। सट्काकते। सिट्यूक्कते। चुक्ककिये। सुट्कोबिसा। सन् पुक् कियते, चुकीकियते। कोवाः।

बुक्-भूत,प। १ तारः।

. उच्चमण्दः। २ विक्रणताः। सट्कीः चति। कोचिति उक्षोति दुर्गोदासः। ् गणद्धमा ।

्लुङ् यक्तरोत्। यक्तरिष्टाम्। यक्तरिष्टः। सन् चुकुटिषति। यङ् चोकुळाते। ची- ' को हि। णिच् को टयति । अचुकु टत्। कुटित्वा। कोट:। कोटि:। सम्-नि-वृत्ति:। विचित् संचुकुटुर्भीताः, भ १४,

१०५। संकुटितुम्, भ ७, ८१। सङ्घ-टन्ति भयाक्रान्ताः श्रव्रहो यस्य द्रशं-नात्, कवि २३४। •

> कुट्—(तुट) चु, या। छेदः। कोटयते। कुट (कूट)। कुटुम्ब्—(तिह्र) चु, या। धारणम्।

नुष्ट् .

ता, पा १, २, १। ऌट् कुटियति।

पोषणम्। पालनम्। कुटुख्ययते।

कुह्—चु, प। १ छेदनम्। २ भव्यंनम्। ३ पूरणम्। कुट्यति। श्रचुकुहत्। चु, श्रा। प्रतापनम्। कुट-यते।

बुाड्-तु, प। १ वाल्यम्।

चापत्यम्। २ भोजनम्, वो। अडित। चुकोड । चुकुडतुः । कुडिता । यकुडीत्।

कुण्-तु, प। १ मन्दः। २ उपक्रति:। कुणति। चुकोण। कोण:। कुण—चु, प। शदन्तः।

१ पामन्त्रणम्। २ केतनम्। इ स-क्वीचः। कुणयति।

क्षुग्र्—कुग्र्—कुटि, कुडि, भ्वा, प। विकानोकरणम्। कुण्टति। कुण्डति। कुग्डम्।

कुग्छ्-कुठि, स्वा, प। प्रतिघातः। गतिप्रतिघृतः। कुण्डति। चुनुग्छ। नुग्छिता। श्रनुग्छोत्। नुग्छि 🔪 तासीव बच्चते, कु २, २०। कुठि, (गुडि) चु, प। १ वेष्टनम्। २ रचणम्। ३ चूर्णीकरणम्। कुग्छयति। कुग्छः।

कीचिति काश्वीं बिणक् इति सहमज्ञः। कुच्-भ्वा, प। १ तारः।

अप

उचगन्दः। २ सम्पर्कः। ३ कोटिखम्। ४ प्रतिष्टकाः । ५ विलेखनम्। कीचति। चुकीच। कीचिता। श्रकीचित्। कीचः या ३,१,१ 8०। यस्मिन् समुदिते राज्ञि जनः सङ्गोचित चितौ, कवि १४०।

कुच्-तु, प। सङ्गोचः।

कुर्वति। चुकोच। कुचिता। प्रक्ष-चोत्। सम्-सङ्घोवः। सङ्चिति। सङ्जित:। णिच् समकीचयदर्ज्ञ:। सङ्ग्वत्यरिनारीणां मुखं पङ्गेरहयुति, कवि १४०।

कुज्-कुजु, स्वा, प। स्तेयम्। भपष्टरणम्। कोजिति। चुकोज। की-जिता। अकोजीत्। (७) कोजित्वा, कुका। कुकः।

जुन्न जुन्च जुन्च मुन्च। भ्वा, प। १ कोटिन्यम्। कुटिनोकार-गम्। कुटिलोभावः। •२ प्रत्योभावः। चन्योकरणम्। लट् कुञ्चति। लिट् चुकुञ्च। लुट् कुञ्चिता। ल्टट् कुञ्चियति। षाशिषि, कुचात्। तुङ् धकुद्दीत्। सन् चुकुञ्चिषति। यङ् चोकुच्यते। षिच् कुञ्चयति। कुञ्चितम्। कुञ्चिका। मा-सङ्गीचः। पानुष्यनम्। पानुष्यतापा-क्लि:, र ६, १५। याकु चितसव्यपा-दम्, कु ३, ७०। वि-सङ्गोष:। विकु-चितननाटस्त्, भारत। क्रच्, क्रच्ति। चुन्नुच। नुचिता। नुचात्। नुङ्। क्रुङ्भ्याम्।

कुन् (कृज्)।

बुर्-तु, प। कोटिखम्।

वक्रीकरणम्। सट् कुढिति। सिट् चु-कोट। जुकुटतुः। चुकुटिय। तुट् कुटि- [समादपमाः]

२६ ' . जुप्

कुण्ड्—कुडि, स्वा, का। दाइ:। 'कुण्डते। चु, प। रचणम्। कुण्डयति। स्वा, प। वैकल्यम् (कुण्ट)। कुण्डा। कुण्डम्।

कुत्स — चु, था। कुत्सा। धबचेप:। कुत्सयते। कुत्सयति, वो। यो न कुत्सयते कुत्सां न च कुत्सति निर्ध-नम्, क्रवि २४६। इन्नायुधमते स्वादि-रपि।

कुष्—दि, प्रश्तिभावः। दीर्गन्धम्। लट् कुष्यति। लिट् चु-कोष्य। चुकुषतः। लुट् कोषिता। ल्टट् कोषिष्यति। लुङ् श्रकोषीत्। कोषित्वा। कुषितः।

> कुष्—न्ना, प (कुन्य)। 'कुद' चु, प (कुन्द्र)। कुत्य्—कुषि, स्वा, प । १ हिंसा।

२ संक्षे मनम्। कुन्य्, कुष्य, क्राा, प।
१ संग्रेषणम्। २ संक्षे मः। बट् कुन्यति।
कुष्याति। कुष्योतः। कुष्यन्ति। न कुष्याति
वुभुवार्तः भौतार्त्तेश्व न कुन्यति। यस्य
राष्ट्रे धनात्यो वा सतः कीऽपि न
कुष्यति॥ कवि १२४। बिङ् कुष्योयात्।
बङ् श्रक्यात्। बिट् चुकुन्य। चृकोष।
बुट् कुन्यिता। कोषिता। श्राणित,
स्वा, कुन्यात्। क्राा, कुष्यात्। कुन्य-

कुन्द्-कुद्रि, चु, प।

नम्।

श्रत्त्रभाषणम्। श्रसत्यक्षयनम्। सुन्द्र-यति । श्रचुकुन्द्रत्। गुद्रि, गुन्द्रयति। कुद्, कोदयति दति केचित्।

ि कुप्—दि, पः। कोषः। कोषः। बट् कुप्यति, देवदत्ताय कुप्यति, पा १,४,३७। यो न कुप्यति विमाय कु-प्यते च सद्दाप्रभुः। प्रकोपयत्वसी राजा

यस्तेन सहयो जनः॥ कवि १५८।
चिट् चुकोण, चुकोण तस्यै स स्थम्, र
३,५८। नुट् काणिता। चट् कोणिधित। नुड् अकुपत्। अकुपैताम्। मन्
चुकुपिषति चुकोणिषति। यङ् चोकुधित। चोकोप्ति। णिच् फोणयित।
कुप, चु, प। दोप्तिः। कोणयित। कोणः।
कुपितः। कोणनः। धित, प-धितकोणः। श्रत्यकुपत्, स १५,५५।

कुमार—चु, प। घटन्तः। क्रीडा। कुमारयति। घचुकुमारत्। कुमान इत्येके। कुमानयति। कुमारः।

कुख्-कुवि, स्वा. चु. प।

षाच्छादनम्। कुम्बति। कुम्बयित। कुणि, कुम्पति। कुम्पयित। कुमि, कुः स्राति। कुम्पयित। इति काम्यपादयः।

कुर्—तु, प। प्रव्दः। कुरति। चुकोर। कोरिता। चार्मिष, कूर्यात्। दीर्वनिषेषसु करोतिरेव, की १५२।

चुन्त्री चुन्त्री चाद्री — भा ।

क्रीड़ा। कूर्दते, पा द, २, ७६ । खुर्दते।

गूर्दते। चुन्त्री । क्रिता क्रियंते।

शक्रिष्ठ, भ १५, ४५ । चुन्त्रीते, भ
१४, ८, ७७। क्रुर्दनम्। क्रितः। दीर्घन्त्रम् क्रितः। दीर्घन्तम् क्रितः। दीर्घन्तम् क्रितः। दीर्घन्तम् क्रितः। दीर्घन्तम् क्रितः।

कुल्—स्वा, प। १ महातः।
राणीकरणम्। २ वस्थुभावः। मेवीकरणम्। सट्कीलति। सिट्चुकोतः।
सुट्कोसिता। सुड् धकोनीत्। कुसितः। धाव्यस्तितः। व्याकुसितः।
कोसः। वस्तम्।

, कुश्—दि, प (कुस)। योगः। कुंश—कुश्रि, चु, प, वो। दोप्तः। कुंश्रयति। कुंशति। कुष्-क्रा, प। निष्कर्षः।

विडिष्करणम्। नि:सारणम्। लट् कु-पाति। कुण्योतः। कुण्यन्ति। हिकुषायः। निङ् कुणोयात्। बङ् प्रकुणात्। निट् चुकोष्। जुट्कोषिता। स्टट्की-विष्यति । लुङ् श्रकोषीत्। पक्रोवि-ष्टाम्। प्रकोषिषुः। प्रकुषात् प्राणान् वनोकसुम्, भ १७, ८०। धिवाः कुणान्ति मांसानि, म १८, १०। कर्मकत्तीर, कुर्चात । कुर्चते पाटः स्वयमेव, पा २, १, ८ । सन् चुकोषिषति, चुकुषि-षति, पा १, २, २६। यङ् चोकुष्यते। चोकोष्टि। यिच् कोषयति। कुषित्वा पा १,२,७। कुषितः। कुषित्वा जगतः सारम्, भ ७, ८५। निर्-विहिनि:सारणम्। निष्कोष्टा, निष्क्षिता, या ७, २, ४६। निष्कोस्यति, निष्कापिष्यति। निरक्षः चत्। निरकोषीत्। निष्कीषितव्यान् निष्कोष्टुं प्राणान् दशमुखांताजात्, भ ८, १। कीटनिष्कुषितं । धनुः, भ ५, ४२। उपान्तयोनिष्कुषितं विद्वर्षम्बन-च्छेटम्, र ७, ५०।

कुम्—कुग्—दि, प। योगः। कुम्यति। कुग्यति। चुकोस। प्रकु-सत्।

कुंस् — कुसि (कुप) चु, प। दीप्तः। कुंसयित। कुंसित। क्रांस, क्रांसयित। क्रांसित, वी।

कुस्-चु, था। कुलातस्रयः।

कुत्मितद्वासः। कुम्मयते। ष्रवुकुम्मतः। वृद्धिकरणकदर्भनिमिति दुर्गोदासः। कुम्मयते जनः (वृद्धा प्रस्मति) कुदृष्टिः। कुम्मयते युवतीं कामुकः। ष्रयना कुम्मेति प्रातिपदिकं-ततो धालयें णिक्, कौ १०७। कुणव्दपूर्वकस्मिधातुरित्य (प

कुड — चु, या। घदन्तः। विकापनम्। कुडयते, कुडयते कुड-केनेन्द्रजासिको सोकमिति दुर्गादासः।

क् -तु, मा। (कु)। मञ्दः।

कुवते। क्राा, प इति इतायुधः। यु-तिपुटपरिपेयं क्रीचिन्कां किनानिः कवि १७।

कूज्—कुक् —कुंजि, चन्द्रमते।
भवा प। श्रव्यक्तशब्दः। जूजनम्। कट्
कूजित। कुक्जित। लिट् चुकूज, चुकूज
कूले कलहंसमगढ़को, नै१,२०। पुंस्कोिकिनो यन्पधुरं चुकूज, कु ३,३२।
लुट् कूजिता। लुङ् श्रकूजीत्। श्रक्
जिष्टाम्। श्रक्जिष्ठः। सन् चुकूजिषित।
यङ् चोकूज्यते। कोकूक्ति। श्रिक्
क्रव्यति। कूजितम्। कूजनम्। स
कोचनौर्माक्तपृणंशन्युः कूजिंद्रः, र २,
१२। कोकिनकूजित-कुक्जकुटीरे, गीतगो १,२८। उप—चन्नवाकोपक्जिता
क्रिंदनी, भारत। वि—विद्याविक्जिन
तवन्दिमङ्गलानि, र ८, ७१।

कूट, — चु, घा। १ घापदानम्।

श् यप्रदानम्। ३ यवसादनम्। यप्र सन्नीभावः। कूटयते। कुट् कोटयते इति मेवेयः। कूट चु, प। यदन्तः। परितापः। यामन्त्रणम्। यः कूटयति यत्रणां गजघटाः, कविः २३४।

कूड्-तु, प (क्षड)। मान्द्रता।

कृण्—चु, षा। सङ्गोचः। कृण्यते। कण, काण्यते। कृण्य— चु, प श्रदन्तः। सङ्गोचः। कृण्यति।

कूल्-भ्वा, प। श्रावरणम्। कूलति। चुकूत्र। कूलिता। श्रक्त- बीत्। कूलम्। अनुकूलः। प्रतिकृतः।
यशामुं प्रतिकृत्वति, कवि ८०।
क्ष-कज्, स्वा, ड, वी। कारणम्।
करित। ०ते। चकार। चक्रे।
क्ष-कज्, स्वा, ड। हिंसा।
क्षणीति। क्षणुते। कणीति किरणं
यतोः कवि ४४, युद्धे कणीति प्रतूणां वारणान् कवि १३०। चकार। निर्-भन्न
नम्। प्रक्षिांनरकारि मे (भग्ना), भ
१५, ५४। कारणां। काराग्टहम्।

· 8

स—डुसज्, तना, उ। करणम्। विधानम्। घनुष्ठानम्। बट् बरीति। कुक्तः, पा ६, ४, ११०। कुर्वेन्ति, पा द, २, ७९। जुर्वे: पा ६, ४. १०८। नुबते। नुबति। नुबति। सिङ् कुर्यात, पा ६, ४, १०८। कुर्वीत । लोट करोतु। कुरा करवाणि। कङ् अकः रोत्। अनुस्ताम्। अनुर्वन्। अनर-वम्। अनुकृतः। चनुवेतः। चन्वि। बिट् चकार। चक्रतुः। चक्रये। चक्रव। चक्री चक्रदे। सुट् कर्ता। सृट् करिष्यति। ०ते। आणिषि, कियात्। क्षषीष्ट, पा १, २, १२। कृषीद्वम् । सुङ् ग्रकाषीत्। ग्रकाष्टीम्। ग्रकाषुः त्रकृत। श्रकुषाताम्। श्रकुषतः। श्रकुषाः। त्रकृदुम्। कर्मणि, क्रियते। कारिता। कारिष्यते। शकारि। देवदत्तः घटं करोति। नंच खं जुरते कमं, मनुः १, ५५। पितृणां कु वि कार्थम्, भ ६, ६३। यतं जुरत, म ७, ८३। घनुः सवाणं कुन, भ २, ५१। उपास्यकुनतां संख्यम्, म ६, १०५। ऋषयस्त्रिरे धर्मम्, सनु: २, १५४। नाकाषे देवि ! विक्रमम्, भ ८, ११३। यदकाषीत् स रचसाम्, भ १५, ८। कमं व्याधस्यापि दिगहितं मां घता भवताऽकारि, भ

द, १२८। तेंद्वियोऽकारियताबुनाः, भ १५, ०६। कृषीद् कर्नुगनन्दम्, भट, ७०। सन् चिकीयति। ०ते, पा १,२, ८। यङ्चेकीयते, पा ७, ४, २०। चर्क-रीति। चरिकारीति। चरीकरीति। च चरिकासिं। चरीकाति, पा ७, ४, ८२। णिच् कारयति। •ते। च-चीकरत्। ०त. पा ३, १, ४८। ७, ४. ८३। मुर्वेन्। कुर्वाण:। कृत्वं, कार्य्यम्। कर्त्तव्यम्। करमीयम्। कृत्। कृतः। कारः। करणम्। कृत्वा। • कृत्व। क त्तुम्। छत्रे:कारम्। प्रियङ्गरः। पनः हरियाः। कुमाकारः। प्रव्यकारः। सुब करः। कारकः। कर्ता। कारः। कर्म। कृत्या। किया। प्रत्यादि। तां राजकृता, स ४, १३०। तां प्रस्तेकृत्व (स्रोकृत्य), भ ४, १६। पा १, ४, ७०। पाणीकृत्य। उरमिकृत्य। मनमिकृत्व। जोविकानृत्त, (जीविकामित जुला)। उपनिषत्कृत्य, पा १, ४, ७८ । दुभ्ज देवसात् कृत्वा (देवस्यो दत्त्वा), भ ४, ८। यसमाचलतुर्वियो, भ ५, ३। प लम्-भूवर्णम्। धनक्षत्व, पा ४, ६४। पत्यानं गताभ्यामनजनतः, र २, ८। माविस्—माविष्करणम्। प्रादम्—माविः ष्कारः । पुरम् —पुरस्कारः । पूजा । चयतः करणम्। पुरस्कृता बर्त्सान पार्थिवेन, र २, २०। पुरस्कृतः सतास्, र १, ४३। तिरस्—तिरस्तारः। भयोगम् याच्याः दनम्। विष्म्-दूरीकरणम्। मत्-त्रादरः। नसम्-नसस्तारः। मुनिवर्ष नमस्तृत्य, की ४१। सजू:-सद्दार्थः। सजू:कृत्य रितं वसेत्, भ ५, ७२। प्रधिः मधिकारः। नैवाध्यकारियाडि वेदवते म २,२४। प्रह्मनम्। यधिचको न यं हरिः, स.म.२०। पा १,३,३३, अतु— अनुकारणम्

यति। श्रवकत्तेत्। श्रवीकृतत्। (ई)
कर्तम्। कत्तिः। कर्तनम्। कन्तनः
भवि। विरिष्ठिनिक्तन्तनिति जयदेवः।
श्रव—क्षेदनम्। स्मित्रमस्यावकर्त्तयेत्,
मनुः ८, २८१। उत्—उत्कर्त्तनम्।
निष्कोषणम्। खण्डियता विष्करणम्। उत्कत्योत्कत्य गर्भानिय श्रकः
लयतः, मद्याना ५, ८,। नि—कुत्सितकर्त्तनम्। क्षेदनम्। स्थकन्तंयक्रधाराभिः,
भ १७,१२। निर्—उत्कर्त्तनम्। श्रकावुमध्याविष्कृत्य वीजम्, भारतः।

कत् - कती, क्रिप। विष्टनम्। लट्कणत्ति। कन्तः। कन्तन्ति, यं

सन्तन्ति गुणग्रामाः, कवि १२२। सङ् श्रक्तणत्। श्रक्तन्ताम्। श्रेषं पूर्ववत्।

क्रन्-क्रवि, स्वा, प्। १ हिंसा।

२ करणम्। गमनम्। सट् क्षणोति। क्षणुतः। कष्वन्ति, पा ३, १, ८०। बिङ् कणुयात्। सिट् चक्षन्व। चकृ-न्वतुः। सुट् क्षन्विता।

कप-(सृप्)।

कप-श्रदन्तः । चु, प । दुर्वेचता । नासी कपयति प्रसुः, कवि २३५ ।

क्षम्—दि, प। तनूकरणम्।
कार्स्थम्। जट् क्षस्यति। जिट् चक्तर्भृ।
चक्रमतः। जुट् किर्मिता। जुट् किर्मित्यति। जुङ् अक्षसत्। किर्मित्वा, किर्मिता, पार्, २, २५। क्षस्याः, पार्, २, ५५। कस्यति चन्द्रं कस्यपचि इति दुर्गीदास⊁। शोककिर्मितः, रामा।

क्ष्म्भा, ए। तु, छ। विलेखनम्। प्रावर्षणम्। आपणम्। चट् वर्षति। विषति। ०ते। कंषति याखां ग्रामम्। ग्राहो जले गजेन्द्रमपि वर्षति, हिन्तोष। सुखं कृषति ग्रालेयमिचुचेत्रस्र विग्। सुखं कृषति ग्रालेयमिचुचेत्रस्र

चक्कपे। प्रमन्न सिंडः किन तांचकषे, र २, २०। तुर् कर्षा, क्षष्टा। नृट् कर्चात। वी। क्रच्यति। वी, पा ६, १, ५८। लुङ् प्रकाचीत्। प्रकाष्टाम्। त्रकासुः। प्रकाचीत्। प्रकाष्टाम्। प्र-कार्चुः। शक्तचत्। पक्तचताम्। पक-चन्। यक्षष्ट। यक्षचाताम्। यक्षचत। यक्तचत। यक्तचाताम्। यक्तचन्त, को २४८। तं इस्ताभ्यामकाचीर्तं, भ १५, ४७। कर्मणि, अध्यते। धकणि। सन् चिक्तचित । ॰ते । यङ्चरोकायते । चरीकर्ष्टि। चरीक्रष्टि। णिव् कर्षयति। यचवर्षत्। यचीकपत्। कष्टः। कष्टः। कर्षणम्। पनु, चा, वि— घाकर्षणम्। धतुर्व्यकाचीत्, भ २, ५३। चप-चप-कर्षाः। प्रवसारणम् । उद्-उत्कर्षः। निर्—निष्वर्षः। निष्युष्ट्रमयं चनमे क्षविरात्, र ५, २६। प्र-प्रकर्षः। विप्र-विष्रकर्षः । 🍐

कृ -त, प। चीपयम्। भाचकादनम्। व्यापनम्। सट्किरति, पा ७, १, १००। नरि नरि किरति द्राक् भाय-कान् पुष्पेधन्वा। सीमितिमाकिः हाणीः, भ १७, ४२। लिट् चकार। चकरतुः। दिशव पुष्पेयकरः, भ ३, ५। चन-रिय। लुट् करिता, वरीता, पा ७, २, ३८। करिचति, करीचति। पार्थिष, कीर्यात्। लुङ् घकारीत्। घकारि ष्टाम्। प्रकारिषुः। प्रकारिष्टां गिरीन्, भ १५, ८०। कर्मीक, कीर्याते। सन् चिकरिषति, पा ७, २, ०५। यङ चेकीर्थते। चाकितः। यिच् कारयति। बोर्गः। बोर्गः। विकरः। विष्करः। उत्वरी धान्यानाम्, उत्वरी रजसाम्। त्रप-त्रालिखा विचेपवम्। पपस्ति-रते हवभी द्वष्टः। कुक् टो भचार्थी, म्बा

चान्रवाची, पा इ. १. १४२। चव-श्राच्छादनम्। वर्षणम्। कपि वाणे रवाकिरत्, सट, ३४। प्रवाकिरन् तं लाजी:, र ४, २८। श्रा व्यापनम्। चाकीर्णम्, र १, ५१। उप, प्रति— छेदनम्। "हिंसा। उपस्किरति। सित-स्कीर्णम्, पा ६, १, १४०, १४१। उरी-विदारं प्रतिचस्करं नखैः, मा १, ४७। उद-उत्चेषणम्। रजस्रगोत्कोर्णम्, र १, ४३। प्रयारेणुत्किरैकातीः, र १, ३८। समुद्-विधनम्। मणी वज्रम-मृत्कीर्णे, र १, ४। वि—विचेष:। तण्डुनकणान् विकीधी, हितीय। द्र-मान् विचलक्:, भ १४, २५। विनि-निचेष:। विनिकीय माम्, कु ४, ६। प्र-प्रचियः। विस्तारः। वातेन प्रकी-योस्तवकोचयाः, भद ६६। सम्-मित्रणम्। वर्णाः सङ्गीर्णाः, मनुः १, ११६। चित्रया वैष्याः सङ्घीर्थन्ते पर-धारम्, भारत।

कृ का, ज। कृ का, पी

हिंसा। क्रणाति। क्रणीते। सिंहादी पूर्ववत् सनितु चिकरिषति चिकीर्षति। कृ चु, धा। ज्ञानम्। कारयते। वाणावितं किरत्याजी क्रणाति त्रगान् रणे, कवि ४४। हितीयानु कर्नुगामि फलेऽपि न तङ्।

कृत्—चं, प। संग्रव्हनम्।
कोर्त्तंनम्। कोर्त्तयति, पा ७, १,
१०१। कोर्त्तयन्ति च गोष्ठीषु यद्गुः
पानपरोगणाः, कवि १२२। चिक्तीः
तित्। भवीकतत्। भातुरिवकीर्त्तेदिक्रमम्, भ १५. ७२। विप्रसर्वेव शूद्रख्र
प्रमस्तं कर्मं,कोर्स्यते,''सनुः १०, १२३।
क्रप्—कपू, भ्या, श्रा। सामर्थ्यम्।

थोग्यतः। पर्याप्तः। सम्पत्तिः। उत्-

पत्ति:। लट् कल्पते, पाद, २,१६। .प्रतिकारविधानसायुष: मित श्रेषे हि. फनाय कल्पते, र द, ४१। सूर्यो तप-त्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लीकस्य कवं तमिस्रम्, र ५, १३। योऽर्धिना-मोि प्रतप्राप्ती क स्पति क स्पष्टच वत्। न कल्पर्यात मिलाऽये गिरः कल्पति वि-दिवाम्॥ कवि दशः केंत्र चेंत्रची। चक्कृपिये। चकल्प्से।चक्कृपेचाम्बकु-चरम् (सळीकतम्), भ १४, ८८। लुट् कल्प्तासि। कल्प्तासे कल्पितासे, पा १, ३, ८१। ७, २, ६०। खट् कल्प-स्रति। कल्स्यते कल्पिथते। लडङ् भ-कत्य्यत्। धकत्य्यत धकत्यिथत। किल्पायते हरे: प्रीति:, भ १६, १२। तोषः मौतायायेत्सि कच्छात, भ ८, ४५। वितथैव गोऽकल्प्सदुदातिः, भ १८, ६८। श्रामिषि, कल्पिषीष्ट, लृप्बोष्ट। लुङ् भलृपत्। भनित्यष्ट। यक्त्रा। अकल्पिषातभ्म्। यक्क्पा-ताम्। प्रकल्पिषत। यक्तृसत। सन् चित्रापति। चिकल्पिषते, पा १, ३, ८२। ७, २, ५८। यङ् चलोक्का प्यते। चलोकल्पि। णिच् कल्पयति। क्रप, चु, प। १ सिम्बणम्। २ चित्रोकरणम्। ३ केंब्यनम्। कन्ययति। कन्यति, वो। विन्यासः। रचना। निर्माणम्। निरू पणम्। श्रासनं कल्पयामास, भारत। किङ्करैं: कल्पितम्, भ १२, १२। इदं यास्त्रमकल्पयत्, मनुः १, १०२। न्ययो-धमेव वासार्थे कल्पयामामनुः, रामा। तेषां कर्माध्यकस्ययत्, सनुः १, ८७। किल्पतः। कल्पियत्वा। कल्पना। क्रृप्तः। क्रि:। त्रत्—त्रतुकत्यः। त्रव—सन्धाः वना। अवकल्पयामि भवान् भुज्जीत। नावनस्यामिदं ग्लायेत् यत् सच्छेषु

भवानपि, इति महिः। उप-विन्यामः। स्यवता। त्रायोजनम्। त्रामनेष्यः कृषेषु, मनु: ३, २०८। श्रन्तयाधीय-बाल्पते, मनुः ३, २०२। यीवराज्याय रामस्य मर्वमेत्रीपकत्यताम्, रामा। परि-करणम्। परिकल्पिनमः विध्या, र ४, ६। रिक्षजातं दग्धा परिकल्य, मर्नु: ८, १५२। निष्याः। यं धर्मे परि-कल्पयेत्, मनुः १२,,११०। ध्यानलयेन परिकल्प्य भवन्तमतीव दुरापम्, गी-तंगी 8, द। प्र-करणम्। घनुष्ठानम्। प्रायोजनम्। निक्रपणम्। प्रक्तृप्तेः, भ २, २८। समानांशान् प्रवाखयेत्, मनुः ८ ११६। प्रकल्प्यति तस्यार्थः (सम्य-त्यते।, भ १६, ११। वि—विकलाः। मंग्रय:। प्राटिष्टो न विकल्पेत, हितोप। किं तत् कयं विति विकल्पयन्तः, भ ११. १०। सम्-संबद्धः। सानस-क्रिया। इच्छा। संकल्पितेऽर्थं विष्टता-त्यतिम्, कु २, ११।

क्रम्

केत-चु, प। घटनाः।

१ त्रावणम् । २ निसन्त्रणम्। सन्त्रणा,वो । केप-केप्र, भ्वा, या। १ कल्पनम्। २ गति:। केंपते। चिकेपे। केपिता।

वेल् वेल् भ्वाप। चलनम्। वेबति। चेल चेबति। चेल, चे-खति। वेजु, वेजिति। वेजः। वेजा।

केव-केष्ट, स्वा, श्रा। सेवा। वेवते, हो। लोह लोवतं। खेह, खेवते । गेष्ठ, गेवते ।

के भवा, प। भव्दः।

बट् कायति। रेबिट् चकी। चकतुः। लुट् काता । कास्रति । लुङ् भवासीत्। श्रकासिष्टाम् ।

क्रय्—स्वा, प, वो। वधः (क्रय)। क्रम्-क्रम्, दि, प। १ इरणम्। कोटिखम्। २ प्रोप्तिः। न्ट् क्रस्यात। निट् चन्नाम। चन्नमतुः। नृट् निम-ष्यति। गिच्क्तमयति। घटादिः। (७) क्रसिता क्रस्वा।

क्रान्स्

क्तंम् - (कुंम्) चु, प। दीप्तिः। क् — क् — (क् ज्) क्राा, छ। मान्दः। क्यू क्यी, आया १ मध्दः। २ लोदः। ३ दुर्गन्यः, वो। बद् ल्युवते। निट् चुक्तूये। नुट् क्तूयिता। नुङ् यक्त विष्ट। चिच् कीपयति, पा ७, ३, ३६। अचुक्रापत्। चेलक्रीयं वष्टी देवः,

पा २, ४, ३३।(ई) ज्ञातः। कार्—भ्वा. प। कीटिल्बम्। कारति। चवनार।कारिता। अका-रीत्।

क्रय्-भ्या, प। सिमा। सर् क्रयात। सिर् चकाथ। सुर् क्रयिता। लुङ् भक्रयीत्, भक्रायीत्। क्तय्, क्तयति। क्तय् क्तयति। पिच्काः ययति। जासिनि प्रहगीति सुते काः थेति मिखेऽपि इहिनियालते। मिखन् निपातनात् परत्वात् विश्वमुनोरिति टीर्च चरितायम्। श्रक्तियः, श्रकायि। क्रयं क्रयम्। क्रायं क्रायम्, को ८३। क्रथयति। क्रययति। क्रय, चु, च, प, वो। पुन: पुनर्द्धाकरणम्। क्राथयति। क्रन्द्-क्रद्-क्रदि, (क्रदि) आ, धा।

वेक्कव्यम्। विवयता। वेकक्यम्। क्रान्द्ते। क्राद्ते। क्रान्दन्ते कान्दिशोकाच यस्य भववः, कवि ७२। ऋदयनि घटादि। क्रान्ट्—क्रदि, (कदि) स्वापा

१ पश्चिमम्। २ रोदनम्। लद ब्रान्दित। मा पितः ऋन्द मा तातः भारत। क्रन्दलयुजनेवीरभः क्रन्दयन्ति रिपुस्तियः, कवि ७२। निट् चक्रन्द, चक्रन्द कोधविद्यना, भ ५, ५। रामिति चक्रन्दुः, भ १८, ४८। ३, २८। नुट् क्रान्दिता। नुङ् यक्रन्दीत्, भ १५, ८५। घक्रन्दिटाम्। सन् चिक्रन्दिपति। यङ् च क्रन्यते। चक्रन्ति। णिच् क्रन्दयति। क्रन्दितः। क्रन्दनम्। या— ब्राह्मानम्। घार्तनादः। शेदनम्। घीरमंत्रामः। यार्तनादः। शेदनम्। घीरमंत्रामः। याक्रन्दिषुः, भ १५, ५०। याक्रदि, चु, प। निरन्तरणव्दः। याक्रन्दयति यन्त्रम्। याक्रन्दः। संक्रन्दनः।

कप्—भ्वाः घा। कपा। द्या। कपते, कपते कपयेष्वेव, वावि ३३५। चक्रये। कपिता। यिच् कपयति। पविक्रपत्। धक्रपि, धक्रापि। कपा, कौ ४५२।

क्रम्-क्रम्, खा, प। पादविचेष:।

गधनम्। उत्पतनम्। भाक्रसणम्। क्राम्यति। क्रामति, पा.३, १, ७०। ७, ३, ७४। क्रम्यति वी। क्रण्णीरमी पदा कामसि पुक्टदेगे, भारत। निट्चकाम। चक्रमतुः। तुर् क्रीमंता। ऋर् क्र सचिति। लुङ् शक्तमीत्। श्रक्रसि-ष्टाम्। अजिम्बुः। अयोकविणिकां कावतुमक्रमोत्, स ८, २३। भगति-बन्धासाइस्कीततासु प्रामनेपदम्, पा। १, १, १८। क्रमते। क्रास्यते। चक्रमे। ज्ञल', पा ७, २, ३६ । कांग्रते । अकांस्त । चर्तानाम्। चर्तानतः। गास्ते क्रामते बुबिः (न प्रतिचन्यते)। व्याकरणाध्यय-नाय क्रमते (उत्सहते)। शैक्सन् क्रमन्ते शास्त्राणि (स्कोतानि भवन्ति), पा १, ३, १८। सन् चिक्रसिवति। चिक्रंसते। यङ् चङ्गस्यते। चङ्गिता। विच् क्रम-यति। अविक्रमन्। मंकामयत्रीत

नेचित्। जरामन्यस्मिन् संक्राम्य, भारत। क्रिस्ता, क्रान्ता, कृत्वा। ज्ञान्ता जान्ता स्थितं कचित्, भ ४, ५१। कुन्त:। ते कुन्तावितिस विसायेन, र १४, १७। क्रमं वबन्ध क्र-मितुम्, भ २, ८। जुमगम्। देवर्त्तर्थेव क्ति वासी नेट्। कर्मणितु प्रक्रसित-व्यम्, को ११६। यात-त्रतिकृतः। उत्तक्षनम्। व्यति—व्यतिक्रमः। अनु— षतुक्रमः। श्रतुसरंगम्। षप-श्रपस-रणम्। भा—पात्रसणम्। भानुसते स्थाः, पा १, ३, ४०। उद्-उद्गमनम्। प्रतिक्रमः। व्यतिकृमः। व्युद्-व्युत्-जामः। व्युत्जुम्य लच्मणमुभी भरती ववन्दे, र १३,७२। स २२,३। उप, प-पारकः। असोनिधेस्तरमुपाकंस्त (गन्तुमारव्यवान्), भ ८, २५। प्रसी प्रक्रमते योडुमेकोऽपि बडुभि: सह। नाक्रम्यन्ति तथ।प्येनं विकान्ता बहवी-ऽपिते॥ कवि १८०। निर्-निष्कृमः। निगमनम्। निरचिक्तमदिच्छाता वा-नरान्, म ७,७०। परा-पराक्रम:। खे पराक्रंस तूर्णे च्नुनेभस्ततः, भ ८, २२। परि-परिक्रमः। हजाद् हचं परिका-सन्, भ ८, ७०। वि—विकृस:। जली विक्रममायाः, भ ८, २४। साधु विक्र-मते वाजी। विकासति सन्धिः (विधा भवति ।, पा १, ३, ४१। सगान् विध्यन् विचलमे, भ ४, ६। सम् संक्रमणम्। प्रवेग:। प्राप्त:। णिच् रसातलं संका-मिते तुरक्के, र १३, ३। अन्यसंक्रमिते-चणवत्तयः, र ८, ५४। . अयं पाप इद-मकार्थं सचि मंत्रामधित ।

को — डुक्रीज्, कुगा, उ। क्रयः। द्रव्यविनिमयः। लट् क्रीणाति, पा २,१,८१। क्रीणीतः, पा ६,४,११३। क्रीणिना। क्रीणीते। दस्वा प्रस्तप्रहा-रच तेषां क्रीणाति यः चियम्, कवि १३०। लिङ् क्रीणीयात्। लङ् प्रक्री-यात्। अक्रीयीताम्। अक्रीयन्। अ-क्रीगीत। मक्रीगत। सिट् चिकाय। चिक्रयिष, चिक्रय। चिक्रियव। चिक्रि-थिये। चित्रिये। लुट् कोता। क्रीयाति। •ति। शामिष्, नीयात्। स्रेपोपः। नुङ् श्रक्तिवीत्। श्रक्तिष्टाम्। श्रक्तेषुः। श्रक्तेष्ट। चक्रीबाताम्। चक्रीवतः। सन् चिक्री-षति। ०ते। यङ् चेक्रीयते। चेक्रयी त। चेकोति। चिच् क्रापयति, पा६, १, ४८। प्रचित्रावत्। स्रोत्वा। ब्लाय। क्रीतः। क्रयः। परि-क्रियतिश्रेषः। वेतन-स्त्रीकारः। परिस्त्रीणीते, पा १, ३. १८। श्रतिन परिक्रोतः, पा १, ४, ४४। सम्भोगाय परिकृतिः, भ ८, ७८। वि — विसयः। विक्रीणाति। भवक्रीणाति।

कीड्-कांड, स्वः, प। विचारः।

त्रीड़ा। सर्.काड़ित। कोडान ख-विश श्रीप, काव २३३। किर निकाड। चिकोड़तः। लुर कोड़िना। स्टर् क्रांड़िष्यति। लुङ् धकाडोत्। धकोड़ि-ष्टाम्। धकोडिषुः। मन् चिक्रांडिणित। यङ् चेक्रीद्यते। चेक्रांडि। विच् वृद्धिम् यति। श्राचकोड्त्। श्रनु—धन्को-ड्ते, पार्र, ३, २१। श्रा—शकोडतं। परि—परिक्रांडते। परिक्रोड्स, भ द, १०। सम्—मंक्रोड़ते। साध् भंक्रोड़ियानानि, भ ८, १०। सूचने तु, मंक्रोड़ित चक्रम्। क्रीड़ा।

त्रुच—(कुच्) भ्वा, घ। कीटिल्यम्। फ़्रुच्—तुं, घ। निमक्तनम्। फ़्रुडति। चुकोड़। क्रुडिता। यक्रुडीत्। फ़्रुय्—दि, घ। क्रोधः। रोषः। क्रुट् देवदक्ताय क्रुथ्यन्ति, घा १, ४,

३०। सीताये नाज्यत्, भ द ०३। जिट् पृक्षोधः। पृज्जधतः। पृजाधः मास्तिः, भ १४, द५४ लुट् कोषाः। लृट् कोत्यति। लृड् धकुषत्, दमाननो- उनुधत्, भ १५, १८। सन् पृज्जवति। यङ् चोक्षाध्यति। चोक्षोधः। विष् कोधःयति। अपृज्जुषत्। कृषः। धाम, धनु, प्रति, परि, सम्, देवदस्तमाभकुष्यति, पा, १, ४, ३८। कृष्यत् ग प्रतिकृष्यति, मनु: ६, ४८। कृष्यत् स्पा माम, भ द, ०६। अपमानं ते यद्वन्या न प्रचु- कृषुः, मा।

क्र्यू—क्राः, ए, वी। १ अविष्यम्। २क्षेत्रः। क्षणाति। चुक्ताः क्रियता। क्य् का. प। १ वाहानम्। २ रोदनम्। लट् कोशति, एव कोशति द्यात्युषः, कामा। क्यामन्यक्तं वापि-बित्रयः, स ६, १२४। लिट् चुकीय। नुक्तगतुः। चकाम्पातीव चुकीवा, भ १४, ३१। ल्ट् कोष्टर। ल्ट् कोणाति। लुङ् यक्ष चित्रं यक्ष्यताम्। मन् युक्त यति। यक् चाल्याते। चील्गाति, चीक्षादि। णिच् क्रांगयति। अचुक्र्यत्। अनु द्या। विसनुत्र्य वैक व्यमुत्पादयस। या-रोदनम्। भवानम्। तं भात-द्वारमात्र्या, स ४, ३८। उद्, प्र, वि-चोत्वारः। रीदनम्। विशुक्त्यः केचन सासमुद्धः, भ ३, १०। हा हित च वि-चुक्रुणे, स १४, ४२। विक्रोक्यन्ति, स १६, ३२। व्यक्तु चत्, भ १४, ४०।

क्रू—क्रूज्-क्र्या, उ। शब्दः। क्रूपाति।क्रूपीते।क्रिता।क्र्याते। क्रुद्रित जैसिनिः। क्रुद्रित रसानायः। क्यूच्~्(क्यूय) स्वा,प। द्विसा।

कुन्द्-कुद्-कृदि (कदि),ध्वा, प।

१ भाष्ट्रानम्। २ रोदनम्। सद्, स्ति (किट्) भ्वा, भा। १ वैस्रव्यम्। २ वैकल्यम्। सट् सन्दित्। ०ते। सद-ते। सद्यति।

> क्त प् (ज्ञप्) जु, प। कथनम्। क्तम् क्तम्, दि, प। ग्लानिः।

. त्रमः। यसासर्थम्। मूर्च्छा। ल्रट् काम्यति। कामति, पा ७, ३, ०४, ०५। वायः काम्यति यस्य प्रहरती त्रिपृत्। कामन्ति त्रिपृत्तेनाय प्रवमाना दिशी दम्॥ वित २२६। नङ्गादाचिन काम्यतु, भ १२, ३८। श्रकास्यद्रावणः, भ १०, १०२। निट्चकाम, न चकाम न वि व्यथे, भ४.१०५.१४,१०१। नुट्कमिता। व्यद्रे, स४.१०५.१४,१०१। नुट्कमिता। व्यद्रे काम्बित। नुड्श्मकमत्। (३) कामित्वा, कान्वा। कान्तः। कान्तः।

क्रव्—स्वा. था, वो । भयम् । क्रवते । क्रिट्—क्रिट्, दि, प । थार्ट्रीभावः ।

वट् क्रियित, भजसमणुभिश्तामां क्रियित नयनानि च, व्राव १३१। जुट्यान्त भूमी क्रियान्त, भ१८,११। व्रिट्र चिक्रेट। चिक्रिट्य, चिक्रेट्य। चिक्रेट्य, चिक्रेट्य। चिक्रेट्य, चिक्रेट्य। चिक्रेट्य, चिक्रेट्य। चिक्रेट्य, व्रिट्र चिक्रेट्य। चिक्रेट्य, क्रेट्या, क्रेट्ट चिक्रेट्य। चिक्रेट्या। चुट् मक्रिट्या। चुट् मक्रिट्या। चिक्रेट्या। चुट् मक्रिट्या। चिक्रेट्या। चुट्याना। क्रियाना। क्रियाना। क्रियाना, उट्याना। क्रियाना। क्रियाना।

क्तिन्द् क्तिदि, भ्वा, प। वी, छ। • परिदेवनम्। विजापः। श्रोकः। क्ति-न्द्रति। ऋते भत्तीर दुःखात्तीः किन्द्रान्त यदरिस्तियः, कवि १३१। आत्मनेपदे •योकार्यः सर्वर्भकः। क्लिन्द्ते चैतम्। . क्लिन्दिना। छभयपदिष्ययं न पठ्यते इति प्रदीपः।

क्रिश्-दि, या। ड, वी।

क्रियः। उपतापः। क्रियति। ब्ते, क्रियते न च निष्फलम्, कृवि ८२। ज्ञा, क्रियतः, क्रिष्टः, पा.७, २, ५०।

निजुम्-निजुम्, कार, प। पोइनम्।

विवाधनम्। ब्रोगः। लट् क्रिम्नाति। क्षित्रीत:। क्षित्रान्ति। निन्द्याणि विकः हेषु जियाति विषयपु सः, वावि ८३। स क्रियाति भुवनवयम्, क्र २, ४०। शक्तयचेन्द्री न किशीतः (क्षेत्रं नातुः भवतः), भ १८,३१। चिङ् क्रिश्चीयात्। हि कितान। लङ् श्रीकृशात्। बिट् चिक्वेश। चिकिमतः। चिक्वेशिय, विक्रष्ठ । न्यालको विक्रियतुः, स ३, ३१। लुट् क्वेथिता, क्वेष्टा। लृट् क्रिश्यति, क्रोच्यति। लुङ् प्रकृशीत् षा ७, २, ४। अजिचन् पा ३,१,४५। अर्जु गिष्टाम्। अर्जु चताम्। अलु -शिषुः। अक्रिजन्। सन् चिक्रियिवति, चिक् शिषति, चिक्किति। यड चेकि-ग्यतै। चेकेष्टि। णिच् केणयति। श्रविकिंगत्। अतां सां सातिचिकियः, स ६, १७। किशित्वा, विष्टा। विशितः, किष्टः। किश्यितवान्, क्षिष्टवान्, पा 0, 2, 401

क्रीब् — क्रीब् — क्रीब्र, भ्वा, आ। अधार्थाम्। अप्रगल्भताः । करं क्रीबते। क्रीवते। जिट् चिक्रीवे। जुट् क्रीविता। क्रीवम्।

क्रुड्—भ्वा, घा। यतिरिति सेतः। क्रिय—भ्वा, घा। १ घसपुटक घनस्। .२ बाधनम्। पीड्नम्। ३ वधः, वी। क्षयनं, प्रदीपः। क्षेत्रते, क्षेत्रते न स्वा-वाक्यम्, कवि ८३। चिक्के प्रे। क्षेत्रता। काक्षिष्ट।

कण्—(प्रण्) श्वा, प। प्रव्दः।
क्षणित। चकाण। कणिता। चका
णीत्, शकाणीत्। , श्रकाणिषु द्युग्तीसांद्राः, भ ८, ११०। निकाणो निकणः
काणः कणः कणनित्यपि। वीणायाः कणिते प्रादेः प्रकाणप्रकणाद्यद्रस्यमरः।

क्षय्—क्षये, — आ, प। निष्पाकः।

कथ्। (कृष्) भ्वा, प। हिंसा। बट् कथित। बिट्चकाय। लुट्कियता। लुट्किथियति। लुङ्(ए) अकथीत्। गिच्काययति। (हिंसायाम्) कथ-यति। काष्टः। कथः।

क्तेल्—(केल्) भ्वा, प। गतिः। चञ्च्—चज्—जङ्ग्—चजि—

"चज्, जिंच" खा, था। १ गितः।
२ दानम्। चस्रते। निट् चचक्रे।
नुट् चस्रिता। नुड् धचस्रिष्ट। सन्
चिचस्रिति। यङ् चाचस्राते। णिच्
सम्बद्धित। अचचस्रत्। नर्मणि, अच-स्त्रि, अचास्त्रि, पा६, ४, ८३। पीमुन्
चस्रं चस्रम्, चास्रं चास्रम्। सजते।
सन्यति। घटादिः। चिन्, सु, प।
कस्युजीवनम्। धातङ्गः, वो। चस्र-यति। चजते। नस्रते।

चग्-चगु, तना, छ। हिंसा।

बर् चर्णाति। चर्ति। बिर् चचा-य। चच्चे। बुर् चिता। बृर् चिष्यति। •ते। बुङ् शच्योत्, पा ७,२,७। पचिष्टाम्। श्रचणिषुः। श्रवणिष्ट, श्रवत। श्रचणिष्ठाः, श्रच्याः।

सन् चिचिषिपति । •ते । यङ् चङ्गायते । चङ्घिष्ट । चपदेशेऽस्य नकार रति धातुपारायणे व्यास्यातं तेन यङ्नुकि चङ्घिति । णिच् चाणयति । (उ) चणित्वा, चत्वा। चतः, पा ६, ४, ३०। चतिः। मोकान्धकारचतमवेचेष्टा, भ १, १८। परिचतः । विचतः ।

明料

चप-चु, प। घटनाः। , प्रेरणम्। चेपणम्। चपयति। पचि-षीं चपयित्रियाम्, सृतिः।

चम्-चम्य् भा, था।

चस् दि, प। सहनम्। सप्यम्। चसा। प्रतिः। सट् चसते। चास्यः ति, या ७. ३, ७४। समते यो दिरदा-यां दृष्टान् न समित प्रभुः। न साम्यति चितोगानामपराधकणामपि॥ १६७। बिट् चथाम। चयमतुः। पचमिय, यचन्य। पचमित्र, चचन्त्र, पाट, २, ६५। चचित्रा, चणस्य। चचमे। चचमिये, चचमे। चचमियो. चचन्छी। लुट् चमिता. चना। लृट्चिमिचति। ॰ते। चंस्रति। ०ते। नुङ् घचमत्। घचमिष्ट, चचंस्त। षचिमवाताम्, षचंमाताम्। यत, श्रचंसत। श्रामिषि, श्रम्यात। चिमिषीष्ट, चंसीष्ट। करते रवे: चान-यितुं चमित कः, चपातमस्काग्डमनी-ससं नभः, मा १, ३८। चर्चामरं सी-रव्रताभंग तस्य, र ७, ३४। प्रतंस्या न तत्, भ १४. १५ । कामं चाम्यत् यः चमी, मा २, ४३। सन् चिचमिषति। ०ते। चिचंसति। ०ते। यड चहुम्यते। चङ्गान्त। चिच् चमयति। अचिच-मत्। विमित्वा, चान्ता। चान्ता। च मितुम्, चन्तुम्, तद्ववान् चन्तुमर्हति। चीन्तिः। चमा। भाषतः चाम्यतेः चान्तिः चमूषः चमतेः चमा, की १४२। चान्तः। चान्तवान्।

चम्य्—चिष, चु, पै। १ चान्तिः। २ कान्तिः। चम्पर्यति। चम्पति। चर्-भाः प। १ सञ्चलनम्।

्र चरणम्। ३ मोचनम्। सट् चरति। सिट् चसार। चचरतः। सुट् चरिता। स्टट् चरिष्यति। सुङ् श्रचारोत्। प्र-चारिष्टाम्। प्रचारिष्ठः श्रदाश्चांसि तस्मिन् रचःपयोधराः, म ८, ८। सद्-धाराः चरस्नु गजेषु, र १३, ७४। सन् विचरिषति। यङ् चाचर्यते। चाच-ति। गिव् चारयति। श्रा—श्राचा-रितः चारितोऽभिशस्ते इत्यमरः। प्र-प्रचुतिः। खादुस्ताः प्रचचरः, भ १४,

चल्-भ्वा, प, वो। १.सञ्चलनम्।

२ मख्यः। चनति। चन, पु, प।
शीचित्र्या। शोधनम्। चान्त्रम्।
चान्यति। चान्यामि तव पाद्यक्जी
महाना २, ४५। श्रिच्चेनत्। चान्तः
यितुं चमित कः, मा १, ३८। प्र—प्रचान्तम्। प्रचान्तनाहि पक्षस्य दूरादस्पर्शनं वरम्। हस्ती पादी सुखं प्रच।च्यः मनुः ३, २६४। वि—विचानितः, र ४, ४४।

चि-भ्वा, प। चयः।

ऐखर्थम्, वो। घयमकर्मकः। अत्तः भौविष्ययंस्तु सकर्मकः, की ५०। चय-ति, चयति प्रत्यद्वं पापम्, कवि ११२। चिचाय। चिचियतुः। चिचियय, चि-चिय। चिचियव। चिचियम। चितां। चीयात्। अचैयीत्। चौणः। चितः। चि—तु, प। १ निवासः। २ गितः। चियति, यशः चियति वो दस्योर्धसः, कवि ११२। चिचाय। श्रासीयाडी चिन्तामादाः, र १, ११। (महीं चियत्ति ईगते इति महीचितः। चिषातारेख-स्यार्थात् क्षिप्) मज्ञीनाथः। वोपदेवस्तु स्वादिगसीयस्व ऐखर्यार्थमाइ।

चि—सा, प। चिष् (चौष्) क्रां, प।

हिंसा। बधः। जट् चिणोति। चिणु-त:। न तद् यशः शक्तमृतां चिपोति. र २, ४०। चिचाोद् धुर्यान्, भ १७, ८८, ८०। धनुरचियोः, र ११, ७१। चिष्. चिषाति, चिषाति द्रितं दृष्टा चियोत्र्येष दु:स्थितान्, कवि ११०। वियोतः। चीयन्ति। चियोवात्। षचिषात्। निंट् चिचाय। चिचि-यतः। विचयिय, चिचेय। चिचि-यिव। सुट्चिता। सृट्चेष्यति। त्रा-मिषि, चीयात्। लुङ् यत्तेषीत्। यत्ते-ष्टाम्। प्रचेषुः। कर्माण, जीवते। न्सन चिचीपति। यङ् चेचीयते। चेचयीति। चेचिति। णिच् चाययति। चिला। •चौय, पा ६, ४, ५८। चीणः। प्रचीय:। उपचीय:, पा ६, ४, ६०। (धाकोशे) चीणायुः चितायजीत्यः। (दैन्यें) चितः चीणोऽयं तपस्रो, पा ६, 8, ६१। चितः कामो मया, कौ ३४६। चयः। चितिः। (ष् चिया। येन चयिततमसा (चयशब्दाणिच्), शक् 8, 84 1

चिण्-चिण (चणु.) तना, छ।

हिंसा। (लट् चैंपोति, चेंपुते)। चिपोति। चिपुते, स्त्यानां नित्यमचानं चिपुते यः सदुक्तिभिः, कवि ११०। चिड् चेंपुयात्। लङ् भचेपोत्। बिट् चित्रेण। जुट् चेणिता। जुङ् भवेणीत्। श्रीचत, भवेणिष्ट। चिणु, चिणीति। 'यङ्ज्कि, चेवेन्ति।

िचप-दि: प, तु, छ। प्रेरणम्। चेपणम्। त्यागः। लट् चिप्यति। चिपति। •ते। चिपति प्रतिपचाणां च्रदये यो भयं भ्रवम्। चिष्यति स्रोति-याणाञ्च निष्कं, पुष्कलम्। लये ॥ कवि १८३। शस्तं वार्णमिष्यदिष्विपदौद्र-सिन्द्रजित्, भ १७, ४३। बिट् चिचेप। चिच्चिपतुः। चिच्चेपिषः। चिच्चिपे। जुट् चेता। लुट् चेपाति। ०ते। लुङ् प्रचेपीत्। प्रचेताम्। प्रचेप्सः। प्रचित्र। प्रचिपाताम्। प्रचिपतः। तेनाचिषातेषवः, भ १५, ६५। सन् चिचिपति। ॰ते। यङ् चेचिप्यते। चेचेप्ति। गिच् चेप्यति। अचिचि-पत्। चिष्ठा। चिप्तः। चिप्तः। चिषणमा चिषकः। चेष् कालम्, म-हाना १, ८१। तं चियन् योजनं स-तम्, भ ६, ११५। श्रति, श्रासि, प्रति— श्रमिभवः, पा १, ३, ८०। श्रमिचिपन रावणः पर्वतिश्रयम्, भ ८, ४१। प्रधि— श्रिविष:। निन्दा। भर्त्तनम्। विश्रे-षेगाधिचित्रोऽस्मि, शकु ५, ८६। एते-रधिचिप्तः, सनुः ४, १८५। श्रव— क्रता। •अधीवचेष:। आ-पाचेष:। षाकषंणम्। निन्दा। पराभवः। प्रसा-धिकालिकतमयपादमाचित्रय, र ७, ७। समा-अपसारणम्। कायाः समा-चिचिपिरे, भा १६, ४७। उद्-उत-चेपः। दूरीकरणम्। उत्तमनम्। ग्रैनानु-्रचैसु, म १४, २४। उद्चिपन् केतृन्, भ ३, ३४। नि—निचेषः। न्यासः। अर्पणम्। तेन घृः सचिवेषु निचिचिपे र १, ३४। तं बन्धुता न्यचिपदाश तले, भ ३, २३। परि वेष्टनम्। प्रावातः। प्राकारेण परिचितः, भारतः, परि-चिताः ग्राखिनोऽनिगायकैः, भ ६, ८४। परिचेषो। प्र—प्रचेषः। वि— विचेषः। मम्—मङ्गेषः। संदारः। सङ्ख्यु संस्थाम्, भ २, ५२।

चिव् चीव् चिव्, खा, दि, वो, प।

निरमनम्। चेवति। चीव्यति।
ची-खा, उ, वो। वधः। चीङ्, दि, धा।
चयः। चयति। वी। चीयते। प्रशेरकर्षणात् प्राचाः चीयन्ते, मनुः ७,
११२। घायुः परं चीयते, धान्तिष्
५। दिवादिस् खाद्यादिवदाक्षतिगणः,
तेन चीयते इत्यादिसिषः, बौ १४४।
चीष्, क्राा, प। चिसा। चोयाति
(चिषाति)।

चोज्-स्वा प। श्रव्यक्तगब्दः।
हिक्कनम्, वी। चीजति। चीजिता।
चीव्-चीव्-चीवृ, चीव्व, स्वा, श्रा।
मदः (गवंः। सत्तीभावः। चीवते। चीवती। क्राचीवः, पाट, २, ५५। स ६, ११३।

चीव् चेव् चीव्, चेवु, स्वा, प।
निरसनम्। निष्ठीवनम्। चीव्, स्वाः
पा, वो। दर्पः। चीवति। चेवति। चीवते। प्रावेन चीवते सर्वः चोवते इर्षगर्वितः, कवि ८५।

चु-रचु, घदा, प। धन्दः। चुतम्। नद् चीति। चुतः। चुवन्ति। निर् चुचाव। चुचुवतः। सुर् चिवता। नृर् चिवधित। सुङ् घचावीत्। प्रचावि-ष्टाम्। चुचावाग्रभम्, भ १४, ५७। (८) चवयुः। चुतम्। चिवता। चुचावि-षति। किप् चुत्। चुद-चुदिर्, क, छ। सम्पेषणम्।

चुर्णनम्। सर्दनम्। जट् चुर्णात्त। चुन्तः। चुन्दन्ति। चुन्ते। चुन्दाते। चुन्दते। चुणांच्र सर्वान् पाताले, भ ६, ३८। , तिङ् चुन्यात्। चुन्दीत। सङ् प्रमुणत्। प्रमुन्ताम्। प्रमुन्दन्। ष चुन्त । बिट् चुचोद । चुच्दे । चुट् चोत्ता बृट् चोलाति। ते। सुङ् (इर्) यन्नुदत्। यन्नौसीत्। यन्नुदताम्, श्रजीताम्। श्रज्ञुद्न्। श्रज्ञीत्मुः। श्रज्जता श्रचुत्साताम्। श्रचुत्सतः। ते तमचौत्सुः पादै, भ १५, ४३। सन् चुच्च सति। ०ते। यङ् चोच्चयते। चाचात्ति। गिच् चीदयति। अनुत्तुदत्। चीदयन्ति नः चुद्राः, भ १८, २६। ता चुसः। चोदः। प्र-चूर्णनम्। तस्य प्रचुचीद गदयाङ्गम्, स १४. ३३. ८७।

चुध्-दि. प। बुभुचा। चुधा।

खट् चुर्थात । लिट् चुचोध । चुसु धतः । जृट् चोहा । जृट् चोताता । जृड् प्रचुषत् । प्रचुधताम् । सन् चुनु-तात । यङ् चोचुध्यते । चोचोहि । शिच् चोधयति । प्रचुचुधत् । चुध्यन्तोऽप्य-घसन् व्याचा न त्वाम्, सप्, ६६ । चु-धिता, चीधित्वा, पार्, २, २६ । चु-धितः, पाद्, २, ५२ । चुधा । चुध्।

चुभ्-भ्वा, ग्रा। दि, क्रा, प।

चोमः। सञ्चलनम्। विकारः। उदेगः।
च्या। लट् चोमते। चुम्यति, प्रश्चितः चुम्यति, महाना १, ३०। चुम्यति, महाना १, ३०। चुम्यति, पा ५, १०। चुम्यति। नाचुम्यद्विमः, भ १७, ८०। वः चुम्यति रिपुष्वेव चोमते नानुः जीविषुः। मनागपि मनो यस्य न चुम्यति सुद्दाह्यते। सिट् चुचोभ।

चुत्तुमे। रघोरभिभवाग्रक्कि चुत्तुमे दि-·षतां मनः, र ४, २१। नार्थ्ययुद्धिमरे, भ १४, ६। लुट् ची भिता। लुट् ची-भिष्यति। •ते। प्रद्याभिष्यत चेदियम्, भ २१, ६। लुङ् पचीमीत्। पचीमि-ष्टाम्। अचाभिषुः। दि, अन्तुभत्। स्वा, प्रज्ञभत्, श्रेताभिष्ट । श्रमी नापि चा-चुमत्, भ १५, ३८। सन् चुचु भिषति। ०ते। चुचै।भिषति। ०ते। यङ्चोद्ध्-भ्यते। चोचीस्थि। णिच् चे। भयति। चवुमत्। च्यितः, चुन्धः, पा ७, २, १८। चुभितं गणम्, भा १३, १०। चीम:। सहाइट इव स्थान, स ८, ११८। प्र—सञ्चलनम्। प्राञ्चमन् कुलः पवेता:, भ १५, १५। वि— गिच विली-डनम्। विचीभयन् नागः सरः। सेना विचे।भिता तै:, भारत। सम्—दः-स्थता। समस्तं सङ्घ व्यं त्रेलोक्यम्, चग्डो।

चुर्—तु, प। विलेखनम्।

चुरति। चुचोर। चीरिता। यद्भे-रीत्।

चेव्-(चीव्)।

चै-स्वा, प। चय:। चायति।

े चायति दिवतां कुलम्, कवि ११२। चचौ। चाता। चास्यति। प्रचम्योत्। क चामः, पा ८, २, ५३।

स्यु—श्रदा, प। तीत्र्यीकरणम्। लट् स्योति। स्युतः। स्युवन्तिः। लिट् चुत्र्याव। चुत्र्युवतुः। लुट् स्यविता। लुङ् श्रद्यावीत्। ता स्युतम्। प्रचुत्त्युवु-मेहास्त्रायि, स १४, ८१। सम्—श्रा, पा १, ३, ६५। समस्युवत श्रस्त्रायि, स १७, ५५। संस्युवान स्वोत्कर्यद्वाम्, स ८, ४०।

द्भाय् — स्नायो, भ्वा, घा। विधूननम्। कम्पनम्। चट् स्मायते। अस्मायतः मही, भ १४, २१। १८, ७३। बिट् चच्चाये, चच्चाये मही। भ १४। २१ बुट् च्यायिता। बुङ् प्रच्यायिष्ट। मन् चिन्नायिषते। यङ् चान्नाय्यते। चा चाति। गिन् चापयति। पविचाः पत्, पा ७, ३, ३८, ८८। स्त्रामस्माप-यतां गतीं, भ १४, ८५। (ई) स्मातः । च्योल्-(मोल्) भा, प। निमेषणम्। पच्यभिवन् रावरणम् । च्योबति । च्चिड् — जिच्चिड़ा (जिचिदाः भ्वः, प। ष्रव्यत्तराब्दः। कूलनम्। भ्रा, पा,

ख च

वो। १ स्रेडनम् । २ सोचनम्। च्लेडिति । ०ते। न च्लेडित् (अव्यत्तदन्तगब्दासमं च्चेडनं न कुर्यात्), मनुः ४, ६४। (जिया) चिल्लीडतं चिष्टं तेन।

च्चिर्-जिच्चिरा (जिचिरा) भा, प। ॰ अञ्चलसञ्दः। कूजनम्। भूतं, पा। १ स्नेडनम्। २ सोचनम्। ३ साडनम्। दि, प। १ स्रोडनम्। २ सोचनम्। च्चे दति। •ते। च्चिद्यति। चिच्चे द। विच्चिदे। च्चेदिता। (जिन्ना) चिसाः। चिस्तवान्, पा ७, २, १६। प्र-प्रेंच्बे दितः, पा १, २, १९। प्रच्वेदिताः परम् (अव्यक्तभव्दं कुर्वाणाः), सं ७, १०३।

च्छेल् (केलृ) भा, प। चलनम्।

, (ख)

खक्व्-भा, प, वो। इास्यम्। खक्वति। खच् - कृत्राः, प । भूतप्रादुर्भावः । श्रीतक्।न्तोत्पत्तिः। उत्पद्मस्य पुनक् त्पत्तः। मन्यत्य् पत्तिः, वा। पवित्रो-

भावः, वो। अस् खन्जाति। खन-जीत:। खन्जन्ति। सिट् चयाचा चखवतुः। सुट्खिचिता। सुङ् धयः चोत्, बखाचीत्। खच्. चु, प। बद-न्तः। बन्धनम्। खचयति। खचितः। ' खज्—भा, प। विसोड्नम्।

सत्यः। खन्ति। चखान। खनाका। खझ—खिज, भा, प। पाङ्ग्लेम्। गतिवैकस्यम्। खोटनम्। खस्ति। चखन्ना खन्निता। खन्नः। खन्नन् प्रभञ्जनजनः, नै १४, १०७।

् स्ट्-भू, प। घाकाङ्घा। खटति। चखाट। खदिता। खाटः।

खद्या

खह्—चु, प। संवरणम्। गोपनम्। षाच्छादनम्। खष्टयति। षचखप्टत्। सङ्-स्वर्क-सङ् (कड़ि) चु, प।

भेदः। अञ्चनम्। खण्डनम्। खाड-यति। खण्डयति। खण्डति। अन्य-गड़कातिम्, अ१५, ५४। खगडं खगडः मख्ण्डयद् बाहुसहस्रम्, महाना २, ४। ख्राड्यिला। ख्राड्तः। ख्राड-नम्। परि--विनाशः। जयः। श्रक्षण्डाः मानं परिखण्डा श्रद्धम्, भ १२, १७। खड़ि, भ्रा, या। सन्धः। विलोडनम्। भन्ननम्, वो। खण्डते। चखण्डी खिल्ता। मानं खर्डयति स्त्रीणां खगड़ते दिषतां थिरः, कवि २६३।

खद् भा, पा १ खेथम्। २ हिंसा। ३ भचणम्। खदति। चखाद। खदिः ता। यखदीत्. अखादीत्। खदिर:।

खन् पातु, भा छ। खननम्। भवदारणम्। लट् खनति। १ते। छपिती

जाइबोतीर वृषं खनति दुर्मतिः। बिट् चखान। चख्रे, पा ६, ८, ८८। तुद् खनिता। ऋट् खनिष्यति। ०ते। चाशिषि, खायात्। खन्यात्, पा ६, 8, ४३। लुङ् अखनीत्, अखानीत्। पखनिष्ट। वार्मणि, खायते। खन्यते। षानि। सन्, ।चिखनिषति। ०ते। यङ् •चाखायते। चङ्घन्यते, पा ६, ४, ४३। चैङ्गिन्तः। चङ्गातः। णिच् खान-यति। प्रचीखनत्। (उ) खनित्वा, खाला। खातः, या ६,४,४२। खेयम्। खनिवम्। खननम्। खनि:। खनकः। **उद्-उत्पाटनम्। उन्मूलनम्। उच्च**ख्ने हचम, भ १४, ८५। उच्चाते नले-नाचियो तस्य, भ १४, इर। गिरि-सुदखनीत्, स १४, ४४। वङ्गानुत्-खाय तरसा, र ४, ३८। नि—रोप-णम्। स्थापनम्। प्रविद्यः। तंती भुवि निचखूतुः, भ ४, ३। विवादग्रङ्गस मतौ निचच्चे, स ३, ८। तत्र जयस्त-भाग् निचलान, र ४, २६। भुँजे निचखान सायकम्, र ३, ६६ । निच-खान दूरं वाणान् छजिन्या हृदयेषु, सा १७, ३१।

ख्य् (क्रस्व) भ्वा, प । १ हिंसा। २ गति:, वो । ख्रस्वति । चख्रस्व। ख्रस्विता ।

खर्ज — स्वा, प। १ पूजनम्। २ व्यथा। ३ सार्जनम्। ४ कण्डूयनम्। खर्जित। चखर्जे। खर्जिता। खर्जनम्। सर्जेः। खर्ज्युरः।

खद^९ — भ्वा, प। दन्दश्रुकक्रिया।

दंशन-हिंसनादि। दन्तकरणका-किया, दुर्गा। खर्दति। चिखरी। वरिता। खबैं—(कबैं) खा, प। गतिः। दपैः।

• खल्—खा, प। १ सच्चयः।

र चलनम्, वो। खलित खुलो धर्मात्।
खव्—(खच्) क्राा, प। भूतप्रादुर्भावः।
प्रतिकाल्लोत्पत्तः। सम्पास्तुत्पत्तः,
वो। र पविक्रोभावः, वो। लट् खीः
नाति, पा ६, १९, १८। खीनीतः।
खीनन्ति। हि खीनीहि। लिट् चखावः।
चखवतः। लुट् खविताः।
प्रखावीत्। खवितः।

खष्—(कष्) भ्वा, प। हिंसा।
खाद्—खाद, भ्वा, प। भचणम्।
बाद्—खाद्देत, खादित प्रक्षमांसम्,
हितो। लिट् चखाद। चखदतुः।
दन्तेरोष्ठं चखाद, स १८, ८०। लुट्
खादिता। लुट् खादिश्वति। लुङ् श्वः खादीत्। प्रखादिश्वम्। प्रखादिषुः।
तानखादीत्, स१५,३५। सन् चिखाः
दिषति। यङ् चाखायते। चाखात्ति।
णिच् खाद्यति। (न्हः) श्रचखादत्।
वैदेहीं खाद्यश्वासि राचसः, स १६,
२३। तां खिसः खादयदाजा, सनुः
८, ३०१। खादित्वा। खादितः। खाद्यम्।
खादनम्। खादकः। सां खादय स्मन्

खिट्—(किट्) स्वा, प। त्रासं।
भयोत्पादनम्। खिटति। चिखेट।
खिटिता। खेटति व्यान्नात्। व्यान्नो जनं
खेटति, दुर्गा। विनापराधमारस्थान् न
खेटति सगानसी, कवि १५५ ।

खिद्—तु, प। परिघातः।
ृखिद्, दि, क, द्या। दैन्यम्। दीनः
भावः। उपतसीक्षावः। चट् खिन्द्ति,
पा ७, १, ५६। खिद्यते। खमुखनिरभिकाषः खिद्यसे लोकहेतोः, गकु ५

१७। यस्य तटे सङ्गावितनी विदात, मा ४,१२। खिन्ते। खिन्दाते। खि न्दते। प्रखिन्दानः स्रतेजसा, भ ६,२७। खिदाते यो ने सत्येषु याचनेषु न खि-न्दति। खिद्यते तेषु यैर्द्रव्यं दीयमानं न ररहाते॥ कवि ६८। लिट, चिखेद। विविदे, भ १४, १०८। मुनुट् खेता। कृट् खेल्यति । ्•ते। लुङ् पखेलोत्। त्रखेताम्। ग्रहेत्सः। ग्रखितः। ग्रखि-साताम्। प्रस्तिसत। सन् चिखिसति। ०ते। यङ् चे खिद्यते। चे खेति णिच् खेदयति। प्रचीखिदत्। खिन्नः। खेदः। श्रावित्रं वाजिकुञ्जरम्, भ १७, १०। परि-णिच्, परिखंदितविस्यवीत्रधः (परिकृदित), भ १०, २५।

खु—खुङ् (उङ्) स्वा, या। यव्दः। खवते। चुखुवे। खोता। श्रखोष्ट। खुज्—खुजु (क्षुजु) स्वा, प्राः स्तेयः।

खोजित। त्रखोजीत्। खोजिता, खुता।

खुग्ड्—खुड़ि, खा, ग्रा। खोटनम्। खञ्जयापारः। खुग्डते। खुडि 'खुड'। चु, प। भेद:। ख्णडयति। खोड्यति, वी।

. खुर्—तु, प। १ छेदनम्। २ विलेखनम्, वो । खुरति । खोरिता । खुर:।

खुर्द (कुर्द्)। खेट—खेड—च्, प। श्रदन्तीः। भचणम्।

खेटयति 🔓 खेड्यति । 🔻 चिखेटत् । खेटयत्यरिवोगांच, कवि १५५।

खेल्—खेलृ (केलृ) सा, प। १ चलनम्। कम्पनम्। २ गति:।३ क्रोड़ा। खे-नति। तथाः कृते क्रणोऽखेनत्, इन्दोः

मचरी ४, १। खेबन्ति नित्यं खेनगन्ते च योषितः, कवि ६४। चिखेन। चिखेनुतुः। खेनिता। प्रखे-लीत्। णिच् खेलयति। (ऋ) चित्रः लत्। खेलितः। खेलनम्। निपीतकाल-कूटस्य हरस्येवाहिखेलनम्।

खेव्—(क्रेन्न) स्वा, था। सेवा।

खै—स्वा, पा १ खेर्धम्। २ हिंसा। ३ खननम्। ४ खेदः। खायति। चखौ । चखतुः । खाता । श्रखासोत् ।

खोट-खोड-चु, प। खेपणम्, वो । खोटयति,। खोडयति। च चुकोटत्। खोटृ (खोर्क्ट) भा प। गत्याचात:। खोटनम्। खोटति खड्डः, दुर्गा । संखोटति निरायधः, कवि २६०।

खोट-खोड-खोब-(खोर)।

ख्या—पदा, प। १ वयनम्। ै २ च्यातिः, वो । चट्च्याति । विड् व्यायात्। लङ् ग्रच्यात्। अयं माक धात्वमात्रविषयः, की १२०। निड्

दो तु चिन्नुङ: ख्याञादेशि तस्येव प्रयोगः। लिट् चर्यो। चर्ये। लुट् स्थाता। लुट् ख्यास्त्रति। ०ते। स्नागिष, स्वा वात्, खोवात्। खामोष्ट । नुङ् पखत्।

कर्माण, श्रख्यत, पा ३, १, ५२। खायते। प्रच्यायि, तेन सोऽच्यावि राघवस्य, भ १५, ८६। सन् चिस्या

सति। ०ते। यङ्चास्थायते। चा ख्याति। चास्थेति। णिच् स्यापयति। त्रविख्यपत्। स्थातः। स्थातिः। स्थेयः

व्यातव्यः। यसि—यभिष्या। शोमा णिच् 'ख्यापनम्। तेवां दोषानश

िख्याच्य, सनुः ८, २५२। पा - कथनम

नक् -, गीतगी १, २६ । खेला।

वर्णनम्। पाद्यन् वत्तमस्तै, स ३, २८। एपा—वर्णनम्। प्रत्या—निराकरणम्। उपेचा। एत्यान्यातः, शक्तु ६, ३२। व्या—व्याख्या। विवरणम्। इहान्वयमुखेनेव सर्वे व्याख्यायते मद्या, मह्नीनायः। प्र, वि—ख्यातः। मम्—संख्या। गणना। संपूर्वस्य ख्यातेः प्रयोगो निति न्यास्वारः, कौ १२०।

(ग)

गन्ध्—(घघ्) स्वा, प। इमनम्।
गन्—स्वा, प। १ मदनम्। इर्षः।
२ मद्दः। नद्गनि। निट्नगान।
जगनतः। गन्धीरं नगनुगैनाः, भ १४,
५। तुद्गनिता। तुङ् भगनीत्,
भगनीत्। चु, प। मद्दः। गानयि।
गन्ध—गनि (गुन्) स्वा, प। मद्दः।
गन्धिता। गन्धिता। गन्धितम्। गन्धा।
नेते सम्भनगन्धने।

गड्—खाः प । सेवनम् । च्रगम् । गडति । जगाड् । गडिता । च्रग्डीत्, च्रगाडीत् । णिच् गडयति । घटादिः । गडकः ।

गण-घटनः। चु, प। मंख्यानम्।
गणना। ज्ञानम्। गणयित। नामाचरं गणयः प्रज्ञ ६,८०। लिट् गणयामास, लीलाकमलपत्राणि गणयापास
पार्वती, ज ६, ८४। तां भिक्तमेशागायहित्तणाम्, र ५,२०। स्वमितावटलस्य गण्यताम्, र ८,७०। गणयित च
मे सूद्रहृद्यम्, प्रज्ञ ३, २१४। लुङ्
प्रजीगणत्, प्रजगणत्, पा ७,४,८०।
प्रजीगणदाग्रग्यं न वाक्यम्, भ २,५३।
स तान् नाजीगणत् सर्वान्, भ १५,५३।
स तान् नाजीगणत् पर्वान्, भ १५,५३।
भ, ४५। ०गणय्यः, पा ६, ४,५६।

सिद्धिं विगणय, र १, ८८। फार्नान-ज्यतिं विगणया, भा २, ३५। प्रव-प्रविज्ञा। प्रविगणितः।

गण्ड्—गड़ि, स्वा, प। गण्ड्यापारः।
गण्डकम्पनचुम्बनादि। गण्डित पांग्रना
कार्कम्पनचुम्बनादि। गण्डित कपोनः
पांग्रना। केचित्तु, गण्ड इति ग्रब्दस्य
व्युत्पस्यर्धमेवायं धातुमन्तंव्यो न विस्तान्यतं प्रयोगः, दुर्गा।

गदु—भ्वा, प। कथनम्।

बट् गदति, वैदान् गदति विसाष्टम्, कवि २६५। लिट् जगाद। जगदतुः। जगाद सधुरं वच:, स ७, ८५। लुट् गदिता। लुट् गदिष्यति। लुङ् प्रग-दीत्, घगादीत्। कर्माण, गदाते। अ-गादि, तेनागादि सः, भ ५, ३१। दत्यमी जगदे तया, भ ५, ५८। सन जिगदिषति। यङ् जागदाते। जागत्ति। णिच् गांदयति। प्रजीगदत्। तम्। गद्यम्। गदनम्। गदः। नि-वाधनम्। वर्णनम्। सूपालसिं इंनिज-गाद सिंह:, र २, २२। इति निगदित-वन्तं राघवस्तां जगाद, भ ३, ५६। प्रणिगदति, पा ८, ४, १७। प्रण्यगादी-त्तम्, भ ८, ८८। सारङ्गं कतिचित्र मञ्जगदिरे इति गणकतानित्यत्वात्, दुर्गी। निगद:। निगाद:।

गढ—घटन्तः । चु. प । मेघयव्दः, वो । गढयात मेघः । धजगदत् । । गन्ध्—(वस्त) चु. घा । घर्दनम् । गन्ध्यते । गन्धनम् । गृति-हिंसा-थादः नेष्वित रमानाथः । •

गम् गम्बु, खा, पा १ गमनम्। २ प्राप्ति:। ३ ज्ञानम्। सर्वे गत्यधीः प्राप्तप्रधी ज्ञानार्थास्य। सट् गच्छति, पा

७, ३, ७०। देवदत्तो यामं गच्छति। कालो गच्छति घीमताम्, हितो। गः • च्छति पुरः गरीरम्, श्रक्का १, २२८। लिट् जगाम । जन्मतुः, पा ६, ४, ८८। जगिमध, जगन्य। जगामासी वनाद्रा-वर्ण प्रति, स ५, ४। पञ्चादुसाख्यां सुसुखी जगाम, कु १, २६। तस्मिनः पत्ये न जगास हिंसम्, कु १, २७। बुट्गन्ता। बुट् भिमिष्यति, पा ७, २, ५६। लुङ् यगमत्। यगमताम्। स-च्मणं सागमत्, भ ४, ३०। सन् जिग-मिषति। यङ् (कौटिखे) जङ्गस्यते। जङ्गन्ति। णिच् गमयति। प्रजीगमत्। (यापनम्) वेबां गमयति, शकु ३, २१। गला। ं गरा, गरय, पा ६, ४, ३८। बतः, षा ६, ८, २०। रास्त्रिगैता सुञ्च थय्याम्, र ५, ६६। गतिः। गमनम्। गन्तुम्। गस्यम्। गन्तव्यः। गमनीयः। गच्छन्। गामुकः। गलरः। अच्छगत्य, पा १, ८, ६८ । त्रसङ्ख, पा १, ४, इष। भति—मतिक्रमः। व्यति च्यति-गच्छिन्ति, पा १, १, १५। अधि-प्राप्ति:। जाभ:। ज्ञानम्। ऋधिगत्य सु-त्तिम्, नै २,१। गुरोरनुजासधिगस्य मातः, र २, ६६ । उन्नायानिवगच्छनाः प्रद्रावैवेसुघासृताम् (जानन्त:), भ ७, ३७। अनु अनुसरणम्। सर्वे सन्धर-मनुजासुः, हितो। सृदङ्गधनिमन्व-गच्छत्, र १६, १३। जन्त:-प्रवेश:। षप-ऋषसर्णम्। दूरीभावः। व्ययः। तावी नापगतः। प्रातम्कलेनापनगाम रामः, भ ३, १६। व्यप-विनाधः। व्यवगमः । प्रसि-डपगमनम् । प्राप्तिः । अव - ज्ञानम्। निञ्चानं ग्राववान् रासं र्लं कार्यं नावगच्छिम्, स ५, ८१। द्राव-गम्य कथीकतं वपुः, कुः ४, १३। न

भवति मिडमा विना विपत्ते रवगमय विव प्रश्वतः पयोधिः, स १०, ६२। चा-चायसनस् । प्राप्तिः। चानस्। प्राजगाम तत्तीर्धे जलं पातुम्। प्रमङ्ग-वशसागता। धर्माणामागतागसम्, सा-रत। (चमार्या) चागमयस्य तावत् मा त्वरिष्ठा इत्यर्थः, की २४२। उपा-प्राप्तिः। परां तुष्टिसुपागता, भारत। प्रत्या-प्रत्यागमनम्। निर्जित्य प्रत्याः गच्छत्। समा—श्रागमनम्। सम-वायः। उद्-उद्गतिः। ग्राखपीत इवी-इतः, भारतः। प्रत्युद्-प्रत्युद्वतिः। स-कानार्थं पुरोगसनस्। प्रत्यद्वता पार्थिव-धर्मपद्भा, र २, २०। १, ४८। छप-स्त्रीकार:। सङ्गम:। प्राप्ति:। समीप-गसनम्। यं सनातनः पितरस्पागसत् खयम्, भ १,१। नोपगच्छेत् खिय-मात्तंबदर्धने, मनुः ४, ४०। 🕻 🖁 पश्युप— त्रङ्गीकारः। नि—ज्ञानम्। निर्— निर्गसः। निर्देशास रहणमातुः, भा रत। परि-प्राप्तिः। ज्ञानम्। वेष्ट-नम्। प्रथमपरिगतार्थः, र ७, ७१। प-प्रसानम्। प्रगमनीयम्। प्रति-प्रतिगमनम्। अवतु प्रतिगच्छामि ताः वत्, शकु १, २१८। वि—त्यागः। विग-तच्चरः, स है, दर। अहा च नी मा व्यममत्, मनुः ३, २५८। सम्—सङ्गः ति:। सङ्गमः। तन सङ्क्ति, या १, २, १८। बाधिव, सङ्गंभीष्ट, सङ्ग मीष्ट। जुङ्समगस्त । समगत, पा १, २, १३। सङ्क्क पौक्ति स्त्रेणं साम्, स ५, ८१। कपिना समगंत्रत राचसाः, भ ८,६। बधूवरी सङ्गमयाच्यार, र ७,२०। ं गस्त्—(कस्त्) स्ता, प। हिंसा। गतिः, वो । गस्वति । गर्-भा, ए। शब्दः। गर्जनम्।

लट् गजित, गर्जित वारिटपटली।
यत् प्रजानासुण्यं चैः पर्जन्योऽपि न
गर्जित। गर्जियन्ति कथन्नान्ये भिद्यमानास्तु तस्कराः॥ कित २२०। निट्
जगर्जे। जगर्जेतः। रामो जगर्जे, स
६, ३५। नुट् गर्जिता। स्टट् गर्जियति।
सुङ् भगर्जीत्। भगर्जिष्टाम्। भगजिष्ठाः, सुभाक्षणिऽगर्जीत्, स१५, २१।
सन् जिगर्जिषति। यङ् जागर्ज्यते।
जागित्ते। गर्जे, नु, प। प्रव्हः। गर्जेयति। गर्जेनम्। गर्जितम्। गर्जेन् हरिः
साम्यसि प्रेनकुन्ने, स२, ८।

गर्दु — स्वा, चु, वी, प। शब्दः।
गर्दित। गर्देयति। जगर्दे। गर्देभः।
गर्दे (— चु, प। श्वाकाङ्का। गर्द्वयति।
गर्वे (— (कर्वे) स्वा, प। गर्तिः।
गर्वे (— (कर्वे) स्वा, प। गर्वेः।

गर्वति, नीचो गर्वति सम्पदा, दुर्गा। सर्वो गर्वति विद्याभिः * * विद्याघन-सम्बद्धीऽपि यो न गर्वयते प्रभुः, कवि ७१। जगर्व। गर्विता। धगर्वीत्। गर्व—चु, धा। घदन्तः। मानः। दर्पः। धन्नेशिदः। गर्वयते। धन्मर्वतः। गर्वापयते धनेनीचः, दुर्गा। गर्वः। गर्वितः। गर्वी।

ार्ड् गल्इ भा । कुता।

निन्दा। गर्ही। लट् गर्हते। गल्हते।
न तथा गर्हते खानं स्थालं नापि गहित। गर्हथत्यस्यपेतार्थत्यागिनं स नरं
यथा॥ कवि १०८। प्रिप्त, गर्हते हःदयं स्त्रीणाम्, कवि ३३। लिट् जग्हें,
जगर्हें सचणानि सा, भ १४, ५८। लुट्
गर्हिता। लट्ट् गर्हिथते। लुङ् अगहिंष्ट। पगर्हिषाताम्। पगर्हिषत।
यन् जिगंहिषते। यङ् जागर्ह्यते।

जागड्हिं। गर्दं, जु, प। कुत्सा। गर्दं-यति। गर्द्देति, वो। गर्द्दितम्। गर्द्दे-णम्। गर्द्दो। वि—निन्दा। भृत्सेना। निषेधः। कुत्वा कमें विगर्द्दितम्, मनुः ११, २३३। भ ६, १२८। ब्रात्या ब्रार्थे-विगर्द्दिताः, मनुः २, ३८।

गल्-भा, प। १ अच्णम्।

२ चरणम्। ३ पतनम्। लट्गलति, खयं द्वाराकारा गस्ति जलधारा जुन-बयात्। सुषताद्यगनततः, स १७ -८७ । विट् जगालं। जगलंतुः। प्रतोदा जगलुः, भ १४,८८ । लुट् गलिता । लुङ् घगालीत्। घगालिष्टाम्। सन् जिग-लिपति। जागच्यते। जागल्ति। पिच गालयति। गल्, चु, आ। स्रवणम्। चरणम्। गालयते रत्तं चतस्य। दुर्गा। गिलतम्। गलनम्। विपचे गलिता-दरी, म ५, ४३। गलितवयसामिच्या कूणाम्, र ३, ७२। ग्रस्तियीवना का-मिनी, काव्यप्र। गालितसगढ घोदनः। श्रव-संगः। वलयमवागलत् । करा-भ्याम्, मा प, ३४। पर्थाः नि:सर्णम्। पर्णान्तपर्यागलदच्छविन्दः भ २, ४। निर्—निःसरणम्। निष्कर्षः। निर्शे-बिताब्बुगर्भः शरहनः, र ५, १७। इति निर्गलितोऽर्थः। वि-धांशः । मोच-नम्। विगन्तितवसनम्, गीतगो १३। विगलचानः, स ८, ४०। रतिबि-गलितबन्धे केयपाय, विक्रमीवैधी।

गरम्—स्वा, या। भार्छ्यम्।

प्रगरभता। गरभते। जगरभे। गर्मिता। प्रागमिप्रियतमं प्रजगरभे, मा १०, १८। द्यति हि नाम प्रगरभे, उत्तर १८२। द्याजी प्रगरभते दोभ्यां हिवां विषष्ट्यन् घटाः, कवि १५३।

गल्हे—(गर्ह्) खा, या। कुला। गवेष-धदन्तः। चु. प। सार्गेणम्।

बन्वेषणम्। बनुसन्धानम्। गवेष-यति, गवेषयति सत्क्रियाम्, कवि २४७। गवेषणा। गवेषितम्।

गह बदलः। च, प। गहनम्। दुर्वीधः। गँइयति शास्त्र जड्घीः,

गा-गाङ, भा, था। गतिः।

् चट् गाते। गाते। प्रादादिकोऽय-मिति इरदत्ताटयः। फलेतु न भेटः, को टट्। बहुवचने तु भेद एव। स्वा, गान्ते। ग्रदा, गाते। ए. गै। बिङ्गीत। गेयाताम्। नङ् त्रगात्। इ, त्रागे। बिट्जगे। जगिषे । ब्ट्गाता। खुट् गास्त्रते। प्राणिषि, गासीष्ट । जुङ् प-गास्त। अगामाताम्। अगासत। सन् जिगासते। यङ् जागायते। जागाति, जागिति। णिच् गापयति। अजीगपत्। गातः। हेर्नामान्यस्य स्थानस्य

📭 गात—(वर्ष) घटन्तः। चु, घा 🕦 विचूर्णनम्। ग्रेथित्यम्, वो। गात्रयते।

गाघ् – गाष्ट्र, भ्वा या। १ प्रतिष्ठा । २ लिप्सा वाञ्का। ३ ग्रन्थः । रचना।

लट् गाधते। गाधते नाथमन्यतः, कवि

रेह्द। श्रगावत ततो व्योम, भ द, १। बिट् जुगाचे। बुट् गाधिता। गाधि-तामे नभी भूय:, भ २२, २। ऌट् गाधि-खते। लुङ् अगाधिष्ट। अगाधिषा-नताम्। प्रगाविषत्। यजगाधत्। गाधनः। गाह्—गाह्न, खा, आ। विलोडनम्। ं प्रवेश:। प्राप्ति:। सेवा। लट्गाइते, गाइते शास्त्रमत्यधेम्, कवि २६८।

मनस्त में संगयमेव गाइते, कु ५,

8६। गाइन्तां मिष्या निपानसनि-लम्, प्रकु २, ४२। सिट् जगाई। जगा-हिषे, बघाचे। 'जगाहिष्ये, जगा-हिंदू, जञ्चाद्वे। जगनीं ग्राह दवान पगां जगाहे, भा १३, २४। जगाहे वां निशाचरः, भ ५, ८४। जगाहिरे सा-र्गीन्, भ २, ५४। सुट्गाडिता, गाढ़ा। लृट् नाडिम्बरी, घाणाते। पाणिवि, गाहिषीष्ट, घाचोष्ट । मुङ् प्रगाहिष्ट । षगान्नियाताम्। अगान्नियतः। अगार्दः। श्रवाचाताम्। श्रवाचतः। श्रमादाः। ग्रघाद्वम्। ग्रघाचि। सन् जिगाहिषते, निघाचते। यङ् जागाद्यते। जागादि। णिच् गाइयति। धनौगडत्। **चिलाः गाद्वा। गादः। तपस्तिगादा** तमसा नदी, र ८, ७२। अव-- भव-

भ ६, २८। अवगाडियसे दिमः, स ९६, ३८। वि—अवगाडनम्। निस्काः नस्। सानम्। प्रविशः। विसीडनम्। गतिः। विमाह्य तमसाम्, र १४, ७६। विगाहितं यासुनमञ्जु, स ३, ३८। प्रब्द्गुणसात्मनः पदं विसानन विगाह-सानो इतिः, र, १३, १। विगाहा-माना सरयू नीभिः, र १४, ३०। मम् विलोडनम्। भाक्रान्तिः। सम-गाहिष्ट चास्वरम्, स १५, ६८। गु—गुङ् (उङ्) स्वा, था। मन्दः।

गाइनम्। प्रवेश:। पूर्वापरी तोयानधी

वगाह्य, कु १,१। गिरिसवगाडावडी,

🌭 भव्यक्तभव्दः। गवते। जुगुवे। गोता। गोष्यते। प्रगोष्ट । जुजूवते । जोग्यते । जोगोति। गावयति। धजूगवत्। ज्ञ. पुतम्। गुवाकः।

गु-"गू" तु, प । सन्तत्वागः। पुरोषोत्सर्गः। गवति। जुर्गाव। जगु- विथ, जुगुथ। गुता। गुष्यति। अगु-वोत्। अगुताम्, पा ८, २, २७। अ-गुषु:। गू—गुवति। गुविता। अगुवोत्। • ता, गून:, को २४७। गूथम्।

गुज्—भा, तु, प। प्रब्दः। कूजनम्। गोजाता। जुगोज। गोजिता। धगी-जीत्। तु, गुजति। गुजिता। धगुजीत्। गुज्ज् —गुजि, भा, प। चय्यक्तप्रब्दः।

क्रैननम्। लट्गुद्धात। बिट्जुगुद्ध।
न षट्पदोऽसौ न जुगुद्ध बः कलम्,
भ र, १८। गुद्धा जुगुद्धः, भ १४, र।
लुट्गुद्धिता। लुङ्ग्रगुद्धोत्। गुद्धिन्
तम्। गुद्धनम्। गुद्धा।

गुड्—तु, प। १ रचणम्। २ व्याघातः। वो। गुड्ति। जुगोड्। गुड्ति। गुड्तिः। गुड्ः। गुड्कि।।

गुग्छ् – गुठि, चु, प्, वो। वेष्टनम्।

गुण्डयति। गुण्डति। अजुगुण्डत्। भव-भवगुण्डनम्। भावरणम्। शिरः-प्रच्छादनम्। भवगुण्डितः, मृनुः ४, ४८। रका २, ७१।

गुण्ड्—गुड़ि, चु, पः। १ वेष्टनम्। २ रचणम्। २ चूर्णीकरणम्। पेषणम्। गुण्डयति। गुण्डति। धनुगुण्डत्। गुण्डितः।

गुग-(कुग) ग्रदन्तः। चु, प।

१ प्रामन्त्रणम्। २ प्रभ्यासः । ३ ग्रुणनम्। पूरणम्। इन्तिः पूर्तिय गुणने
इत्यङ्गविदः। गुणयित। गुणितम्।
गुण प्रास्त्रे इने, गुणिनका इति महीनायः। सा २, ७५।

गुद्—(कुर्द्ध) भा, घा। क्रीड़ा. गोदते। जुगुदे। गोकिता। चगोदिष्ट। गुम्-भूग, घा, वो। क्रीड़ा। दि, प। पिवेष्टनम्। क्राा, प। रोषः। कोपः। लट् गोधते। गुध्यति। गुधाति, योऽसौ गुधाति तद्दुगं तत्त्त्रणादेव गुध्यति, कवि २६८। बिट् जुगोध। जुगुधे। लुट् गोधिता। लुट् गोधिष्यति। ०ते। लुङ् श्रगोधोत्। श्रगोधिष्ट। गुधित्वा, पा १, २, ७। गुधितम।

गुन्द्—(कुन्द्र) चु, प् िमिथोक्तिः। गुप्—गुपू, भूंा, प। रचणम्।

लट्गोपायति, पा ३,१,२८। गोपा-यति इरि: श्रियम्, भ १८,२३। लिट गोपायाञ्चकार, जुगोपा जुगुपतुः। जुगोपिय, जुगोप्य। जुगोपासान-मत्रस्तः, र १, २१ । २, ३। सुट गोप्ता, गोपिता। गोपायिता, पा ३, १, ३१ । जुट् गोपाति, गोविष्वति, गोपायि-चित्। चाधिषि, गुप्यात्। गोपायात्। लुङ् भगीपोत्। भगीपाम्। भगीपाः। श्रगोपीत्। श्रगोपिष्टाम्। श्रगोपिषु:। यगोपायीत्। यगोपाधिष्टाम्। यगो-पायिषु:। यानगोशीनाखेषु सः, भ ५, ३७। भगोपिष्टां पुरीं लङ्कामगौप्तां रचमां बलम्, भ १५, ११३। सन् जुगु-पति, जुगुपिषति, जुगीपिषति, जुगी-.पायिषति । यङ् जोगुप्यते, जोगी।स । **सिच् गोपयति। अजूगुपृत्। गुप्तः।** गोसा। गोपनम्। गोपायति चिति-मिमां चतुरस्थियोमां घीमानधमीवचनाच ज्गुप्तते यः। वित्तं न गोपयति यस्तु वनीयके भ्यो घीरो न गुष्यति सहत्यपि कार्येजाते॥ कवि ६। प, निर्—रच-षम्। प्रमोपयाञ्चकौर पुरम्, स 28, ८७। निर्जुगीय निशाचरान्, स १४,१०६। (गुप्—भा, था। गोपनम्। अपक्रवः।

निन्दा। जुगुपा। गुपेनिन्दायां प्रन्।

गोपने तु णिच्, कौ, १०१। अधर्माज्-जुगुप्सते, पा ३,१,५। जिट् जुगुप्सा-चक्री। सा जुगुप्साम्पुचक्रीऽस्न्, भ १८, ५८। लुट् जुगुप्सिता। लृट् जुगु-्प्सियते। लुङ् अजुगुप्सिष्ट। अजुगु-प्सिषाताम्। श्रज्ञगुप्सिषत। किं त्वं मामजुगुप्सिष्टाः, भ १४, १८। सन् जुगुप्सिषते, पा १, ३, ६२। (गोपने णिच् । गोपयर्ति । गोपते, वो । विं काञ्ची विजरासि कङ्गणभनत्कारञ्च किंगीपसे। राधाया वचनं नन्दान्तिकी गोपतो गोविन्दस्य, गीतगो ६, १२। निज्गोप हर्षमुद्तिम्, सा ६, ३८। इलादी परस्रोपदमपि। गोपनीयं कम-प्यर्थे द्योतियत्वा, दर्पेगः। भव क्रिया-पटं गुप्तं बुधेरिं न बुध्यते, विदग्ध-सुखमण्डनम्। नवनखपदसङ्गा गोप-यस्यंश्वतेन, दर्पेगा।

गुप्-दि, प। व्याकुत्तलम्।

गुष्यति । जुगोप । जुगुवतुः । गो-पिता । गोपिष्यति । षगुपत। षगुपताम् । गुप् (जुप्) चु, प । १ दीप्तिः । २ गोप-नम्, वो । गोपयति ।

गुफ् गुम्फ् गुन्फ्, तु, प । यन्यनम् ।
गुफ्ति। जुगोफ । गोफिता। गुम्फिता।
जुगुम्फ । गुम्फिता। अगुम्फीत् । गुम्फिला। गुम्फिला, पा १, २, २३।
गुम्फिलोव निरस्यन् तरङ्गान्, भ ७,१०५।
गुम्फितम् । गुम्फिनम् ।

गुर्—गुरी, तु, भा। उदासनम्।

चिवगोरणम्। ग्रुरते। युक्तेऽिष यो बोट्गुरते स्वप्नमीवत्, कवि ५१। जुगुरे। युरिता। गुरिखते। चगुरिष्टा (ई) मूर्णं:। गुरणम्। चप-पमुल्, चप- गारमपगारम्। घपगोरमपगोरम्, पा ६, १, ५३। घन—ताङ्नार्थे दग्हा-दौनामुद्यमनम्। ताङ्नम्। ब्राह्मणा-यावगूर्थे वधकाम्ययां, मनुः ४, १६५१ न दिनेऽवगुरेत्, मनुः ४, १६१। छद्— छत्चेपः। छदगुरिवत दुमान्, मः१५,३४।

गुद्° (कुद्°)।

गुर्वे, —गुर्वी, भा, प। उद्यमः। ताड़नाभिषायेण दण्डाटेक्डीं कर-णम्। गूर्वेति। जुगूर्वे। धगूर्वीत्। (ई) गूर्थः।

गुइ-गुइ, मा छ। संवर्णम्।

षाच्छादनम्। गोपनम्। प्रपङ्कवः। सट् गूहति। ०ते, पा ६,४,८८। गूहित् कूमं इवाङ्गानि, मनु: ७, १०५। सिट् जुगूह। जुगूहिय, जुगोठ। जुगुहै। जुगूहिषे, जुघुच। जुट् गूहिता, गाढा। लुट् गूडियति। •ते। घोस्तति। •ते। ग्रिचामि चिति कत्तरय गावेवनीक-साम्, स १६, ४१। भागिवि, गुह्यात्। ग्र्डिबोष्ट, घुचौष्ट। जुङ् चग्रुहोत्। त्रगृहिष्टाम्। त्रगृहिषुः। इड्माबेकाः। भव्यत्। भग्हिष्ट। भग्हिषाताम्। अगूहिषत। पत्ते, अगूढ, अधुत्तत, पा ७, २, ७३। अघुचाताम्। अघुचन्त। त्रगूहिष्वहि, प्रगुद्धहि, प्रवृत्तावि । त्रगृहीच्छायकेदिंगः, स १५, ८८। मा घुचः पत्युराकानम्, स ६, १६। में णि गुच्चते। चमूचि। सन् जुच्चति। ॰ते. पा ७, २, १२। यङ् जीगुह्मते। जोगोढि। णिच् गूहयति। अनुगुहत्। ग्रिता, गृद्धा । गृद्धः । गृह्यम्, गोह्यम् । ग्राम्। ग्रामीयम्। ग्रामानः स्रवाः हालाम्, भ ८,४५। उप-उपगहनम्।

मू—(गु) तु, प । सन्नत्वागः। गुक्ति ।
गूर्-गूरी, दि, घा । १ हिंना ।

२ गितः । गूर्थते । जुगूरे । गूरिता।
चगूरिष्ट । गूर, जु, चा । उद्यमः । गूरयते । भन्ने षु नोद्गूरयतेऽस्त्रमाइने । या
गूर्थते जीरिष यस्य सम्बुखम् ॥ किन
५१। (ई) गूर्षः । उद्- उत्हीपः । उद्यगूरे ग्रैलम्, भ १४, ५१। घन- चनगरपम् । ताड्नोर्द्यमः । चनगूर्थ त्वस्यतं
सहस्रमभिष्टत्य च नरकं प्रतिपद्यते, मनुः
११, २०६।

गूर्दं स्था, आ। वो। कीडा। गूर्दते। गूर्दं, चु, प। निकेतनम्। कीड़ा, वो। गूर्देयति।

ग्ट-भ्वा, प । सेचनम् ।

सर्गरति। जगार। जगतुः। गर्ता। गरिष्यति। ग्रियात्। प्रगार्धीत्। जिगी-र्षति। जेग्रीयते। जर्गत्तिं। गारयति। प्रजीगरत्।

ग्टन्-ग्रस्-ग्रिन, (गुज़) सा, प । श्रन्दः । गर्जीत । जगर्जे । गर्जिता । प्रगर्जीत् । ग्रस्नित । जग्रस्न । ग्रस्नेनम् ।

ग्टध्—ग्टधु, दि, प। भाकाङ्गा।

ग्रध्यति, न ग्रध्यति परद्रव्यम्, कवि २५४। जगर्षे। गर्षिता। गर्षियति। प्रग्छित्। जिगर्षिति। जरीग्रध्यते। जरीगर्षि। णिच् गर्षयति। (प्रज्ञभने) गर्षयते, पा १, ३, ६८। नैच गर्षयते प्रम्, कवि २५४। प्रच्छनः सोऽगर्षे- यत राचसान्, भ ८, ४३। (७) गर्हिला, ग्यहा। ग्रहः। गर्हनः। ग्रह्मः।

ग्रह्-ग्रह, स्वा, घा। १ गईणम्।

२ यहणम्। गर्हते। जग्रहे। जग्रहेते, जग्रहेते, जग्रहेते, जग्रहेते, जग्रहेते, जग्रहेते, जग्रहेते, गर्होते। गर्हिष्यते, घर्मते। गर्हिषोष्ट, घर्मोष्ट। भगर्हिष्ट, प्रमुखते। महिष्ट, प्रमुखते।

गृ—तु, प । भचणम् । ऋगः, प । शब्दः । स्तुति:। उत्ति:। लट् गिरति। गिलति, पा ८, २, २१। ग्रेगाति। ग्रेगीतः। ग्रणन्ति। भीताः प्राञ्जलयो ग्रणन्ति, गीता ११, २१। पौराणिका खेटितानि ग्टणन्ति, प्रनर्घ १८। ग्टणाति सुभग वचः, कवि २५८। लिट् जगार। जग-रतुः। जगरिष्ठ, जगनिष्ठ्य। लुट्गरिता, गिलता, गरीता। लुट्गरिष्यति, गरी-. चति । बाधिषि, गौर्थातः । तुङ् बगा-रीत्। घगारिष्टाम्। घगारिषुः। सन् जिगरिषति क्यादिः, जिगरिषति जिगी-षेति। पा ११४१। (सावगद्दीयां यङ्, पा १, १, २४।) जेगिखते, पा ८, २, २०। जागत्ति। णिच् गारयति। श्रजी-गरत्। गृ, "ग्रे" चु, चा। १ विज्ञानम्। विज्ञापनम्, वो। गारयते। कर्माण्, गीर्थ्यते। गीर्षः। गिलितो वक्तेनिति गिलः थव्दासिच्। गीर्णः। ऋषि—स्तुतिः। वर्णनम्। चव─चा, पा १, ३, ५१। भवगिरते। भवगिलते। भवगिरसाणाः विशाचा सांस्योणितम्, भ ८, ३०1 ग्रणातिस्ववपूर्वी न प्रयुच्यत इति भाष्यम्, को २५३। घनु, प्रति—प्रोकाइनम्, पा १, ४, ४१। ग्टणद्भ्योऽनुग्टबन्यन्थे, भ ८, ७७। छद्-वमनम्। खे इस्दिर्न,

[गणदर्पणः]

गत्य

y e आ १४,१। स तस्य शासनसुक्तगार, र १४, ५२। विचीपणाद्रागमिवीद्गिरन्ती चरगी, कुर, ३३। नि-निगरणम्। निजीगिस्पते, पा १, १, २४। सम्-प्रतिज्ञा। सङ्गिरते, पा १, ३, ५२। सङ्गि-रन्ते मोष्ठीषु स्वामिनी गुगान्, भ ७, ३१। वस्नि देशांस निवसंथिष्यम् रामं भूष: सङ्किरमीण प्रव, भ ३,८। गेप् गेष्ट (केष्ट) भवा, था। १ कम्पनम्। २ गति:। गेपते। (ऋ) प्रजिगेपत्। गेव्—(बिह्न) स्वा, प्रा। सेवा। गेव् गोव्, भा, शा। श्रन्विच्छा। प्रत्वेषणम्। प्रनुसन्धानम्, दुर्गा। मेषते। निगेषे। गेषिता। प्रगेषिष्ट। षाजिगेवत । गै—(कै) भ्वा, प। शब्द:। गानम्। कीत्तनम्। लट्गायति।

गायेयुः साम सामगाः, भ रट, १३० लिट् जगी। ब्रह्मपारायणं जगी, उत्तर-चरितम्। जगुः सरागम्, भ २, ४३। १३, २८। लुट् गाता। लृट् गास्रति। बाधिषि, गैयात्, पा ६, ४, ६७। लुङ् बगासीत्। प्रगासिष्टाम्। प्रगासिषु:। कर्मील, गीयते, पा ६, ४, ६६। गीय-ताम्, प्रकु १, १२। भगायि। सन् जिमा-सति। यङ् जेगीयते। जागीति, जागाति। णिच् गाययति। अजीगपत्। जयोदा-इरणं बाह्रोर्गापयामास विदरान्, र ४, ७८। गीर्ला। •गाय, पा ६, ४, ६८। गीतम्। गीतिः। गायकः। गायकः।

गैयोऽवं सास्ताम्। गाथकः। गानम्।

अनु—भन्दः। अनुजगुरय दिव्यं दुन्दुभि-

ध्वानम्, भा ३, ६०। प्रव—निन्दा।

छद् छज्ञैर्शनम्। छन्नीयमानं यशो

सनुः, ८, १८। परि-वीत्तनम् । सामातः यव्दो लोवीषु परिगीयते, भारत । प्र-गब्दः । ऋषम् कसगाद्धर्षः प्रशेतं सास गैरिव, भ ६, ८०। वि—गर्हा। निन्दा। कीतक विगोयसे शिवेन, नै १, ५८। सां प्रस्य कथमस्तु विगोतः, धनधे १५। गोम—घदन्तः। चु, प। सेवनम्।

वनदेवताभिः, र २, १२। उद्रास्त्रता

विवस्तायाम्, कु १, ८। उप—ग्रदः।

उपगीयमाना श्रमरैवनराजयः, भारत।

सङ्गत्त्वलेकपगीतवने, कन्दीमञ्जरी २२,२।

नि-पाठ:। श्वतयो निगमेषु निगीताः,

गीमयति स्थानम्। अञ्चगीमत्। गोष्ट्—स्वा, पा। सङ्घातः। रागीकरणम्। गोष्टते धान्धं सीकः। ग्रथ्—ग्रन्थ्—ग्राध, भ्वा, घा॥ १ की टिल्यम्। बक्रीभावः। २ कुटिली

वासुः। जयस्ये। यस्यिता। ययस्यिष्ट। 'भ्रथते"। • ग्रन्य् — क्राः, प । सन्दर्भः । रचना ।

करणम्। प्रन्यते काष्ठं, ग्रन्यते सत

यन्यनम्। चट् म्याति सामाम्। यथोतः। यथुन्ति। काचं सणिं काचन मेकस्त्रे प्रयून्ति स्दाः। निङ्ग्रशै यात्। लङ् अग्रयात्। अग्रयोताम्।

अवयुन्। यसलोकसिवाग्रयादा समैदते, म १७, ६८। सिट् जग्रन्य। जग्रहतु, जग्रस्तु:। ग्रेथतु:, को १६७। तुर् यन्यिता। लुट् यन्यिषाति। पाणिषि,

यथात्। लुङ् घयस्योत्। सन् जिपस् षति। युङ् जायव्यते। जायव्या णिच् ब्रत्ययति। ब्रत्य (श्रत्य) हु यस—प्रमु, स्वा था। भचणम्।
चालमणम्। चट् प्रसते, यावती
प्रसते यासान्, मतुः ३, ११३१। हिमांधमाध्य ससते, मा २। ४८। जिट्
लयसे, अपसे कालरात्नीव वातरान्, म
१४, ४१। जृट् यसिष्यते। लुङ् प्रयसिष्ट्। सन् (लयसिष्ते। जायस्यते।
जापस्ति। णिन् यासयति। यस, च,
प। १ प्रचणम्। २ यासः, वो। प्रासयति।
यसति, यससि तव सुखेन्दुं पूर्णचन्द्रं
विद्याय। ग्वस्, ग्वसते। (७) यसित्वा,
पस्ता। यस्तः। रोगचन्द्रः विषद्यस्तः।
यासः। विग्डयः। चिम—चालमणम्।
सम्—विनायः। संग्रस्यतेऽसौ पुरुषाविम्नानः भ १२,४।

यह्—क्रा, छ। उपादानम्। यहणम्। स्त्रीकारः। धारणम्। माप्तिः। प्रवर्णनम्। प्राययः। लट्टै स्टक्काति, प्रदर्भरक्षी स्टक्कीते। लिङ् स्टक्कीयात्,

रुह्हीत्। न नामापि रुह्हीयात् पत्वी फेते परस्य, सनु: ५,१,५३। सरदौद्रं न ग्रह्मीयात्। न चेत् स सम ग्रह्मी-यादनः, भारत। हि ग्टहाण्। ग्टहाण् गस्तम्, र २, ५१। लङ् ग्रम्ट्रहात्। घरहोताम्। घरहत्। घरहोत्। पाग्रहात् तं मत्यां पाणिना, भारत। बिट् जगाह। जगहिन। जगही। ज्याद केंग्रेषु तम्, भारत। तपसी सूलमाचारं जयहः, रं, १९०। लुट् यहौता, पा ७,२,३७। लुट् यहीष्यति। ॰ते। आधिष, यञ्चात्। यहीषीष्ट। लुङ् पग्रहीत्, पा ७, २, ५ । अप्रही-ष्टाम्। घग्रहीषुः। घग्रहीष्ट। घग्रही-षाम्। प्रयहीषतः ताभ्यो बिलमय-होत्, र १, १८। अभें धृतराष्ट्राद्यहीत् सा, भारत। प्राणानग्रहीहिवास (निः ग्टडीतवान्), भ ८, ८। प्रायुरयहीत्, भ १५, ६३। कर्भीषा, ग्रह्मते। जग्रहे। .यहीता, याहिता। यहीव्यते, याहि-व्यते । यहीषोष्ट, याहिषोष्ट । अयाहि। श्रमहोषत, श्रमाहिषत, पा 🚛 🕏 ६२। नेववज्ञविकारैय ग्रह्मतेऽन्तर्गतं मनः, मनः, ८, २६। जग्रहाते ती उच्चा, भ ६, ४४। सन् निष्चति। •ते, पा ७, २, १२। १, २, ८। यङ् नरीग्टहाते, पा ६, १, १६। जागाठि। (जरीगढिं जरीग्रहीत इति मेचित्) नाग्रदः। जरीग्रद इति कश्चित्। शिच याच्यति। अनियहत् अनियहत्तं जनको धनुस्तत्, भ २, ४२ 🔭 अयाचि-तारं न सुतां याइयितुः अभाका, कु रु ५३। इदं शास्त्रं मां याच्यामासः सनः १, १५। याइयिलाइमातानं तती दम्या च तां पुरीम्, भारत । ग्रहीला । •ग्रहा। ग्रहीत:। यह:। यहणमा

प्रतिग्रज्जीयात् मनुः १%

्यदीतुम्। यदीतव्यः। याद्यः। यदी-सवंत: ता। प्राही। प्राहकः। रहह्न्। पाणि-प्राणियहणम्। परिणयः। पाणिं ग्ट-ह्यातुम, चर्ग्डो। श्रनेन पाणी विधि-वद् ग्रहीते, र ६, ६३। पाद—पाद-ग्रहणम्। प्रभिवादनम्। तयोर्जयः । यादान् राजा राष्ट्री च, र १, ५८। श्रति - श्रतिक्रस्य, यहणम्। चारिव्रतीः उतिरुद्धते, पा ५, ४, ४६। **भनु—अनु** ग्रहः। सद्दालानीऽनुस्ह्वन्ति भजमा-नानरीनपि, सा २, १०। कुटुस्बिनीम-बुग्रह्मोष्व निवापदत्तिभिः, र ८, ८७। अव-अनादर:। निग्रह:। गमदानव-राह्य साध्यः, सा ५, ४८। अवरहा ग्रदम्, पा ३, १, ११८। अवग्राषः। खनग्रहः। प्रभि-प्रपिचकीर्षा। कलः इ। हानम्। उद्-उद्यमः। शक्तिस्द-बहीत, स १५, ५२। यिन्, उपन्या-सः। प्रास्तं यत्तवीद्याद्यते पुरः, सा ूर, ७५। सीजियहः सुनीतानि, स १५, २०। ७५-परियहः। प्रव्यवदा-यिनं प्रमदेव हदपति नेच्छत्यपग्रहीतुं बच्ची:, हितो। चिच्, डपहार:। उप-बाह्य:। नि-निवह:। पोड़नम्। ग्र-हाण चापं निग्टहाण ताड्काम्, प्रनर्ध ४५। ्र निग्रहीतधेतुः सिंहः, र २, ३३। चम्यासनिग्टहीतं मनः, र १०, २२। राजां यशांसि निजिष्टचियायम्, भ ३, ३०। परि-परिग्रहः। ग्रादानम्। ्रगमनम्। म्बोचिति । जुम्बोच । म्बोः खोकार:। खपुरमगात् परिग्टह्य राम-विता। घरलुवत्, घरलोचीत्, पा ३, आन्ताम्, स ४, १०६। ज्ञानेन परि-१, ५८। बह्ननासम्बुचत् प्राचानका ग्रह्म तान्, अनु: २, १५१। प्र-प्रकर्षेण चौच रणे यमः, अ१५, ३०। (छ) स्ती ग्रहणम्। बाहुं प्रश्टह्याभ्यद्वत, भा-चिला, ग्लुका। ग्लुकाः। रत। प्रग्रहान्तासभीषवः, शक्तु १, ३०। रतुष्-रतुन्चु, भ्वा, प। गतिः। प्रति-प्रतिग्रहः। स्त्रीकारः। सामः।

प्रत्यत्रद्वीष्टां तावासनादि, स २, १६।

विधिवत् प्रतिग्रह्म क्वाम्, मनुः ८, ७२। 'तथेति प्रतित्रग्राह गुरोः रादेशम्,र१,८३। प्रतिजयाच् । काः लिङ्गस्तमस्त्रः, र ४, ४२ । प्रतिग्रहीतं ब्राह्मणवच:, श्रव, १, ४०। वि—िव बद्धः। सम्पृद्धारः। यदा विरुद्धाति तदा इतं यशः, भा १४, २४। विस्न नस्चिद्या, सा १, ५१। यत्कते । न व्ययस्त्रीम, भ १७, २३। बन्धुना वि ग्रहीत:, भ ६, ८६। व्यक्तिष्टचत् सु रान्, भ १७, ३८। सम्-संग्रहः। ग्रह्—ग्रह, चु, प, वो। ग्रहणम्। याइयति। यहति। षयं वैद्। पही ता। यादा। भयहीत्। भ्रम्नाचीत्। ग्बह, ग्बाइयति । ग्बहति । अम्बहीत। षघुाचीत्। ्याइयते इत्येके। ग्राम—षदन्तः। चु, प। श्रामन्त्रणम्। षाभाषणम् । ग्रामयति । षज्ञग्रामत्। युच्-युचु, भ्वा, प। १ स्तेयकारणम्। र गमनम्, वो। ग्रोचित । जुगोच। ग्रोचिता। अयुचत्, अयोचीत्, पाः, १, ५८। (७) ग्रोचित्वा, गुज्ञा। युजः। ग्नस्-(यस्) भ्वा, था। भचयम्। क्तइ—(ग्रह) भ्वा, था, वी गर्रवात्। ग्लहते। ग्लह, चु, प, वो। प्राटानम्। म्बुच्-म्बुचु (गुचु) स्वा, प । १ चीर्थम्।

ग्लुचित । जुग्लुच । ग्लुच्चिता । प्रमु

चत् प्रम्लुचीत्, पा १, ३, ५८। पन

घट

नासिक्रलोपाभावमिक्कृन्ति। प्रम्बुच्चदिति प्रदः पः । ग्नु चित्वा, ग्नु क्वा।

क्वे प्—क्वे पृ, भ्वा, भा। दैन्यम्। ग्लेष्ट (बेष्ट) स्वा, श्रा। १ कम्पनम्। २ गति:। ग्लोपते। (ऋ) अजिम्लोपत्। **ग्वेपितः।** । ३३ व २००७ •

म्बोव्—म्बोह (केह) स्वा, था। सेवा। ग्बे वते। जिग्बेव। (ऋ) प्रजिग्बेवत्। म्बोष्—म्बोषु (गेषु), भ्रा, भा।

षन्वेषणम्। षनुबन्धानम्, दुर्गा। ग्बोषते, ग्बोषते यः सतां मार्गिमिति श्रलायुधः।

ग्ले - भा, प। इर्षवायः। धातुत्तयः। क्तमः। चट् ग्वायति, न हृष्यति न ग्लायति, मनु: २, ८८। लिट् जग्लौ। जंग्बतुः। लुट्ग्बाता। ऌट्ग्बास्वति। षाशिषि, ग्लेयात्, ग्लायात्, पा ६, ४, ६८। लुङ् अग्लासीत्। अग्लासिष्टाम्। अग्लासिषु:। सन् जिग्लासित। यङ् जागायते। जाग्लेति, जागाति। णिच्, (चनुप्रसर्गेस्य) गुापयति, गुपयति। ग्लपमति कुमुद्दतीं दिवस:। यकु। (सोप्रसगंस्य) प्रग्लापयति। अजिगुपो वैराणि, भ १५ १८। गुपितः। ग्लानः। मासूः। गार्निः। 😅 🗆 🖂 🖂

(目)

ा घघ्—घग्घ्—गग्घ्—भा, प। इसनम्। घवति। घग्वति। गग्-घति, वो।

घट्-भा, था। चेष्टा। यतः। लट् घटते। नानभीष्टे घटामहे, भ २०, २४। घटेत सन्यादिषु गुम्रेषु, स १२, २६। तथापि, पुंविशेषलाइ घटतेऽस्य नियन्तृता, पचदशी ६, १०६। बिट् जघटे, जघटे तुरंगाध्वरेष यष्ट्रम्, भ २२, ३१। लुट् घटिता। स्टर् घटि-थते। न घटिये जीवितुन्, भ १६, २२। लुङ् अघटिष्ट,। अघटिषाताम्। षघटिषत। तेन समं योद्रमघटिष्ट, भ १५, ७०। सन् जिघटिषते। यङ् जाघ-वाते। जावहि। बिच् घटयति, पा ६, ४,८२। अजीघटत्। कर्मणि, घट् यिता, घटिता, घाटिता। अघटि, भवाटि। अजीबटत। (निबोगः) मा वतं घटयति, भ (०,०३) (विधानम्) तद् घटयस्त, भ १२, ५। (योगः) द्वदयं तस्य घटयन्तीदमन्नवीत्, भारतः। गाताचि गातेघेटयन्, स ११, ११। यनेन भेमी घटियायता, ने १, ४६। घटय जवनमिषधानम्। घटय भुज-बन्धनम्। घटंय जघने काञ्चोम्, गोतगो ५, १३, १०। ३, १३, २५। भन्यथा घटियामि, शकु। घटित:। काष्ठ-घटितवैतातः, हितो। घटनम्। घटना। घटा। घटकः। उत्कर्छा घडमान-षट्पदघटा, दपंष:। प्र—को विम्ब-जनीनेषु कर्मेषु प्रावटिष्यत, भ २१, प्रजघटे युद्धम्, म १४, ७०। वि—विञ्लोषः। भेदः। विज्ञघटे ग्रेलैः, भ १४, ६६। मन्त्रिणा पृथिवीपाल वित्रं विघटितं कवित्। कः संस्थातु-मोखरः, हिती। दृष्ट्रैव यं विघटते कोपा-चेपी सगीटगाम्। विघाटयति चास्कोटे वैरिणां करिणां घटा॥ कवि २००। सम्—संघटनम्। योगः।

घट्-(कुप) चु, प। दीप्तः।

ं घट, चु, प। १० संघातः। योजना। २ वर्षः। चाटयति कपाटं दारि जनः, दुर्गी। उद्—उद्दाटनम्। सञ्जूषां यन्त्रे ब्हाटयामास । दारसुद्धाटयासि, भारत। कार्यमुद्दाटितं कापि मध्ये

विघटते, हितो। कमलवनोह्याटनं कुर्वते ये। प्रविघाटयिता समुतातन् इत्दिखः वमनाक्रानिव, भार, १६।

्र वह् भा, या। चलनम्। ा घट्टी। जघटे । घटिता। अघटिष्ट। श्चविद्याताम्। श्रवद्विषत्। घटः, चुः, पा चूलनम् घड्यति, घड्यति मेघी वायुनाः दुर्गा। गुष्डाः वरघटिताः, भ १८, २० विष्टः। आ-अप्राचातः। याच-इयामास । प्राचाङ्गिसस्य तूषी, भा १७, ३८। प्राघटनया नमस्ततः, सा १,११। जन्मविघातः। प्रतिक्रमः। उद्दृते न कस्यापि धर्मम्। उद्दृश्यति गोष्ठोषु सर्वेषामेत्र यो गुणान्। कवि १६५। वि—म्निभिघातः। हारं विघ-ह्यन्, भारत। तदीर्यमातङ्गघटावि-घड़ितीः, भार, ६४। सम्-सङ्घेंः। विश्वयं सङ्ख्यबङ्गदसङ्गदेन, र ६, ७३।

ः वण्-(ष्टणुः), तुः, छ । दौप्तिः । - चन्छ्—घटि (क्रुप) चु, प। दीप्ति:। च च एट यति । च एट ति । (इ) च एट उति । ्र धस्ब्— (कस्ब्), भा, प्राप्तिस्य । िगतिः, वो ।

घर्वे — (कर्वे) भा, प्रागितः । घर्वति । र्घष — घृषि, (घृषि), भ्रा, श्रा। बलकुरणम्। चरणम्, वो। घंषते। वस् — वस्ल, भा, प। भचणम्।

ब्रयं न सार्वितिकः, को ७५। **लट**् घसति। लोट, घसतु। लिङ्घसेत्। लङ् अध्वसत्। ' लिटि अस्याप्रयोगः। तुत्र (घर) जघा सं, पा २, ४, ४०। खुट् घस्ता। खृट् घत्स्वति, पा ७, ४, ४८। बृङ् अवसात्। पात्रिषि, ब्रस्याप्रयोगः, को ७६। जुङ् ब्रह्मत्, पा ३, १, ५ ४ । घसारः, पा ३,२,१६०।

घंस—घसि, वो। भा, था। • चरणम्। घंसते। श्रयं केश्वित्र मन्धते, दुर्गी।

घुर्

विस्—वुस्—इस्—विगि,

घुणि, घृणि। भूा, था। युहणम्। विस्तते। जिविस्ते। घुस्तते। जुवुस्ते। घुसते। नुम् टुलच्च, कौ ५८। घुसते न परद्रव्यम्, कवि ३३। जष्टस्ये। घु—घुङ् (डङ्) भ्वा, प्रा। ग्रब्दः।

घवते।

घुट्-भा, शा। १ परिवर्त्तनम्। गतवतः प्रत्यागमनम्। २ विनिस्यः, वो। तु, प। प्रतिधात:। सट्घोटते। घुटति। सिट् जुघोट। ज्ञुघुटिय। जुघुटे। सुट् घोटिता। सृट् घोटि-यते। लुङ् अघुटत्। अधोटिष्ट्। तुः घुटिता। घुटिष्यति। अघुटीत्। घोटकः। यस्य व्याघीटते दण्डो नास्ततार्थः सुत-यन। व्याघुटन्ति विवचाय यत् सम्मुखः स्प्रागताः। कवि १४६।

घुडू-तु, प, वो। व्याघातः। ्घुडति । जुघोड़ । घुडिता । यघुड़ोत्। ्घुण् स्वा, या। तु, प्र। स्त्रसणम्। चोगते। जुवुगे। घोणिता। अघो-णिष्ट । घुणति। जुघोष। घोषिता। श्रघोणीत्।

घुस्—घुषि (घिषि) खा, श्रा। ग्रहणम्। घुषाते। जुघुषाः। घुषिता। ्षाः घुर्-तु, ष । १ भीमार्थः।

भगानकरसनिमित्तीभाव:। रध्वनि:। ३ प्रात्तिव्यनिः। घुरति व्याघः (सन्-ष्याणां भयहेतुर्भवति, दुर्गा) जुघीर। घोरिता। श्रघोरीत्, श्रघोरीच महा-घोरम्, सं१५, ८८। जुधु द्वीरम्, स

१८, ४०। बीर्स।

म्रुष्— म्रुषिर्, स्वा, प। १ विभव्दनम्। प्रतिचानम्। २ अब्दः। ३ वधः, वी। घोषति। नावद्यं घोषति दारि यस्य का श्विदुपद्रवम्। घोषयन्ति पुनः सर्वे दोघंमार्युयंदास्त्रितः॥ वावि १४१। ्र जुघुषतुः। 😘 घोषिता। सोषिष्यति। (ईर्) अघुषत्। अघो-षोत्। घुषिर्—चु, प। १ स्तुतिः। २ विशब्दनम्। कथनम्। श्राविस्करः णम्। नानाग्रव्हकरणम्, दुर्गा। घो-षणा। घोषयति। घोषति। अघुषत्, षघोषोत्। खन्तस्य तु, पजूघुषत्। दुषान्त इति घुष्यताम्, यकु ६, १८४। चमूरस्य जयमघोषयत्, र ८, १०। द्रति घोषयतीव डिग्डिमः, हितो। ता, घुषितं वाकाम् (अञ्देन प्रकटीक-ताभिप्रायम्) घुष्टा रज्जुः । घुष्टो पादौ, षा ७, २, २३। ज्याचुष्टकठिनाङ्गुष्ठः, भ, ५, ५७। श्रा—घोष्णा। सततक्रान्द-नम्। ग्राङ्पूर्वी घुषिः - क्रन्दमातत्ये दृत्याहुः, की १७८। आघोषयति। षाघोषति शोकार्तः (संततं क्रान्दति), यभिषेच्ये सुतमित्याघोषयन् दुगी। मूमिपति:, भ ३, २। उद्-उचै-प्रोद्-निनादनम्। ऋदिनी प्रोद्घुष्टा क्रोइ कुर्रः, भारत। वि-घोषणा। विषुष्य इतं चौरे:, मनु: ८, २, ३३। सम् - गब्दः। राम पंघुषितं नैतत्, भ ५, ६५। संघुषितं संघुष्टं बाक्यम्। संघुषिती संघुष्टी पादी, पा 0, 2, 251

घुंष्—घुषि, घसि, घसि, भ्वा, घा। कान्तिकरणम्। घलक्षरणम्। घुंषते, घुंषते चन्दनी गात्रम्, दुर्गा। घंसते, की ७३। ष्टंसते इति प्रदीपः। वृर्- वृरी, दि, था। १ हिंगां
२ वशे हानिः। वृर्थते। जुवृरे। (ई) वृर्थः।
वृर्षे — (घुष) भा, था। तु, प, छ, वो।
स्माणम्। वृर्षेति। •ते। नीर्धुषंते
वपलेव स्त्री। वायुर्वृषंते भीमः। वृर्षेन्तोव च मे मनः, भारत । वृर्षेते प्रात्ववस्पापि यद्गुणश्रवण्यविष्टरः। मित्रोदासीनभृतानां वृर्षेतीति किसद्भुतम्॥
कावि २३६। किट् जुवृष्णे। •पें।
जलिधर्जुंषूर्णे, राघवधाण्डवीयम्। तुट्
वृष्णेता। त्हट् वृष्णेथित। •ते। तुङ्
प्रवृषीता। त्हट् वृष्णेथित। •ते। तुङ्
प्रवृषीता। त्हट् वृष्णेथित। च्र्योन्नाः। सूर्णेन्तो। सूर्णेन्ताः। वृर्षेती, पूर्णेन्तो। सूर्णेन्ताः। वृर्षेताः। वृर्षेताः। सूर्णेनम्। सा— चक्रावद् भ्रमणम्। स्राजुवृर्षेष्टरिराचसाः,
भ १४, ७७।

ष्ट—(ग्ट), भ्वा, प। सेचनम्।
घरति। जघार। घर्ता। ष्ट्र, पु, प।
१ सेचन्म्। २ भाष्ट्यादनम्। १ मस्तणम्। ४ स्त्रिंवणम्। घारयति। स्त्रिंभसेतः। मस्तिष्कास्त्रवस्तिभवारितसद्धामांसाहतीर्जुह्नताम्, भ्वीभवन्द्रोदयम्।
घतम्। घृणा। घर्मः।

ष्टण्—ष्टणु, तना, छ। दीप्तिः। ज्याति। घणुते। (घणोति। घणुते)। घणु, घणोति। घणुते। घणु, दो। घणोति। घणुते। (७) घणित्वा, घता। धतः। घणिः।

ष्टम् — प्टर्णि (घणि), भ्वा, स्त्रा। यहणम्।

ष्ट्रष्— पृषु, भ्वा, प्। संघषेः।

घषंगम्। हिंसा क्रिलेने। घषंति

चन्दनं लोकः, दुर्मा। जघषं। जघषतः।

घषिता। अघषीत्। (उ) घषिता,

घषा। घषः। घषंगम्। घषं घषं स्थ
जित न पुन्यन्दनं चार्यस्थः। उट—

जह विषयम्। चूडामणिभिषद्षष्टपाद-पीठं महीचिताम्, र १७, १८। घोर्—घोक्ट, स्वा, प। गतिचातुर्यम्। घोरति। घोर्चः, "घोरति"।

्राह्म ज्ञान्या, प। श्राष्ट्राणम्। ्रमुखग्रहगम्। जूट् जिघ्नति, पा ७,३, ७८। दोपनिवाणगन्यञ्चान जिल्ला गतायुषः, स्मृतिः । ऽ लिट् जन्नो । जन्नतुः निप्रय, नप्राय। निप्रयः। नुट् प्राता। लुट् मार्खात। प्राणिषि, प्रायात्, प्रेयात्, ्षा ६, ४, ६८। लुङ् श्रघात्, श्रघासीत्, पा २, ४, ७८। श्रम्नाताम्, श्रम्नासिष्टाम्। बाघुः, बाबासिषुः। सन् जिल्लासित। यङ् जेबीयते, पा ७, ४, ३१। जाब्रेति। नाघाति। नाघीतः। गिंच् घापयति। श्र_{िष्ठपत्}, श्रुजिधियत्, पा ७, ४६। श्रजिप्रपतन्यानीषधीः, स १५, १०८। क्षा, ब्राणम्, ब्रातम्, पा ८,०,२, ५६। सनोर्श्जघः सपत्रोजनः, कार्वेप्रकाशः। द्यव, द्या, उप-द्याघ्राणम्। प्रवित्रवेच तान् पिण्डान्, सनु: ३, २१८। प्राघ्राय गन्धम्, रत्ना ३, ५७। भाषायि गन्धवह-स्तेन, भ २, १०। श्राजष्ठुसूँ धिं बालान् चुचुम्बुम, भ १४, १२। त्रामोदसुप-निवन्ती, र १, ४४। मूर्वनि तसुप-

(E) =

जन्नो, र १३, ७०।

डु—डुङ् (उङ्), भा, भा। भव्दः। बट् डवते । बिट् जुङ्वे। बुट् डोता। बुड् भड़्रेष्टा सन् जुङ्क्वते, पा। ०, ४, ६२। यङ् जोङ्क्यते.। (च)

चक्—भा, बा, ड, वो । १ त्रिः । २ प्रतिघातः । चकति । • ते । बिट्

चवाका। चेत्री। लुट् चिकता। लुड् घच-किष्ट। णिच् (त्रुप्ती) चक्रवति, घटादि:। (प्रतिघाते) चाक्रयति, की ८३। क्र, चिक्रतम्। चक्रीरः।

चकाम् चकास, घटा, प। दीप्ति:।

लट् चकास्ति। चकास्तः। चकासित, अमरास्रकासित, भ १८, २४१
विराय तिस्मन् कुर्वस्रकासित, भा १,
१७। किन्न् चकास्यात्। हि चकािष्ठ।
चकान्नीति केचित्। लन्न् अचकात्।
प्रवकार्द्, पा ८, २, ०४। लिट् चकािस्रकार्द, पा ८, २, ०४। लिट् चकािस्रकार्द, भ ३, ३०। लुट् चकािस्रका। लुट् चकािस्रका। लुट् चकािस्रका। लुट् चकािस्रका। लुट् चकािसर्वा। स्वकािसर्वा। स्वकािसर्वा। स्वकािसर्वा। स्वकािसर्वा। स्वचकास्रवा। स्वचकास्रवा। पा ०, ४,
२। अचचकासत्, वो। तं दोप्तिवितानकेन चकास्यामीस्तुः, मा १, ६। चकाः
स्तं चार् चम्रूचमंगा, मा १, ८।

चर्क — चिक — चुक — चु, प।

व्ययनम्। चक्रयति। चिक्रयति। चुक्रयति।

चस, चित्र , पदा, या। १ वायनम्।
२ दर्भनेम्। लट् चष्टे। चसाते।
चस्ते। चते। चरुद्दे। सिन्ध चसीत।
तर् भचष्ट। प्रचष्ठाः। प्रचरुद्दम्। सिट्
चर्त्यो, चक्यो, पा२, ४, ५५। चत्रे,
चक्यो, चच्चे। लुट् ख्याता,
क्याता, पा२, ४, ५४। चृट् ख्यात्म,
व्याता, पा२, ४, ५४। लृट् ख्यात्म,
व्याता, व्यायात्, क्यायात्, क्योयात्।
लुड् शख्यत्, धक्यासीत्। प्रख्यताम्,
प्रक्यासिष्टाम्। प्रख्यन्, प्रक्यामिषुः।
प्रख्यत्, धक्यास्ता कर्मण्, ख्यायते,
क्यायते। या—क्यनम्। जन्मणाः

चल्ला, स ६, २०। जगतामग्रमे स्थामाचविति भा १२, २५। युवमाचचाथाम्, स ६, ८२। न चाचचीत कस्यचित्, मनुः ४, ५८। प्रत्या—प्रत्याः
स्थानम्। अस्तीकारः। युक्पुत्रीति
क्षत्वाऽष्टं प्रत्याचि न दोषतः, भारतः।
व्या—व्यास्था। विवरणम्। मेधातिथिगोविन्दराजी तु इति व्याचचाते, मनुटीका १०, ११३। प्र, परि—कीर्तःनम्। कथनम्। तं देगं ब्रह्मावर्तं प्रचचते, मनुः २, १९। इरस्थपूर्वं किष्पुः
प्रचते, मा १, ४२। सम्—वर्जनम्।
स्रिमवर्थे क्षाङ्दिमो न स्थात्। सस्वचिष्ट। सञ्चा दुर्जनाः। विचचणः। न्यचसो राचसा इत्यादयोऽपि।

चघ्—स्वा, प। बधः, वो। चन्नोति। स्रयं वैदिक इति कश्चित्। चञ्च —चन्चु, स्वा, प। गृतिः।

चञ्चति। चवञ्च। चञ्चिता। चच्चात्। ष्यच्चीत्। चिष्णः चञ्चान्तः वाताः, कः न्होमञ्जरी १८, १। चञ्चद्भुजभ्ममितः चण्डगदा—, वेणीसंद्वारम्। विषीदति रोदिति चञ्चति, गोतगो ४, ८। च-च्चिता, च्चा, चक्तः।

चट्-चटे (कटे), स्वा, पा १ वर्षेणम्।
२ धावरणम्। २ भेदः, वो। चटित।
(ए) बावटोत्। चट्, चु, पा १ भेदः
नम्। २ वधः, वो। चाट्यति। उदुः
उद्याटनम्। अपसारणम्। उद्याटनोयः
करतालिकानां दानादिदानीं भवतोभिरेषः, नै २, ७।

चण-भ्वा, प। १ दानम्।

२ मन्दः, वो। चणति। चचाण्। वेणतः। चणिता। मचणीत्, मचा-णोत्। चिक्षणिपति। चञ्चण्यते। चञ्च- िष्ट । चणयित, घटादिः । (गमविष्टं - स्योः) चणयित, चाणयित । अचीच- । णत्, अचापत्, वो । चन्ति । चणकम् ।

चण्ड् — चड़ि, भ्वा, चु, ग्रा। कीपः। चण्डते। चण्डयते। ० ति, वो। चण्डः। चण्डो। चण्डातः।

चत्—चद्—चते, घरे, खां, डान् याचनम्। चतिता ० ते। चचात्। चेते। चतिता। चतित्यति। ०ते। (ए) अचतौत्। अचतिष्ट। चद्, चदति। ०ते। चलारः।

चन् (चण्), भा, प, वो।
दानशब्दयोः। चनित।
चन्द् चिद्दं भा, प। १ श्राह्मादः।
२ दोप्तिः, वो। चन्द्रति। चचन्द्रः।
चन्द्रः। चन्द्रनः। छन्दः।

चप्-भा, प। १ सान्तुनम्।
२ डपशमः ची। चपिता। चवाप।
चेपतः। चिपता। चप्(चह्र), च, प।
१ शाळाम्। २ चूर्णीकरणम्, बो। चपयति, घटादिः।

चम् चसु, था, प। भन्तणम्।

चमित। चचाम। चेमतः। चचाम मधु माध्वीकम्, म १४, ८४। मांसं चेसुः, भ १४, ५३। चिमता। चिम-ष्यति। अचमीत्। चिचमिषति। चच्च-स्यते। चच्चित्त। चामर्यति। अच्चा-मत्। (उ) चिमत्वा, चान्ता। चान्तः। पा—गाचमनम्। उपस्पर्धः। भच्च-सम्। आचामित, पा ७, ३, ७५। पा-चामित्। विचमित। तिराचामिद्यः, मनुः २, ६०। अनुस्ति। सिराचामित्, सनुः २, ६०। समुस्ति। सिराचामित्, सनुः २, ६०। समुस्ति। सिराचामित्, सनुः २, ६०। समुस्ति। सिराचामित्, चर् "

ैमुखे ते, र ८, ६८। १३, २०। समा<u></u> ै संदार:। महिषुजासानि प्रकी: पर्या-सीव समाचनाम, भा १७, ३५। चम्प्—चिष, चु, प। गितः। ्र चम्पयति। चम्पति। चिम्ब् (सम्बं) भूा, प। हिंसागत्योः। ूच्य (अय्) भा, आ। गतिः। े चयते। चेये। चयिता। प्रचिष्ट। ा चर्-भा, पा १ गतिः। स्त्रमणम्। िरभचणम्। ३ श्राचरणम्, वो। श्रा-सिवा। लट् चरति, शखूकी नाम तप-श्वरति, उत्तर ४०। लिट् चचार। चै-रतः। चचाराश्रमपर्थन्ते त्वनानि, भा-रत । चेरतुः खरदूषणी, भ ४, १। चेर-इंविष्यं भुञ्जानाः कात्यायन्यर्चनत्र-तम्, भागवतम्। लुट् चरिता। चृट् चरिष्यति, परिवादस्ते महाँक्षोकी च-रिचति, रामा। लुङ् प्रचारीत्। प्र-चारिष्टाम्। प्रवारिषुः। सन् विवरि-न्वति। यङ् (भावगर्षायाम्) चश्चर्यते, पा ७, ४, ८७, ८८। पञ्चिति। पञ्च येन्तेऽमितो नङ्गाम्, भ १८, २५। णिच् चारयति। अचीचरत्। चर्, चु, प। संग्रय:। ग्रसंग्रय:, वो। विचारयति यो धर्ममिति इजायुष:। चरित्वा। चरितम्। चूर्त्तः, पा ७,४,८८। चर-ग्रम्। चरितव्यम्। चर्थ्यम्। चरित्रम्। चरियाः। चरः। चारः। चरगः। चर्मः। श्रति—श्रतिचारः। श्रतिक्रमस्य गम-नम्। लङ्क्ष्मम्। चतिचारं गते जीवे, च्योतिषम्। अनु अनुगमनम्। सद-शसनम्। अस─सन्दाचरगम्। अभि अभिचार:। शतिक्रम:। मारणम्। श्चेनेनाभिचरन्। पति यो नाभिचर-ति, सनुः, ५, १६५। व्यभि व्यभि बारः। समिचवार न तापकरीऽनलः,

नै। ब्रा-बाचरणम्। यद् यदावरति श्रेष्ठ:, गी ३, २१। जानविष हि मेधावी जड़वज़ीक शाचरेत्, मनु:, २, ११०। विप्रान् शूद्रवदा वरेत्। समा-अनुष्ठानम्। करणम्। स्नानं समाच-रति चार नदीप्रवाहे, स्मृति:। उद्-उदय:। कुश्चपूरणभव उच्चवार निना-दः, र ८,७४। तूर्येध्वनिषदचरत् र १६, ८०। समुचरचार्वतिशिच्ने वनम्, भ २, २४। गुह्वचनमुच्चरते (छ-स्तद्वा गच्छति), पा १, ३, ५३। पयः चीत्रा उदचरन्त, भ ८, ३१। मधीनि दिवसुचरमाणे, नै ५, ४८। उचरेत् (मूत्रपृरीवोत्सर्गं कुर्यात्), मनु: ४, ४८। णिच् उचारणम्। सुखसंहित-नासिकायोचार्य्यमाणोऽनुनासिकः, पा १, १, ८। उप-उपचारः। पूजा। भजनम्। सेवा सुग्रीविवभीषणादीतुः पाचरत्, र १४, १७। ४, ६२। एन मुपाचरत्, र ५, १२। उपचर्थः स्तिया देवतत् पतिः, मनुः ५, १४५। गिरियः मुपचचार सा, कु १, ६१। परि-परिचर्या। सेवा। ग्रुत्रूषा। गुर्व परि-चरेत्, मनुः २, २४३। प्र—प्रचारः। ताबद्रामायणकथा सीकेषु प्रचरिष्यति, रासा। वि-विचरणम्। स्त्रमणम्। व्यवारीविरञ्जुगः, भ १५, ८८। विच चार दावम्, र २, ८। इंसं विचरना मन्तिके, ने १, ११७। णिच्, मीमांसा। चवधारणम्। सर्वेषां गुगदोषी विचा रयेत्, मनु: ७, १७८। विचारयति यो धर्मे विद्विज्ञीह्यणैः मद्द्र। विचार्यः त्यस सोके यावचन्द्रोज्जनं यगः। १२५। सम्-गसनम्। मङ्ग कवि णम्। रधेन सञ्चरते, या १, ३,५४। समयरकाचे समर्गरीदय 🚮 भाने:

चर्

भ ८, २२, २६। क्षचित् पथा सञ्चरते सुराणाम्, र २२, १८। सञ्चारयामास जरां पुत्रे, भारत। सैञ्चारिते धूपे, र ६, ८। यूथानि सञ्चार्ये हिपेन्द्रः, यक्ष ५, ८ ।

चर्च — स्वा, तु, पा १षिरभाव णम्।
कथनम्। २ तर्जनम्। भर्क्षनम्।
चर्चति। भर्च्, भर्च्दि। भर्क्ष् भर्क्षिति। भर्म्, भर्भाति। चर्च्, चु, प।
षध्ययनम्। धनुशीननम्। चर्चयिति
वेदं विष्रः, दुर्गा। (धनुलेपनम्।) चन्दनचर्चितनी लक्षलेवर्, गीतगो १,
४०। चर्चितः। चर्चा। सगमदक्रतचर्चा, क्रस्टोम खरी १५,४। चर्चरी।
चार्चिक्यम्। भर्भरः।

चर्व — (कर्ष) स्वा, पा गितः। चर्वति।
चर्ष — स्वा, पा गदनम्। चर्वणम्।
चर्वति। चर्वे। चर्विता। ग्रचविति।
चर्ष, चु, प, वो। चर्वणम्। चर्वयित।
चर्वति। रघं वक्षो निः चिष्यं दश्नैयः- वैयति। चर्वयित।

चल्-भ्वा, प। १काणगम्। अखेथेम्।
२ गतिः, वो। चल् तु, प। विलासः।
क्रीड्नम्। लट् चलित, न चलित
खलु वाकां सज्जनानाम्। स्वधमीन
चुलित, मनुः ७, १५। चलेखकेन पादेन तिष्ठत्येकेत वृद्धमान्, द्वितो।
चल सखि कुन्नम् गौतगो ५, ११।
लिट् चचाल। चेलतुः। किन्नायेलुः चणं
भुजाः, भ १४, ४०। लुट् चलिता। लुट्
चिल्यत। लुङ् भ्रचालीत्। श्रचालिष्टाम्। भ्रचालिषुः। संपचीऽद्विरिवाचालीत्, भ १५, २४। सन् चिचिलिषति। यङ् चाचल्यते। चाचल्ति।
लिक्त चल्यन भनैः, भ ८, ६०। चल-

यन् अङ्गत्चस्तवासकान्, र ८, ५४%। भाेलं चालयति (अन्यया करोति)। सूत्रं चालयति (चिपति)। चालयति इस्तिनं यन्ता, दुर्गा। गोपानी दग्डेन पश्रमणान् चालयन्। चालयन् समर्घा पृथ्वीमिति चालगब्दाखिच्। चल्, चु, प। पोषणम्। चालयति। चलिला। चलितः। चलनम्। चलः। चालः। चानकः। तु,चनवी, चनन्ती। प्रहः-ष्टमना सगान्तिकां चिलतः, हिती। उद्-प्रखानम्। स्थितः स्थितामुच-खितः प्रयाताम्. र २, ६। उच्चाल बलभिक्षेख:, भ ११, ५१। प्र—गम-नम्। वाम्यः। प्रसिद्धिः। रोषात् प्रच-लितो नृपतिसागरः, भारत। वि-स्वननम्। चुति:। अस्यैर्यम्। चौभः। व्यचाबीदश्रमां पति:, भ १५, ७०। धर्माद्विचलितं नृपं इन्ति, मनुः ७, २८। तंधमें न विचासयेत्, मनु: ७, १३। सम्-णिच्, सर्चालनम्। सन्ना-लयामि निवनीद लतालहरूतम्, प्राक्त ३, १२८।

चष्—भ्वा, छ। भच्चम्। प, वी। बघः। चषति। •ते। चषकः। चषानः। चाषः।

चह—भ्या, सु, प्रा परिकारकानम्।
ग्रात्यम्। प्रतारणा। चहति। चचाह।
चहिता। भचहीत्। चहयित, घटादिः। भचीचहत्। चह, चु, प्रा भदन्तः। १दभः। २गाळाम्। चहयित।
भचचहत्।

ष्टाम्। भवालिषुः। संपचोऽद्विरिवा- चाय्—चायु, भ्वा, खु, १ पूजा। चालीत्, भ १५, २४। सन् विचिलाः भर्चेमा। श्वाचुषज्ञानम्। चायित्। विता यङ् चाचत्वते। चाचल्ति। ०ते। चचाय। ०ये। तं पर्वतीयाः प्रम-णिच् (कम्पने घटादिः) विजयति। दाश्वचायि भा १२,५१। चायिता। तुरुन् चलयन् प्रनेः, भ ८,६०। चल- प्रचायीत् भ्रचायिष्ट। विचायिष्ठति। श्ति। चेकीयतं, पा ६,१,२१। चेकयोति, चेकिति। चेकीतः। (ऋ) अचचायत् १ अभ्यं न च ते निचायितुमिभप्रसे चिरे (दृष्टुम्), भा १२, १८। अपचितिः, की ४४८। अपचितः। अपचायितः, पा

चि

चि—चित्र, स्वा, ड, वो। सञ्चयः। ्चिञ्, स्वां च्छा, चयनम्। राशीकर-णम्। लट् चयति। ०ते। वृत्तं पुष्पं चिनोति। चिनुते। चिन्वते। **लि**ङ श्रचिनु-चिनुयात्। लङ् शचिनोत्। ताम्। अचिन्तन्। अचितृत्। लिट् चिकाय, चिचाय, पा ७, ३, ५८। चि-केथ, चिक्रिया। चिक्ये, चिच्ये। लुट चेता। ॡट् चेथिति। ते। आशिषि, चीयात्। चेबीष्टा, लुङ् अचैबीत्। अचैष्टाम्। अचैषु:। अचेष्ट। अचेषा-ताम्। अवेषत। भूमावचेषुस्तान् इ-तान, भ १५, ७६। कर्मण, चोबते। चायिता। चायिषते। चायिषीष्ट। र्थीचायि। अचायिषत। राजचंस तव सैव ग्रुस्ता चीयते नच न चावचीयते, काव्यप्रकायः। सन् चिकोषति। • ते चिचीषति। ०ते, पा ७, ३, ५८। यङ् चेचीयते। चेचयीति, चेचेति। षिच चापवति, चाययति, पा ६,१,५8। चित्र, वुं, उ, प, वी। चयनम्। चय-यति। ०ते। चाययति। ०ते। चप-यति। ॰ते, पा ७, ३, ३६। चितः। चे यः, पा र, १, ८०। चे तव्यः। चयः। चयनम्। चिन्वन्। चिन्वानः। पर-राष्ट्राण नैष्यं चिन्वन्तः, भारत। कायः। निकायः। अभिनचित्। अप-षपचियः। हानिः। चयः। पूजा। गिच् पपचितः, प्रपचाधितः, पा ७, २, ३०। अपनि । ति गात्रम्, ग्रुक्त २, ३४।

श्रवचितद्विष (श्रवचितानां पूजितानां हिष:), भ ८, २२। पूजा नमस्यापिक तीखमरः। चय-चयनम्। खाना बासुमानि हचान्, भ ६, १०। श्रवचितवलिपुष्पा सा, कु, १, ६०। मा--व्याप्ति:। माच्छादनम्। सञ्चय:। संयह:। चाचिनोद् भूमिं इते:, म १७, ६८। पाचिचाय: यरै: सेनामाचिकाय चराघवी, भ १४, ४६। प्राचिकाते तौ पद्मगै:, भ १४, ४७। उद्-चयनम्। छिचिक्रिरे पुष्पफलं वनानि, भ ३, ३८। उच्चयः। उप-उपचयः। हृद्धिः। इपा-चायिष्ट सामर्थे तस्य, भ ८, ३३। प-घोऽघ: पश्यत: कस्य महिमा नोपची-हितो। यमस्तोमानु चैक्पचित्. श्रनर्घ १४। महिमानसुपचिनीति, भ्रनर्घे ३१। नि-निचयः। निचितं खसुपित्व नीरदैः, घटकर्परः १। परिणिचिनीति, पा ८,४,१७। निर्-निश्चयः। प्रांभधेयं न निश्चिनीसि, प नर्घ ७०। न निश्चिकाय चन्द्रम्, भ १०, ६७'। किरचायि भेदी नौषधीनां तेन, भ १५, १०७। परि-परिचयः। प्रभ्या-सः। परिचेतुसुषांग्र धारणाम्, र द, १८। प्र—प्रचयः। व्याप्तिः। ब्रह्सिः। पुष्पिः प्रचितान् गोष्ठान्, भ २, १४। प्रचीयमाना सा, र ३,७। वि—सच-यः। चिन्ता। प्रन्वेषणम्। विषाः वि चिन्वन्ति योगिनो मुत्तये, र १०, २३। वयि धतासवस्तां विचिन्वते, भागव-तम्। सम्—सञ्चयः। सञ्जिकाय तपः, र १८, २। तपः प्रत्यन्तं सिन्नोति। गकु २, ८४ । चिक्-(चक्) चु, प। पोड़नम्।

चिट्—भी, चु, वी, प्रा, प्राप्रेथम्।

ं बेटति। चेटयति। चेटः। चेटौ।

चित् चिती, स्वा, य। १ संज्ञानम्। जागरणमा २ जानम। लट् चेतति। पविद्यानिद्रयात्रान्ते जगत्येकः स चे-तति, कवि १२६। नेष्नचेतवस्यन्तम, भ १७, १६। बिट् विवेत। विवि ततुः। चिचेतिय। जिचेत समस्तत्-क क्म, भ १४, ६२। तद् यात्धाने-श्चिचिते, भ २, २८। तुट् चेतिता। स्टट् चे तिष्यति। लुङ् अचेतीत्। अचे-तिष्टाम्। अचेतिषुः। नाचेतीत्तान्, भ १५, ३८। एवं । तेऽचेतिषुः सर्वे (संज्ञां लव्यवन्तः), सार्थ, १०८। सन् चिच-तिषति, चिचेतिषति। यङ् चेचिखते। चेंचेत्ति। , णिच चेतयति। यावद् राच-खियेतयन्ति न (प्रतिब्धन्ते, खार्थे णिच्), भ ८, १२३। चित्, चु, भा। श्र सञ्चेतनम्। अधेवेदनम्। ज्ञानम्, वो। चेत्रयते धिया चेत्रयते सर्वे परस्य द्भद्रिये स्थितम्, कवि १२६। सर्वे राजाः नं चेतयध्वम्, अनर्घः १०८। अचीति-ततः चितिला, चेतिला, पौ १, २, २६ । (ई) चित्तम्। चेतनः। चेतना । चित्। चेतः।

ाचित्र—श्रदन्तः। चु, प। १ चित्रीकरणम्। पालेखकरणम्। २ चिणिनेचणम्। कदाचिद्दर्भनम्। ३ चन्नतदर्भनमः वो। चित्रयति। चित्रा-पयति। चित्रयति प्रतिमां जीकः। चि-वयति राष्ट्रं लोकः (कदाचित् प्राथित), दुर्गा। चित्रे शित्रयति व्योम, कवि १५३। क्रीचपदानीचित्रततीरा, क्र-न्दोम १५, १। वागदेवताचरितचि-वितचित्तसद्धा, गीतगो १, २ । चिन्त्-चिति, चु, प। स्रुतिः। चिन्ता। ्चिन्तयति । चिन्तति । यां चिन्तया-

मि सत्तं मयि सा विरत्ता, नीतियतः

कम १। विद्यामर्थे चिन्तयेत्, हितो। सुग्रीवोऽचिन्तयत् कपिः, भ ६, ८६। लिट् चिन्तयामास। लुट् चिन्तयिता। ॡद चिन्तयिष्यति। लुङ् प्रचिचित्तव। चिन्तयिता। श्चिन्य। चिन्तितः। चिन्तनम्। चिन्ता। परि, वि, सम्—ग्रस्यन्तचिन्ता। ध्यानम्। स्मरणम्। विचिन्तयन्ती यमनन्यमान-सा, शक्त ४, १८। विचिन्तयन्या भव-दापदम, भा १, ३०।

चिल्-तु, प। वसनम्। चित्रति। चिचेता चेतिता। चेतम्। ् चिल्ल-भवा, प । १ श्रीधित्यम्। २भावकरणम्। इतिकरणम्। चित्रति। चित्रः। चित्री।

चीक्-(घीक्) चु, पं। आमर्शनम्। स्पर्भ:। चीकयति। चीकति। चन्द्रा-वतीतरङ्गाद्रीयीकयन्ति च यदपुः, इ-लायुधः। भट्टमक्काल् मर्पणे इति अपूर्ध-न्यप्रमध्यं पठित्वाः चमार्थमाइ, दुर्गी। चीब्—(चीव्)। 🔑 🔭 🗦

चीम्-चीम्-(श्रीम्) खा, पा। कत्यनम्। साघा। प्रभंदा, वो। ची-भते। चिचीभे। चीभिता। (ऋ) अचि-चीभत्। श्रोष्ठावकाराद्दिरयमित्येके, दुर्गी । १ व १०५० । १५०५ हिंदी

चौय्-चीव्, चौयु, बो, चौई, भ्वा, छ। १ प्रादानम्। रसंवरणम्। चीयति। ०ते। चीवति। ०ते। चिचीव। ०वै। पवर्गहतीयान्तोऽप्ययम् । (ऋ) अचि-चीवत्। चीव्, चु, प। दीप्तः। चीवयति।

चुक् (चक्र) चु, प। पीड़ा। चुच् —(श्रुच्) स्वा, प। श्रभिषवः 📭 ्रा चुट् तु, चु, प। छेदनम्।

बुटति। चोटयति। बुचोट। बुटि-ता। श्रचुटीत्। चुट्-भ्वा, प, वी।

सर्

अल्पोभाव:। चीटित नदी ग्रीमे, दुर्गा। चव्यतीभाव इति प्रदीपः। चुह्-चु, प। श्रत्योभावः। चुदृयति।

चुड्-तुः, प। संवरणम्। चुडति। चुचोड।चुडिता। श्रचु-,डोत्। । हो । चुड्ड (चुद्ड्) स्त्रा, प। सावकरणम्।

- श्रासप्रायस्चनम् । चुड़िति । क्षिप्चुत्।

ाः चुण्-तु, प, वो । छेदनम्। चुणति। चुचोण। चुणिता। पचु-णोत्। 🏗

च गर्⊸च गड, च टि, च डि, स्वा, प। ब्रत्योभावः। ब्रज्यक्तीभावः। चुटि, चुडि, चु, पा केंद्रनम्। चुडि, वो, भ्वा, मा, चु, प। रोषः। चुण्टति। चु ख्यति। चु ख्ति। चु ख्ति। चु खः यति। चुण्डति। ०ते।

· चुत-चुतिर (चुतिर्) भ्वा, प। चुट्-चु, पं। प्रेरणम्। चेपणम्। । चालनस्। नियोगः। प्रश्नः। चोद-यति । प्रचूपुदत्। चोखमानः सिस्-चया, मनुः १, ०५। गरेम माथचोदितैः।

तान्। बधे पारचीदयत्। चौदयामास तं सभा वे क्रियतासित। शिथान् समानीयाचार्खीऽर्धमचोद्यत्, भारता चोदितः। चोद्यम्। चोदना। प्र, सम्

प्रेरणम्। कथनम्। परिवेषयेत प्रयतो गुणान् सर्वान् प्रचोदयन्, सनुः ३,

२२८। सञ्चीदयामास मोघ्रं याहोति सार्थिम्, रामा ॥ १०००० विराम् । १०००

। जिल्ला चुन्द्र (बुन्द्) । जिल्ला । जिल्ला

चप्-स्वा, ए। सन्दगमनम्। नगतिः। चोपति । चोषिता। 🖅 🧷 🕆

चुक्क् चुबि, भ्वा, प। चुक्कमम्। चट् चुर्कात, शिष्यति कामपि चुर्क-ति कामणि, गौतगो १, ४४। नौति-

वैक्का चुम्बतु मन्त्रियाम्, हितो। सिट् ्रचुचुम्ब, चार चुचुम्ब नितम्बवती दिध-तम्। गौतगो १।४६। चुचुम्बुस सत-प्रियाः, भ १४,१२। प्रियासुखं किस्प-क्षयुचुम्बे। व्यतिहारे तङ्, दुर्गा। कु ३, ३८। लुट् चुब्बिता। लुङ् अचुब्बोत्। श्रम्बिष्टाम्। श्रमुब्बिषुः। चुनि, चु, प। चुम्बनम्। चुम्बयति। चुम्बितम्। चुम्बनम्। चूडाचुम्बितकङ्गपत्रम्, मः द्वाना २, ३। उदयाचनचु स्विविस्तं

चकास्ति, काव्यप्रकाशः। चुर्—चु, प। स्तेयम्। चौर्थ्यम्। लट् चीरयति, पा ३, १, २५। चोरति,

वो। कर्तुंगामिनि फले तु आसने पदम्। चोरयते, पा १, ३, ७४। यसामिनं चीरयेद् ग्टहाद्, सितुः ५

२, २२। सिट् चोरयामास। सुट् चोरयिता। ॡट् चोरियव्यति। माः

शिषि, चोर्थात्। तुङ् अचूनुरत्, पा २, १, ४८। अचूचुरचन्द्रमसीऽभिराः

मताम्, भा १, १६।

्चुन्-चु, प। उद्यति:। चोत्रयति।

चुलुम्प्—स्वा, प। सीत्रधातुः। 📆 स्रोपः। चुसुम्पति। चुसुम्पाचकार।

चुल्-भ्वा, प। १ श्राभिष्रायस्चनम्।

ः र दावकरणम्। विकासः । चुन्नति। 🎾 चुचुन्ना । चुन्निता। चुन्नन्ति चार्नयः

माय सह प्रियेण, कवि ४७। चुनौ । 🔐 (कोहरू **चूग्-सु, पा सङ्गोसः।** हो द्व

मू खयति चचुः (सङ्घितं स्थात्), दुर्गा। चर्-चूरी, दि, या। दाइ:।

चूर्यते, चूर्यते चौरहत्तीन् यः, अवि ८८। चुचूरिन, चूरितातः (ई) चूर्यः।

ाः चूष्-चु, षः १ पेषषम् । चूणीकरणम् ॥ २ प्रेरणम्। चूणयति,

चूणयस्यरिमण्डलं यः, वावि ८८। प्रचुः

चूर्णत्। श्रम्भवर्षमचूर्णयं शरजालै:, भा-च्रितिसत्तमाङ्गः, गीतगी ११, २७। तान् प्राचुचै र्णत् पदाभ्याम्, भ १५, ३६।

चै ूष्—स्वा, प। पानम्। चूषति। चुचूष। चूषिता। अचूषोत्। तत्तदा चूषति, अनर्ध १५४।

्चृत्—चृतो, तु, प। १ हिंसा। २ ग्रन्थनम्। लट् चृतति। लिट् चच-र्म्। चचृततुः। ूबुट् चिर्तता। सृट् च-त्तिष्यति, चत्र्यंति, पा ३,२,५७। च क्यं न्ति वाल ब्रडान्, भ १६, २०। लृङ् भ्रवित्रंथत्, भवसात्। लुङ् भव-त्तीत्। अवसिष्टाम्। अवसिष्टः। सन् चिचित्तिषति। चिचृत्सति। यङ् चरीचृत्यते। चरीचर्ति। पिच् चर्ने-यति। अचीचृतत्, अचुचत्तेत्। चृत्, चु, प, वो। सन्दीपनम्। चर्त्तयति। चत्तंति। (ई) चृत्तः। '

चृप्—चु, प। सन्दोपनम्। चर्पयति । चर्पति ।

चेल्-चेल् (केल्) स्वा, पा १मिति:। २कम्पः, वो। चैलित। (ऋ) प्रचिचेलत्। चेल्, चेल्रित, वो। चेलम्। चेष्ट्—भा, या। चेष्टा। यतः।

व्यापारः। परिस्मन्दनम्। सट्चेष्टते, यदा स देवी जागत्ति तदेदं चे ष्टते ज-गत्, मनुः १, ५२। सदृशं चे ष्टते खस्याः प्रक्षते ज्ञीनवानिष, गीतगो ३, वृत्त्ययं नातिचष्टेत, हितो। लिट् चिवे है। लुट् चे हिता। लुङ् प्रचे हिहा। यचे विवाताम्। यचे विवत । णिच्चेष्ट-यति। प्रविवेष्टत्, प्रविषेष्टत्, वा ७, हिन्दे। योडुमचिचे छद्राघवी, भ १५, ति। णिच् चोतयति। अनुचुतत्।

६०। चेष्टितम्। चेष्टनम्। चेष्टा। तं श्रीणितपरीताङ्गं चेष्टमानं सङ्घीः तले। वि-परिस्यन्दन्म्। सिन्धुतीर-विचे ष्टनैः, र ४, ७०। Mark Tree Mys.

चु च ड्, भू, या। गमनम्।

पतनम्। चुति:। भ्रंगः। चरणम्। चवते। उत्पद्यन्ते चवन्ते, मनुः १२, ८६। चुचुवे। चोता। चोष्यते। ग्र-चोष्ट। पचीषाताम्। प्रचोषतः। ग्र-चोष्ट सत्तावृषतिः, भ ३,२०। चुचू भ वते। चोच्यते। चोच्यते। चोच्यते। चाव-यति। अर्चिचादत्, श्रमुच्यवत्। चि चावयिष्रति, चुचावयिषति, पा ७, 8, ८१। चु, चु, प। १ इ।सः। २ सङ्-नम्। चावयति। रक्तमस्युरतम् स ८, ७१। च्युतो विधिः, र २, ४७। र-तिसुरता, र ८, ६७। इतमार्थ्य चुते राज्यात् रामे, भ ७, ८२। प्र—स्रंशः। यावः। गर्भप्रच्युतिदीषेण, भारत्। स्व र्गात् प्रचवेत, स्मृति:।

च् त्-चुत्, च् तिर् वर्, भूर, प।

त्रासेचनम्। ईषदाद्राकरणम्। सर्वेत भाद्रींकरणम्। ५ चरणम्, वो। स्वट् चोतति। चौतति घतं वड्डी यज्वा, दुर्गा। बिट् चुच्चोत। चुच्चुततुः। नुट् चोतिता। नृट् चोतिष्वति। नुङ् (इर्) अच्युतत्, अच्योतीत्, या ३, १, ५०। यच्युतताम्, यचोतिष्टशम्। यच्यु तन् अचीतिषुः। योश्यतं सम्प्रहारे-ऽच्यतत्, मह, २८। सैन्यमच्युतत् र-त्तम्, भ १५, ११४। इदं कवचमची-तौत्, म ६, २८। मन् चुच्चोतिषति, चुच्च तिषति। यङ् चोच्च त्वते। चोच्चो

चुत्त, चोतित। चुचीत। चोतिता। अचुतत्, अचीतीत्।

्र (चुम्)—(च्यु) चु, प। १ त्यागः। २सद्दनम्। ३इसनम्। चीसंयति।

(**2**

केंद्र—च्, छ। श्रीपवारणम्। श्राच्छादनम्। गीपनम्। छादयति। •ते। छदति। •ते। सतं शरेण्छादयन्, भ ८, ५८। हादितः, इबः, पा ७, २, २७। इन्नी अप चन्द्रमाः, भारत। ब्रद्रीन्द्र तुङ्गग्रेनतरुच्छनम्, भ ६, ८३। कर्जने घटादि:। इद अपवारणे दति चौरादिकस्य घटादावयमनुवादः। क दयति पुतं पिता (बनवैन्तं प्राणवन्तं वा करोति) अन्यत्र क्रादयति (अप-वारयति) स्वार्थीणचि तु, क्टांदय ति (बर्जीभवति, प्राणीभवति, अपवार-यति वा)। छद, चु, प। भदन्तः। संवरणम्। अपवारणम्। छद्यति, छद-यति सुर्वोनं यो गुणैयञ्च युद्धे सुर-युवतिविसुताः एदयन्ति स्रजेस, कवि १६। यव, या, प्र— याच्छादनस्। संवरणम्। शरकीषेः प्रच्छवः विस्थम्, भ ७, ५३। ॰ सौतां दिद्यः प्रच्छनः, भ ८, ४३। व्याधी जालं विस्तीय प्रक्ति भूवा स्थितः, हितो। सम् - प्राच्छाद नम्। व्यापनम्। सेना महीं संच्छाद-यामास पात्रिष द्यामिवास्त्रः, रामा।

कन्द्-कदि, चू, प। संवरणम्।

गीपनम्। प्राच्छोदनम्। छन्दयति, इन्दित्। अपच्छन्दत्। छदि, छन्द् चु, प। दोप्तिः। इन्दयति, इन्दित्। उप-प्रतोभनम्। प्रार्थना। उपच्छन्दयति

मयि प्रयोज्यं त्वया न प्रतिषेधरी स्वाम् रिप्, ५८।

क्रम् — क्रम् (चम्) भूग, प । भचणम् । क्रम्य् — चम्प, क्रपि, चु, प । गृति:। क्रद्रे — चु, प । वसनम् ।

छद्गिरणम्। छदंयति। भव्यख्दंत्।, छल् णिजन्तनामधातुः। छल्ना। छल्यति। णिरीषप्रमवानतंसाम्छल-यन्ति मीनान्, र१६, ६१। निभौधे-उभ्येत्य चाकस्मादस्मान् स छल्यिष्यति, भारत। बल्जिं छल्यते तुभ्यम्, गीतगो १,१६। छल्यसि विज्ञमणे बल्लम्, गीतगो १,८। बेनापि छ्क्षितस्तातः, भन्षे १२१।

इष्य, भ्रा, उ। चिंसा। कषित। ०ते। इक्टर्-- चिदिर्क, उ। केंदनम्।

देधीकरणम्। सट् छिनति। छिन्तः। किन्दिन्ति। छिनिह्या। छिन्ते। छिन्दान ते। हिन्द्ते। हिनति नित्यसन्नानम्, कवि २६६। नैनं क्रिन्ट्नि मस्तापि, गी २, २३। किनचा जगदाचरान, स ६. २६। जिङ् कियात्। किन्दीत। डिकिन्धि। बङ् अच्छिनत्। अच्छि-न्ताम्। प्रक्थिन्दन्। प्रक्थिनः। प्रक्थि-नत्। अच्छिन्तः। सिट् चिच्छेद। चि च्छिदे। बुट् छेता। बुट् छेस्यति। ०ते। लुङ् (१२) प्रच्छिदत्, प्रच्छेत्-सीत्। प्रच्छेताम्। प्रच्छेस्:। प्र-च्छित्। अच्छिकाताम्। अच्छिता। ते तं दन्तेरिक्ट्रिंग्, भ १५, ४३। वा-यव्यास्त्रेण तं पाणिं रामोऽच्छैलीतं, भ १५, ६७। स तत्त्वाच्छिदत्, भ १५, ६ में। कर्माण, क्रियते। अच्छेदि, भ-च्छेदि तेनास्य विशेष्टम, स १५, ६४। सन् चिच्छिलाति। ०ते। यस् चेच्छिः

चेच्छेति। णिच् छेदयति। द्यते। प्रचिच्छिदत्। छिला। ॰ छिदा। छिन्न:। क्टित्तः। केंदः। केंदनम्। क्टिंदुर:। मा— प्राक्षच यहणम्। छेदनम्। जः इव्यं जातवेदोसुखादाच्छि-नत्ति, क् रै, ४६। प्राच्छेत्यास्यंतस्य धतुच्याम्। भर्तारमाच्छेत्साति कामि-नोभ्यः, भारत। अव—अवच्छे दः, परि-च्छे दः। विशेषः। उद्-उच्छे दः। एक्यूबनम्। नोच्छिन्द्यादाकानो स्मूलम्, मनु: ७, १३६। एतात्यपि सतां तोहे नो क्छियन्ते कदाचन, सनुः ३, १, १। मूर्व्हान्तरायं सुइरुव्हिनति, भा १६, ८। परि—परिच्छेदः। इयत्तयावधा-रणम्। निर्णिय:। परिच्छिनप्रभावर्डिने म्या, कु २, ५५। तं भोर्षच्छे दां परि-क्छिया र १५, ५१। परात्मनी: परि-च्छिया वलावलम्, र १७, ६०। यस्य यशः परिच्छेतुमियत्तयाऽलम्, र ६, ७०। वि-छदः। अर्जे विच्छिन्नम् य बु १, १२। विच्छियमाने बुबे, भ २, ५२। सम्—उच्छेदः। ज्ञानसंव्यित्वन संगयः, गी ४, ४(। 📄 🔭

्रिक्ट्र प्रदन्तः। चु, प्र। भेदः। रम्भारणम्। कर्णस्मुकरणम्। हिन् द्रयति । क्रिद्रितः । क्रिद्रणम् ॥ 💢 💢 कुर् (पुर्), तु, कु, चु, प । छेदः। - कुटति । कोटिका अङ्गुनिध्वनिः । कुड्-(युड्), तु, प। संवर्णम्। ु कुप् तु, प। स्प्रशः।

कुपति। चुच्छोप। छोप्ता। प्रच्छी-**पोत्**।

छुर्-तु, य। छेदनम्। कुरति । चुच्छोर् । कुरिता । प्राधिषि, हुयात्, पा ८, २, ७८। श्रच्छुरोत्।

त्रा कुरितः (रज्जनम्), प्रशिकिरणच्छु-रितजनधर, गोतगो ११, २८। अलता-च्छुरितं इदयम्, गौतगो ८, १०।० मनः शिकाविच्छ रिताः, , क्र १, ५६। कुरिका। कुरणम्।

्कृद ⊤ष्ठकृदिर्हर, जा १ दीसिः। ऽह २ देवनम्। ऋौड़नम् म व ३ वसनम्, ™ वो। देवनजिगीवेच्छाव्यवहारस्तुतिस्ति क्रीड़ागतय इति केचित्री दुर्गी। लट् कृपति। कृमी। निङ् कुन्यात्। छ्न्दोत। । लङ्[∞] श्रच्छृणत्। श्रच्छृन्तः। बिट चक्करी। चक्करी। चक्करिष, चच्छ्को। लुद् कदिता। लट् कक्षेप्रति। ॰ते। इदिष्यति। ॰ते, पा ७, २, ५७। लुङ् (६र्) श्रच्छृदत्, श्रच्छदीत्। श्रच्छः दिष्ट। सन् चिक्कदिषति। •ते। चि-च्छे सीति। कते। युङ् वरीच्छ्रयते। चरीच्छर्ति। छृदी चु. प। सन्दीप-नम्। छदयति। छदति। छदिता। क्टिंप्यति । (ड) कृदिला, कृषा। egui:11 714 . hair 370

कृप-(वृष) चु, प। सन्दीपनम्। क्टेर-अदन्तः। चु, ए। छदनम्। छो—दि, प। छेदनम्।

क्यति, पा ७, ३, ७१। चच्छी। च-च्छतु:। काता। कास्यति। कायात्। शक्छात्। श्रक्तासीत्, पा २, ४, ४८। चिच् क्रावयति, पा ७, इ, ३७। यं चाच्छायते। चाच्छाति, चाच्छे ति। श्रविकातम्। श्रवकातम्। कुर—कुरङ् (चुङ्) स्वा, जा। गतिः।

注 は 原理性に(**司**)・

जच्-ग्रदा, प। १ भचगम्। २ इसनम्। सट् जिचिति, पा ७, २,

अप्

44

•६। जिल्लतः। जल्लतं, पा ७, १, ४। जिल्लामोऽनपराधेऽपि नरान्, स ४, ३८। लिङ् जल्लात्। जङ् यज्ञान्, यज्ञान्, यज्ञान्, यज्ञान्, यज्ञान्, यज्ञान्, यज्ञान्, यज्ञान्, स १३, २८। ल्ट् जिल्लान्। जङ्गान्, स १३, ४६। सन् जल्लान्। यज्ञान्, स १५, ४६। सन् जल्लान्। यज्ञान्। यज्ञान्। यज्ञान्। यज्ञान्। यज्ञान्। यज्ञान्। अज्ञान्। अज्ञान्। अज्ञान्। अज्ञान्। अज्ञान्। अज्ञान्। अज्ञान्। अज्ञान्। स्थातः। स्टानम्। जङ्गते। यज्ञाङ्ग, यज्ञाङ्ग। यटादिः। (चञ्च)।

्र सज्-जन्ज्-जिजि, स्वा, प। युद्धम्। सजिति। जन्जिति। ः जट्-स्वा, प। संघातः।

्रचटित वेश: (परस्परं चग्न: स्थात्), चटा।

जन् जनो, दि, या। प्रादुर्मावः। इत्यक्तिः। जननम्। स्पृटीसावः।

सर् जायते, पा ७, ३, ७८। गोमयाद

वृश्विको जायते, या १,४,३०। त्वसताजायवाः, स १७,३२। जिट् जज्ञे, या
६,४,८८। जुट् जितता। जुट् जितखते। सुङ् धजिनष्ट। धजिन, या ३,
१,६१।७,३,३५। धजिनषाताम्।
धजिनवता नाजिनष्टास्य साध्वसम्,
स १५,८८। रक्षनियोऽजिन च्यात्,
स ६,३२। भावे, जायते, जन्यते। अजिति। सन् जिजिनवते। यङ् जाजायते। ज्ञान्यते, या ६, ४, ४३। ज्ञान्यते। च्यात्, या ६,४३। ज्ञान्यते। धण् जनयति। धजीजनत्।
धटादिः। धपरावीरमजीजनत् सुतम्,

र ८,२८। यं देवं देवकी देवी बसुदे-

वादजोजनत्, सृति:। वैदेशा जनये-

यमानन्दम्, से ८,५७। लोभो जनयते

द्याम्, हिती। जनिला। जातः। जाति:। जननम्। जनकः। जनः। जनिता। जन्यम्।,जन्यो घटः। जन्युः। द्मन:। वीलम्। प्रजा। प्रजन:। प्रज-निष्णुः। षिच् जनयित्वा। जनितः। जनियता। जनियतव्यम्। ऋषि—उत्-क्षष्टभावः। ब्राह्मणी जायमानी हि पृथिव्यामधिजायते । (उपरि सनुः १,८८। धनु—धनन्तरजननम्। पुत्रिकार्या कतायान्तु यदि पुत्रोऽनु-जायते, मनुः ८,१३१। तमजीऽनुजातः (डपस्टलात् सकर्मकता), र ६,७८। दृष्टि:। प्राप्त-श्राभ—डत्पत्तिः। जननं। अभिजातवाचि। कु। कामात् क्रोधोऽभिजायते, मी २, ६२। तथा-प्यनुदिनं तृषा ममैतेष्वभिनावते, भारत। उप-जननम्। असिंसु निगुं गं गोत्रे नापत्यमुपजायते, हितो। सङ्करते जुपजायते, गी २,६२। म-प्रसव:। डत्यित्ः। प्रजायन्ते सुतान् नार्थः । सा प्रजन्मे जुमारं मातापित्रीः प्रजायन्ते पुत्राः, भारत । वि-प्रस्तः। तेन विखसहीं विजज्ञी। समां समां विजायते इति पाणिनः, ५,२,१२। (मन्नीनाथः), र १८,२४। तस्य संहर्धः पुत्रो व्यजायत, रामा। मानात् क्रोधी व्यकायत, भारत। सम्— चत्पत्ति। ततः संजित्तिरे वीराः, भारत । रचणाः इलं संजायते राज्ञः, मनुः ८,१७२। जय्—भ्वा, च । १ जयः । पाठः ।

कथनम्। ३मानसम्। द्वदुद्वारः। (जिद्वोष्ठादिव्यापाररितं प्रव्दार्थयोः स्थित्तनम्), दुर्गा। सट् जपति। सिट् जजाप। जेपतुः। सुट् जपिता। स्टट्

जनपा (अपराः सुट् जायाः । जिप्यति । त्लुङ् सजापीत्, स्रज-पीत्। अजिपष्टाम् । सजिपसः ।

सन् जिज्ञिषयति। यङ् (भाव-गर्हायाम्) जञ्जयते। जञ्जिति, पा ७, - ४, ८६। २, १, २४। णिच् जापयति। अजीजपत्। जिपत्वा, जम्ना, इत्येकी। जप्तः। प्रजप्तः। प्रजपितः इति संचिप्त-सारः। जैपः। जपनम्। जप्यम्। जप्यन् सन्याम्, भ ४, १४। गायतीं दश्रधा जञ्चा, स्मृति:। जिपला स्त्रम्, सनुः ११, २५१। इषुवर्षजप्त-, ने ११, २६। सर्वथा जप्तविद्यानां विद्या नाति-प्रसीदति। प्रभि-प्रभिमन्त्रवम् श्रीषधि सन्तरभिजजाय च, रामा। ्डप-भेदः। भेदोपजापावित्यमरः। उपजप्यानुपजपेत्, मनुः ७, १८७। मला सर्हिणानपरोपजप्यान्, भारर,

विपरीतरमणम्। जभति। जजामः। जिमतुः। जभिता। यङ् (भावगर्चा-याम्) जञ्जभ्यते, पा ७, ४, ८६। जञ्जिकाः।

जम्-जमु (चमु) स्वा, प । सन्नणम्।

गात्रविनासः। जुमाणम्। जमाते, पा ७, १, ६१। जजमो। जमाता। श्रज-मिष्ट। जिजमायति। जम्मयते, पा ७, ४, प्रशा जमायति। (ई) जम्मः। जमि, वो, म्वा, प। समणम्। जमाति। जमाता। जमि, चु, प। नागनम्। जमायति। जमाति।

जर्द जर्द - जर्ज - जर्भ - जर्द । जर्द जर्द जर्भ कर्भ वो, तु, प। जर्ज जर्द अर्थ जर्ज (जर्द) तु, प। १ इति:। २ भर्या नम्। तर्जनम्। जर्ब ति। जर्च्दति। जर्जित। जर्भति। जर्माति। जल् भा, प। १ वातनम्।
तेत्वाम्। २ जीवनम्। ३ मान्कादनम्।
१ सम्बद्धाः। जलितः। जजानः। जलितः।
जलिता। भजाजीत्।, जल्, चु, प।
भान्कादनम्। भपवारणम्। जालयति। जालः। जलम्। जलम्।
जल्प्—(जप्) स्वा, प। जल्पनम्।

जल्यति, दूतः वर्वे जल्यति, हितो। जल्यिता। अजल्योत्। जल्यतः, भ ८, १२५।

जय-प्याप्त प्राप्त के विश्व

जस् जसु, हि, पा मोचणम्।

मोचनम्। जस्यति। जजास। जेसतुः।

जसिता। अजसत्, पुषादिः। अजान्
सीत्, वो। (८) जस्ति। जस्ताः।

जस्तः। जसु, चु, पा १ हिंसा। स्ताइन्
नम्। हे अनादरः, वो। जास्यति,
जसति। ७६ जमूजनम्। निजीजन्
सोज्जासयितुं जगहुनाम्, मा १,३७।

मन्योक्ष्णासयात्मनः, स ८, १२०।

जंस् जिसि, चु, पा १ र चणस्रै। २ मोचणम्। जंसयित, जंसित्। जाग्य-बदा, पा निद्राचयः।

जागरणम्। खट् जागति । जाग्रतः। जागति, पा ७,१,४। निमायां जागति संयमी। जागति स्तानि, भी २,६८। जागति कच्छेषु देवम् (चेष्टते), भ १८,११। दण्डः सुसेषु जागति, सनुः ७,१८। खिड् जागर्ता, पा ७,३८३। सजाग्रताम्। अजाग्रतः, पा ७,३८३। चिट जागरामास्। जजागार, पा ३,१,३८। जागरामास्तुः। जजाग्रतः पा ३,१,३८। जागरामास्तुः। जजाग्रतः पा ३,१,३८। जागरामास्तुः। जजाग्रतः पा ६,१,३८। जागरामास्तुः। जागरा

िंग

जागर्यात, पा ३,४,१०४। जु ड् पजागरीक, पा ७,२,५। प्रजागरिष्टाम्।
जागरिषु:। भावे जागर्यते। पजागरि, पा ७,३,८५। सन् जिजागरिप्रति, पा ३,१,२२। पिच् जागर्यति,
पा ७,३,८५। जागरिला। ०जागर्य।
जागरित:। जागरपम्। जागरः। जा
गर्या। जागर्यः। जाप्रत्। दिप्री निरीच्यसाणस्य नास्ति जागरती भयमिति
जागरपञ्चाचिच्। प्रजागराचिक्रवंनराः, भ
१४,६१। प्रजागराचिकारारिशेष्टासु,

्र । जि—्भा, प । १जयः।

्र डक्कवेप्राप्तिः। २ चिभिभवः। न्यूनी-्रभारणम्। ३ न्यूनीभावः । ४ स्त्रीकरणम्। भू प्रतिक्रमः। ६ वयक्रिया। सट् जयति देव:। ज्यति अवून्। देवदत्तं ग्रतं जयति। जेस्तुन्तोरन्त इदिति पद्मनासाः । 🗢 प्रनिधानादसात् ातुः वक्तेः प्रयोगाभावः। विन्तु तयोः स्थाने तिवन्ती इति। किञ्च तुपः स्थाने तातङ् हुप्यते। यथा, भावगस्यलयः कोऽपि जयताद् वागगीचरः, दुर्गा। जयति रघुवंगतिसकः, महाना १,३। जयन्ति यसुनावू ले ५ इ: विलयः, गीत-मो १, १। वपुःप्रकषीद्वयद् मुक्म, र रे, रे४। लिए जिगाय। जिग्यतः, या ७, ३,५७। जिमसिय, जिमेश। ग-जितानन्तरां इष्टि सीभाग्येन जिगाय सा, सु २, ५३। न में मार्था जिगाये-न्द्रोडिंग, स १४, ४६। सुट् जेता। स्टट् िजेचिति। सुरालयं जेचावः, अ १६, ३६। प्राथित, जीवात्। लुङ् प्रजे योत्। प्रजेष्टाम्। प्रजेषुः। त्वमजेषुः। युरा सरान, भ १५, १२। केलेचि,

जीयते। जायिता। जायियते। जायि-षीष्ट। अजायि। अजायिषत। वीन जायिखते यमः, भ १६, २। विपमानः जननीथिरिकदा प्रामजीयत तती मही, र ११,६५। सन् जिंगीयति, पा ७,३,५७। यङ् जेजीयते। जेजवीति। जेजेति। विच् जापयति, पा ६,१, ८८। ७,३,३६। धजीनयत्। जिला। ० जिल्छ। जितः। जयः। जेतव्यः। जिय:। जय्य:, पा ६,१,८१। जयी। जित्। जेतुम्। जिथ्युः। जेता। वि-लर:। व्यति—परसामिभव:। व्यति-जयते, पा १, ३, १४। व्यतिजियो समुद्रोऽपि न धेर्यं तस्य गुच्छतः, भ म, 8। अधि-स्यूनीकरणम्। विनाम-नम्। रावणवद् वयं सपनानिधिजी-यास्रा, भः १८, २। अव स्त्रीकरणम्। उदारः। अपद्वतं सर्वसम्बन्धिः सनुः ११,८१) निष्—प्रशिभवः। पराजयः। ग्रनेकशो निजितराजकस्वम्, से र ५२। श्रुतं निर्जित्य, भ ७,८४। परा-घराजयः। पराजयते, पा १, ३, १८। त्रसहनम्। ्राचिसिमवः। ः चध्ययनात् प्रशिज्ञयते, । पा ुर्। : ४, . २६ । व्यवृन् पराजयते। प्रदि खं पराजयसान उन्नत्या, स ८,८। सीतां पराजयमानां रावणस्य प्रोते:, भ प्र,७१। वित्सविक या छत्कर्षप्राप्तिः। पराजयः व्यूनी-कर्णम्। वशीकरणम्। विजयते, पा १, ३, १८। भो । राजन् । विजयता भवान्, गंबु ५, ७१ । व्यजेष्ठा विश्व नायकान्, भ ६,६८। विजिन्ये सेनाम्, म १४, १०६। व्यजेष्ट वस्वर्गम, म त्र, ११०० नन्दनस्य १०४ लच्चीवितियो भवनीः, भ रहः, वस् । 1 हा हा । निन्न्-जिति, भ्वा, प। ग्रीयनेस्।

ंजिम्बति। जिजिन्द। प्रजिन्दीत्। जिवि (प्रजि) चु, प। दीप्ति:। जिन्ब-यति। दिवि, दिन्वति।

जिम्-जिस् (चसु) भ्वा, पा भचणम् । जैसति। जैसनं लेप श्रा-हार इत्यमर:। (उ) जिसिला जिल्ला।

•जिष्-जिषु, भ्वा, प। सेचनम्। जीव् अवा, प। प्राणधारणम्। जीवनम्। जीविकानिर्वाहः। लट लिय जीवति जीवासि। जीवति। साहारात् विश्विदुदुत्व ददति तेनासी जीवति, हितो। ब्लिट् जिजीव। जि-जीवतुः। इति युधि समुपत्य न दानवा जिजीतः, कन्दो १३,८। तुर जी-विता। लुङ् अजीवीत। अजीविष्टाम्। षजीविष्ठः। यावदञीविष्म, स्र १५, ११। सन् जिजीविषति। यङ् जेजी-व्यते। जेजीवीति। णिच् जीवयति। प्रजिजीवत्। प्रजीजिवत्, पा ७, ४, ह। कंपीनजीजियत, स १४, ११। जीवित्वा । ्जीय । जीवित:। 'जीव-नम्। जोवकाः। जोवः। जीवी। जीव्यम्। जोविका। यति यत्यजीवद्मरालः केखरी (प्रतिकस्य प्रजीवत्), र १८, १५। चनु-पनुजीवनस्। पात्रयः। भनुजीवी। उद्-उज्जीवनम्। पुनर्जी-वनम्। उदजीवत् समित्रासुः, स १७, ८५। उप-डपजीवनम्। श्राव्यवः। ग्रहणम्। जीवनीपायः। स्त्रीधनानि यो मोहादुपजीवति, मनुः ३, ५२। पर्जेन्यसिव 🧊 भूता(न्) संस्माहसिव दिजाः। वान्धवास्तोपजीवन्ति सद्

स्राचिमवामरा:। एतद्वारतं कविभिन्।

पजीव्यते, भारत। सम्-जीवनम्।

धीलां मायेति शंसन्ती समजीवयत्, र

१२, ७४। भसाराशीक्षतं वृद्धं विद्यया •समजीवयत्। कोर्त्तः पुरुषं सङ्गी-वयति, भारती

च स्वा, प। मौत्रधातुः।

विगगतिः। जुङ्, स्वा, पा, वी गतिः। ज्वति। ०ते। णिच् प्रजीजवत्। जिन नावयिषति, पा ७, ४, ५० ।

चुङ्—चुणि, स्वी, प्रावर्जनम् 1 "शुष्य" - शुचि, चु, या दीतिः।

ा जुड्-तु, प। मतिः। । को १

श्रिकृति। सुनीङ्। जोङ्ता। सजी-होत्। जुङ्, तु, पा बसवम्। जुङ्-तानुच्कृत्वनतापनान् गृह्वलेन जुडलामी, कावि ११३। जुड़िता। प्र-जुड़ीत्। जुड्, चु, प। प्रेरणम्। जी-ड्यति। प्रजेजुड्त्। देग्छं जोड्यति दिट्स ब लं तेषाचा जोड़ित, अवि ११३।

चत्-चंह, भाः, या। दीतिः। जीतते। जुजुते। युद्धः योतते।

जुन् – (जुड्), तु, प। गमनम्। " जुनिति। सक्ती जुनन्ति, की १५२। जुर्वे — जुर्वी (उर्वी) भूग, प। बध:।

जुल् जु, प, वो। पेषणम्। ः चूर्णीकरणम्। कोलयति।

जुष्-जुषो, तु, या। १ मीति:। क्षेत्रं। इसेवनम्। मजनम्। प्राप्ययः। उपयोग:। लट् जुवते। न किं सुधा नामजुषो जुषकी, राध्वया गडवीयम् १, ४८। तविवीधं जुवस च, भारत । यचमजुष्रतः, भ एक, ४२। सिट् जुजु-षे, रेघं जुजुबे (बारुकः), भ १४,८५।९ सुर् जोषिता। सुङ् यजोषिष्ट। यजो-विषाताम् । वजीविषतः। विषति, जुजीविषति। यङ जोज्यते।

जोजोष्टि। पिच् जोषयति। घजूजु षत्। जुष्, च,प। १ पितिकंपम्। जहः। २ हिंसा। ३ पितिपंपम्। जोष-यति। जोषिति। (ई) जुष्टः। ब्रह्मस-सूइजुष्टः, भ १, ४। घात्रममण्डलं स्वगर्गोर्जुष्टम्, भारत। ऋषिजुष्टजले, षमरः। कस्मलमनार्थेजुष्टम्, गी २,२। प्र-विषयेषु प्रजुष्टानि (प्रसन्नानि), मनुः २,८६। सजूः। संजुषी।

जूर-जूरी, (यूरी) दि, शा।
१ हिंसा। १ वयोहानिः। जूर्यते।
जुजूरे। जूरिता। भन्ने तखस्यस चिरं
जुजूरे (अध्यति सा), भ ११, ८। (ई)
जूर्यः।
जुजू-(यूष्) भा, प। शा, वो। हिंसा।

जु—भा, प, वी'। न्यकारः। तिरस्कारः। जरति। जजार। जन्ती। जुम्म्—जुम्—जुमि, जुमी, (जमी)।

भा, या। गावविनामः। गावभङ्गः। जुक्राणम्। प्रकाराः। प्रादुर्भावः। सट् जुमाते। जुमाते बाला गर्भभरालसा। सा द। लिट् जजुमी, सधुर्जजुमी, कु ३, २४। लुट् जृम्मिता। लुङ् मजृ श्रिष्ट। जुम्मितम्। जुभी, जर्भते, वो। (ई) नुखः। जुमामागयज्ञुषी परिसञ्च, प्रवृत्ते । अर्थाः विवेतः चात्रती चुवती जन्ममाणां वा, सनुः ४, ४३। **डद् — डद्यः । ः विका**यः । ∴ वृद्धिः । गोतांग्रहक्क भते, रहा ३, १०२। सुकातः सुक्तृकाते सा, ने २, १०५। व्यालं वानस्यास्तरन्तुभिस्सी हिरोहुं समु ज्ञमते, नीतिधतत्रम् ८०। प्रमोज-मुळा काते, अनर्घ २४। वि लुकाणम्। व्याप्तिः। व्यज्भावतावरे, स १५. १०८। विज्ञासितस्य सन्धवारस्य, र

७, ४२। तूर्यमिखनाः सद्मनि व्यक्तु-भन्त, र.३, १८। १२, ७२।

जु जूष, दि, प। जू, क्रा, प। नीर्णीभावः। वयोद्यानः। च्चरा। परिपाकः। विसयः। चयः। सद्जी-र्थ्यति, वच्चं जीर्थ्यति विच्चिषः, सद्दाना प्, प् । सी इदानि जीर्थन्ति कालेन। ह्या न जीर्थित जीर्थतः, भारत। जृषाति। जृषीतः। कायो न जीर्श्वति ज्याति न यस्य प्रतिः, कवि ८। बिट जजार। जजरतु:। जैरतु:, पा ६, ४, १२४। जेरराया दयाखरा, भ १४, ११२। सुट् जरिता, जरीता। स्टट् जरियति, जरीयति। गागिषि, जी-र्यात्। तुङ्दि, घजारीत्। घजरत्, पा १, १, ५८। क्रा, अजारीत्। ध-जारिष्टाम्। अजारिषुः। श्रजारीदिव च प्रचा बलं श्रीकात्तयाजरत्, ६,३०। **उदरेऽजरबन्धे तस्त्र, भ १४, ५०** सन् जिजरिषति, जिजरीषति, जिजी वैति। यह जेजीयते। जाजाती विच् दि, जरयति, घटादिः। क्रा जारयति। जॄ, चु, प। वयोद्यानि जारयति, जरति। यदिदियां जरि चेतिस भीगळणा तेषां वपूंषि विधि नेषुच जारयन्ति, कवि ८। जरिला जरोत्वा, पा ७, २, ५५। जवैन निपेतुः घाखिनः, सं ८,४१ जीर्षः। जीर्षः। जरन, या १, २०४। (ष्) जरा। जजैरः।

जेष्—जेषृ (एषृ) स्वा, या। गतिः। जेद्र—जेद्ध, स्वा, या। प्रयक्षगत्योः। जै—(चै) स्वा, प। चयः। जायति। जजौ। जाता। यजासीत्। २ जापनम्। जय मिचेति चुरादी
जापनं मारणादिकञ्च तस्यार्थः, कौ
८४। (मारणाकोकननियानतोषणस्तुत्यः), दूर्गा। जपयित, पा ६, ४,
८२। प्रजिज्ञपतन्। जीपति, पा, ७,
४, ५५। जिज्ञपिषति, पा, ७, २,
४८। जिज्ञपिषति, पा, ७, २,
१८। जिल्लाम्

ज्ञा-क्रा, प।

श्रनुपसर्गात् श्रा, पा १, ३, ७६। ज्ञानम्। बोधः। जानाति, पा ७, ३ ७६। जानीते, गां जानीते, पा १ ३, ७६। सर्पिषी जानीते, पा १, ३, ४५। २, ३, ५१। चन्दर्भश्चिष्टं गिरां जानीते जयदेव एव, गीतगी १, ४। बिङ् जानीयात्। जानीतः। ज्ञाङ्, प्रजानात्। श्रजानीत । अञ्चलनता लिट् जन्नी। जन्नतु:। जन्निय, जन्नाय। जन्निव। यन्ने। लुट्। जाता। लुट् जास्यति। •ते। श्राधिष, ज्ञायात्, 'ज्ञेकात्। जामीष्ट । लुङ् यज्ञामीत् । यज्ञासिष्: । मा जासोस्व सुखी रामंः, भ १५, थो भोगेषु रती विद्युद्धां नाजा-सिषम्, स ७, २६। लुङ् नाज्ञास्यस्व-सिदं सवम, भ ५, ८,। कर्माण, जाधते। जज्ञे। जाता, जायिता। जास्यते, जायिष्यते। जासीष्टं, जायिमीष्ट । श्रजायि। 🕆 श्रजायिषत्, 🗀 श्र**जास्त**। जास्ये इं समस्तैर्ज्ञीय खन्ते मया, भ १६, ४०, ४१। नूनं नाजायिषि वया, भ ४, ३२। पन् जिज्ञासते, पा १, 🕫 ३, ६७। जिज्ञासमानी बनमस्य बाह्वोः, भ २, ४३। भावं जिज्ञासमाना सुनि-द्वीमधेतुः, र २, २६। इयस् जिज्ञा-साम्बिकिर, भ १४, ८१। यङ् जान्ना-

यते। जाजेति। णिच् (१मारणम्, ्र तोषणम्, ३ चाचुषचानम्, ४ चाप-नम् ५ तौच्णीकरणम्, एष्वेवार्षेषु जा-नातिर्मित्, की ८४)। अमारणादी जा चुरादिघेटादिसेति वो । प्राप्यति। মলির্বন্। মর্বি, মর্বি। স্মর্ট च्चपम्। चार्पे चापम्। चा, चु, जंा नियोगः। प्रेरणम्। ज्ञापयति । सत्या स्वामी, दुर्गा। यात्रापयति यो सत्यान् यत्ते संज्ञपयत्यजान्। भूषासाभितान-स्वामिर्वाग्मिर्विद्वापयन्ति यम्॥ कवि ६८। है तज्जापयत्याचार्थः विज्ञापना भर्तेषु बिडिमेति, की पश् । जिज्ञाप-यिवति, जिन्नपथिवति। न्नोपति, पा ७, २, ४८। जात्वा। • जाय। ज्ञातः। ज्ञानम्। ज्ञेयम्। ज्ञाता। जवितः। जप्तः, पा ७, २,२७। जिल् तः। जापनम्। अनु - अनुजा। त्वाम-नुजानामि न गन्तव्यम्, रामा। तती-८नुजन्ने गमनं सुतस्य (.कमंगि लिट्), म १, २३। चिनु जिज्ञासित युवस्, चा १, १, ५८। यनुजिज्ञासता बङ्गाद-र्घनमिन्दुना वदैयत, भ ८,३५। अप-भपक्रवात गोपनम्। अतमपनानीते, पा १, ३, ४४। शालानस्यजानानः ग्रामातोऽनयहिनम्, भ द, १६। यभि—यभिज्ञानम्। सर्णम् । जा-नम्। प्रभिजानासि यत् काश्मीरेष्य-वसाम, पा ३, २, ११२। संभाविष्याव एकस्यामभिजानासि मातरि, से है, १३८। व्रत्यभि 🗝 प्रत्यभिज्ञा 🚚 चनुभवः। खय्यखरान् प्रत्यभिनातते, जनवी ८५१ 👉 भव्-भवज्ञा। 🔭 अवसानना । 🦜 श्रवजानासि मां यसात्, र १, ७८। भाः णिच् अक्षा। अदिशः। असि-नम्। विज्ञापनम्। पाजापय स्रोतेषु

্যা

यत् वस्पोयम्, कु ३, ३। यथाचाप-ग्रेंबागुवान्, यंतु १, ३८। उप-चा-यज्ञानम्। उवज्ञा ज्ञानमायं स्थादिः त्यमरः। पाणिनिनोपन्नातं व्यातरः पम् (विनोपदेशेन ज्ञातम्), पा, ४, ३, ११८। प्रति प्रवगतिः। प्रणिजा-नीहि, मार्ट, १०० । परि जानम्। निव्याः। । मन्द्रहेतुं परिज्ञाय, दितो । प्रासम्बर्ध कोषः। परिज्ञानस् । न स्तियं प्रजानाति । कसिद्पासयीवनः, भारत। प्रति—प्रतिज्ञा। प्रतं प्रति-जानीते, पा १,३,४६ । प्रतिजृत्ते रचसां वधम्, भ १८, ६४। प्रसन्नास्त क्रियाः पहुः, भ ८, २६। वि-विधिष्टज्ञानम्। णिच् विज्ञापनम्। विभीषणः प्रणस्य व्याजज्ञवत्, प्रनर्धे १५४। इति विजापितो राज्ञा सुनिः, र १, ७४ । सम् जानस्। चवेचगम्। मतं मंजानीते, पा १, २, ४६। संजातान् परिचरन्(चेतयतः),स ८, २०। (बत्कण्डापूर्वकस्त्ररणम्) मातरं मातुर्वा संजानाति, पा २, ३,५२। णिच् (सारणम्) संज्ञपर्यात मत्नुन्। । १ १ १ १ १ १ ्र प्रचा क्राम्या, प्रावधोहानिः हाणो . जरा। बट् जिनाति। जिनीतः। जिनन्ति, या ६, १, १६। ॥ अतिङ् जिनी-॥ यात्। लङ् रैग्रामिनात्। विट् विज्यो, पा ६, १, १७। जिन्यतुः। जिन्यये, जिन्याय। जिन्यिवः। तुट् ज्याताः। नृट् न्यास्त्रति । साधिषिः, जीयात् । लुङ् प्रच्यासित्। प्रच्यासिष्टाम्। प्रच्यासिषुः । कर्मीण जीयते । सन् जिज्यासति ।यङ् जे जीवते। जाज्याति, जाज्येति। णिच् ज्यावयति। जीला। • ज्याय, पा ६, १२, ४२ । जोनः, पा द, २, ४४। ज्यानिः। च्यु च्युङ् (चुङ्) भ्वा, जा। गतिः।।

ज्युत, स्वा, मा, वो। दौप्ति:। च्ची तति। ०ते। च्यो च्योङ्, स्वा, या, । १ नियमः) २ ब्रतस्यादेशः। ३ ७ पनयनम्। ज्यवते। चि-(जि) खा, प। श्रीसंसवः। न्यूनीभावः। न्यूनीकरणम्। चौ, क्रा, प, वो। व्य (जु) जो, बो, चु, प। वयोद्वातिः। जोणीभावः। व्ययति। जियाति। जिज्ञाय। जेता। अर्जे षोत्। जायग्रति, जयग्रति। ज्योषः। जीपिः। च्चर्—स्वा, प। रोगः। च्चरति। जन्दार। च्चरिता। यन्दा-रीत्। जिञ्चरिषति। जाज्यर्थेते। जाजूति, पा ६, ४, २०,। ीपाच् ज्वर-यति, घटादिः। श्रजिञ्चरत्। ज्वरिः

तम्। क्रिप् जूः, जुरी। सम्—सन्तापः। सन्तापसञ्चरी स मी इत्यमरः। सं ज्वारी। ज्यक् भ्या, प। १ दी सि:। ज्यक्तम्। २ कस्यः, वो। सट् व्यस्ति। राह्ये ज्यस्ति सहीषध्यः, प्रनर्ध १८। धि-गिद्मं प्रकं ज्वलति, रहा ४, १८१। बिट् ज्ञानः। जञ्चलतुः। जञ्जानस्राजा म १ ॥। लुट् ज्वलिता। लुट् व्यक्ति यति। नुड् प्रज्यानीत्। प्रज्यानि ष्टाम् । प्रज्यालिषुः । गिरावज्यालिष् रास्त्री सहीषध्यः, भ १५, १०६। सन् जिञ्च विषति। यङ् जाञ्च व्यते। जाः ज्यव्**ति। णिच् ज्यस्यति, ज्यास** यति,। उपसर्गात् प्रव्यवयति । प्रव्याः ल्यतीति तु घवन्तात् तत् करोतीत णी सिद्रम्, जी दक्षा ज्वजितम्। ज्वः ल्नम्। व्यतः। व्यातः। प्रसिक्वेनन्, भ ६, १२। डद्-डळवलोभावः। दीसि:। प्रव्यक्तम्। रणाङ्गानि प्रज ज्यत् ज्यतिर्. स्वा, प, वो। (जत्य)। ज्यलुः, स १४, ८६।

(新)

भेट्—(जट्) भ्वा, पा संघात:। राशीकरणम्। भटति। जभाट। भटिता।

भाम्—भामु (चमु) खा, प। श्रदनम्। ुभार्च्—भार्छ्—भार्भ्—(चर्च्)

भ्वा, तु, प । १पिसावसम्। उत्तिः। २ तर्जनम्। भर्त्तेनम्। भर्चिति। भर्च्छेति, वो। भर्भोति।

भन्नष्—(कष्),स्वा,पा हिंसा। भन्नष्,स्वा,उ। १ श्वादानम्।ग्रह-णम्। २ संवरणम्। श्राच्छादनम्। भन्नविता विते।

भु—भू—भगू—भुङ्, भूङ्, भगूङ्। स्वा, त्रा। गतिः। भवते वा, 'भावते'। सूष्—(यूष्), स्वा, प। हिंसा। भू—भूष् (जृष्), दि, भृ (जृ)।

क्रा, प। वयोहानि: । जो. शीभाव: । भार्येक, भृषाति । जभार । जभार । जभार । रतः। भारता, भरीता। अभारीत्। (व) भारा। भभेरः ।

(で)

टङ् — टकि, चु, प। बन्धनम्।

टक्क्यित। टक्क्ति। उद्- उत्तेखः। उडक्कितः। नाकष्टं न च टक्कितं न नमितं नोखापितं धनुः, महाना १। २४।

ाः ट**ल्⊸भा**,प । १ वैक व्यम् ।

व्याकुललम्। २ वैक्षव्यम्। विद्व-बीभावः। ठलति। टटाल। टेलतुः। टिलता। श्रद्धालीत्। दृष् दृत्ति। टुलः। टालः। दृलः। दृालः। टिक् - टीक्, टिक्क, टीक्क, (कार्कि) 🔩

भ्वा, श्रा। गति:। टेकते। ष्टिटिके। टेकिता। टेकिता। टोकते। टिटोक्ने। टोकिता। टोका। टोक, टोकते इति कश्चित्। टिप्, चु, प, वो। प्रेरणम्। टेपयित। टुल्—(टल्), भ्वा, प। विक्तवः।

(嗎)・

डप—(डम्प, डम्प्र, डिम्प, डिम्प), चु, त्रा, ड, वो। संघात:। डापयति। ॰ते। डपि, डम्पयति। ०ते। डिमि, डम्पयति। ०ते। डिपि, डिम्पयति। ०ते। डिमि, डिम्पयति। ०ते।

डम्ब्—डवि, चु, प, वो। नोदनम्। क्र

प्रेरणम्। इज्वयति। हिनि, हिन्स् यति, नो। नि—श्रनुकरणम्। ऋतु-विङ्ग्बयामास तम्, राष्ट्र, १८। विङ्ग् म्बना। विङ्ग्बति (स्वि)।

डिप्, दि, तु, चु, प्रश्ने चेपणम्।
प्रेरणम्। डिव्यति। डिप्ति। डिडेपे।
डेपिता। चडिपत्। तु, डिपिता।
चडिपौत्। डिप (डप) चु, म्रा, ड,
वो। सङ्घातः। डेपयति। ०ते। डिपन्ति
यस्य सातङ्गा डिप्यन्ति च तुगङ्गमाः।
डेपयन्ति सनुष्यास्य युद्धे निक्नोन्नतां
सुवम्॥ कवि ८६।

ভিৰ্-ভিৰি (ভবি)

डी, डीड्, स्वा, दि, भा। १ उड्डयनम्।
नभीगमनम्। २ गितः, वो १ स्ट्
डयते, डीयते। सिट् इडिचे। सुट्
डियता। स्टट् डियथते,। सुड् भडयिष्ट। भडियपाताम्। भडियपत। सन्
डिडियपते। यङ् डिडीयते। डिडियोति।
सिन् डाययति। भडीडयत्। स्त

तड्

मते भ्वा, इधितः, इधितवान्। उद्-एडडियनम्। उडियन्ते घरा यस्य कोटियः समराङ्गणे। भग्नानामरि-भैन्यानामुड्डयन्ते रजांसि च॥ कवि १४२। उदडीयत पन्निभिः, नै २, ५। प्रोडिडनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगति-क्रिया दलसरः। यव—अधोगतिः।

(8)

दुग्द् — दुन्द, स्वा, प। अन्वेषणम्। दुग्द्धति । दुब्बते गीर्गोपेन । द्रीक् — दीक्ष (किक) स्वा, सा।

गितः। लट् होकते। वदनं होकते (पाहणीत), यक् ३, १८५। लिट् डुहोके, यान्तं वने राह्रिचरो डुहोके, भ २, २३। डुहोकिर्य पुनर्लक्षाम्, भ १४, ७१। लुट् होकित् पुनर्लक्षाम्, भ १४, ७१। लुट् होकिता। लृट् होकित्यते। लुङ् प्रहोकिष्ट। प्रहोकिष्तताम्। प्रहोकिष्तत। पन् डुहोकिष्ते। यङ् डोकिष्ति। पा ७, ४, २। प्रहोक्यद्रथम्, भ १७, १०३। डप—उपहोकनम्। लुण्योन प्रष्पाणि, कौस्तुभे ५ किरणः।

(त)

तक् भाग, प । १ इसनम्। २ सङ्गम्, वो । तकति । तताका । तकितात

तत्त — तत्तु, भा, प। तन्त्रस्यम्।

खयीकरणम्। तत्त्रणम्। लट् तत्तिः,
तत्त्रणोति, पा ३,०१,०६। लिट् ततत्त्व।
ततत्त्वतः। तत्तियः, तत्रहः। लुट् तः
चिताः, तष्टाः। लृट् तत्त्विष्यति, तत्त्वति।
लुङ् भतत्त्वीत्, भतात्तीत्। अत-

चिष्टाम्, यताष्टाम्। यति चष्टः, यताचुः।
सन् तितचिषति, तितचिति। यङ्
तातचते। ताति । णिष् तचयित।
यत्तत्वत्। निर्, सम् भक्षेनम्।
व्यथनम्। सन्तचिति वास्मिः, पा ३, १,
७६। सम्चिद्धदानी वचसा निरतचः
वरातयः, भा ११, ४८। तच्, मृा, प।
१ त्वचनम्। याच्चादनम्। २ त्वेषो
यहणम्। ३ परियहः। तचित। तत्व।
तचिता।

तक्ष्, ति , भ्रा. प। कच्छ जीवनम्। दी:स्थ्यम्। तक्षाति। ततक्षः। तक्षिता। वतक्षीत्। वा—वातक्षः। भयम्। तक्ष—तिव (व्याग) भ्रा, प ३१ गातः।

२ स्वन्नम्। ३ कम्पः, वो। तङ्गति। ततङ्गः। तङ्गिता। व्यागः, वङ्गति, वो। तञ्ज, तञ्ज्, तन्तु, तन्तु, र, प।

सङ्गोचः। बट् तनि । तङ्कः। तः च्वित्। तञ्जनि । तन्विम । तन्विम । तन्विम । बुट् तङ्काः, तिच्वा । यत्वि । तिच्वित । यङ् तात्व्यते । तात्व्ति । विच् । तव्वयति । तक्काः । तव्वयति । तकाः, तिव्वया । तकाः । तव्वयति । तकाः । तव्वया । तकाः । तव्वयति । विच् । याः । याः । याः । याः । याः ।

तर्—भा, प। उच्छायः। उच्चीभावः। तर्रातः। ततारः। तरित तरः, चु, प, वो। बाहतिः। तारयति तरः, नु, प, वा, प। बाघातः।

নত্বনি। নত্বিনা। (उ) নত্বিলা,

तक्ता। तक्तः।

ताङ्नम् । तङ् (घनि) चु, प दीप्तिः । ताङ्यति । घतीतङ्व् । घत ताड्च मुष्टिना (ताड़ं करोतीति णिच्), भ १५, ७८। शिष्ट्ययें ताड़यत्ती, मनु ४, १६४। तं हत्तेरताड़यत्, भ ८, ३२। श्रताड़यन् स्टक्षांस, भ १७,७।

तण्ड्—तिंड, भ्वा, श्रा। ताड्बम्। श्राष्ट्रात:। तण्डते। ततण्डे। वितण्डा। तन्—ततु, त, उ। विस्तारः।

व्याप्तिः। प्रसारणम्। लट् तनोति, पा ३, १, ७८। तनुतः। तन्वन्ति। तन्वः, तनुवः । तनुते । तन्वाते । तन्वते । तनोति रविरातपम्, कु २, ३३। डि, तनु। तनवानि। बिङ् तनुयात्। तन्वीत। बङ् अतनीत्। अतनुताम्। अतन्वन्। अत-नवम्। धतनुत्। धतन्वाताम्। धत-न्वत। तरवः पुष्पान्तरानतन्वन्, भ १०, २२ । बिट् ततान । तेनतुः । तेनियं। तेने। अतू इलं तस्य ततान, भ २, १९। कूलानि सरोजलच्यों तेनुः खलपश-डामै:, भ २, ३। पितुंर्मुदं तेन ततान मोऽभैकः, रं ३, २५। लुट् तनिता। स्टर् तनिष्वति। ०ते। तुङ् पतनीत्, षतानीत्। षतानिष्टाम्। ष्रतानिषुः। र्यतत, अतनिष्ट। यतनिषाताम्। चतनिवत । अतथाः । चतनिष्ठाः, पा २, ४, ७८। त्रातिष्ठा तमो यथा, भ १५, ८१। कर्मण, तायते। तन्यते, पा ६, ४, ४४। श्रतानि। सन् तितनिषति। •ते। तितांसति। ०ते। तितंसति। ०ते, पा ६, ४, १७। यङ् तन्तन्यते। तन्तन्ति, पा ६, ४, ४४। णिच् तानयति। मनीतनत्। तन्तु, प्रारुखद्वा। २ खपकातिः । २ त्राघातः सिंसा वर्जनम् वो। ४ सुनीति: । भ्रं भन्दः । ६ उपतापः, दुर्गा ।

७ (उपमर्गात्) दीर्घीकरणम् । विस्तारः। तानयति, तनति। (ड) तनिला. तला। ०तत्य। ततम्। तन्तिः। तननम्। तानः। तन्वन्। तत्। व्यति - श्रन्थोन्ध-विस्तारः। व्यव्यतन्वातां सूत्तीं, भ द, ३। घव-व्याप्तिः। गक्ताताः सन्तिभिरन्तरीचमवतेने, भा १६, ४२। या—व्याप्तिः। जड्तामातन्रोति उत्तर ८१। उदं—अर्ह्व विस्तार:। उत्तान:। परि-सर्वतो विस्तार:। वेष्टनम्। प्र—विस्तारः। क्षतिभिवीचसात्यं प्रतायते, सा २, ३०। वि-विस्तारः । वितत्य शार्कम्, भ ३, ४७। कौतुक-क्रियां वितेनतुः, र ११, ५२ । क्रियां व्यतानीत् (प्रारब्धवान्), सं १, ११। विततेषु अध्वरेषु, कु २, ४६। विच् दीर्घीकरणम्। विस्तारः। वितानयति, वितानयति यः कीत्ति वितनत्यमलं यमः। वितनीति चयः स्त्रीणां हृदये सन्मयव्ययाम्॥ कित्र ८२ । सम्-विद्यारः । सन्ततम् । सततम् । 🕶 🦠

तन्त्र — तत्रि, चु, चा।

१ जुटुब्बधारणम्। पोषणम्। २ धारणम्। धरणम्। ३ विस्तारः। तन्त्रयते। प्रजाः प्रजाः खा दव तन्त्रयित्वा, प्रजाः, ५,८।

तन्त्र तन्त्र, तिव्र, तिद्र, चु, प।

१ सादः। अवसादः। २ मोहः। तन्त्रः यति। तन्त्रोः। तन्द्रयति। तन्द्रोः। सीत्रधातुद्दयमिति वेचित्, दुर्गी।

तप्—्भा, प्। अन्तापः।

दाइ:। शोकः। तप् दि, या। १ ऐख्येम्। प्रभुशावः। २ उपतापः, वो। ३ तपःकरणम्। लट् तपति। यर्जनार्थं प्रात्मनेपदं यक् च। तप्यते तपस्तापसः

संचित्र। त्रयं धातुरै खर्ये वा तङ्खनी स्वभते। प्रन्यदातु प्रव्यिकरणः परसी-• यदी, की १२६। तपत्यादित्यवद्यामा त्रायते यः परन्तुपः। तपते रिपुराष्ट्रश्च ्ताप्यत्यहितं सताम्॥ कवि २८। तपति तनुगाति! मदनस्वाम्, यज्ञ ३, ८८। रविस्तपति नि:शक्तम, स रहे है। तपृत्यादित्यवचैव चचंषि च सनांसि च, सनु'७, ६। तपति न मां कियलयशयनेन, गीतगी ७, ३१। जिट् तताप। तेपे। जुट् तसा। स्टट् तपाति। •ते। लुङ् चतापात्। चता-साम्। अताप्सः। अतसः। अतसाताम्। श्रातपात। वनमतापीच्छनैर्भानुः, भ ८, २। भावकर्मणीः, तस्यते। श्रन्वतस यापेन, पा २, १, ६५ व वर्मवर्त्तर चत्रा तपस्तापमः। तपति तापसं तपः (दुःखयति)। तप्यते तपस्तापसः (अर्जयित), पा ३, १, ८८। तेपे तप: क्रवटवासनः, चनुर्घ ३४। सन् तित-प्रक्रि। • ते। यङ् तातम्यते। तातिम। तप्, चु, प्। दाइः। तापयति। तपति। त्रा । अतीतपत्। अयमात्मनेपदीति केचित्। ताप्यते, दुर्गा। तप्, भ्वा, छ, वो। टाइ: तपति। ∙ते। तिपता। अयं सेट् इति वोपदेव:। तसम्। तएनम्। ताप:। तपन:। अनु -श्रनुतापः। पश्चात्तापः। श्रोकः। श्रन्व-तंत्र पायेन, पा ३, १, ६५। विरइ: किसनुताप्रयेहिपश्चितम्, र द, ८०। यभि-एतापः। यभितप्तमयोऽपि साईवं भजते, र द, 88। आ—आतपे:। दोसि:। उत्तवति सुवर्षे सुवर्णकारः, षा ३, १, दद । उत्तपते, पा १, इ, २०। उत्तपमान चातपः, भ द, १५।

उप-उपतापः। निर् उत्तापः। निष्टपति स्वर्णम् (सञ्जदिननं स्प्रशंयति)। निस्तपति सुवर्णम् (पुन: पुनरानं स्यर्भयति), पा८,३,१०२। निष्टक-न्तीसिवात्सानम्, सट, ८५ ।, परि— परितापः। श्रनुतापः। श्रीकः। सन्तापः। कं स्वीजता परितापयन्ति, हितो। हितादवेतः परितप्यमे, भा ११, २८। परितप्यते नोत्तमः परहिद्यभिः, भा १६, प्र-प्रताप:। सन्ताप:। भासस्तवोगा प्रतपन्ति, गौ ११, ३०। प्रतपतु नरेन्द्र-चन्द्र:, रत्ना १, ८। वि—दीप्तिः। वितपते रवि:, पा १, ३, २०। मद, १४। सम्-सन्तापः।

तम्—तमु, दि, प। १ श्वाकाङ्वा।
२ ग्वानिः, वो क्वशीभावः। ताग्यति, पा ७, ३, ७४। न च दुःखेन
ताग्यति, कवि २४५। ततामः। तेमतुः।
तमिता। तमिष्यति। श्वतमत्। (श्वतम्त्रं, श्वतामि, वो)। पिच् तमयति।
श्वतमि, श्वतामि, पा ६, ४, ८३। ७, ३, २४। (३) तमित्वा, तान्वा। तान्वः।
ग्रद्धन्तान्त्वन्तान्तमनोक्षयत्, मा ६, २०। उद्वत्वतान्त्वतान्तमनोक्षयत्, मा ६, १७।
त्वत्व्यतान्तमनोक्षयत्, मा ६, १७।
त्वत्व्यतान्तमनोक्षयतिः। चिन्ताम्यस्तिः। चिन्ताम्यस्तिः। विन्ताम्यस्तिः। विन्ताम्यस्तिः। विन्ताम्यस्तिः। विन्ताम्यस्तिः। त्वाम्यस्तिः। तम्बाम्यस्तिः। विन्ताम्यस्तिः। विन्ताम्यस्यस्तिः। विन्ताम्यस्तिः। विन्तिः। विन्तिः। विन्तिः। विन्तिः। विन्तिः। व

तस्ब्—(वास्ब्) स्वा, प। हिंसा। तय्—(षय्) स्वा, था। गतिः।

पालनम्, वो। तयते, तयते चत्रहत्तं यः, कवि ४०। तेये। तयिता। चत-यिष्ट। तेये पुरात्, भ १४, ७५। चरि-स्रों तेये, भ १४, १०८।

तर्क् — (क्रुप्र) चु, पा १ दीसिः। २ वितर्का जदः। ३ संग्रयः। स्ट्र तर्कथिति। व्यचिष्यगद्धमवतीं परि-त्यान्तां तर्कथामि। यकु १, २१। जिट् तर्कथामास। जुट् तर्कथिता। जुङ् अततर्कत्। तर्कथिता। •तर्क्थ। तर्कित:। तर्कथम्। तर्कः। प्र. वि— वितर्कः। प्रतर्कथमन्द्रगद्दान्,

भ २, २८।

तर्जं — स्वा, प। भर्मं नम्।
तर्जेत। तर्त्जं, तं तर्त्जं, भ १४,
८०। तर्जिता। अर्त्जोत्। अर्त्जंष्टाम्। अर्ताजं षुः। तिर्तिजेषित।
तार्त्ज्यंते। तार्तामं। त्यिन् तर्ज्यति।
तर्जे, चु, आ। तर्जनम्। तर्ज्यति।
तर्ज्यति भर्मं यति इत्यपि दृष्यते
कविष्विति आख्यातचन्द्रिका, स्युटीका १२, ४१। अदितान् तर्ज्यविव
केतुभिः, र ४, २८। तावतर्ज्यदस्वरे,
र १२, ४१। सोऽतर्ज्यत् स्तम्, भ
१७, १०३। सखीमङ्ख्या तर्ज्यति,
यक्षु १, ९८२। तर्ज्वे यो हि भूपालान् न तर्ज्यति संज्यनान्, कवि
२५६। तर्ज्यी।

तई—श्वा, प। हिंसा। तदित।
तर्व —श्वा, प। गितः। तर्वति।
तर्व —स्वा, प। गितः। तर्वति।
तालयति। तर्वति, वी। भितानित्।
तस्—तसु, दि, प। उपचयः।
वस्तु हानिः। उत्तेपणम्, वी। तस्थित। ततास। तसिता। भतसत्।
भतसत्, भतसीत्, भतासीत्, वो)।
(ड) तसिता, तस्वा। तस्तः।
तंस्—तसि, चु, प। भलङ्करणम्।
भवतंसयति। भवतंसति, वो।

सियथित क्वांस्तव देवि! भीमः;

ताय-ताय, भ्वा, श्रा। १ सन्तानः।

प्रवन्धः। विस्तारः। रणाजनम्। जुट् तायते। श्रमणेंऽतायतः, म १७, ५०। कामास्तेऽन्यत्र तायन्ताम्, भ २०, २५। तायते स्वकुलत्रतम्, किन्नः ४०। सिट् तताये। जुट् तायिता। जुट् तायि-व्यते। जुड् श्रतायिष्ट। श्रतायि, पा ३, १, ६९। श्रतायिषाताम्। श्रतायिषतः। श्रताय सन्त्रमस्य (सन्ततम्), भ १६, १३। णिच् ताययति। (स्ट) श्रततायत् मायां व्यतायताम्, भ १७, १०५।

तिक्—तिग्, खा, प। १ गतिः।
२ श्रास्तन्दनम्। गतिविशेषः। ३ वधः,
वो। तिक्कोति। तिग्नोति। तिक्क (किका) भ्वा, श्रा। गतिः। तेकति। ते-किता। तिघ्—खा, प, वो। घातः। तिश्लोति।

तिन ना, पा। १ तिशानम्। तीच्णीकरणम्। २ चमा। सङ्गम्। जमायां सन्) तितिच्तिऽपराधम्, पा

(ज्ञमायां सन्) तितिच्तिऽपराधम्, पा

३,१,५। श्रतिवादां द्वितिच्तेत, शनु
६,४०। तितिच्ते चमी यस्तु साकराधेषु साधुषु। बिट् तितिचाञ्चक्रे।
लुट तितिचिता। बुङ् श्रतितिचए। तिज्, चु,प। निगानम्। तैजनम्। तेजयति। कुसुमचापमतेजयदंशभिर्द्धिमकरः, र ८, ४१। •तेजयम्ति
यमाक्रस्य कवि १६८। छह्न उसेजनम्। प्रोरणम्। उहीपनम्। व्ययकरणम्। तीच्णोकरणम्।

तिप् → तिष्ठ, भा, था। चरणम्।
च्युतिः। तिपति। तितिपिषे।
तेसा। चीरखामी वियं सेट् इति
बंभाम। विभाषितेट् इति वोपदेवः।
तेप्स्ति। तिप्सीष्ट। यतिस्। यतिप्साताम्। दिष्ट, देपते इति कस्यत्।

तुम्ब

ू तिम्चिंद्र, प। आर्द्रीभावः। ुक्लोदनम्। तिस्यति। तितीम। तेमि-ता। तीम्, तीस्यति, वी।

तिल्-तिल्-सिंग्-भूग, प। गतिः। तिन, तु, चु, प। स्रोडनम्। स्निन्धी-

भाव:। तेलति। तिलति। तिलति। तेलयति। तेतित्यते शिशुजनी धनिनां ग्रहेषु। तिसन्ति यौयनमदेन रते युवानः।

कवि ४७। तीक, तीक (किक) भूग, घा। गति:।

तौम्—(तिम्) दि, प। स्रोदनम्।

तीम्यति ।

कार—(पार)चु, प। ग्रदन्तः। श्रातती-तीरयति। कमसमाप्तिः। TO RELATED TO PURC.

तीव्-(पीव्), मृा, प। स्थील्यम्। तीवति। यस्तु नातीव तीवति, कवि er kalandalaning (kin juliah

ु तु घरा, व । सीवधातुः ।

१ गति:। २ वृद्धिः। पूर्त्तिः। ३ हिंसा। ४ जीवनम्। वृत्तः, वो। तीति। तवी-ति, पा ७, ३, ८५। तुतः। तुवीतः। तुर्वन्ति। तुताव। तीता। तोष्वति। जतीषीत्।

तुज् भूग, प। हिंसा। तोजति। ्तृ च्यू - तूजि, भूं।, प। १ पालनम्। २वलम्। ३ हिंसा । ४ जीवनम्, वी। ५ याच्या, वो। तुद्धति। तुतुद्ध। तुष्त्रिता। प्रतुष्त्रीत्। तुष्टः। तुनि, (क्रप) चु, प। शैक्षिः। तुनि, चु, प। १ हिंसा। २वनम्।३ दानम्। ४वासः। तुष्त्रयति । तुष्त्रति । तोजयतीति

वीचित्। एवं सजि, सञ्चयति।

तुट्-तु, प। कल इकारणम्। तुर्टति। तुतीर। तुरिता। पतः टीत्।

तुङ्—तुड्, भा, प। तुड्, तु, प। तोड्नम्। दारणम्। भेदः,। हिंसा। तोडति। तुनोड। तोडिता। तुडित। षतुड़ीत्। तुडिता।

तुड्ड — भा, प वो। अनादरः। तुण्-तु, प। कुटिनीकरणम्। तुणति। तुतीय तीणिता। चती योत्।

तुग्ड्-तुडि, भ्वा, या, वो। वधः। निपीड़नम्। तुण्डते पान्यं पिकः, दुर्गा ।

तुख—चु, प। घदन्तः। यावरणम्। तुस्रयति। तुस्रापयति, वो। पांय-दिंगां मुखमतुखयदुखितोऽद्रेः, मां, ५ 199

्र तुद्-तु, उ। व्ययनम्।

पौड़नम्। ताड़नम्। सट् तुदति। •ते, पा ३, १, ७०। तुद्धि सर्मापि वाक्षरै:, भारत। चतुदन् मिक्तिभिः इँदम, भ १७, १२। खिट् तुतीर। तुतोदिय। तुतुदे। तुतोद गदयारिम्, भ १४,८१। बुट् तोत्ता। बृट् तोत्यति। ते। बुङ् यतीक्षीत्। यतीत्ताम्। पः तीत्सः। अतुत्ता अतुत्साताम्। अतु स्रतः। स्रतीत्सः श्रुतः, भ १५, ४। सन् तुतुस्रति। •ते। यङ्तीतुद्यते। तोतीः त्ति। पिच् तोदयति। अतृतुदत्।

,विधुन्तुदः। कमंस् निस्तुतोद (व्यय यामास), भा १७, ४३। अवन्तुदः

तोत्तम्।

तुःचा। तुन्नः। तोदः।

तुन्द् (बन्द्)।

्रेतुय् — तुंफी, भ्या, पा चिंमा। तुं, पा १ चिंसा। २ स्त्रेथः, वो। स्तोपति। तुपति। तौफति। तुफति। तुम्फति, वो।

तुम् स्वा, चा, दि, क्राा, प।
हिंसा। वधः। लट्तोभते। तुभ्यति।
तुभाति। तुभीतः। तुभून्ति। सृष्टिनाऽतुभात्तम्, भ १७, ७८। चच्चानतुभात्, भ १७, ८०। लिट् तुतोभ।
तुतुमे। लुट्तोभिता। लुङ् स्वा, यतुभत्। चतीभिष्ट। दि, चतुभत्। क्राा,
चतीभीत्।

तुम्प, तुम्प, तुन्प, तुन्प, भ्वा, प।
हिंसा। तु, प। १ हिंसा। २ क्ले गः,
वो। तुम्पति। तुम्पति। प्रस्तुम्पति गौः,
पा ६, १, १५। न यङ लुकि, प्रतोतुम्पौति।

तुम्ब् — तुबि, भ्रा, प। घरैनम्।
पीडनम्। तुम्बति। तुबि, चु, प।
१ घरैनम्। २ घर्यनम्। तुम्ब्यति।
तुपि, तुम्पति। तुम्पयतीत्येके।

तुर्ब — तुर्बी (उर्बी), भ्रा, प।

इननम्। तूर्वति। तुतूर्व। तूर्विता। (ई) तूर्णम्। किए तूर् तुरी।

तुल् चु, प। डन्मानम्।

परिमाणम्। तोलयित, तोलयित काञ्चनं विणक्, दुर्गा। तोलित, वे।। यस्तोलयित दारिद्राकरंमे पिततान्, कवि २०४। श्रतुलत्। पृथिवी तोल-यिष्यते (जड्ड चिप्यते), भ१६, १६। तुलयित, तुलना, श्रत्यादी तुलाग्रच्यात् णिच्, की १७३। त्वदीयं सीन्दर्ये तुल्विगिरिकन्ये! तुलियित्म् इति शृक्षरोक्तम्। रामे सुद्रग्रासनं तुलयित्, महाना १, ३१। प्रतः सारं घन तुस-श्यितुं नानितः प्रचाति त्याम्। मेघ १ २०। तोनितम्। तोननम्। उद् उत्तोननम्। जड्डनयनम्।

तुष्—दि, पं। प्रीति:। तुष्टि:।

लट् तुष्यति। तुष्यन्ति ब्राह्मणा
नित्यम्, कवि १४८। लिट् तुताष्।
तुतुषतुः। तुतीष्ष्य। तुतोष हत्तंद्वाः
र ३, ६४। तुतुषुवीनराः धर्वे, भ १४,
११३। लुट् तोष्टा। तोष्टा च भरतः
प्रम्, भ २२, १४। लृट् तोष्ट्यति।
स्वयभूः कस्य तोष्ट्यति, भ १६, ३।
लुङ् भतुषत्। भतुषत् कुस्थकर्णः, भ
१५, ८। सन् तुतुचिति। यङ् तोतुष्यते।
तोतोष्टि। णिच् तोषयति। भतृतुषत्।

गुरून् सम्यगतूत्वः, भ ६, ६८। मूल्येन

तोषयेदेनमाधिस्तेनोऽन्यथा 🍞 🍱 भवेत्,

मनु ८, १४४। प्राप्त परितोषः।

प्रतुष्यति योतसुखैरपर्थैः, स १२,

८२। सम् सन्तोषः। भोजनविशेषे-वीयसं सन्तोषः, हिती। तुम् स्वा, प। शब्दः। तोस्ति। तुतास। तोस्ति। प्रतोन् सीत्।

तुइ तुडिर् (उडिर्) खा, प। अर्दनम्। बधः, वो। तोइति। अतु-इत्। अतोडीत्।

तृष्ट्—तृष्टु, भ्रा, प, वो। श्रनादुरः।
तृष्टु (तुष्टु) भ्वाः, प। तोष्ट्रनम् । दार-

तूण, चु, पा वी । श्रदकाः । सङ्गोचाः। तूणयति । अतुतूणत् । तूणः । रे

तूर्य-चु, प, वीत सङ्गीचः। क्रिं तूर्य, चु, श्रां। पूर्यम्। तूर्ययति । वि ा तूर् तूरी। दि, चा १ त्वरा।

• २ हिसा। तूर्यते, तूर्यते न कचित् क कार्यो, कवि २५५ । तुतूरे। (ई) तूर्णः।

हद

तूल स्वा, प्रा निष्कर्षः।

जिक्कोषणम्। यन्तर्गतस्य बहिनिः सारणम्। तूर्जतः। तृत्वः। यत्वीत्। तृत्वं, यु, प, वो। न्यरिमाणम्। तूर्वन्यति काञ्चनं बणिक्,। तूर्वयत्यपि देविन्द्रं संयाम अजविक्रमात्, व्ववि २०४। तृत्वं, यु, या। पूरणम्। तृत्वयते। तृत्वे। तृत्वे। तृत्वे। तृत्वे। तृत्वे। तृत्वे। तृत्वे। तृत्वे।

तूष-भ्वा, प। तुष्टि:।

तूषित । तूषित्त कुतंदेवताः, कवि १४८ । तुतूष । तूषिता । चतूषोत्।

ाह्य त्या, पो गतिः।

रुवति। तस्त्रे । स्विता । ब्रह्मीत्।

हण्—हणु, त, ज। भचणम्। तर्णातः। तर्णुते (हर्णातः, हणुते)। बर्जीवि तर्णीतः। दिशो हणुते हणम्,

पनर्घ ३५। त्योति मात्रवं युद्धे, कवि ७४॥। (७) तर्पिता, त्युवा। त्यतः। तर्पेकः। त्यम्।

्र हर्-बहरिर्, त, उ। हिंसा।

् श्रमादरः। जट् हणित्। हन्ते।
भूतिं हणित्र यचाणाम्, भ ६, ३८।
चि हम्द्रि। चिड् हन्द्यात्। हन्दीत।
जड् श्रहणत्। श्रहन्ताम्। श्रहन्द्रम्।
श्रहणदम्। श्रहन्ता। चिट् ततदै, रयाश्राम् रिपोस्तर्दद्रे शाखिना, भ १४,
१०८। तहदे। तहदिषे। तहस्रे, पा
७, २, ५७। चुट् तदिंता। चुट् तदिंश्रात्। ०ते। तहस्रेता। नृत् तदिंश्रात्। ०ते। तहस्रेता। नृत् तदिं-

लुङ् (इर्) सतदत्। सतदीत्। सतदिः ष्टाम्। सतदिष्ठः। सतदिष्ट। सर्मतः दिष्ठः, भ१५, ४४१। सन् तितदिषति। ०ते। यङ् तरीखदाते। तरीतर्ति। सन् तिखस्ति। ०ते। तद्यापि। सती-खदत्। (७) तदिंखा, खःखा। खसम्। वि—ताडनम्। ममीसि च वितद्यंति भ१६,१५।

हप्-दि, प। १ प्रीगनम्। तर्पेणम्। २ त्हिसः। त्ह्रसोभावः। हृण् स्ता, प। प्रोणनम्। सट् खप्यति। त्रप्रोति, पा ८, ४, ४८। त्रप्रुतः। त्रप्रु-वन्ति। नाम्निस्तृप्यति काष्ठानाम्। को न खप्यति वित्तेन, दितो। कथयस्य न दि स्यन्दीनि हप्यतु ख्यामि, भारत। मधूनि पिवस्त्रिवायम्, नै १४, १०८। यस्तृष्रोति पितृन्, वावि १०। ल्प्यति यो धनम्, कवि १५४। बिङ् खपुयात्। सङ्घखप्रोत्। सिट्ततपं, तिखपतुः। , ततिर्पेथ, तत्रप्थ, ततप्थ। तहपित्र, तहम्ब। चुट् तर्पिता, तर्ह्या, वशा, पा ६, १, ५८। ७, २, ८५। लृट् तपिष्यति, तस्रिति, तस्रीति, वप्रवित। खादिः सेट् तपिता। चय तपारिन्त मांसादाः, भ १६, २८। जुड् अतर्पीत्, अतार्धभीत्, अताप्सीत्। बढ्यत्। बतपिष्टाम्, बतार्शाम्, बता प्ताम्, श्रद्धपताम्। पितृनतार्षे सीन्द्रेपः रक्ततीयैः, भर, ५२। प्राणीवचाळवत्, म १५, २८। नातापाँद मचयन्, म १५, ४८। सन् तितर्पिषति, तित्रप्सति। यङ् तरीलप्यते। तरीतर्प्ति। चिच् तर्पयति। भूतीत्यप्त, भततर्पत्। त्यप्, चु, प। १ र्हाप्तः। २ प्रीयनम्। ३ सन्दीयनम्। तपैयति। तपैति। तपिता। द्वसः। हिसः। तर्पणम्। यशस्तर्पयतीव याः If Makama. 1 •

कवि १५४। इविषा योऽग्निच्यं तर्पति देवांस्तर्पयति विघोषकरणैः, कवि १०। श्रप-श्रपतपंणम्। भोजनाभावः। श्रा-श्रातपंणम्। प्रोपनिम्। श्रालेपनम्। परि-सन्यक्टितिः। परिस्तिः। सम्-सन्तर्पणम्। यावन्रशामेने विष्ठाः श्रामान् सन्तर्पयति, भ १२, ७५ ।

हिप् हिफ् तु, प। हिसः। हिप्ति। हिफ्ति। तिप्ता। अत्पीत्, की १५१।

दम्प्—दम्पः, दृन्पः, दृन्पः, तुः, पः। द्वातः। दम्पति, दम्पति। नन्पेपिऽपि तुम्, कौ १३१। द्वपति द्वपति, वो। तदम्पः। श्रद्धम्पति।

दण् जिल्लं दि, प । त्या।

पिपासा। याकाञ्चा। द्यात। ततर्षे।
तत्यतः। तर्षिता। तर्षिथित।
प्रत्यतः। यतर्षित्, वो। चताय
कापयोऽद्यन्, भ १५,५१। सन् तितर्षिप्रति। यङ् तरीद्यते। णिच् तर्षयति।
प्रते। द्याता, त्रिला, पा
१,२,२५। द्यापता। त्रषे:। द्या।
द्याक्। यत्र प्रस्ता।

हिंसा। बधः। लट् हहत। हपेहि, पा ७, ३, ८२। हप्हः। ह हिता। हपेदि। हपेदि, भ६, ३८। लोट् हपेदि। हपेदि, भ६, ३८। लोट् हपेदु। हप्हान। हपेदु समः, भ१, १८। हपदानि। दुराचारा रावसीः, भ२०, ३। लिङ् हं द्यात्। सहप्रकृत्यहनेट्। घटस्टाम्। घटाद्वाः, सहप्रकृत्यहनेट्। घटस्टाम्। घटाद्वाः, सहप्रकृत्यहनेट्। घटस्टाम्। घटाद्वाः, सहप्रकृत्यहनेट्। घटस्टाम्। घटाद्वाः, बिट् ततर्हे। तहहतुः। तत्रिंग, ततर्हे।
बुट् तिहंता, तर्हो। के, तिहंता।
बुट् तिहंपति, तस्येति। बुङ् प्रतः
चंत्, प्रतहीत्। के, प्रतहीत्। सन्
तितचित। तितिहंपति। यह तरीटहाते।
तरीतिहैं। णिच् तहंपति। प्रततहंत्।
प्रतीटहत्, पा ७, ४, ७। तिहंता,
ट्वा। टटः, टटः सीमितिषितिभः,
भ १४, ३५।

खंइ हान्ह (.सह) तु, प्रा हिंसा। खंडित। नलोपेऽपि नुम्, कौ १५१। खडित, वो। तस्हा खंडिता, ख्रा। संहिष्यति, सङ्ग्रित। प्राथि, स्धात्। प्रसंहीत्, प्रता-र्ड्वीत्। प्रसंहिष्टाम्, प्रतार्ड्शम्। प्रसंहिष्ठः, प्रतार्ड्जः। सन् तिस्वति, तिस्रंडिष्ठति।

. ज ितू स्वा, पन र प्रवनम् ।

जलीपरिस्थिति:। २तरणम्। श्रीतन क्रमणम्। उत्तरणम्। ३, श्राभिभवः, वो। चट् तरिति, तरिति सक्चदुःखं वाकनं भावयेद् यः, दुर्गा। - न बाइभ्यां नहीं मनु ४, ७७। जिट् ततार्। तरेत्, तेरतु:, पा ६, ४, १२२। तेरिय। जुट् तरिता, तरीता, पा ७, २, ३८। खट्टा तरिष्यति, तरीष्यति । प्रिला तरिष्य-त्युद्वे न पर्णम्, भ १२, ७७। मचित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि, गौ १८, ५८। आणिष, तीय्यीत्। जुङ् त्रतारीत् प्रतारिष्टाम् । विश्वतस्य हुः। सन् तितरिषति, तितरीषति, तितीषेति. पा ७, २, ४१। यङ् तेतोर्थते। ताति । विद् तारयति। श्रतीतरत्। तीर्त्वा। नतीर्थ। तीर्थः, सच्छ तीर्थः र रृष्ठ, ६ विं तर्णम् । तरितुम्, तरीतुम्, तत्त्रम्। तरित्रव्यम्, तरीत्रव्यम्

तर्स्वयमिति वेचित्। तरः। प्रातरः। श्रति—श्रतिक्रमः। श्रतितग्नस्येव सत्यं ् श्रुतिपराधवाः, गी १३, ३५। भव-ज्ञवतरणम्। र्यादवततार, र १, ५५। विमानं च्योतिष्यथादवततार, र १३, ६८। समुजादवतारिता घूः. र १, ३४ श्रद्भराजादवतार्यं चर्चेः. र ६, १० । बद्-बत्तरमम्। उत्ते वर्नदान्. म ७, ५५। ६, ८५ १ उदतारीटुटन्बनाम्, भ १४, १०। णिच् (उदमनम्) प्रज्ञानभुतास्ताय्य, मनु ११, १६०। निर् निस्तारः। श्रतिक्रमः। निस्तीर्था च दोइदव्यथाम्, र.३, ७। श्रापदं निस्तरेद् यथा, भारत। निस्ता-रवति दुर्गात्, मनु ३, ८८। प्र-णिच् अतारका। वि-वितरकम्। दानम्। सम्—सन्तरणम्। अत्तरणम्। च्चानप्रवेनेव व्यक्तिनं सन्तरिष्यसि, गी ४, ३६। दीडिल एनं सन्तारयति पीलवत्, मनु ८, १३८ ।

रेज्-भा, प। पाचनम्। तेजति। तेप्-तेष्ट (तिष्ट) भा, चा।

१ चरणम्। चुितः। २ कम्पनम्। तेप-ते। तेपन्ते यस्य वक्रोन्दोकीवण्यास्त-विन्दवः, कवि १६६। संवीच्य तेपते स्कोणां वप्रः, कवि १६६। तितेपे। ते-पिता। देपते इत्येके।

तेव् तेव्व, स्वा, घा। १ क्रीड्नम् ।
र दोदनमिति भट्टमद्धाः। तेवते।
तोड् तोड्ड, वो। स्वा, प। घनादरः।
स्वज् स्वा, प। दानिः। त्यागः।
बट् त्यवित। स्वज चोमम्, भ ५,
२३। बाषमत्यजत्, भ ६, १२२। बिट् क्याजाः तत्यजतुः। तत्यज्ञियः, तत्य-क्या तत्यजिव। बुट् त्यक्ता। जुट्

ख्याति। लुङ् प्रत्याचीत्। प्रत्याक्ताम्।
प्रत्याच्यः। प्रत्याक्तामायुधानीकम्, स
१५,११३। मन् तित्यच्यति। यङ् ताल्यच्यते। तात्यक्ति। त्याज्यति। तं प्रायीरितत्यजत्, भ १५,१२०। त्यक्ता।
त्यक्तः। त्यागः। त्यक्तव्यम्। त्यागिमम्।
त्याच्यः। परि—परित्यागः। वर्जनम्।
कस्तस्य धर्मदारपरित्यागिनो नाम
कोर्न्यय्यति, मनु टी ७, ८६। सन्,
वर्जनम्। सन्त्याज्याचनार सीताम्,
भ ५,१०४।

त्रख्—(इख्) भा, प। मतिः। त्रख्ति। त्रख्—त्रक्ति (किक्त) भा, घा। गितः। त्रख्—वंशि (इख्) भा, प। गितः। त्रख्—वाग्न, वो, भा, प। गितः। त्रस्—वदि, स्वा, प। चेष्टा। त्रस्ति। व्रप्—त्रपूष्, स्वा, घा। खळ्या।

सर्कार स्थान कर स्थान कर स्थान स्था

त्रस्—त्रसी, दि, प। उद्देगः। त्रासः। चट् त्रस्यति, त्रसति, पा १, १, ५०। त्रसति कः सति नात्रयवाः ,धने, ने ४, १६। त्रस्यन्ति ग्रद्यने यस्मात् त्रसन्ति परदारमाः, वि १९६। तत्रास। तत्रसतुः, त्रसतुः। तत् सिंध, तेसिथ, पा ६, ४, १२४। लुट् व्यक्ति। लुट् व्यक्ति। लुट् व्यक्ति। लुट् व्यक्ति। लुट् व्यक्ति। लुट् व्यक्ति। व्यट् त्रावि, भ ८, ११८। कपेरव्यसिष्ठां । युट् तावस्ति। युट् तावस्ति। त्रावि, भ ६, ११। सन् तिवस्ति। विच् व्यक्ति। च्यति। व्यक्ति। व्यक्

द्याति । कैथिददादी द्या इति पद्यते । तैन द्वाडीति चंचित्रसारम् । चित्रसंस्ता (डीति सुग्धबोधम् ।

सुट्-तु, पं। क्षेदनम्। भेदः।

विदीर्षभावः। वुद्यति, वुटिति, पा ३,१,७०। यावसमा दन्ता न वुद्यन्ति तावस्तव पार्म किनीइ, डिनो। वुटिन्ता सर्वभन्देडांस्तुद्यन्तिः यस्ययो हृदि, कवि ३८। तुबीट। तुबुटतुः। वुटिना। सबुटीत्। तुटे, चु. शा। क्षेद्रभम्। बीटयते। वुटितम्। बुद्याङ्गोमधनुः, सहानाः, ३०।

<u>, अप् तुष् तुम्प् तुम्प्</u>

त्रुन्प, स्नुफ, (तुप) स्वाः पा चिंसा। स्रोपति। स्रोफति। सुम्पति। सुम्पति।

चे तें हैं, श्वा, पा। पालनम्। त्राणम्। रचणम्। कट् त्रायते,* त्रायते वर्णधक्केञ्च, कवि ४० । त्रायते क्षत्रतो अथात्, गी२,४०। प्रच्ये नरकात् तायते पितरं स्तः, सनु दः,

। १००। तते। ताता तास्तः।

प्रतास्तः। च्राह्माताम्। प्रवासतः।
द्रतमत्रास्त स्प्रीतो स्राह्मा यद्भारतः।
स १५,१२०। सा न तास्याः स्ताः
पुरम्, स १२।परि-परित्राणम्। रंचणम्। तातः, ताणः, पा ८, २, ५६।

श्रीक् तीक (किक) स्वा, आ। कार्ताः। श्रीकते। तुत्रीके। श्रीकिता। प्रतीकिष्टा तुत्रीकिष्ते। तोश्रीक्यते। श्रीक्यते। श्रीक्यते। श्रीक्यते।

लच् लच् (तच्) भा, पा

तचणम्। तनृकरणम्। संगीकरणम्। त्वचित काष्ठं तचा, दुर्गा। तत्वचा। त्वचिता, त्वष्टा। त्वचिष्यति, त्वच्यति। यताचीत्, यत्वचीत्। त्वच त्वचने तचवत्, वो।

त्वज्ञ-त्विंग, भा, पा काम्यः। त्वांग (भाग) भा, प। कातिः। त्वज्ञति।

त्वच्-तु, प्र। संवरणम्।
प्राच्छादनम्। त्वचिताः त्वक्।
त्वच-त्वन्चु (तन्चु) मृा, प्र। गतिः।
त्वन्चु, रु, प्र, वो। सङ्गोचः। त्वचित्वा,
त्वनाताः तत्वच्च। त्वचिताः विचित्वा,
त्वा

लर्-जिलरा, भा, पा। लरा।
कीः। सम्भूमः। लरते लर्देते धर्मे
एव यः, कि २५५। स्वरस्य वस्ते।
उत्तर २४०। तलरे। लर्देता। प्रलिष्ट।
बनाः मं तलरे। लर्दिता। प्रलिष्ट।
विक्रित्र लिक्षित्, भ १५, ४८।
विक्रित्र लिक्षिते यङ् ताल्यीते

त्वरयति । दूतास्वरयन्ति माम्, रामा । म्रातलरत्, पा ७, ४, ८५। मतलरतां बोहुम्, म १५, ६०। ब लिरतः, तूर्षः, या ७, २, ३८१ लरा।

🏴 त्विष्—स्वा, उ। दीप्तिः।

डज्ज्वलीभावः। त्वेषति। ०ते। विलेषं । ति लिषे । वानरास्ति लिषुः, भ १४, ७० विद्या विद्यति। ०ते। बाधिषि, लिखात्। लिबीष्ट। पलि-चत्। ॰ते। तिलिचति। ॰त। तेलि-ष्यते। तेलेष्टि। लेषयति। लिषत्। व पव-निवासदानदीप्तिषु। यवलेषति। ०ते। (निवसति ददाति दीव्यते वा), दुर्गा। दाननिरसनयोरिति प्रदीपः। ... ः

क्षार् स्वा, प्। इन्नातिः।

कपटगमनम्। सट् सार्ति। सङ् द्यस्त्। बिट् तसार। तसरतुः। लुट् सरिता। नृट् सरिष्यति। लुङ् श्रीतारीत्। श्रातिष्टाम्। श्रसारिषुः। साराः।

(ঘ)

धुड्—तु,प। संवरणम्। प्राच्छादनम्। धुडति। तुथोड।

शृहिता,। प्रशृहीत्। लेखनवत् शोडन-मणि। स्युड्, स्युड्ति। खुड्, खुड्ति।

बुड्, बुडति । 🕠

युर्व - युर्वी (उर्वी) भा, या इननम्। ज्यवित। (ई) यूर्णम्। (**ट**)

दच-भा, प्रा ११ हक्तिः । २ वेगः । गौंचनरणम्। दत्तते, दत्तते सर्व--कार्येषु कुलं दत्तयते दिषाम्, कवि २६६। दर्बे। द्विता। भद्विष्ट।

विच्दचयति। भददचत्। वर्भकि चदचि, चदाचि। गतिहिंसनयी: घटादिः को प्र। दचः। दचा। दिचणा।

दब्—स्ना, प। घातम्मः

पासनम्। दन्नोति। कान्दसोऽयम् की १४८। वीपदेवस्तु भाषायामपि पठितवान्।

> दङ्-दिवि, भा, प। १ पासनम्। २ वजनम्। दङ्गाता दङ्गिता।

दण्ड-ग्रदन्तः। चु, प।

दण्डनिपातनम्। दण्डयति, दण्डा-पयति, वो। तान् सहस्य दण्डोत्, मनु ८, २३४। कीटमाच्यं कुर्वाणान् दण्डियत्वा प्रवासयेत्, सनु ८, १२३। पर्तन्तु वदन् दण्डाः स्वित्तस्योगम् मम्, मनु ८, २६।

दद्-भा, था। १ दानम्।

, २ घारणम्, वो । ददते, ददते द्रविणं ब्राह्मणेभ्यो यः, कवि १७५। विष्ट विष्टवसमुं ददस्त तस्रो, सा ७, ५३। ददरे. पा ६, ४, १२०। ददिता। प्रदिष्ट । 1

दध्-भा, था। १ धार्यम्।

ः २ दानम्, वो । दधते, दधते यः पदा-चारम्, कवि १७४। देधे। इपिता।

दन्य्-द्वि, भ्वा, प, वो । गतिः। दन्वति। ददन्व। दन्विता। पदन्वीत्।

दम्-दम्-दम्, चु, प, वी।

प्रेरणम्। दक्षि, चु, चा, वो। रामी करणम्। इत्सयति। दक्षयति। ^{०ती} द्भिर्धातुष्त्रपठितोऽपि वार्त्तिकवना स्रोकार्यः । स्थत् दास्यः, की ११२।

परवचनहेतुयापारः। गर्वः। दभी-ति। ददभ। ददभतः, देभतः, की १४८। दिभागः। दिभाषति। दभ्यात्। प्रदम्भोत्। यदभिष्यति। दभ्यात्। प्रदम्भोत्। यदभिष्याम्। मजानातैर-दिस्भिष्यति। पा ७, १, १८। विभाति, घोषाति, पा ७, १, १६। भूयस्वं विष्मुमाह्नय राजपृतं दिद-भिषुः, भ ८, १३। यङ् दादभ्यते। दादम्ब् वि। णिच् दभयति। प्रदस्मा। दम्यः।

दय्भा, चा। १ दानम्।

र गमनम्। ३ रचणम्। ४ डिसा । ५ त्रादानम्। यदणम्। ६ दया। जनु-कम्मा । चट्दयते । दयते दीनं दया-जुः, दुर्गा । तेषां दयसे न कसात्, भ २, ३३ । योऽधिभ्यो दयते धनम्, कृति ८४ । सर्पिषो दयते । जिट्दयाचके, णा ३, १, ३७ । दयाचके न राचसः भ भे, १०६ १० जुट् द्यिता ि जुट् द्यिन षते। जुङ् भद्यिष्ट । भद्यिषाताम्। श्रद्यिषतः। खेषामप्यद्यिष्ट न, भ १५, ६२। द्यितः। द्या । रामस्य द्य-मानः, भे देश ११८। न गुजा नगजा द्यिता द्यिता (इष्टा रचिताः), भे १७, ८। द्या ।

दरिद्रा—चदा, प। दुर्गतिः । त्ते ग्रेनावस्थानम्। यकिञ्चनीमावः। बंद् दरिद्राति। दरिद्रितः। दरिद्रातं, पा ६, ४, ११२, ११४। दरिद्राति खेळा इरि:, भ ५, ८६। नेदानीं शक्तवत्तेन्द्री दरिद्धितः, भ १८, ३१। उपये परि प-श्यन्त: सर्व एव दिर्द्रति, हितो। जिङ् दरिद्रियात्। लङ् अदरिद्रात्। ४०द्रि-ताम्। •दुः। सिट्दरिद्राञ्चकार। ददरिद्रौ (ददरिद्र, वो) तिक्रमू बम्, की १२५। ददस्दितः। जुट् दरिद्रिता। लुट्ट दरिद्रियति। आर्थिष, इरि-द्रात्। लुङ् बदरिद्रीत्, बद्रिद्री-सीत्। अदिरिद्धाम्, अदिरिद्धास-ष्टाम् । 🗸 घदरिद्रषुः, 🗸 घदरिद्रासिषुः । भावे, अदर्शिद्ध, अवदर्शिय । अवन् दिदर्दिष्ठ्यति, दिदरिष्ट्रासति। विष् दरिद्रयति। त दरिद्रितः। प्रच् दरिद्रः, दरिद्रायकः। दरिद्राणम्। हन् दरिद्रिता, की इर्हा दरिद्रणीयम्। क्षेत्र ददस्यान्, ददस्यावानित्येके ।

दल् निया, प । १ विषयणम् ।
भेदः । विदारणम् । १ विदीर्णीमावः ।
विकसनम् । लट् दलति, दलति सा हृदि
विरह्मरेण, गौतगी, ७, ३५ । लिट्
ददाल । देलतुः । ददाल मूः, म १४,
२० । लुट् दलिता । लुट् दलिखति ।
लुष्ट् भदालीत् । भदालिष्टाम् । भदा-

बिष्टुः शिलादेष्ठे, भ १५, ३८। बिष्ट् देखयित (दालयित, वो)। दलयब्रष्टी कुलक्कास्तरः, महाना १, ३३। दल् चु. प। भेदः। दालयित। मुष्टिनादा-लयतस्य मूर्वातम् भ १७, ७८। द-लितः। दलनम्। दाबः। कुहालः। दाङ्मम्। दलक्काश्रचाप—, म-हामा १, ३६। वि—भेदः। विकाशः। त्वदिष्ठभित्र्यदेलिखद् वक्कोऽपि, मे ४, ८८। दरविद्वितिभक्को, गीतगो १, ३६। ग्रेफालिकां विद्वितामवलोक्य तन्त्वी।

👉 दंग्-दन्ग्, स्वा, प । दंशनम्। ्टलयापारा। बट् दयति, पा ३, - ४, २५ । एदा सृगन्तं दग्ति दिनिष्ठः, र १४, ४। दश्रति विख्यपरं शुक्रशा-वकः, हुर्गा। विस्वाधरं दयसि चेद स्तमर प्रियायाः, श्रञ्ज ६,१४५। लिट् . इदंग । इदंगतुः । दद्यतुः वी । ददं-भिष्यु ददंश। सुर दंशा। सृद दस् चार्त । प्राधिष, देखात्। बुङ् बदाहोत्। पदाङ्षाम्। बदाङ्खः, बदाङ्गरद्यन्, म १५, ४। १७, १३। कर्मणि, दश्यते। षदंशि। सन् दिद-इति। वर् (भावगृहीयाम्) दन्द-खते, पा ७, ४, ८६। दंदशीति। दन्द-ष्टि। दंदंष्टि, दंदंगीति वो। पिच् दंगयति। यददंगत्। द्रिम, चु, या। १ इंग्रनम् । २६ भेनम् । दंशयते, इंग्र-ति। पानुसीयमालनेपदं णिच्स-वियोगेनैवेति व्याख्वातारः। नयी-पस्तु स्वादेरेव, को १७६। नाडिटेश-यते कचिडियाँ गरुडास्थ्या, कवि २०५। भट्टमसमते दंशनमित्र स्वादः षदं गयवरं हि तथीर्थेदं भनास्तनः, सा १७, २१। केचित् तु चुरादिवभय-

पदीषु पठन्ति (टीका)। दिश्व (क्रुप) चु, प। दोप्तिः। दंशयति। दृष्टः। दंशनम्। दश—दसु (तसु) दि, प। १ चयः।

दस्—६६ (तस्त) १६, ५ । १६४:। वस्तुहानिः। २ छत्चेपणम्, वी। दस्यति-। ददास। दसिता। भदसत्। घदासीत्, वो। दस् (दंस्)।

दंस् दिस, चु, प, वो। दौितः। दसि, चु, था। १ दर्भनम्। २दंशनम्, सद्यादः, दन्तव्यापारसः। दंसवित। •ते। दंसित। दस-दित कसिद् दार्स्यते।

दह्-भा, प। भस्रोकरणम्। दाइ:। सन्ताप:। सट्दहति, मद-नानलो दहित सम मानसम्, गीतमो १०, २। सिट् ददाइ। देवतः। देविय, ददम्ब। लुट् दन्धा। लुद्धः धचाति। मुध्यन् कुलं धच्चति विप्रविष्ठः, स १. २३। लुङ् अधाचीत्। घटायाम्। त्रधाचु:। हद्वात्राचीदिव दिवः, स १६ २२। कर्मणि, दश्चते। पदाहि। यरीर मे दश्चते सद्नाम्बिना, सहाना ४, २८ । शोकेन देवे जनता, स ३, ११। सन् दिभचति। यङ् (भावगर्डायाम्) दन्दन्नते, पा.७, ४, ८६। दन्दन्ध। यत्, दन्दञ्चते । कोकम्, मा ३, ११। षिच् दाइयति। पदीद्रवत्। दग्धुः। दक्षः । दाष्टः । दष्टनम् । निर्-दाष्टः। प्रवाश:। सन्ताप:। एनी निर्देहन्य।॥ तपसा, सर्व ११, २४१। दंइ दहि, चु. प, वी। १ दाइ!। २ दीप्ति:। दंख्यति।

टा—टाण, भ्वा, प, डुटाञ, हा, ड। ैदानम्। वितरणम्। सट् यच्छति,

पा ७, ३, ७८ । ददाति । दत्तः, दर ति । दत्ते । ददते ब्राह्मण दे

षाशिषः, कवि १९५१ । निङ् ददात्। इदीत। डि, देडि, पा ६, ४, ११८। ख, दत्ख। वाचं देहि, स ६, १८। भयानि दत्त सीतायै, भ ८, ८६। सङ् श्रददात्। श्रदत्ताम्। श्रददुः। अदत्ता रतानि चाँददुर्गास, भ १७, ५३। बिह ददौ। इदिय, इदाय। ददे। श्रस्तजातं तसी ददी, भ २, २२। लुद् दाता। सृट्दास्यति। वते। श्राधिषि, देवात्। दासीष्ट । लुङ् पदात्। प्रदा-ताम्। श्रदुः। श्रदितः। श्रदिषाताम्। षदिषत, पा १, २, १७। स्त्रस्य वियान्तिसदाम्, नै २, १८। कर्मण, दीयते। ददे। सुता ददे तस्य सुताय मैं चिनो, भ-३। दायिता। दायिखते। दायिषोष्ट। भदायि। भदायिषत। सन् दिवाति। •ते, पा ७, ४, ५४। यं देदीयते, पा ६, ४, ६६। दादेति। दादाति। णिच् दापयति। भदीदपत्। विणिजो दापयेत् करान्, मनु ७, १२०। तौ चपेष दायौ दमम्, मन् ८, ५८ १ दत्ता। •दाय। दत्तः। दत्ता। पदत्तम्। प्रतम्। दानम्। देशः। (बु) दिवसः। ददः। दातः। दाता। दायः। चा-पादानम्। यहणम्। स्तीकरणम्। षादत्ते, पा १, २, २०। पादत्तः। प्रात्तः, पा ७, ४, ४७। स ६, ८३। नीलस्वादित पर्वतम्, भ १५, ४३। राजानं तेज घादत्ते (नागयति), मनु ४, **२, १८। श्रायक्कते, पा१, ३, २८।** व्या-व्यादानम्। प्रसारयम्। सुखं व्याद-दाति। नदौ कूलं व्याददाति, पा १, ३, २०। प्र-प्रदानम्। सम्पदानम्। प्रक्रष्टरानम्। बन्या प्रदीयते, सन् प्र २०४। सम्य सम्पदानम्। समन्त्रका द्यागः। जायच्छते, ♦ित क्ष्वाद्रक्तम्,

पा १, १, १०। सम्—दाखा मार्चा संयच्छते कामुकाः (दाखे ददाति), या १, २, ५५।

दा—दाप्, घदा, प्। छेदनम्।
दाति, दाति दारिद्रामर्थिनाम्, कवि
२४। दायात्। घदासीत्। कर्मणि,
दायते। दिदासित। दादायते। ता,
दातम्, दितम्। दितिः । दाव्रम्।

दान्-भ्वा, छ। १ पार्जवम्।

महजुभावः। ऋज्वैतरणम्। २ खण्डनम्। नाथनम्। घार्जवै सन् इति भद्दीजिदीिखतवीपदेवी। खार्थे इति क्रमदीम्बरपद्मनाभी। दीदांपति, •ते दखुम्
पा ३, १, ६। परार्थे तु दानयित,
दानति, •ते वो। तत्र तिवादयी न
स्युरिति रमानाथः।

दाय्—स्वा, षा, बो। दानम्। दायते, दोनानां दायते नित्यम्। क्वविष्ठ। (ऋ) षददायत्।

हाम्-दास्-दाम्, दास्, भा, दृ। दानम्। दायति। ०ते। दासति। •ते। दाम्, सु, मा, वे। दानम्। दाययते। दाम्बान् सुपुदामिषम्, र।

दिन्द्—दिवि (जिवि) भ्वा, प। प्रीणनम्। दिन्दति। दिदिन्द्र। दिन्दिता।

दिष् हिष्ट (तिष्ट) भ्वा, था। चर्षम्। दिष्य—चु, ड, वो। सङ्घातः। (ड्प) दिश्य—दिभि, चु, प, वो। प्रिरणम्। चु, था, वो। सङ्घातः। हिष्मयति। •ते।

दिव् दिवु, दि, प्राः १ की डा

३ विजयेच्छा। ३ व्यवदारः। अयः विक्रयणादि। ४ दीप्तिः। ५ स्तुतिः। ६ दर्षः। ७ मदः। मत्तीभावः। ८ सप्तः।

निद्रा। ८ कान्तिः। इच्छा। - १० गतिः। लह् दोव्यति, चा ३, १,६८। द, २, • ७७। यद्यैः यद्यान् वा दोव्यति, पार, अक्षेत्र अविष्य सीव्यति, पां ३, ३, ५८। सेहिन दीव्यन्ति विषयान् भ ८, ७८। अधिन इ स्त्रियो दीव्य म ५, ३८ । चहीबद्रोद मस्तम्, स १७, द७। प्राणिद्युतेश दोव्यति, नवि दश्री निट् दिदेव। दिदिवतु:। नुट् देविता। नृट् देविष्यति। पाणिष, दीव्यात्। सुङ्ग्बदेवीत्। घदेविष्टाम्। बदैविषु:। बदेवीद बन्धुमोगानाम्, म द, १२२ । सन् दिदेविषति, दुखूषति, पा छ, २, ४८। ६, ४, १८। समा प्राचिदि-दीवषन्, भ ५, ५७। तेनादुद्यूषयद्गमम्, म प्, प्टा यङ् देदीव्यते । देदिवीति, देदात, देखोति, वा । णिच् देवयति । बदोद्दिन्त्। (७) देविता, चूता, पा ७, ६, १६। व्हीय । यूतम्। यूनः। पाचानः। परिचानः, पा ८, २, ४८। देवनुम् । यन्ना युताः । मनमा देवी । ग्रजा दोव्यन्ते कानेपान विवैद्यिते, दुर्गा। प्र-विकायः । प्रादेवीदानासम्पदम्, भ ५, १६३ । ब्राइबोत् प्रांस्त्रं परिषेत्र. भ ८, ८। यतस्य ग्रतं वा प्रदोव्यति, षा २, ३, ५८। दिवु, चु, प। सदैनम्। ूर अदैनम्। पोड्नम्, बो। ३ याचनम्। ४ गति:। देवयति। देवति। दिवु, चु, या। परिकू जनम्। परिदेवयते कश्चित्तस्य राष्ट्रे न दुःखतः, कवि इर्थ । । १९ । ए । स्थिति । १९। दिश् तु, उ। श्रातसर्वनम्।

दानम्। याचा । यादेशः। निर्देशः। वयनम्। चट् दिग्रति। न्तेशदिशेखुको दिशेव यः सान्तिषः, असन् दः, भू०। चिट्टे दिदेशः। दिदेश यानायः

निदेशकारियाः, नै १, ५६। दिदेश कीत्-साय समस्तमेव, र ४, १०। लुट् देष्टा। ल्ट देखात। बती। पाणिष, दिखात्। दिचीए। लुङ् अदिचत्। अदिचत्। सन्-दिदिचति । ०ते । यङ् देदिश्वते। देदेष्टि । विच् देशयति । पदीदिशत्। दिष्टः। दिष्टिः। दिष्टा। •दिग्रा। देष्टुम्। दिक्। देशः। अति—अति-देश:। प्रारीय:। प्रय—व्यय—प्रय-देश: । रीगशान्तिमपदिय्य, र १८, ५४। व्याजः। बा-बादेशः। बनुमतिः। षाचा । पादिचत् तस्य सिंहास-नम्। पादिचदस्याभिगमं वनाय, स ३, ८। वानिशरणस्य सार्थमादेशय, शकु ५, ४४। प्रत्या-प्रत्यादेशः। निरा-करणम्। निवारणम्। खप्रेऽष्ठं प्रस्थाः दिष्टा । प्रस्यादिदेशैनमभाषमाणां, र ६, रेपा प्रजानां प्रत्यादिरेगाविनयं विनेता, र ६, ३८। तव संग्तेः मेखाः दिश्यन्त इव मि गराः, र १, ६२। उद्-**७हेब: १. व्यमिनाय:। तस्**हिम्ब चिमेन बंगुड़ेन् यगाला इतः, हितो। उप-उपदेश:। हितासि:। निर्देश:। नीर्त बस्। विद्वानेवीपदेष्टव्यः । वानरावः पदिखा, हितो। बाह्मणस्य वार्मेटसुप दिष्टम्, मतु २, १८० । ्रनि।। निदेश। प्रासनम्। विर्- निर्देशः। विधानम्। क्षवम् 🖙 चादेश:। पोठमासके निरः दिचच का चनम्, स १५, मा अन्दाः वस्। निर्देशः। , छपदेशः। प्रदिशसि जलं चातकेभ्यः, मेव 🛶 🧆 ा ्र मदिस्याः रात् सुतौच्यमुनिकेतनम् भ ४, ५। दाइं प्रदिदेश वानवस्थ, सं ८, १३७। मृम् । सन्देशः । दानम् । स्वाते राज्यं सन्दिख, स ६, १४१। ब्रसिट्रति वाचि दिवि सन्दिरियो। भा ८, ५६॥

वृद्धिः। वृद्धिकरगम्। २ लीपनम्, षो। लट्देग्धि। किग्धः। दिस्ति। घेचि। दिग्धे। हि, दिग्धि। ख, धिच्च। बिङ्दिह्य ६त्। दिहीत। लङ् अर्धेक्। षदिग्धाम्। यदिङन्। यदिग्धः। यदि-हाताम्। चदिइंखन्दनैः ग्रुभ्तैः, भ १७, ५४। लिट् दिदेच। दिदिचे। लुट् देग्धा। ॡट् घेच्यति। ०ते। लुङ् श्रिधिचत्। श्रदिग्ध, श्रिधिचत। सन् दिधिचति। •ते। यङ् देदिह्यते,। देदेग्धि। णिच् देडयति। अदोदि इत्। दिग्धः। गस्त्रदिग्धः, र १६, मचन्दनीशीरसणालदिग्धः, भ। देग्धुम्। देहः। सम्-सन्देहः। संग्रयः। सन्दिग्धी विजयो युधि, हितो।

दो—दोङ्, दि, या । चय:।

दीनभावः। लट् दीयते। दीयन्ते प्रत्यहं यस्य दुरितानि, कवि ८ । लिट् दिदीयो। दिदीयाते, पा ६, ४, ६२। लुट् दात्रा। लुट् दास्ते। लुङ् भद्भस्त, पा ६, १, ५०। सन् दिदीषते, पा १, २, ६। दिदासते, सङ्घ्रसारः। यङ् देदी-यते। देदयोति, देदेति। णिच् टाय-यति। दोला। दाय-वि। दोला। द्रायानम्।

दीच्⊸स्वा, श्रा∶ १ सुग्डनम्।

र यजनम्। ३ उपनयनम्। ४ नियमः
यहणम्। व्रतानुष्ठानम्। ५ व्रतादिष्टविध्यनुष्ठानम्। ऋभिषेकः। दोन्नते।
दिदोन्ने। दोन्निता। ऋदीन्निष्ट। दोन्नस्न
तुरगास्त्ररे, स २०, १४। दोन्नितः।
दोन्नणीयः। दोन्ना।

होधो - दोधोङ्, बदा, बा। कान्दमः।
. १ दोधाः। "२ क्रोड्नम्।" दोधोते।
दीध्याते। दोध्यते। ऐप्दीध्ये, पा १, १,

६। दीध्याञ्चले। दीधिता, पा ७, ४, ५३। दीधिषाते। यादीध्यनम्। श्रादी: । ध्यकः। त्यप् श्रादीध्य। दोधितिः। दीधीवित्योर्ङ्लेऽपि क्रान्त्रसत्वात् व्यत्य-येन परस्मैपदम्। दीध्यत्, विव्यत्, की. १८३। श्रदीधयुः, दुर्गा।

3

दीप्-दीपी, दि, भा। दीप्ति:।

ज्वलनम्। योभा। उज्ज्वसोभावः। नट् दीप्यते, ताराप्रतिदीप्यते, अनुध १४८। बिट् दिदीपे, पुनर्दिदीपे सद दुर्दिनश्रीः, र ५, ४०। लुट् दोपिता 🗸 लृट् दीपिष्यते। लुङ् बदौषि। बदी-प्रिष्ट, पा ३, १, ६१। श्रदीविषाताम्।" चदीपिषत । क्रुंबीऽदीपि रघुव्याघः, भ ६, ३२। देवा इवेष्वदोषिष्ट, स १५, ८८। सन् दिदीपिषते। यङ् देदीस्यते। दैदीति। णिच् दीपयति। बदीदिपत्, चदिरीपत्, पा ७, ४, ३। लङ्कासम्बन-नादौदिपन्, स १५, ११०। हिन्दात्रना-न्तरमदीपयदिन्दुः, मीतगी ७,१। (दी) दीमः। दीमिः। दीपनम्। दीपिता। दौपः। ष्रदोषः। चा-ज्यजनम्। मङ्ग-लालेपनम्। चादीप्त लगानुः, भ ३, ३ । **डड्—डहीपनम्। प्रकाशनम्। डळ्ळ** ल नम् । उत्ते जनम् । उष, ;प, ज्वल नम्। दाइ: । सम्-सन्दीपनम् । इहीपनम् । सन्तिन्तन इवाग्ने: सम्पदीसेन्धनस्य, दीपिका।

ं दु-स्वा, प। गतिः। दु दुः स्वा, पा

१ उपतापः । उपतिमानः । र उपतसी नरणम् । परितापः । पौड़नम् । लट्
दवित । दुनोति, सुखं नव दुनोति
साम्, र ८, ५६ । सन्येगेन दुनोसि,
गीतगो ३,८ । कणिकारं दुनोति निर्मेन्
स्वाया सा चेतः, कु ३,२८ । सन्तीर्भेन्यतया सा चेतः, कु ३,२८ । सन्तीर्भेन्यतया सुनोति मनः, गीतगो ७,४० ।

। गणदपणः] दुष् सङ् शदुनीत्। शदुनुताम्। शदुन्वन्। प्रचिंची: सीउदुनीत्, र १८, २१। सारिष्टमदुनीत् स १७, ८८१ लिए दुदाव । दुदुवतुः । दुद्विष्ठ, दुदोष । दुदु-विव । चरीव् दुदाव कतान्तवत्, भ १४, द्र्र सुट् दोता। दविता, वो। लृट् दोष्यति। श्वाशिषि, दूयात्। नुङ् अदीषीत्। अदावीत्, वो। अदीष्टाम्। प्रदीषु:। सन् दुदूषित । यक् दोदूयते । दोदोति। णिच् दावयति। श्रदूदवत्। ता, स्वा, डून: । स्वा, दुत: । स्टुतया दुतयिति, माघः ६, ५८। वरी २४०। (टु) दवधुः। दावः। दवः। दुःख—(सुख) घटन्तः। चु, प। दु:खकरणम्। दु:खयति। दु:खा-व्ययति, वो । दुष्व, दुष्वयतौत्यपि । ्रदुवे-दुवीं (उवीं) भ्वा, प। वधः। दूर्वति। दुद्वे। दूर्विता। े दुन्-चु, प। उत्चेपः। दोलयति, दोलयत्यविवर्गस्य जीवि-िलाशास्त्र यः सदा, कवि २१०। दोन्यति धूलिम्, दुर्गी। दुष्-दि, प। वैक्तत्यम्। 🧋 श्रग्रदीभाव:। दोष:। लट् दुव्यति, खादन् मांसं न दुष्यति, मनु ५, ३२। दुदोष । दुदुषतु: । दोष्टा । दोस्वति । बहुषद्। भदुत्तत्, वो। दुदुत्तति। दोदुषते। दोदाष्टि। णिच् दूषयति। (चिसदूषणे) दूषग्रति दोषग्रति चिसं कामः, पा ६, ४, ८०, ८१। तस्याभिः वेकप्रभारं दूषवामास पार्थिवाश्वभिः, र १२, ४। योऽकामां दूषयेत् वान्याम्. मनु ८, ३, ६४। दुष्टः। दूषणम्। दोषः।

20

सोट् दोन्धु। दुन्धि। दोर्डानि। घुन्न। धग्ध्वम्। दोहै। सिङ् दुद्धात्। दुक्षीत। सङ्घधीक्। चदुग्ध। सिंद दुदोड । दुदृहे। दुदोड गांस यजाय, र १, २६। रस्नानि धरिली दुदुइः, क १,२। लुट् दोग्धा। स्टट् घोस्पति। दुद्धते। चदोडि। कर्मकर्त्तरि, गोः पृथी दुग्धे, पा ३, १, ८८। स्त्रयं प्रदुग्धे वसूनि में दनी, भा १, १८। घटोडीव विषादीऽस्य (स्वयं चरित इव), भ षदूदुहत्। दुग्धा। दुग्धः। दोहनम्। दोडः। दोग्धव्यः। कामदुघा। दू—दूङ्, दि, श्रा। उपतापः। खेद:। उपत्रप्तीभाव:। उपत्रप्तीवर णम्। दूयूते, दुर्जनोक्त्यान दूयते, कि २५६। क्रयं पश्चन् न दूधिसे, र १, ७१ - व्यक्षि—ग्रिमियातः। गित्रदृत्यभिद्धिताः दृष्टा शुन्धानि दृष्टे संस्यूजलानिः

पेतुः, चण्डी। प्र-व्यभिचारः। अधर्मामिः भवात् प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः, गी १, ४०। दुइ-दुडिर् (उडिर्) स्वा, प। चर्दनम्। दोहति। दोहिता। यदु-इत्। अदो होत्। दुह्-बदा, छ। प्रपूरणम्। दोइनम्। व्यक्तीकरणम्। लट्दोग्धि। दुग्धः। दुइन्ति। धोचि। दुग्धे। दुइति। दुइते। धुचे। धुग्ध्वे। कामान् दुखे, उत्तर १८८। पयी गां दुइन्ति, भ १२, ७३। पयो दोग्धि पाषाणम्, भ ८, ८२। प्राचानाव्यानम्, स ६, ८।

•ते r सुङ् अधुचत्। अदुग्ध, अधुचत। त—थाम्—ध्वम्—विडिषु सङ्बद्धि। ग्रधुक्ताताम्। प्रधुक्तनः। कर्मीण,

६, ३४। सन् दुधुचिति। ०ते। दोहुः ह्मते। दोदोग्धि। गिच् दोइयति।

१६, ३९ । १, ७१ । दुद्वे । दक्ता। भद्विष्ट । ऋ, हून:, पा ८, २, ४५ ।

ह—हङ्तु, या। यादरः।

पोत्या सन्ध्रमः। प्रायेणायमाङ् पूर्वः। श्राद्रियते, पा ७, ४, २८। यः सदाद्रियते धर्मम्, कवि ७३। दद्रे। दद्रिषे। दन्ती। दिश्यते। इषीष्ट। श्रद्धता श्रद्धन्ता । दिद्धिते। द्रिवेषते, पा ७, २, ७५। देद्रीयते। दर्दिन्तिं। दारयति। श्रदी-दत्त्। श्राद्धतः। श्राद्धनः, भ ६, ५५।

"ह, खा, पा इननम्। क्राा, चु, प। भयम्। हणोति। हणाति। दार-यति।" अये घटादिरिति कसित्। दरयति।

हप् दि, पार्डवें:। २ मोहनम्।

गवै: । दर्षः । हम्यति । दद्षे । दहपतः । दद्षे प्रमुद्धः , दद्रप्थः , दद्प्षः ।
एवं विजिग्ये तां सेनां प्रहस्तोऽतिदद्षे च. भ १४, १०६ । दिषिता, दर्षोः,
द्रमा । दिष्धितः, द्रमातः, दर्षे स्वतः ।
अद्षेति, भद्राभीतः, भद्राधिवितः, दिहपति । दरीहप्यते । दर्दमा । दर्षे यति ।
अदीहपतः । कं स्रोने द्रपेयतः, दितो ।
दर्षिताः, हमः । हपः । दर्पनः ।
दप् हमः, हमः । हपः । दर्पनः ।
दप् हमः, हमः । दर्षः । दर्पनः ।
दर्षे । दर्पता । भद्रपीत् । हप् (चृप्)
च, प । सन्दोपनम् । उद्दोपनम् । दपंयति । दर्पति ।

हम्—हमी तु, प। ग्रस्थतम् । हमति। दृद्भे। दर्भिता। षद्भौत्। हम्, चु, प्रे, सन्दर्भः। रचना। दर्भ-यति। दर्भति नो। हभी, चु, प। भयम्। दर्भयति । दर्भति । (ई) हम्मः । सन्दर्भः । दर्भः ।

्हम्प्—(खप्) चु, ख, वो । सङ्गाता । - हम्—हिमर्, स्वा, प्। प्रेचणम्।

े दर्भनम्। ज्ञानम्। साचात्कार्: 🗈 चट् प्रस्ति, पा ७, ३, ७८। श्रास्थ-मिव पश्चामि खप्नान् पश्चामि दार-णान्, रामा। अई प्रश्वासिः तपसम चिप्रं द्रस्थिस नैषधम्, भारत । प्रशासि त्वां (जानामि)। सोऽपञ्चत् प्रणि-धानेन सन्तते: स्तभकारणम्, ह १, ७५। अर्थान् धर्मेण पश्चति (निक-पयति), मनु ८, १७५। एवं साङ्ग्रक योगञ्च यः पश्चति स पश्चति, गौं ५, प्र। लिट् ददमें। दहमतः। ददर्भिय, दद्रष्ठ, पा ७,२,६५। दहिशव। सुट् द्रष्टा, पा ६, १, ६८ । सृट् द्रस्थति। पामिषि, हम्बात्। लुङ् चद्राचीत् पा १, १, ४० ह चदर्भत्, पा ७, ४, १६। चद्राष्ट्राम्, षद-र्भताम्। बदाचुः, बदर्भन्। मा दर्भ-तान्यं भरतञ्च सत्तः, स ३, १४। कर्रीच, ह्यते। षद्यात स्थावस्यानस्या, कु, १, ५२। दहरी, प्रतीयूषा पुदंहरी जनेन, भ २, १८। दर्शिता, दृष्टा। दर्शितारस्वया ताः, स २२, ४, १०० द्धिष्यते, द्रव्यते। ्लयाचा हातार्थी द्रस्थते पतिः, भ ५, ५८% दिशिषीषः, ह्वीष्ट। रचोभिदंभिषीष्ठास्वं ह्वी-रन् भवता च ते, भ १८, २८। श्रदर्शि। यद्धिषाताम्। यद्याताम्। श्लेन येऽ-दिशिषत शतवः, भ १५, ७२। श्रहचता-मांसि नवीत्पसानि, भूर, १०। सन् दिइज्ते, पा १,३,५० । यहः दरीहम्सते । दरीदर्षि। णिच् दर्भयति। •ते। घदौडमत्, घददर्भत्, पा ७, ४, ७। वीय्यं मा न ददर्भस्वम, भ १५, १२।

विनतां दर्भीयताहे, नै ४, ७१। दृष्टा। दृष्टः। दृष्टिः। दर्भनम्। दृष्टुम्। दृष्टा। दृष्ट्यम्। दृष्ट्यम्। दर्भनीयम्। पार्टम्बा। सहक्। अतु यालोचना। यालोकनम्। यथा भूत-प्रमावमेनस्यमनुपर्यात, गी १₹, ३०। ग्रसि-जच्चीकरणम्। **ख**द् छतुप्रेचगम्। अर्ड्डे दर्धनम्। उत्प-प्रात: सिंहनिपातसुग्रम्, र २, ६०। ताहृदेपश्चदुत्यती जनः, मा १, १५। **एप—प्रदर्भनम्। नवे रान्नि सदस**ञ्चो-पदिभितम्, र ४, ८। नि—निदर्भनम्। परं ऋपं निदर्भयामास तसी, ३१। परि-परिदर्शनम्। प्र-प्रदर्श-बुम्। सम्—सन्दर्भनम्। समाप्यते, को २४६।

्रहर्-हं ह्—हिंह, स्वा, प । विदि:। दर्देति । हं हित्। ता, हट्:, पा ७, २,२०।

- प्रतिक्षाहण, तो । भयम्।

हु, दि, प। विदारः। दृ, क्राा, प। १ विदारणम्। २ भयम्, वी। लट् दरित। दीर्श्वति। हणाति, ॰ हणाति च रिपून् रणे। दरिनाः दिमधीमास यस्य दिग्वत्रयोद्यमे, कवि ७३। हृदयं दीर्श्वतीव मे, भारत। न दीर्श्वे सहस्व-धाऽहम्, उत्तर २, २३। न विदीर्श्वेऽ हम्, कु ४, ५। दलादावालनेपदमिष। लिट् ददार। ददरतुः, ददतुः, पा ७, ४, ११, १२। ब्रह्मास्तेण ददारादिम्, भारत। लुट् दिरिता, दरीता। लुट् दिस्ति, दरीष्ठात। लुट् ददारिएम्। भदारिष्ठः। सन् दिद्रिः वात, दिदरीषति, दिदीषति। यङ् देदीर्थते, दादित्ते। जिद् दार्थति। जुद्दरस्, सृष्टिनाददरस्यः सूर्द्यनम्,

भ १५, ८१। अये घटादि:। दरविताः
अयादन्यतः दारयति। क्रादिस्यं
भिच्वार्थोऽनुवादः। घात्वन्तरमेवेदभिति
अते तु दरित, को ८३। दीली।
०दीर्थ्यः। दीर्णः। दीर्णिः दरणम्।
दरः। दारः। दाराः। षव चवदारः
णम्। खननम्। प्रवीभवदारयिक्षः, र
१३, ३। दुतावदीर्णे इत्यमरः। वि—
विदारः। तस्य हृदयं विददे, र १४,
१३। स्तनं विददार काकः, चन्ने

'रे—रेड्, भ्वा, शा। पालनम्।

रचणम्। दयते। दिग्ये। दिग्याते, पा ७, ४, ८। दाता। दाखते। दासीष्ट्र। षदित। षदिषाताम्। षदिषत। षदिथाः, पा १, २, १७। दिस्तते, पा ७, ४, ५४। देदीयते। दादेति। णिच् दापयति। कर्मणि, दोयते। दत्तः।

देप् (तिष्ठ, तेष्ठ)।

्रदेव् —देव (तेव) स्वा, पा।

१ विनम्। क्रीड्नम्। २ रीदन्सिति
महसञ्चः। ३ दीप्तः। देवते, देवते कन्दुः
कर्नित्यम्, कवि ६०। ध्रिदेवे। देवता।
भ्रदेविष्टः। भ्रदेविष्ठाताम्। भ्रदेविष्टः। भ्रदेविष्ठाताम्। भ्रदेविष्टः। भ्रदेविष्ठाताम्। भ्रदेविष्टः। भ्रदेविष्ठाताम्। भ्रदेविष्टः
वच्चात्ताः। भ्राचीः प्रभाविष्टः सा पुरः,
स ४, ३४। १४, ४८। भ्राचनः
प्रदिवस्ते, स ७, ६६। भ्रादेवकः।

दिखित, दरोष्ट्रात । लुङ् बदारीत्। दै—दैप, खा, प। ग्रीधनम्। बदारिष्टाम्। प्रदारिष्ठः। सन् दिहरिः वित, दिदरीषति, दिदीपति। यङ् प्रीतिंद्य, वावि २४। ददी। दाता। देदीव्यते, दादत्ति। पित् दार्थित। दास्यति। दायात्। बदागीत्। कर्मणि, बदरत्, मुष्टिनाददरत्तस्य स्पूर्णनम्, दायते। दिदासित। दादायते। दादावि। दावयति। श्रदीदवत्। श्रव— श्रुक्तीभाव। श्रवदातः। श्रिवन्दते स्वेतते त्रीणि स्युः श्रुक्तत्वेऽवद्गायति, भट्टमज्ञः।

दो-दि, प। छेदनम्।

ष्रिणिकति। ददी। दाता। देयात्। ष्रदात्। दीयते। दिस्ति। दिला। •दाय। दितः। दितिः। दानम्। प्रिरी-ऽवदोति विद्याम्, कवि २४।

द्य-बदा, प। अभिगमनम्। चीति। दुचाव। चीता। अचीषीत्। द्यत्-भ्वा, या। दीप्तिः। प्रकाशः । द्योतते। दिद्युते, पा ७, ४, ६७। दिद्युते यथा रविः, भ १४, १०४। द्योतिता। द्योतिषते। द्यौतिषीष्ट। षद्युतत्। षद्योतिष्ट, पा १, ३, ८१। दिद्युतिषते, दिद्योतिषते, पा १, २, २६। ७, ४, ६७। देखुत्यते। देखोत्ति। द्योतवति। प्रदिद्युतत्। गोपुनीयं क्रमप्यधं द्योतयित्वा क्षयञ्चन, दर्पणः। सेही मिय द्योखते, वीर २४। युतिला, चोतिला। चुतितः। चोत्नम्। तद्वी: कुलुमुद्यीतयामासुः, र १०, ८०। वि—योभा। यस्त्रेरची विदिख्ते, भ ८, ३६। विद्योतस्य स्त्रियः प्रति, भ द, दद। खंदीतिष्ट सभाविद्यामसी नर्शिखिवयी, मा २, ३।

द्ये—भ्वा, प। न्यकरणम्। द्यायति। दद्यो। द्याता। श्रद्यासीत्।

द्रम्—स्वा, प । गतिः । इसति । दद्राम् । वानरा दद्रमुः, भ १४, ७० । द्रमिता । श्रद्रमीत् । दंद्र-

मणः। द्रा—श्रद्धा, प । १ पन्नाधनम्। इ. निद्रा। श्रीसन्नर्थे निप्नूर्वे एवेति रमानाथः । द्राति । दद्री । दद्रतः । द्राता । द्रायात्, द्रेयात् । श्रद्धाभीत् । श्रद्धामिष्टाम् । दिद्धामित । दाद्धायते । दाद्धाति । दाद्धेति । द्रापयित । श्रदि-देपत् । ता, द्रापः नि—निद्धा । तद्धा निद्धान्, भ १०, ७४ । निद्धानुः ।

द्राख्-द्राखृ (श्रोखृं) स्वा, प।

१ गोषणम्। २ भूषणम्। ३ सामर्थंम्। ४ निवारणम्। द्राखित, द्राखित चौणतापत्रं वपुः, कवि १०८। भ्राख्नु, भ्राखित। साख्नु, साखित। साख्नु, साखित। साख्नु, साखित।

द्राघ् — द्राष्ट्र, भ्वा, था। १ सामर्थ्यम् ।

२ प्रायामः, वो । दीर्घीकरणम् । ३ प्रमः । द्रावते, द्रावते वपुरत्यर्थे यद्-वियोगे समोद्याम्, कवि १०८। दद्रावे । द्राविता । प्रद्राविष्ट । द्राव-यन्ति से योकं स्मर्थमाणा गुणास्तव, भ १८, ३३ । प्राष्ट्र, प्रावते । राष्ट्र, रावते लाष्ट्र, लावते । एक्सावः, पा ८, २, ५५ ।

क्राङ्च-द्राचि, भ्वा, प।

१ घोरमञ्दः। २ त्राकाङ्घा दाङ्गति। प्राचि, प्राङ्गति। ध्वाचि, ध्वाङ्गति। प्राचि, प्राङ्गति, न प्राङ्गति जनः कश्चित्, कवि १६४। प्राङ्गः।

द्राड्-द्राडु, भ्वा, श्वा । १ भेदः। २ बधः, वी । द्राडते । श्रांडु, श्राडते । द्राइ-द्राह्म, भ्वा, श्वा, १ जागरणम्।

्रे निःचिपः। द्राइते, द्राइते च निम्नागमे वसुः, कवि १०८१ (स्ट) मददाहत्।

दु—(दु) स्वा, प। १ गति:। २ द्रवीभावः, वी। ३ प्रवायनम्। द्रवति. द्रवित चन्द्रकान्तः, उत्तरः नदाः ससु-द्वं द्वन्ति, गी ११,२८। दुदाव। दुदू-वृत्तः। दुद्रोध। दुदुव। भवाद दुद्व-स्ते, भारत। द्रीता। द्रीष्वति। द्रुयात्। बदुदुवत्, पा ३,१,४८। रचसाभान-दुदुवत, म ८,५८१। दुदूवति। दोदू यते। दोद्रोति। द्रावयति। चद्दवत, बदिद्रवत्। दिद्रावंशिषति, दुद्रावशि-षति, पा ७,४,८१। द्रुत:। द्रुति:। गुभस्तिधाराभिरिव द्रवः। द्रावः। द्रुतानि भानीस्ते जांसि, भ २, १२। षानु—ग्रनुसरणम्। उप—उपद्रवः। म, वि-पनायनम्। भीताः प्रादुद्रवन्, म १८,२५।

द्रह

ृदुड्—स्वा, तु, प, वो। सळानम्। द्रोडति। द्रोड़िता। दुड़िता। दुड़िता। दुक्—तु, ष। १ इंसा। २ गतिः। 🧣 कीटिल्यम्। दुर्णातः। द्रीणिता। द्रुगति प्रकती यस्य दिङ्मुखेषु रिपु-व्रजः, कवि २४०। द्रोषः। द्रोषी। द्भुगः ।

दुइ—दि, प। जिघांसा। प्रपकार:। सद दुद्यति, देवदत्ताय द्र द्वाति, पा १, ४, ३७। सिट् दुद्रोह। दुद्भु इतुः। दुद्रोग्धः। दुद्रोद्धः। दुद्रोद्धियः। बुट् द्रोग्धा, द्रोढ़ा, द्रोश्विता, पा ८, र,३३ हे लट् भ्रोस्थिति, द्रोडिष्यति । चुक् बदु इत्, पुषादिः। सन् दुद्रोष्टि-षतिः दुद्विषति, दुघ्रचति। यङ्दो-दुश्चते। दोद्रोष्धि, दोद्रोढि। पिष्ट् द्री-इयति। परुदुहत्। दोहित्वा, दुहि-ला। दुग्धा। दुग्धः। दूदः। दोह-यम्। द्रोइ:। द्रोही। द्रोग्धव्यम्।

द्रोहितव्यम्। प्रभिन् द्रोढ़व्यम् । निन्दा। अपकार:। देवदत्तमभिद्रश्चः ति, पा १, ४, ३८ विंसखा योऽसि-द्रुद्धति, पार, १, ६४। वि—विद्रोदः। दू – दूड्, स्त्रा, वो। क्रा, छन १ वधः। २ गतिः, वी। द्रुषोति। द्रुषाति। द्रूणते। दृषीते। दृषाति द्रोषवद् युषे, कवि २१०। दुद्राव। दुद्रवे। तं दुद्रा-वाद्रिया कपि:, भ १४,८१। द्रविता। पट्रावीत्। चद्रविष्ट।

द्रिक् – द्रेक, स्वा, भा। १ शब्द:। २ उसाइ:। मन्दोत्साइ:। हाइ:। उ-व्यति:। द्रेकते। दिद्रेवे। द्रेकिता। बद्दे विष्ट। प्राद्दे कत इयहिएम् (मिक्-तवत्), भ ९७, ८। घ्रेक, घ्रेकते। चदि-भ्रेकत्।

द्रावति। द्रे-भ्या, प। स्तप्रः। हिष्-चदा, छ। प्रमीतिः। हेव:। 'निन्दा। विरोध:। सट्हेष्टि। दिष्ट:। दिवन्ति। देखि। दिष्टे। दि, द्विड्ढ। सिंङ् दिखात्। दिवीत। सङ् यहेट्। यहिष्टाम्। यहिषुः। यहि वन्, पा १, ४, ११२। पहिष्ट। देष्टि गुणिस्योऽपि, भ १८, ८। दिवन्ति म न्दाबरित सहातानाम्, क्रु, ५, ७५। प्रदिष्ठः खेभ्यः प्रदिवन् वानरेभ्यः, म १७,६१। सिट् दिवेष। दिवेषिय। दिहिषे। दिहिषिषे। सुट् हेष्टा। लृट् देखाति। •ते। माशिषि, दियात्। क्षित्रीष्ट । जुड् महिचत्। । ०ता । मन् दिविचति। ०ते। यङ् देविष्यते। देवे रिष्ट। चिच् हेलयति। अदिदिषत्। दिष्टा। दिष्टः। देवणम्। देवा। दे दुन्। बेटा। दिद्। देवणः। दिवन वनेचराग्राणाम्, सप्, १९॥ वि विदेव:। विराग:। खगत्नृत् विदेव बन्, स १२, ३३।

इ-भ्वा, प। १ श्राच्छादनम्। २ भ्रमादेर: । हरति । दहार । दहरतु: । हर्सा। दरिव्यति। अदार्घीत्। अदा-र्ष्टीम्। दारम्। दाः।

(ਬ)

धक् — चु, पा नाशनम्। धक्रयति। धण्—धन्—(प्रण्) स्वा, प। भव्हः। धणति। दधाण। धणिता। धनति, वो।

धन्व — धवि, भ्वा, प। गतिः। ध्वन्वति। भा—दुधाञ्, ह्वा, छ। १ धारणम्। २ प्रीयानम् । ३ दानम्, वो । लट्दधा-ति। धत्तः। दधति। धत्ते। दधाते। दधते, दधते शासनं यस्य शिरसा च नरेखरा:, कवि १७४। काचः काञ्चन-संसर्गाञ्जले मारकतों द्युतिम्, इहतो। सेषु चार्य धत्ते, भ ४, २६। ज्ञि धेहि, पा ६, ४, ९१८। स्त्र, धत्स्त्र। निङ्द-ध्यात्। दधीतः। धर्मे दध्यानानः, सनु १२, २१। जङ् घटधा। घघताम्। भद्धुः। प्रथत्त। ग्रद्यत। लिट् दधी। दिधिय, देघाय। दिधिव। देघे, लेखें समाधि न दधे सृगावित्, भ २, ७। दघु: कुमारानुगमि भनोसि, भ ३,११। दघतुर्भुवनद्वयम्, र १, २६। लुट् घाता। नृष्ट् घास्यति। ०ते। न सुदं घास्यति (जनियिष्यति), ने ३, १५। श्राधिष, भेषात्। भासोष्ट। लुङ् अधात्। अधा-ताम्। श्रधुः, पा २, ४, ७७। श्रधितः।

बिखते। श्रायिषीष्ट। अधायि। अधा-थायिषत । सन् धित्सति । ∙ते, पा ७,∙४, ५४। यङ् देधीयते, पा ६, ८, ६६।. दाञ्चिति, दाभाति। णिच् घाषयति। भटीचवत्। डिल्वा। ० घाय। डितः। हिति:। धानम्। धातुम्। धाताः। धाय:। घेय:। धातव्य:। धान्यम्। षत्तर्, तिरस् — चन्तुर्धीनम्। चन्तर्धत्-ख रामांत्, स ५, २२ । ख्राचामियांस्त-रोदधे, र १०,8८ । पुरम्-पुरस्करणम्। तुरासाइं पुरीषाय, कु २, १। अयत् प्रशा विश्वास:। श्रादर:। सन्धावना। मान्नधे राघवे, र ११, ४२। प्रतः महध-तेऽखवा बुधाः, सा १६, ४०। प्राध षाच्छादमम्। पिदद्वं पाणिभिर्देगः, **स ७,६८। ग्रीस**─ग्रीसधानम्। पाः ख्यानम्। कबन्धवधमभ्यधुः, भ ७,७८। चेत्रमित्यभिषीयते, गो ११, १ । प्रव भवधानम्। प्रणिवानम्। भवद्वितीः ऽस्मि। देव! चवधीयताम्, ष्टितो। व्यव —व्यवधानम्। व्यवधाय देवम्, र ८, ५०। चा-चाधानम्। चर्णणम्। स्था-पनम्। धारणम्। सरिन्मुखाम्बुचय-सादधानम्, भ २,८। समा समाधा-नम्। छत्पनामापदं यस्तु समाधत्ते स बुडिमान, दितो। सम्प्रति धीमङ्गः समाधीयते, दायभाग १०८। उप-उपधानम्। प्रपंपम्। प्रेते भुजमुपधा-य, रामा। बाहुनतीपधायिनी अग्रेत, कु ५, १२। भोमे चोपाधितानने, भ १४,8७ हृदि चैनासुपधातुम ईसि, र ८,७८। नि-निधानम्। स्थापनम्। न्यासः। ग्रवमनिने निधाय, भ ३,३५। न्यधायिषातां चरणी भुवस्तले, मा १, अधिवाताम् । अधिवत, वा १,२,१७। १३। प्रेतं निदध्यभूमी, मनु ५,६८। क्रमीण, धीयते। दधे। धाबिता। प्रति प्रणिधानम्। अवधानम्। प्रति

वाव्

नि-प्रतिनिधिकरणम्। सन्नि-सन्नि-धालम्। विषत् मिन्निहिता तस्य, हिती। - परि-परिधानम्। * वि-विधानम् । करणम्। ग्रनुष्ठानम्। देवं न विदर्धे ननं युगपत् सुर्वमावयोः, स ६, १४०1 धंद्विमिष्टाभनं सतामनं विधीयते, मनु ३, ११८। सहसा विदधीत न स्त्रियाम्, भा २,३७। दिषता विह्रितं लयायवा (सर्मार्पितम्), भा २,१०। श्रनुवि-श्रनु-विवानम्। साधनम् । प्रतिवि-प्रति-विधानम् । प्रतिकारः । तथापि प्रक्तितः प्रतिविधास्यते, वीर २६। सम्-सन्धा-नम्। योगः। भारोपणम्। धनुषि समर्थत्त सायकम्, र ३, ५३। प्रवुणा निष्टि सन्दधात्, तितो। सन्दधाक्त धनुष्येत योग्यकालेषु सायकाम्, कवि १३२। यनु—यनुमन्धानम्। धर्मीपदेगं यस्तर्वेषानुसन्धत्ते, मनु १२, १०६। चभिसम्-प्रभिमन्धि । प्रभिपायः । त्वया श्रमिसन्धीयते कामिसार्थः, शक्त ३,९४। धान्-धावु, स्वा, छ। १ गति:। २ वेग:। शीघ्रगति:। ३ मार्जनम्∤ ग्रुडीभावः। ग्रुडीकरणम्। लट् धावति। वते। यस्य रोषाक्षा दृष्टिभीवते यत्र शाववे। पाश्रपाणिस्तरस्तिसम् यमः द्तीऽपि धावति॥ कवि १२८। जिट् द्धाव। । वि। द्धावाद्भियत्त्रस्तस्य, भ १४, ५०। चुट्घाविता। चृट्घावि-चिति। ०ते। लुङ् प्रधावीत्। प्रधाः विष्ट। अधावीदरिसम्मुखम्, भ १५, ् ६०। सर्व् दिधाविषति । ँ०ते । यङ् दाघाव्यते। णिच् धावयति। धदीध-वत्। न पादी धावयेत् कांस्ये, मनु ४, ६५। (उ) घोला, पा ६,8,१८। धावि-त्वा। घोतः पटः। प्रस्केवे निष्ठाया धुक्यति। प्रदुध्चत्। सम् सन्दोपः अप्रयोगः ; दुर्गा। गतौ घावित इति नम् प्राराणिः सन्धुच्यताम् अ २, २५॥

पद्मनाभः। पद्मादावितोऽचिन्त्यत्, हितो। ब्रष्टिधीतः, र ११,८०। धावनम्। धावतः। धवतः। अनु-अनुधावनम्। पयादावनम्। र्यनुसन्धानम्। यप-पनायनम्। श्रीम-श्रीमसुखगतिः। तं इन्तुमभ्यधावत, स ६, ४१। वि, निर्-मार्जनम्। निर्धीतहारगुलिका, र ५,७०। पानीयैविदधाविरेऽस्ननानि. सा ८, ५०।

धि तु, प। धारणस्। धियति। दिधाय। घेता। अधैषीत्। धिच् (धुच्)।

धिन्व-धिवि (जिवि) भ्वा, प। १ प्रीयनम्। ३ गतिः, वो। धिनीति, पा ३, १, ८०। धितुत:। धिन्वन्ति। धिनोमि। धिन्यः। धिन्यः, पा ६, ४, १०७। धिनीति इच्चेन दिरख्यरेतसम् भा १, २२। दिधिन्व। धिन्वता। वि-न्विषति। प्रधिन्वीत्।

धो- बीर्ड, दि, या। १ पावारः। २ फाराधनम्। ३ चनादरः, वी। घी-यते। दिध्ये। घेता। घेष्यते। प्रमेष्ट। त्त, धीन:।

धु-धुज्, स्ता, छ। कम्पनम्। धुनोति। घुनुते। धुनोति चासि तत्त्वी च की तिम् कृतस्थितां स्तरूनधुन्तर् वारीणि, म १०,२२। दुधाव। दुधवे। घोता। दघोषीत्। द्यघोष्ट, की १४६। धुल-धिच् स्वा, या। १सन्दीपनम्।

ः क्रियनम्। ३ जीवनम्। धुचते। धिनतं। दुध्ये। धुचिता। यधुन्तिष्ट। दुषु चिषते, दोधुच्यते । दोधुष्टि । पिन् धू—धूज्—स्वा, वो, खा, क्रा,उ,धू,तु,प। कम्पनम्। विधूननम्। स्वा, धवति। ॰ते। दुधाव। दुधुवे। धविता। श्रधा-वीत्। तु, धुवति। धुविता। अधुवीत्। भूनोति। भूनते। धनाति। धुनोते। भूनोति चम्पनवनानि धुनोत्यमोनं, चूतं धुनाति धुवति स्स्टितातिसुन्नम्। वायुर्विधूनयति चम्पकपुष्परेणून् यत्-कानने धवति चन्दनमञ्जरीञ्च॥ कवि ८। निट्दुधाव। दुधुवे। दुधुवानि-नः स्कन्धान्, र ४, ६७। बुट् धोता, धविता, पा ७, २, ४४। खट् धोष्यति। ब्ते। घविष्यति। ब्ते। अधावीत्। श्रधाविष्टाम्। श्रधाविषुः, पा ७, २, ७२। अधोष्ट, अधविष्ट। सा न धावी-दिरिषी, भ ८, ५०। सन् दुध्रवति। ॰ते, पा ७,२,१२। यङ् दोध्यते, दो-भोति। णिच् भूनयति, की १८१। धूञ्, चु, उ । कम्परम् । धूनयति । धेवति। श्री। धावयतीति केचित्, की १८१। धनुरधूनयनाइत्, स १७, ६४। घूला। ० धूर्य। घूत:। क्रा, घूनः, पा द, २, ४४ । ७, २, १३ । धूनि:। अव— निरासः। व्यथामवध्य, र ३, ६३। श्र-वधूतभयाः, र ८, १८। म्रा-ईषत् कम्पे:। ७६-७त्चेष:। रजःकथै: खुं रोड्ते:, र ८, ६। निर्, वि—निरास:। चयः। ज्ञाननिधृतकल्मषाः, गी ५, १७। विध्तपापास्ते यान्ति ब्रह्मचोक-मनामयम्, स्मृतिः।

भूप-भ्वा, प। सन्तापनम्।
सन्तात्रोकरणम्। धूपायति, ०ते, वो।
पा ३, १, २८। धूपायाञ्चकार, दुधूप।
धूषायता, धूपिता। श्रधूपायोत्, श्रधूपोत्। धूप्, जु, प, वो। दौतिः।
धूपयति।

धूर्-धृरी (गूरी) दि, शा।

, १ हिंसा। २ गतिः। घूर्यते। जाल्याः भूर्य्याय घूर्यक्ते, जवि १३८। दुधूरे। धूरिता।

धूर्य-धुर्वी (डर्वी) भ्वा, प। - इननम्। धूर्वति। दुधूर्व। (ई) धूर्णः। धूर्तः। धूः धुरी, धुरः।

धूग्-धूष्-धूस्, चु, प। कान्तिकरणम्। भूषणम्। धूग्रयति। प्ट—ध्ञ्. भा, उ। धारणम्। धुङ्, भ्वा, या। १ अवध्वं सनम्। चुर्णी-भाव:। २ पतनम्, वो। ३ घविष्वं सनम्। ४ स्थापनिमति गोविन्दभद्दः। धङ्, तु, त्रा। १ प्रवस्थिति:। जीवनम्। २ घार-णम्, वो। सट्घरति। •ते। भ्रियते, पा ७, ४, २८। भ्रियते यावदेकोऽपि रिपु:, मा २, ३५। धरते यी धुरं धर्म्यां भै व्यं धारयति घुवम्। प्रियते यत भी: सन्यक् भियति श्रीय गाखती॥ कावि ३५। लिट् दघार। दघे। लुट् धर्ता। ऌट्धरिष्यति।०ते। प्राग्रि-षि, भ्रियात्। ध्रषीष्ट । लुङ् स्रधार्थीत्। श्रधाष्ट्रीम्। श्रधार्षुः। श्रष्टतः। श्रष्ट्रणा-ताम्। अञ्चलता कार्मीण, ध्रियते। अर-भारि, अभारि पश्चेषु तर्रेङ्ब्रिया प्रया, नै १, २०। ताभिगेभे: प्रजास्त्ये दन्ने, र ३, ५८। सन् दिधीर्षति। वर्ते। तु, दिधरिषते, पा ७, २, ७५। यङ् देभीयते। दर्भत्ति। विज्ञ्भारयति। ॰ते। ऋदीधरत्। ०तें। ध्रुः चु, प, वो। घारणम्। घारयति। धारयन् मस्क-विव्रतम्, भ ५, ६३। श्रधारयन् स्त्रजः कान्ताः भ १७, ५४। ग्टहीतापरियो-धनम्। देवदत्ताय यतं धारयति, पा

१, ४, ३६ । धार्यसिव तस्ये वसूनि प्रत्यपद्यत, भ ८, ७४। अर्थान्तरहात लमस्य प्रसिद्धमेव। दण्डधारी मही-पतिः दग्डपयोत्ता इत्यर्थः। - यन्यसद-मुधारिणं यत्यसहस्रग्राहकभित्यधैः, इति गोयीचन्द्रः। धृला। ष्ट्रतः। धृतिः। धरणम्। धर्त्तुम्। धर्तः व्यम्। धारकः। धर्मः। चिंच्, धार-यिता। अपयो । घारितः। धारणम्। श्वधारणम्। धार्या। ग्रव-ियच्, रिनश्चयः। निरूपसम्। अवधारय सी-मित्रे भूषणान्तरसास्यतः, महाना ४, १८। उद्-उदार:। मोचनम्। **डद्दीधरत् प्रितामहान् भगीर**खः, इत्तर। निर्, सम्प्र-निर्हारणम्। नि-स्यः। प्रचुरीभवन् न निरधारितमः, सा ८,२०। धृज् छुच्च एखि, स्वा, प। गतिः। ष्ट्रच्— ष्ट्रच्, श्वा, य, वो। १ मंद्रति:। २ हिंसा। जि. ध्वां, खां, प। प्राग-स्मीम्। दमाः। लट् धर्षति। छन्नाति। न प्रणोति गुरोरग्रेन धर्षति निजाः प्रजा:। तमेव घर्षयस्येकां, कवि ८७। ष्रप्रणीद् रावणः, स १७, ८१। लिट् दधर्ष। दष्ट्यतुः। वानरा दष्ट्युः, भ १४, १०२। लुट् घर्षिता। ल्टट् घर्षि-ष्यति। लुङ् ग्रथर्षीत्। भ्रधर्षिष्टाम्। प्रवृद्धिषुः। सन् दिधिषेषति। यङ् दरीध्यते। दरीवष्ट्रि। णिच् धर्ष-यति । श्रदधर्षत्, धदोष्ठषत्, पा ७, ४,०। धृष् (धृषा, वा) चु, प। १ प्रस इनम्। २ ज्ञसर्थः। ग्रीमभवा, वो। घषेणम्। धर्षं, चु, धा, वो। शक्तियः ञ्चनम्। निः यज्ञोकारणम्। ध्वयश्ति। घर्षित। घर्षेयते। त धर्षेत निचाः

स्तुलति, इलायुधः। (उ) धर्षिता, प्रष्ट्वा। (धा) धर्षःतं ध्रष्टं तेन। (जि) प्रष्टोऽस्ति। ध्रष्टः, पा ७,१,१८। धर्षि-तः। धर्षितवान्, पा १,२,१८। धर्षे-णम्। धू—(ज्ञृ) कारा, प। वयोद्वानिः।

धृ—(ज्ञृ) क्राः, पा वयाचानः। धृगाति। दधग्तः। धरीता, धरिता। ध्रे—धेट्, स्वा, पा पानम्।

नद्धयति। निट्दधी, पा ६,१, ४५। लुट् धाता। लृट् धास्ति। माश्रिषि, घेयात्। तुङ् श्रधात्, पा २, ४, ७८। अधासीत्, पा ७,२,७३। घदधत्, पा ३,१,४८। अधातान, प-धासिष्टाम्, श्रद्धताम्। श्रधादसाम-धामोच किंघरम्, अ १५,२८। लंबी सतिसिवाधासीनैष्टा प्राणानिवाद्धः, भ ६,९⊂। कर्मीण, धीयते। अधायि। सन् धिवाति, पा ०,४,४४। यङ् देधी-यते। दाधिति, दाधाति। विष् धाप-यत्। , शेला। ॰ भाय, पा ६,४, < ८ । घोत:, की ३६१। धयनम्। घयः। स्तनस्वयः। धे (ट्) स्तनस्वयो। न वारः येद् गां धयन्तीम्, मनु ४,५८। सम् सन्धिः। न सन्धयति केनापि सर्वेत विजयो नृपः, कवि १३२।

चेक च्यदन्तः। चु, प। द्रश्रेनम्। चोर्—धोक्ट (घोक्ट) स्वा, प।

गतिचातुर्थम्। घोरति। घोरन्याधे रणाक्रन्ता विनीता यस्य वारणाः कवि १३८। (त्रः) घटुधोरत्। प्राधे रणः। घोरितम्।

भा—भ्वा, प्राष्ट्रः। श्रह्णाद्वरदन्म्। २ प्रान्तसंयोगः।

धर्षति। धर्षयते। न धर्षति निजाः । श्यामने बळवकी करणाम्, ० दुर्गा। बर् प्रजाः। तमेव धर्षयत्वेकं यस्तासु प्रति- धेमति, पा ७, ३, ७८। काम्बूंस तारा मधमन्, भ ३, ३४। निह्दशी। द-सतः। लुट् धाता। ल्ट्यास्यति। शाशिषि, धोयात्, न्यायात्। लुङ् श्रधासीत्। श्रधासिष्टाम्। कर्माण, स्वायते। श्रधायि। सन्दिधासितः। यङ्देशीयते, पा ७,४,३१०। दास्रीति, टाधाति। निच् धापयति। बद्धि-पत्। त, धातः। शा—शब्दः। दाहः। स्कोतिः। द्वीधातः। श्राधातसुद्दं स्थम्, सुश्रतः।

• घाङ्ग् (द्राङ्ग्)।

थ्ये साह पा जिला। थानम्। ध्यायति, ध्यायत्यनिष्टं चितसा. मनु ८,२९ । दध्यो। दध्यतुः। ध्याता। ध्या-स्वति । ध्येयात्, ध्यायात्। प्रध्यासीत्। भध्यासिष्टाम् । दिध्यासितः। दाध्यायते । दाधाति । विक्धावयति । पदिध-पत्। ध्याता। ॰धाय। ध्यातः। ध्या-नम्। ध्येयः । क्रिप् घीः। विषयान् ध्या-यन्, गो 3. ६२। यनु सारणम्। चिन्ता। यनुग्रहः। यनुद्रध्युरनुध्येयं (यन नुभानसन्बद्धः), र ५७, ३६। श्रासि-जिन्ता । असङ्गल्यः । अध्यक्षन निष्मा । नि—सारपाम्। इर्थनम्। तिवदध्यौ सः, भ १४, ५६। निवैर्णनन्तु निष्यानं दर्भनानोकनेच्यमित्यस्यः। चिरं नि दध्यो दुइ तः स गोदुइः, मा १२, ४०। भ्रज्, भ्रज्ज भ्रजि (भ्रजि) स्वा, प। गति: भ्रम्-भ्रन्-(भ्रम्) भ्वा, प। शब्दः।

का भ्रम् चन्नम, क्या, चु, प।

ड्व्ह्वतिः। ध्रस्नाति। ध्रासयति। डकारो धालस्यकः। डस्रयाति। डभ्रसाञ्चकार।

्रभाख्-भाख (घोख) स्वा, प।

१ शोषणम्। ३ श्रतमर्थः। झाखितः।
अप्राच् (द्राच्) भाष्ड् (द्राष्ट्) भाष्ड् (द्राष्ट्) भाष्ड् (द्राष्ट्) भाष्ड् (द्राष्ट्)
भिज्—अवा, पा वो। गितः। भेजते।
भुद्रभू, वो, अवा, पा भु, भुव्, तु, पा।
१ गातः। ३ खेळेम्। भुवति। भुवति।
दुभाव। दुभाव। दुभुवतः। तं दुभावादिषा कपिः (व्यापादितवान्), मा
१४, ८१। भु, भोता, भोष्यिति, भभौभोत्। भू, भविता, भविष्यिति, भभौभोत्। भू, भविता, भ्रविष्यित, भभौभात्। भु, भ्रविता, भ्रविष्यित, भभौभावाम्। भुव्, भ्रविता, भ्रविष्यित,
भभुताम्। भुव्, भ्रविता, भ्रविष्यित,
भभुताम्। भुव्, भ्रविता, भ्रविष्यित,

ध्वन

भ्रेक् (द्रेक्)।

भ्र-भ्या, प। त्यांतः। भ्रायति। ध्वज्-ध्वच्च-ध्वजि (पृज्ञ) भ्या, प। गतिः। ध्वजति। ध्वच्चति।

ध्वण्—(भण) स्वा, प। शब्दः ॥ ॰

ध्वन् भ्वा, प। शब्दः।

[गगदपंगः]

नट्

900

धं स्-धन्स, खा, था। . १ अवसंसनम्। ध्वंसः। अधःपतनम्। र गमनम्। ध्वंसते, ध्वंसते यदि भवा-दृशस्ततः, भा १३, ४२। तमासि घू-अन्ते, वीर ५। धुंसेत हृदयं सदाः, भा ११,५७। दघुंसे। प्राचा दघुंसिरे, भ १४,१५। घूं सिता। घूं सिव्यते। श्रधुसत्। षाधुं सिष्ट, पा १, ३, ८१। प्रसमध्यसन्, भ १५, ८३। सन् दिघुं-

सिषते। यङ दनीध्यस्यते, पा ७, ४, ८४। दनीश्रास्त। गिच् श्रंसयति। षद्धं सत्। मूर्डीनमद्धं सन्दर्शिः। भ १५, ८१। (इ) ध्वंसित्वा, ध्वस्त्वा। ध्वस्तः। ध्वंसः। षण, षव-चूर्णनम्।

निन्दा। वि-निपातः। चयः। धाङ्ग्—(द्राङ्ग्)।

ंख्—भ्वा, प। क्रुटिनीकरणम्। ध्वरति। दश्वार। दश्वरतुः। ध्वर्ता।

(ন)

नक् -(धक्) चु, प। नाधनम्। नच्-णच् (ढच) भा, प। गति:। नख्—नङ्—णख्, णखि (उख) भ्या, पी। गृतिः। नखति। नङ्गति। नज्—श्रोनजी, तु. श्रा,वी। लळा। नट्— गट्, स्वा, ए। १ नत्तेनम्।

२ हिंसा, वो। नटति। नटन्ति नाटके यस्य चरितं भरतादयः, कवि १७८। ननार। नेष्टतुः। नटिता। प्रनटीत्, भनारीत्। तृतिनतिगतिषु घटादि-णीं परेम एव, की दर्ग नटयति।

नाळोन केन नटियम्बति दीर्घमायुः, (२, १६। निन्दला। ॰नेन्छ। निन्दितः।

खन्दनम्। नाट्यम्। चिमनयः। पन-करणम्। भंगः, वो। नाटयति। व्यक् सेचनं नाटयति, यक्त १,८०। ईम्बरस्या-भिख्यां नाटयत्येष ग्रेन:, मा ४, ६५) नट, (प्रजि) चु, प। दीप्ति:। नाटय-ति। उद्-हिंसा। व्यवस्यो बाटवति

नन्द्

पा २, ३, ५६। नटः। नाटकम्। 🎏 नड्—षड्, चु, प। स्त्रंगः। नाड्यति।

नद्—यद्, स्वा, प। शव्यत्तभव्दः। नादः। सट्नदति। नवाम्बुमत्ताः

शिखिनी नदन्ति, घटकार्परः २ । बिट मेदतुः। दुन्दुभवो नेदुः, ननाद । रामा। सुट्नदिता। स्टट्नदिष्यति। लुङ् चनादीत्, चनदीत्। सन् निन दिषति। यङ् नानदाते। नानति। णिच् नादयति। भनीनदत्। णह

चु, प। दीप्ति:। नादयति। छट्, नि— उचनादः। प्रमोठ सिंघध्वनिस्त्रनाद, कु १, ५७। सदपटुनिनदङ्गीराजदंगैः र ५, ७५।. चम्बुटै: शिखिगची विनाः दाते (प्रयोजनियानन्तस्य समामेनलम्),

८, ४, १७। निनदः। निनादः। नन्द्—टुर्नाद, भ्वा, प। सस्तिः।

घटकपॅर:। प्रवद्ति, प्रविनद्ति, प

ग्रानन्दः। नन्दति। ननन्द। ननन्द पर्यन् सत्स्वनीः, भाष्ठ, २। ननद् स्तत्मह्योन तत्समी, र ३, २३। नन्दिता। नन्दिष्यति। नन्द्यात्। पन

न्दीत्। अनन्दिषु:। निनन्दिषति। नानन्दाते। नानन्ति। नन्दयति। पत नन्दत्। गोपाङ्गनानृत्यमनन्दयत्तम्, भ

अनर्घ। प्रचटयति। नट्, चु, प। अवः । नन्दनम्। (टु) नन्दशुः। नन्दनः, ग

अस्

३, १, १३४। नन्दनः। नन्दः। नन्दा। नन्दी। श्रमि—श्रमिनन्दनम्। सन्धा-वनम्। प्रशंसा। ग्रन्तोषणम्। प्रोत्-साइनम्। कामना। नामिनन्देत मरणं नौभिनन्देत जीवतम् (न काम-येत), मनु ६, ४५। तत्तत् प्राप्य ग्रभा-गुभं नाभिनन्दति न देष्टि (प्रशंसति), गी २, ५०। वाग्मिः सखीनां प्रियम-स्यनन्दत्, र ७, ६८। दिवीकसोऽपि सीतादेवीमभिनन्दन्ति, वीर १०४। सेनापते वचनं ते नाभिनन्दामि, शकु २, ४१। या-यानन्दः। यानन्दितार-स्वां दृष्टा, भ २२, १४। पाननन्ददा-नरान्, भ १५, ५८। प्रति—संवर्धनम्। प्रीत्या प्रतिननन्दतुः, द १, ५८। प्रति-नन्छ तथाशीर्भिः, भारत ।

नम् — ग्रभ् (तुम) भ्वा, ग्रा। दि, क्राा, प ।

हिंसा। बंध:। नमते। नभ्यति। नस्मति। ननाम। नेभे, सतं नेभे, भ १४, ३३। नभिता। नभिष्यति। ०ते। भ्या, बनभत्। बनभिष्ट। दिः, बनभत् क्रमा। बनभीत्, बनाभीत्।

नम् णम्, स्वा, प ११ प्रश्नलम्।
नम्बीमावः। र नमस्तरणम्। ३ प्रव्दः।
प्रव्हार्थां न भाषायाम्, दुर्गाः। लट्ट् नमति, भक्त्यां नमति यो देवान्, कवि २५३। प्रदर्गमतु चावम्, वीर ३३। नम चितीन्द्रम्, भ १२, ३८। लिट् ननाम। नेमतुः। नेमिय, ननन्य। सविक्यमं नेसः, भ ३, ४३। लुट् नन्ता। लुट् नंखति। लुङ् प्रनंसीत्। प्रनंसिष्टाम्। प्रनंसिष्ठः, पा ७, २, ७३। प्रनंसीद् भूभेरेणास्यः, भ १५, २५। प्रनंसीद् भूभेरेणास्यः, भ १५, २५। प्रनंसीद् स्मेरेणास्यः, भ १५,

कर्त्तरि, ममते। भनंदा देखः स्वयमेव, पा ३, १, ८८। धन् निनंसति। यङ् नैन-अयते। नंनन्ति। नंनम्यमानाः फलदित्-सरीव सताः, भ २, २५ । विच् नमयति, नामयति। सीपसर्गस्य तु प्रणमयति। . धनीनसत्। नमयति धनुरेशं यः, महाना १, २३। नता। • नत्य, नस्य। नतः। नतिः। नम्नम्। नन्ता। नद्धः। नन्तव्यः। भव, भा-भवनितः। छर्द उन्नति:। उन्नमति मेघः, सच्छ १६६। समुबनामः काचित्, भा १०, ५३। डप-उपस्थिति:। प्रवितः। अकामी-पनतेनेनसा, र १०, ३८। परि-, परि-णासः। परिपाकः। परिपासन्ति न पद्मवानि, भा५, ३७। रत्नं चेत् काचि दस्ति तत् परिणमत्यसासु शकादिप, वीर १०। विषरि-विषरिणामः। वि-रूपावस्था। विपरिषमते दीर्जन्यम्, भनर्घ ८२। प्र-प्रणतिः। गुरवे प्रण-म्य, र १६,७०। तामच्चितिभः प्रचेसः, ₹ (8, १३) नम्ब् भवा, प, वी। गतिः। नम्बति। नय् - चय् (भय) भ्वा, भा। १ गति:। २ रचा, वो। नयते। नेये। नयिता। नर्-(गर्) भा, प। प्रव्दः। गर्जनम्। नदेति। ननदे। नदिता। पनदीत्। पनदिंषुः कविव्याघाः, भ १५, ३५। प्रनर्देति। प्रनर्देकाः, पा ८, ४, १४। कप्टं विनर्दतः, भट, १८। नर्व - भ्वा, प, वो। गतिः। नर्वति। नल्-चल स्वा, 'प,। १ गन्धः। बद्दनमिति गोविन्दभद्दः। २ बन्ध-नम्। नलति। पाल्, पु, प, वी।

दीप्ति:। नालयति। 🖟 💯

नश्—गाम् दि, पन १ निभगः।

नह

चयः। सरणम्। र श्रदश्रमम्। तिरो-भावः। लुकायनम्। पनायनम्। नट् मध्यति। प्रुवाणि तस्य मध्यन्तिः, - इद्भा। लिट् ननाम । नमतुः । निधिय, बनेष्ठ। नीप्रवा निम्ब, की १४०। ने सनिमाचिराः, में १४, ११२। जिंद निश्चिता, नष्टा, पा ७, २. ४५ । ७, १, ६०। लुट् नशिषाति, निङ्चाति। लुङ् बनिध्यत, पनङ्खेत्। पाणिपि, नक्यात्। लुङ् चनग्रत् (ग्रनग्रत्, वी)। चेष्टा व्यनगतिविकास्तराखाः, नै। बाम बनेशम्। सन् निनशिषति, निन क्वाति। यंड् नानश्यति। नानिष्टि। णिच् नागयति । अनीनगत्। स्ती रथमनाथयत् (दूरमपनीतवान्), भ १७, १०३। तिवासिचानजं तसी नाय वासि, भी १०, १९ । तथी सा नीनशः, मा ११, ३१। नशिता, नद्दा, नंदा, पा इ. 8, हूर। नष्टः। नष्टः। नगनम्। नागः। नियतुम्। नष्टुम्। नामकः। नुष्तराहि प्र, वि-विनामः। प्रणिय

नस् चासुभा, था। कौटिखम्। गर्मा चार्के । ठाउन मण्डल

थति, प्रनृङ्चति। प्रनृष्टः। प्रणागः,

या ८, ४, ३६। प्राणमन्, स १५, ४८।

विनङ्खाति पुरी चिप्रम्, स १६, २६।

नस् गाह, दि, खा बन्धनम्।
जट्नेह्यति। ०ते। जिट, गनाह।
नेहतः। नेहिथा ननदानेहे। जुट,
नदा, पाट, २, ३४। जुट, नक्षप्रति।
०ते। जनक्षीत्। प्रनाद्यम्। पनात्सः। जनदा प्रनत्साताम्। सन्
निनक्षति। ०ते। युक् नानहाते।
नानवि। णिच्नाह्यति। प्रनीनहत्।
नद्या। ०नद्या। नद्यम्। नद्यः,

उपानत्। षि — षाच्छादनम्। कवर्षं पिन्छा, भ ३, ४०। उद् — उनस्य बन्धनम्। सुन्धान्द्रजटाकलापम्, कु ३, ४६। सम् — षाच्छादनम्। सम-बायः। मिन्ननम्। समन्द्रान् वर्मासः, स ५०, ४। समनात्वीत् सन्यम्, स १५, १९१। कुसम्मित् यीवनमङ्गेषु सन्दर्भ, यकु १, १०२। परि — परि यादः। देर्घम्। पर्याणसम्। निरा-चद्रम्। पर्याणसम्। निरा-

नाय्नेनाथ् नायु, नायु, भ्रा, पा।

ः रप्रार्थना । २ उपतापः । ३ ऐखर्थन् । ४ षाशीर्वीदः । दष्टार्ध्यमनम् । प्राण-षि ै एव नाघेरातानेपटम्, प्रमान नायति, की ३२ । आधिव नित्यन्, षन्यत्र विसापयेति वेचित्, दुर्गा। सट्नायति। ०ते। नाधते। नायति के नाम न स्त्रीकनायम्, ने इ, २५। नाथसे किसु पति न भूसतः, भा १३, प्टा सीपैथी नाथते, की २४२। घुला नीयस वेदेशि, स ८, १२०। विट ननाथ। ०थे। सुट्रनाथिता। स्टर् माथियति। '•ते'। सिंख्ण्" प्रनायीत्। षनाधिष्ठाम् । पनाधिष्ठः। प्रनाधिष्टः। नाथ्यति अनुनायत्। अनु इव प्रार्थना । राजानसुबनायति, पा राम, भूक कि कुल कर

ेनास् + वास्त्र, भाः वा । शब्दः ।

नासते। नासा। नासिका। नस अन्दे इत्येक इति प्रदीपः।

निच-विच, भा, पा जुम्बनम्।

्रिचिति, तिचिति दानसचीरकपी साहिगसादिकम् कति १८८ । तिनिच । निश्चित्ते । विचित्रति जो भूयः, भ ८,१ ६। प्रणिचणम्। प्रनिचणम्, पा ६, ४, ३३।

निज्-णिजिन्, स्वा, छ। १ गीचम्। निर्मलीकरणम्। १ पोषणम्। लट् नेनेति। नेनितः। नेनिजिति। नेनित्ते, पा ७, ४, ७५। यत्पादी मी लिस्ता-गुजासैनेनिक्का राजवाम्, वावि १३०। स्रोद् नेनिक्का निर्माण नेनिजानि, पा ७, ३, ८७। सिङ् नेनिच्यात्। निनिजीत। सङ्ग्रनिक्। धनिनिक्ताम्। यनिनिज्:। यनिनिजम्। यनिनिता। लिट् निनेज। निनिजे। सुट् नेसा। जुट् नेच्यति। •ते। आर्थिषि, नि-क्यात्। निचीष्ट। सुङ् ग्रनिनत्। अनेकीत्। अनिजताम्। अनेताम्। यनिता। यनिचाताम्। सन् निनि-चिति। ०ते। यङ् नेनिज्यते। नेनि-जीति। षिच् नेजयति। श्रनीनिजत्। निका। निकाः। नेजनम्। अव अव-नेजनम्। प्रचालनम्। निर्—तिर्येजः नम्। श्रीधनम्। श्रिज्ञिनिश्रिक्तम्, मनु **पू, १२७। चेलनिर्णेलकः।**

निस्—िषिजि, घटा, घा। युष्टिः। निस्ते। निनिस्ते। निस्तिता। यनिस्तिष्ट। निद्—नेद्—णिष्ट, षेट्ट, भ्या, छ।

निद्-निद्-णिट, णट, भ्वा, छ। १ जुल्ला। २सनिकषः। नेदति। •वे। नेदतेन प्ररंकचित्, कवि १५०।

निन्द्—णिदि, भूा, पा जुला।
निन्दा। निन्दित। तं निन्दित परीवादं परस्य विद्धाति यः, कवि १५०।
निन्दिस युत्तिनातम्, नोतमो १, १३।
निनन्द। निनन्दितः। निनिन्द इपं
हृदयेन पार्वती, कु ५, १०। निन्दिता।

निन्दिचति। प्रनिन्दीत्। प्रनिन्दिः

ष्टाम्। समीष, निन्दाते। यनिन्द। निनिन्द्यति। यज् निनन्दाते। निनिन्ते। निन्द्यति। यनिनन्दत्। निन्दिता। • निन्दा। निन्दतः। निन्दनम्। निन्दनीयम्। निन्दा। निन्दनः। प्रनिन्दति, प्रथिन्दति, पा ८, ४, १३। प्रथिचिष्यति नो भूयः, स ८,

निन् (पिन्व्)।

निस्-चिन् तु, प। गडनम्। दुवीधः। निस्ति। निनेस। निस्ति। ता।

ः निवासः प्रदेशतः, चु, पः। भ)६०१-

षाच्छादनम्। निवासयति यसितं चीनांग्रकम्। कवि। निम् णिण्, भा, प। समाधिः। निम् णिष्, भा, प। निमा। निष् णिषु, भा, प, वो। सेचनम्। निष्क् णिष्क्, चु, था। परिमीणम्।

निस्ते। दिन्ते। दिन्ते। दिन्ते। स्वां निस्ते। स्वां निस्ते। स्वां सिस्ते। स्वां स्वोणां यत्प्रजाः किन १८८। निन्ते। निस्ति। श्रानिस्ष्टि। प्रणिनिस्ते। प्रनिस्ति। श्रानिस्टि। प्रणिनिस्ता। श्रानिस्टि। प्रणिनिस्ता, पा ८, ४, ३३। दन्यान्ताऽयम्। श्राभरणकारुस्तु तान-व्यान्त इति बस्ताम, की १२३।

नी — योज, भा, ज्रा प्रापणम्।
नयनम्। लट्नयति। ०ते। चजा
यामं नयति गोषः, दुर्गा। नयतो
यद्गुणाः, सर्वे यस्तुल्यस्ति दिख्सुखम्,
स्रवि १७१। मामपि तव नय, दिती।

(समानने) शास्त्रे नयते। (ज्ञाने) तस्त्रं नयूती, पा १, ३, ३६। जिट् निनाय। ्निनियय, निनेय। निन्धिय। निन्धे। संविष्ट: कुगमयने निमां निनाय, र १,८६ । लुट्निला। लृट्निष्यति'। •ति । प्यामिष, नीयात्। नेषीष्ट। पनिवीत्। पनिष्टाम्। पनेषुः। पनिष्ट। श्रनेषाताम्। धनषत। धनैषीदाचमान् चयम्, भ १५, ५० । कर्मणि, नायते यजा ग्रामम्। यनायि। कपिनाऽने वत चयं दिष:, स ८, २२। सन् निनौ-षति। वते। यङ् नेनीयते। नेनिति, नैनयोति। णिच् नाययात। श्रनौन-यत्। नीला। ॰नोय। नीतः। नोतिः। नयनम्। नयः। नेतुम्। नेता। नाय-काः। निवम्। नयनम्। अनु -- अनुनयः। सारीचारनुनयंस्त्रासात्, भ ५, ४६। स चानुनोत: प्रवर्तन पद्यात्, र ५, ५४ । अप-प्रयसारणम्। शत्रुनपने-थामि, भ १६, ३०। प्रमि-प्रामन-यः। प्रनुकारणम्। क्रुसुमावचयमभि-नयन्त्यी, शकु ४, १, १२। पा-पान-यनम्। तेनाङ्गनाभरानायि सः, १, १०। उदा-उत्सङ्गोकरणम्। बाल कसुदानयते। प्रत्या-प्रत्यानयनम्। प्रत्यानेष्यति प्रतुभ्यो वन्दीमिव जय-त्रियम्, कुर, ५२। उद्-डत्चेपणम्। दग्डमुंबर्यत, पा १, ३, १६। (उदात: हाडः) समुद्रयन् भूतिम्, भा १, ८। खप-डपनयनम्। स्थातः। साणवकः सुपनयते, कमकरानुपनयते, पा १, ३, ३६। विदानुपरनष्ट तान्, भ १, १५ (प्रापणम) प्रार्थिसासनसुपनय, संच्छ २७५। प्रचासर्पनीय, भ ६, ७०। भिचासुपनयति भिचाः करतले, महाना ३, ७१। (उपस्थितिः) मलाश्रीगः कथस्पनयेत, में ८४। निपाप

गम्। डदकं निनयेच्छेषं पिराहान्तिके, मनु ३, २१८। निर्—निर्णय:। कथं। निर्णीयते परः, द्वितो । परि-परिणयः। परिणेष्यति पावैती यदा इरः, क्रा ४२। प्रणयनम्। रचना। प्राप-णम। सुम्धबोधं व्याकरणं प्रणीयते। तस्त्राच्यें प्रयोग, भ ५, ७। वि-धर्माद्यु व्यय:। ऋणादिपरिश्रोधनम्। भपनयनम्। भतं विनयते, करं विन-यते, पा १, ३, ३६। क्रीधं विनयते, परस्य क्रोधं विनयति, पा १, ३, ३७। विन्यन्तेस तद्योधा मधुभिविजय-त्रमम्, र ४, ६८। (शासनम्। शिह्या) विनेष्यि दृष्टसत्त्वान्, र २, ८। मा चावनायिति गणान् व्यनैवोत्, कु ३, ४१। विनिन्ध्रेनं गुरवः, र ३, २८। नील्-पोल, भ्वा, प। नोलवर्षः। २ तत्करणम्। प्रणीसते। नीसम्। नोसी।

, नीय्—(पीव) णीव्, वो। भा, प। स्त्रीस्थम्। नीवति।

नु—णु, श्रदा, प। स्तुति:।

लद नीति। नुतः। नुवन्ति। लिङ्
नुयात्। लङ् धनीत्। घनुताम्। लिट्
नुनाव। नुनुवतुः। निवता। नीता,
वो। लुट् घनावीत्। घनोषीत्, वो।
सन् नुनूषति। यङ् नोनूयते। नोनीः
ति। णिच् नावयति। घनूनवत्।
नुला। नुतः। नुतिः। घा—सातकः
प्रथब्दः। घानुते यिवा, कौ २४३।
पर्तावणो मन्द्रमानुवानाः, भ ८, ६९।
नुङ्—तु, प, वो। बधः। नुङ्ति।

शिवणम् । 'निरासः । प्रवसारणम् । लंट् नुद्रित । •ते । मन्दं मन्दं नुद्रित

ववनस्वाम्, में दि। पार्य नुदिति, बीर २३। बिट् हनोट्। नुनुदे। संप्रयं⊨ नुनोद्र, र ६, १९⊏ं। नृपतेर्थेन-नादिभिन्तमो नन्दे, र ८, ४१। नुट् नोत्ता। ऋट्टै नोस्यति। ०ते। प्राधिषि, नुवात्। नुसीष्ट। नुङ् भनीसीत्। प्रतीताम्। प्रनीत्मः। प्रनुत्त । प्रनु-स्याताम्। प्रनुस्ततः। सन् जुनुस्ति। ॰ते। यङ् नोनुद्यते। नोनोत्ति। णिच् नोदयति। धन्तुदत्। नुस्ता। नुर्वाः। नुत्तः, पा ८, २, ५६। । नुत्तः। नीदः नम्। नीदः। आत्मापराधं नुदतः ग्रुय्-षया, र १६, ८५। भप-अपनीदनम्। षपनुनुदुर्भ देइखिदान्, स १०, १३। निर्-प्रतास्थानम्। खण्डनम्। धा-घात:। पयो मांसं भाकश्चेव न निर्नु-देत्, मनु ४, २५०। प्र-प्रेरणम्। वि-षिच् 🕟 विनोदनम् । प्रीपनम्। यापनम्। ष्ट्ररीकरणम्। क खिन्नमा-सानं विनोदयामि, यञ्ज २,२०। .विन्।-देशियन्ति सुनिकन्यका स्वाम्, र १.८, ७७। तापं विनोदय दृष्टिभिः, गौतगो ₹ **•, १३** () () .

न् प्, तु, य। स्तवनम् । चुवितः, नुवितः विष्ठः चोकेषु यड्ः चुणान् प्रयतो जनः, कवि ४२। नुनाव । चुविता । अनुवीत्। परिणूतगुणोदयः, कौ १५३। इस्लान्तीऽयमिति वरक्षिः।

चत् नृती, दि, प। गात्रविचेपः।
नर्तनम्। नृत्यति, नृत्यति युवतिजनेन समम्, गीतगो। ननर्ते। नन्तुः सञ्चावम्, भ २, ४३। नर्त्तिता।
नर्ष्यति, नर्त्तियति। प्रनर्ष्यत्,
प्रनर्तिथत्, पा ७,१,५७। नर्त्यन्ति
सुदा युताः, १६, २०। प्रनर्तीत्।

चनतिष्टाम्। चनतिष्टः। निनृत्वति, निन्तिष्ठिति। नरीनृत्वते, पा प्, ४, ३८। नदीनत्ति। णिच् नत्तेयति। ०ति। चननत्तेत्, चनीनृतत्। नतिः व्वा। नृत्तम्, नृत्वम्। नत्तेनम्। न-त्तेकः, नत्ते ते। चा—रणनृत्वम्। वस्पनम्। सङ्गिरानद्वितनक्षमानिः र ५, ४२।

न् – क्राा, प। नयनम्। प्रापणम्। नृजाति। प्रापणे, नरयति, घटादिः। नीर्णः।

> नेद् (निद्) नेष् (एष्)। (प)

पच्—स्वा, चु, प । परियद्यः। पचति। पचयति। चदन्तः, वो । पचः।। पच्—डुपचव्। स्वा, छ । पाकः।

रन्धनम्। परिणामः। परिणतावस्या। विनाधोन्यस्वीभावः। लद् पचति। ०ते। तण्डुलानोदनं पचति। पचारै म्यवं चतुर्विधम्, गी १५, १८। शार्षा पचति। भूतानि क्रानः पचति, भारत। जिट् पपाच। पेचिय, पपक्ष। पेचि-व। पेचे। सुट्पत्ता। स्टट्पस्ति। ॰ते। प्राधिष, पचात्। पचीष्ट। लुङ् प्रवाचीत्। प्रवाचाम्। प्रवाचः । प्र-पता। अपचाताम्। अपचतः। कर्मणि, पंचते। प्रपाचि। सद्य एव सुझता काङ्गितं पचाते, र ११, ५०। 🖚 कि पच्चते घोरे। सन् पिपचित्। कते। यङ् पापचाते। पापचीति, पापिता। णिच्याचयति। अपीयवस्। पता। १पच्य । पकाः, पाट, २, ५२। पक्तिः। पचनम्। याकः। याकिसम्। पचा शितुम् । पत्ता। पाचनः । पचः, पा

(इ) पित्तमम्। ददर्भमानूरफनं पचे-निसम्, ने १, ८४। परिपाकः। विपा• कः। पच (पच)।

प्रग

पञ्च — पचि, स्वा, द्या। व्यक्ती करणस्।
पञ्चते। पच्च पचते, वो। पचित।
पञ्चति इत्यय्येके। पचि, चु, प। विस्तारः। पञ्चयृति। प्रपञ्चय पञ्चमरागम्, गीतगो, १०, १३। यो वास्मी
वादिनां सध्ये वाज्ञसृचैः प्रपञ्चते। प्रपञ्चयन्ति यत् को चिं दिङ्स्खेषु सहाकनाः॥ कवि ४०। पञ्चकः। पञ्चः।
पञ्चनम्। पङ्क्तिः।

पट्—(ग्रट) स्वा, प। गतिः।
पटित । पट् (ज्रप) चु, प। १ दीप्तिः।
श्वदारः। छेदनम्। पाटयितः। भपीपटत्। छद्— उत्पाटनम्। प्रांग्रमुत्पाटयामास मुस्तास्तस्वमिव दुमम्,
र १५,१८। विभेदः। केतकवर्षः विपाटयामास नखागैः, र ६, १७। पट,
भू, प। घदन्तः। वैष्टनम्। पटयितः।
पटः। पटी।

पठ्—स्वा, प । कथनम् । पाठः ।
पठित स्रोतं धीरः । पपाठ । पेठतः ।
पेठिय । पठिता । पठिष्यति । सपठोत्,
पपाठौत् । कभीषा, पठ्यते । सपाठि ।
स्रोकः कस्य कविरमुख क्रितिनस्तत्
पठ्यतं पठ्यते । पिपठिष्रित । पापठ्यते । पापि । पाठयति । सपौपठत् ।
पिठ्ता । पठितः । पठितः । पठनम् ।
पाठः । पाठकः । पठत्सु तंषु, नै

पण्—भ्वा, श्रा। १व्यवद्वारः । बाणिक्यम् । २स्तुतिः । व्यवद्वारे, श्रतः स्य पणते, पा २,३,५०। पेणे । पणि-ता। सपणिष्टः । प्राणानामपणिष्टः, भ

द, १२१। स्तुताविवायः। द्यायान्तावाः
सानेपदम्, की ५८। प्रणायित, पा ३,
१, २८।०ते, वी॰। प्रणायाञ्चकार। पेणे,
पा ३,१,३१। प्रणायितासि, प्रणितासे।
प्रणायिष्यति, प्रणिष्यते। प्राधिष्ठ,
प्रणाय्यात्। प्रणिषीष्ट। अप्रणायीत्।
अप्रणिष्ट। वोपदेवमते व्यवद्वारेऽपि
प्रायः। न चोपलेमे विणिजां प्रणायाः,
विण्जां प्रणायान् इति जयमङ्कष्टतः
पाठः। प्रणायान् प्रणामान् इति
तस्यार्थः, भ ३, २७। प्रणायित्वाः,
प्रणिता। ०पणाय्य, प्रणा। प्रणायतः।
प्रणितः। प्रण्यम्। प्रणः। भ्राप्णः।

पण्ड-पड़ि, स्वा, आ। गतिः। पडि, चु, प। १नाधनम्। २राधीकः रणम्, वो। पण्डते। पण्डयति, पण्ड-ति।पण्डा।पण्डितः।

पत्-पत्लु, भ्वा, प। १गति:। २पतनम्। स्रं शः। पातित्यम्। इऐ-खर्थम्, वो। स्तट् पतित, पतत्यधोः धास, सा १, २। पतन्ति पितरी छोषां नुप्तिविग्डोदकिक्रियाः, गी १, ४९। सुः राप: पतति, स्मृति:। लिट् पपात। पेततुः। घेतिया घत्ती पपात खम्, भ प्,१००। भुवि पपात मूर्च्छितः, रामा। नुट् पतिता। स्टट् पतिष्वति। भानुः रप्यपतिष्यत् स्नाम्, भ २१,६। नुड् अपप्तत्, पा ७, ४, १८। कार्मभावयोः पत्यते। श्रपाति। सन् पिपतिषति, पिकाति, पा ७, ४, ५४। यङ् पनीप-त्यते। पनीपप्ति, पा ७, ४, ८४। पिन पातयति। प्रयोपतत्। पतिला। ॰पत्य। पतितः, पा ७,२, १५। पतनम्। पातः, पतः । पतितुम्। पातकः । पा-तुकः। चैत्पतिषाः। पत्रं पत्रकः याः

तासं पत्याः। चनु-चनुपातः। चमि च्यभिसुखपतनम्। चा-चागसनम्। उपस्थिति:। शनैरापतितस्तान्, भ ३, ४८। उद्-उत्पतनम्। ७उडयनम्। **डत्पात: । नि-निपतनम् । बुध:**प-तनम्। उपस्थिति:। निपतन्ति रणेषु यस्य द्वाणाः, कवि ४८ । सरणव्याधि-शोकानां किसद्य निपतिष्यति। णिच् - निपातनम्। ज्योत्सा इत्येते म-वर्धे संज्ञायां निपात्यन्ते, पा ५, २, १८ कात्यायनीव महिषं विनिधी-तयामि । प्रणि प्रणिपातः। संनि-मिलनम् । निर्—निर्मः । प्र—निप-तनम्। उपस्थिति:। प्रापसन्धारति-स्तव, भ १५, ५३। सम्-गतिः। सम्पत्य तत् सनीडे, भ ५, ३१। पत्, टि, चा, वो। ऐष्वर्थम्। पत्यते। चौगीतले-ऽधिपत्यते यः, कवि ४८। पेते। पति-ता। पतः, पत्, बाद्योऽदन्तः। दिती-यी इसन्तः। चु, प। १गतिः। पतनम्। २ऐखर्थम्, वो। चदन्ताहा णिच् पत-यति, पति। पत्यन्ति समन्ततो विपचाः, कवि ४८ । पताञ्चकार। पतिता। श्रपतीत, की १८२। पात्-यति। अपीपतत्। चिज्रहिती पत-स्वावेव श्रदन्ती।

पथ्—पथे, भ्दा, प । गृति:। पथ्—(पृथ्) चु, प। प्रचेप:। (पयति । पद्ययसुत्तरापद्यम्, कवि २३७।) पद्-भ्वा, प, वो। खैर्थम्। पदति। पद श्रदन्तः। चु, श्रा। गतिः। पदयते। संपरिचिम्य सच्चाणि पद्यन्ते पदातयः। ब्राइवे राजल--च्मीस यस्य सम्पद्यते ध्रुवस्॥ 7001

पद्—दि, श्रा शिति:। प्राप्ति:। ° पदाते। पेदे। पत्ता । पत्स्कते। पत्-सीष्ट। अपादि, पा ३, १, ६०। अप-ब्सोताम्। अपवसत्। पिक्सते, पा ७,४, ५ ह। पनीपदाते। पनीपत्ति। पा ७, ४, ८३। णिच् पास्यति। प्रणीपदस्। पत्ता। ०पत्य। पतः । पत्तः। पत्तुम्। पत्तव्यम्। णिच् पादितम्। पादनम्। पादियतव्यम्। पनुः, प्रसि-प्राप्तिः। जरां मधीउन्वपद्यत, भारत। चिम-पेदे राधवं महनातुरा, र १२, ३२। या-बागमनम्। प्राप्तिः। बायत्ज्ञा-प्ति:। त्रापत्ति:। त्रकीपन्यास:। डत्-षत्तिः। नियाचरादाणदि स्वंसः, भा ६, ३१। एव रावणिरापादि (भागतः), भ १५, ८८। 🚉 व्या-मत्याम्। व्याप-वानां गवां, स्मृतिः। व्या-णिच्-व्यापादमम्। इनमम्। पातानं तवा द्वारि व्यापादयामि, हितो। छद्-उत्पत्तिः। उदपादि भव्या, कु १, २२। व्युद् व्युत्पत्तः। नामकदमपि व्युद्-पादि, मा १०, २३। ७५-७पयोग:। सिंदि:। सम्पन्नता। समावनम्। प्राप्ति:। सङ्गति:। भर्मावासीयप-द्यते (उपयुक्ती भवति), नी १३,१८। नैतत् विधि डपपद्यते (योग्धेन सव-ति), गीर, ३। पैलिदौडिसयोर्विभेषो नोषपद्यते (न सन्भात्यते), मनु ८,११८। पञ्चमो नीपपदाते (पश्चमस्य तस्वन्धी) नास्ति, मनु ८,१८६। पूर्व सखे लय्यु-पषत्रमेतत् (सिखं, कु ३,१२। —श्रनुग्रहः। रतिमञ्जूषपनुमातुराम्, कु ४, २५ । निर्-नियातः। सिक्तः प्र—गति: प्राप्ति: । तणीवनं प्रयेदे, अ 8,१। वीयवा मां प्रपद्यत्ते (भजन्ते),

पर्-

गो ४,११। प्रति— प्रक्षीकारः। प्राप्तिः।

ज्ञानम्। सिंद्धः। प्रतिपादनम्। न

मासे प्रतिपत्तासे माञ्चेत्, भ ८,८५।

चेतो बालिबसं न प्रतिपद्यते (न प्रत्ये
क्रि), भ १६,११९। प्रत्यपद्या हितं
न च (नावगतवान्), भ १५,१८।

विधिना। प्रतिपादिपष्यता नववैधव्यम्,
कु ४,१। विप्रति- विकृषज्ञानम्। विरोधः। वि— विपत्तिः। त्ययापि चित्रा
क्रि विपद्यते यदि, ने १,१८९। त्वम
नाथा विपत्यसे, छत्तर ४८। सम्
द्रिपत्तिः। सम्पद्यते वः कामोऽयम्,
कु २,५४। स्नसुः सम्पाद्य पाणिग्रष्ठ
गम्, र ७,२८।

ेपन्—(पण्) खा, चा। स्तुतिः। पनायति। •ते, वो। पनायाञ्चकार। पेने। पनायितासि। पनितासे। अप-नायीत्। अपनिष्ट।

प्रय्—पिंश, चु, प। गतिः।
पर्य्व्-भ्वा, प, वो। गतिः। पर्व्वति।
पर्य्-(श्रय्) स्वा, श्रा। गतिः।
पर्यं-श्रय्) स्वा, श्रा। गतिः।
पर्यं-स्वा, श्रा। श्रपानशब्दः।
पर्यं-स्वा, प। गतिः। पर्यति।
पर्व्-(श्रव्ं) स्वा, प। गतिः।
पर्वं, स्वा, प, वो। प्रणम्। पर्वति।
पर्वं, स्वा, प, वो। प्रणम्। पर्वति।
पर्वं, स्वर्षं (वर्षं) स्वा, श्रा। स्नेडनम्।
पर्व्-पन्न्, वो। स्वा, प। गतिः।
पर्वान्त्व यद्दिषो दिच्च, कवि २५८।
पर्व-च्, पं, वो। पाल्वनम्।

पत्युन् (वत्यून्)। पग-पष्-पम्-अवा, ड, वो। १ यत्यनम्। २ पोडनम्। ३ सप्री:।

पालयति।

• पंश्—पंस्—पंशि, पसि, चु, प । हर्षे नाशनम् । पंश्यति । पंसयति ।

षा-भ्वा, ष। षानम्।

लट् पिनति, पा ७, ३, ५८। पिनसि रतिसर्वस्वसंघरम्, शकु १, १३१। प्रशी-क्रकाकाश्वाष्टी ये पिवन्ति, स्मृतिः। दुःशासनस्य किथं न पिवास्यूरस्तः, वेशी एं। पिवन्ति मधु, कवि ६५। •िलट्पपी। पपतुः। पपियः, पपायः। पपिवै। तं पपी लोचनाभ्याम् (दद्यो), र २,१८। लुट् पाता। पामिषि, पेयात्, पा ६,8,६७। लुङ् भ्रमात्। भ्रमाताम्। चपुः, षा २, ४, ७७। कर्माण, पौयते। चपायिषाताम्। चपासा-श्रयायि । ताम्। सन् विपासति। यङ् पेपीयते, पा ६,४,६६। पापेति, पापाति। णिच् पाययति। ०ते, पा ७, ३, ३७। श्रपि-प्यत्, पा ७, ४, ४। पीत्वा। ०पाय। षीतः। षीतिः। षानम्। पाताः। पायी। पातव्यम्। पानीयम्। पेयम्। सुरापः। रविपीतजला नदी, कु ४,४४।

्षा, घटा, प । पालनम् । रचणम् । पाति । छपञ्जवेश्यः प्रजाः पासि, र √, धूद्र । ्यः बीत्तिं पाति, कवि २ ६ । पायात्। पापायते। कर्मणि, पायते। पायात्। पपापायते। कर्मणि, पायते। पिपासति। पापायते। चिच् पाल यति। प्रपोपन्नत्, पा ७, ३,३७। पाला। पातः। पान्ती सुनीन्, भाइ, ८६। प्रति प्रतिपासनम्। प्रतीचा। धन्यास्त्रोः देवस्तदवसरं प्रतिपासन्यामि, शकु ५, २६।

ा ्यार-श्रदन्तः। चु, प।

कर्मसमाप्तिः। यज्ञिः। पारयति। अपपारत्। कर्मणि, पार्थिते। पारितैः। पारणा। जवेन गां पतितुमपारयन्तः (अग्रज्जुवन्तः), भा ४, १०।

पाल् चु, प । रचणम् । पालनम् । पालयति । पालति भूमिपालः ।

पि—तु, प। गतिः। वियति। पिक्—चु, प। छिदनम्। पिक्त, वो। पिक्क्—तु, प, वो। बाधः। पिक्क्ति। पिक्क्—पिनि, घटा, घा। १वर्षः।

पिङ्ग सीमावः। रसम्पर्कः। १ पञ्चासा-मन्दः। ४ पूजनम्, वो। पिङ्क्तः। पि-पिञ्जः। पिञ्जिता। पिजि, पिज (तुजि) चु, प। १ चिंसा। रवलम्। १ पादा-नम्, वो। ४ निवासः। दोसिः, वो। पिञ्जयति। पिञ्जति। पेजयति। पिञ्जरः। पिञ्जतः।

पिट्-स्वा, पा १ शब्दः । २ सङ्घातः । पेटति । पेटः । पेटी । पिटकः । पिटा-कः ।

पिठ्—स्वा, प। १ हिंसा। २ त्ते गः।
पिण्ड्—पिडि, स्वा, पा। चु, प।
संहतिः। पिण्डी बरणम्। पिण्डते।
पिण्डयति। पिण्डम्। पिण्डी।
पिन्द् —पिर्वि, णिबि, सिनि, बिबि,

भ्वा, प्र.मः सेचनम् । ाण्डिस्तिः। निन्द-ति ।

े पिल्-चु, प, वो । प्रेरणम् । इंग्रंच्-तु, प । १ अवयवः।

स्दीपनम् । पिमति, पा ७, १५, ८ । लष्टा कपाणि पिमतु, की १५७ । पिपेम । पेमिता ।

पिष्-पिष्ल. क, प i सञ्जूर्णनम्। पेषणम्। घर्षणम्। इतिम्। सट् विनष्टि विष्टः। विषन्ति। विनिच्च। श्रष्कपेषं पिनस्रावीम्, स ६,३७। पि-नष्टि चीरसा, पा २,२,५६। हि विक्टि संन्दरि चन्दनम्। सानिष् पिनवासिं। लिङ् पिष्यात्। सङ् अपिनट्। अपि-ष्टाम्। अधिनट् च रथानीकम्, भ १७, ६६। सिट् पिपेष। पिपिषतुः। पिपे-षास्य रयं किपः, अ १४, ८०० सुट् पेष्टा। स्टर्चिस्तति। सुङ् प्रिवत्। कर्मीण, पिष्यते। अपेषि। अपिषातां सहस्रो हे सहेईन वनीवसाम् भ-१५, ६८। सन् पिपिचति। यङ् पेपिचते। पेषेष्टि। चिक् पेषयति। चपीपिषत्। पिष्टा । पिष्टः । पेवणम् । पेष्टुम् ।

पिम् पेम् पिस्, पेस, स्वा, प्रश्नितः। इति:। दिन्। पेसवि।।

पिंस-पिसि (क्रप) चु, प्। दीसिः।

पी—पीड्, दि, भा। पानम्। पीयते। पीयन्ते च भियाधरम्, कि ६५ । पिया । पेचति। पेपीष्ट। भपेट। पीला। ०पीय। फीतः। क्यां निपीय, नै ४, १।

· पीह्—चु, प। १ खवगां इनम्। . २वधः, वी। क्लोधः । पौड्नम्। पौड्- । यति। पौड्यन्ति जनं धाराः, भ ७,८। पीइतीति इनायुधः। यथा-राष्ट्रं चेडिति नासीयं पौड्यत्यरिमण्डलम्, कवि २५१। पीड्यामास। पोड्यितान श्रविपोड्त, श्रवौष्टिंत, पा ७,४,३। नी समगीपिड्च्हरै:, भ १५,८२। क-र्भीषा, व्याधिमिः पौद्मते, मनु ५, ५०। ब्रा भूषणम्। क्लेशः। बद् उत्पोदः नम्। उपद्रवः। श्रन्धोऽन्यमुत्पौड्यत् स्तनहयम्, कु २,४०। उप, नि-संस्थेष:। पीडमम्। इननम्। निपोद्य पादी, र २,२३। निदंयं निपीषा, मा १६,३। निर्-निष्पोडनम् । पाईवस्तादेनि-जिलो कारणम्।

पुग्ड

पील् स्वा, प । स्तकानम् । पीव् स्वां, प । स्वीत्वम् । पुक्-(युक्) स्वा, प । प्रमादः ।

् । । धुट तु, प । संश्लेषणम् ।

णुटिता। पुपोट। पुटिता। अपुटीत्। जुट् (कुष) च, प। १दीसिः। २चूर्णीः करणम्। पोटयति। पुट, पदन्तः। चु, प। संसर्गः। पुटयति। पुटितः। पुटम्। पोटा।

पुद्र—(चुद्द) चु, प। प्रकाशावः।
पुद्र—तु, प। त्यागः। चलकः।
पुद्रति। पुपोडः। पुडिता। अपुडीत्।
पुर्य् —तु, प। धर्माचरपम्।
पुर्यात ग्रमं जोकः, दुर्गाः। पोणिता।
पुर्या (प्रका)। पुर्यम्। निपुषः।
पुर्य् —पुटि (अजि) चु, प। दीप्तिः।
पुर्य् —पुटि (सुद्धि) भ्वा, प।
प्रकाम्। चुर्वनम्। पुर्व्हति। पीडः

तीस्त्रेके। पुण्डुः।पुण्डुकम्। पुण्डरी-

पुथ्—दि, प। किंगा। पूथ् (कुप)।
चु, प। दोप्तिः। पुष्यति। पोथयति।
पुन्य्—पृथि (कुथि) स्वा, प। १ हिंसा।
२ पोइनम्। पुन्यति। युथि। युन्यति।
पुर्—तु, प। प्रयासनम् पोरिता।

पुन्भवा, तु, चु, प। विश्वता, बी। मच्चम्। पोन्सता, पुन्सता, बी। पोन्सयति। पुन्नमः। विपुन्तः।

पुष्—भ्वा, क्राा, प।

पोषणम्। भरसम्। वर्षनम्। उप-चयः। लट् पोषति। पुर्णाति। पुर्णी-तः। पुषान्ति। त्रषां न पुषाति यशांसि पुष्यति प्रवार्गीर्विप्रसनांसि पोषति। सत्यांच यः पोषयती(पति-र्धनैः, कावि २१ । ई. खरव्या इतयो विपरीतमर्थं न पुर्शान्त (बोधयन्ति), क्क ३, ६३। डि पुषाया। सिङ् पुष्यी-यात्। संङ्बपुणात्। बपुणौताम्। षपुषान्। सिट् पुषोष। पुपुषतुः। पुणीषिष । जावस्यसयान् विश्वेषान् पुर्योष, कु १, २५। उत्कर्षं प्रपुषुर्यं चाः, र ४, ११। लुट् पीषिता। लृट् पोषि-व्यति। लुङ् अपोषीत्। अपोषि-ष्टाम्। सन् पुपोषिषति, पुपुषिषति। यङ् पोपुष्यते। पोपोष्टि। पिच् पोष-यति। अपूपुषत्। पोषित्वा। ०पुष्य। पुषितः। पोषणम्। पोष्यः। पोषकः।

पुष्, दि, प। पोषणम्। उपचयः। पुष्यति। स पुष्यतितरां वाम्, भ ४, २८। पुष्यति सां न शोभाम्, शकु, १, ८१। वर्षे पुष्यतः निकं, सरयूपवां सः, र १६, ९५८। देस- त्रपुषः सुरामिषः, भ १०, ७२। प्रुपोष। पोष्टा। पोष्टित। अपुषत्, पा

३, १, ५५। अस्त्रानपुषत् स्त्रपोषम्,
भ ३, १३। प्रपुत्रति। पुष्, चु, प।
धावणम्। पोषयति आभरणम्। परपिण्डेनातानं पोषयामि, 'हितो।
पुष्टा। पुष्टः। बिलपुष्टकुलादिवान्धपुष्टेः पृथगस्तादिचरेण भाविता
तैः, मा २, ११६।

पुष्प्—दि, प । विकसनम् । पुष्पाति । ग्रादि पुष्पान्ति , सप्त-च्छदाः । पुपुष्प । पुष्पिता । पुष्पम् ।

'पुम्—प्युम्' दि, प। दाह्रविभागयोः।

्युम्'—चु, प। **खत्म**र्गः।

पोसयति। पुंस-चु, प। १ वर्षनम्। २ मर्दनम्। पुन्त-चु, प। श्रादरानादरबन्धनेषु। पू-पूङ्, स्वा, दि, श्रा।

पूज, क्राा, जा । पवनम् । पित्रोकं-रणम्। प्रजीकरणम्। पवते। पवसे इतिः, भ ६, ६४। पूर्यते। पुनाति। पुनोते, पा ७, ३, ८०। ज्ञोमार्गनधूम-सुरिमः पवते साकतो सदुः। गोदा-वरोतरङ्गादः पुनाति भृति यत्प्रजाः॥ कित १८०। जाङ्गवो नः पुनातु। ज्ञिष्मिष्ट पुनोद्दा साम्। ज्ञिष्ट पुनोधात्। पुनोति। जञ्ज पपुनोता। जञ्ज प्रपात्। पुपनेता। जिट् पुपाव। पुपनिव्यत। पुपनेत। जिट् पुपाव। पुपनिव्यत। पुपने। साधिष, पूयात्। पित्रोष्ट। जुङ् प्रपावोत्। प्रपात्। प्रविव्यत। जुङ् प्रपावीत्। प्रपात्। प्रविव्यत। जुङ् प्रपावीत्। प्रपात्। प्रविव्यत। जुङ् प्रपावीत्। प्रपात्। सन् पूङ्, पिषविव्यते, पा ७, २, ०४। पूज्, पुप्पति। ०ते। ,यङ् पोप्रस्ते।

पोपोति। णिच् पावयति। पपोपवृत्, पा ७, ४, ८०। षूडः, पवित्वा, पृता। प्रवितः। पूतः, पा १, २, २१। ७, २, ५१। स्तोऽपि गङ्गासिलनैः पवित्वा सद्दाखमात्मानम्, भ ३, १८। पृत्रः पूता। पूतः, पा ७, २, ११। विनाशे पूनाः यवाः। पूतिः। वपनम्। पवितम्। पावकः। पवमानः, यवितम्। तदी-येखितमे होधरः पावितः, क्षं ५, ३७। उद्—वस्त्रपूत्त्वम्। द्वाणामिक सर्वेषां ग्रह्मित्पवनं स्नृतम्, स्नृतिः।

पूज चु, प। पूजा। अर्चना।
समानः। प्रशंसा। पूजयति। राजानं
पूजयति, रता १, १३३। पूजयामास।
पूजायता। पूजयिष्यति। अपूपुजत्।
अपूपुजन् विष्टरपाद्यमाख्यः, भ २,
१६। कर्माकः, पूज्यते। अपूजि। अपूजायवाताम्, अपूजिषाताम्। पूजयिता। ०पूच्यः। पूजितः। पूजनम्।
पूजा। पूजकः। पूजनीयम्। पूज्यम्।
पूजियस्यम्।

पूर्ण—'पुर्ण' (पुर्ल) चु, प। राश्रीकरणम्। पूर्णयति धान्यम्, टर्गा।

दुर्गा। पूर्य—पूर्यी, स्वा, स्ना। १ भेदः। २ दुनस्यः। पूर्यते। (ई) पूतः। पूर्यः।

पूर्—पूरो, दि, चु, था।

आध्यायनम्। प्रीणनम्। पूर्णम्। वर्षनम्। पूर्यते। पितृन्, पूर्यति त्राडे पूर्यन्ते पितरस्तञ्च, कवि १५१। पुपूरे, राज्ञः पुरी मूपतिभः पुपूरे, राज्ञवपाण्डवीय २, ३। निःस्वनेद्यौः पुपूरे, भ १४, ८८। वेणून् पुपूरिरे सुस्तार्तैः, भ ९४, २। पूरिता। भ पूरि। चपूरिष्ट, पा ३, १, ६१। चपूर दिवाताम्। चपूरिषतः। चु, पूर्यातः, पूरितः। पूरय मधुरिपुकामम्, गौतगीः ५,१४। कपौनां मङ्गाताः पूरयन्तो दिखः, म ७, ३०। पूरयन्ति मनोरधान्, दिवातः पूरित्वा, पूर्यात्वा। • पूर्यः। पूर्यः। चु, पूर्यः। पूरितः, पा ७, २, २०। पूर्तिः। पूर्यम्। पूर्वः। उद्दरं याजीनापि मपूर्यते, दितो।

पूर्व पुर्व (पर्व) भ्या, घ । पूरणस् । पूर्व (सूर्द) हु घ । निवासः । निसन्दर्भम्, वो । पूर्वीत, पूर्वेयति । भयं बुखे वान्तोऽपि ।

पूर्व स्वा, चु, प। राशीकरणम् । पूर्वित, पूर्वित। पूर्वित। प्रविद्यान पूर्वित। पूर्वित। पूर्वित। पूर्वित। पूर्वित प्रवित्वयं पूर्वित यस्य विक्रामः, क्रिवि

प्राच्या (पृ) खा, प। १पालनम्। । श्पूरणम्। ए, खा, प्। प्रातिः। प्रोणनम्। एङ्, तु, चा । व्यायामः। व्यापारः। प्रायेणायं व्याख्पूर्वः। सट् पिपांत्ते। पिपतः। पिपति। प्रणाति। व्यापियते। धर्मे व्यापियते नित्य पिप्रः त्ति पृथिवीच यः। पारयत्यधिनामा-गाम्, कवि ३७। लङ् म (पपः । ऋषि-ताम्। श्रीपप्रः। श्रप्रणात्। व्याप्रि-(त। चिट्र पंपार। पंप्रतः। पप्रे। नुट् पत्ती। लुट् परिष्यति। ०ते। लुङ् अपार्जीत्। अपार्छीम्। अपार्षुः। अ-प्त। अप्रवाताम्,। सन् पुपूर्वति । ०ते । बङ् पेप्रोयते। पर्पत्ते। पिच् पार-प्रति। अयोपरत्। प्र, चु, प। परि-र्रणम्। पारवति चूला। ॰ प्रत्य । स्तः। परचम्।

ष्ट्रच्<u>र</u> प्रची, षदा, षा। सम्पर्काः। संसर्गः। प्रचि, प्रज्, प्रजि, प्रखेने 🖡 पृत्ते। पृष्ठ्तो । पृष्ट्चे। ० चे। पृप्रजे। ॰ जो। पृत्, पृत्ती, क्, प। सम्पर्कः 🖈 संसर्गः। योगः। संस्रोपः। प्रवासाः। पृक्षतः। पृञ्जन्ति। हि पृङ्ग्धि। लङ् त्रप्रयक्त अप्रयम् ज्ञा भरम्, भ ६, ३८। जिट् पवर्षे । **पप्चतः । पर्चिता**ः पर्चिष्यति। अपर्चीत्। अपर्चिष्टाम्। पिपर्चिषति। परीष्टचते। पर्चर्यात। पृच् (युज्) चु, य। १ संयमनम्। बन्ध-नम्। रसम्पर्कः, वो । वर्षयति । पर्चन ति। (र्) प्रतः । प्रतस्तुषारेगिरिनिर्भः राणाम्, र २, १३। सम् सम्पर्कः। योगः । ा स्थल्दनी ा समप्रचीतासुभयोः (कर्मण लङ्), भ १७, १०६। वागर्थीन विव संस्पृती, ार १, ११। सम्पर्नी । सस्पृतो नाशियस्तैयः संप्रपत्ति । न पापिभिः । समार्चयनि न चुट्रैने समा-र्चित वज्रकै: ॥ विविद्दा सम्प्रक्ते सधुना चूँचे सिषक्।

मृड्—तुः प । १ सुखनः । २ मीणनम्, नो । मृड्ति । पर्डिता । पृथ्—तु, प । मीणनम् । मृणति । पृथ्—चु, प । प्रचेपः । पर्ययति । अपीप्रथत्, भ्रापपर्यत्, पा ७, ४, ७ ।

्रम् — पृषु, भ्वा, प। १सेकः। -३ हिंसा । ३ क्लेमः। । पर्षति । पपर्षः।, । पृष्ठः। । पृषितमित्वीणादिकम्।

पू-भ्वा, कारा, प। १पाजनम्। २पूरणम्। लट् पिपत्ति, पा ७,४, ७७। पिपूर्त्ते:। पिपुरति, पा ७,४,४०२। पि-पिभूने: पिपूर्वे:१ प्रणाति। प्रणीतः। प्रवन्ति। सिङ् पिपूर्यात्। प्रवीयात्। लङ् प्रिपि:। अपिपूर्त्ताम्। अपिपरः। श्रप्रणात्। श्रप्रणीताम् । श्रप्रणन्। लिट् घवार। पपरतुः। पप्रतुः, पा ७.४,१२। चुट् परीता, परिता। खट् परीखति, परिषति। प्राधिषि, पूर्थात्। सुङ् श्रपारीत्। श्रपारिष्टाम्। श्रपारिषु:। श्रपारीत् स इतश्रेषान् म्रवङ्गमान्, भ १५, १००। कार्मण, पूर्याते। सन् पुपूर्वति । विवरीवति, विवरिवति, यङ् पीपूर्वेते, पापत्ति । पृ, चु, पः। षूरणम्। पारयति। चयीपरत्। पूर्त्ती। ॰पूर्ये। पूर्तीः, पा ८, २, ५७। पूत्तिः।

घेष (पैण्) । चेत्—पेल्ट, स्वा, प। मतिकस्पयी;। पेव् पेह, भा। सेवा। पेवत । अयं वर्ग्यान्तोऽपि ।

ें पेष्—पेषृ, स्वा, भा। मयतः।

पेस-पेस (पिस्ट खा, पा गतिः।

्षे स्था, प्रशिवर्षम् ।

्यायति। पपी। पाता । पायात्। श्रवासीत्। चिच् पाय्यति, पा ७, ३,३७ ।

पैण्-पैण्, स्व , प । १ गतिः ।

२ प्रेरणम्। ३ श्लोषणम्। ४ प्रेषणम्, वो। पेणु प्रेणु खेणु इत्येकी। पेणित। संयामे यवसनां द्विवावितरणै: पेण-यत्विदौस्यम्, कवि १८।

म्याय् - ग्रोमायी, भा, गा। हिहः। -स्कोति:। जट् स्यायने। जिट् पिछी, पा ६, १, २८। विभिन्ने। बुट् प्याकि ता । खर् प्यायिष्यते । सुङ् बप्यायि। षप्राधिष्ट, पाः ३, १,६१ । आध्यास्त,

वो। अधायिषाताम्। अधायिषते। •समत्वयायि, भ ६, ३३। भावे, प्या-यंते। भ्रष्यायि। सन् पिष्यायिषते। यक् पेपोयते, पा ६, १, २८। चिन् प्याययति। श्रीपप्ययत्। प्यायिला। ०प्याया। पीनः, पा ६, १, २८। स्ताङ्गे, पोनं सुखम्। अन्यतः, प्रयानः पोतः स्वेदः। सोपसर्गस्य प्रंप्यानः, की ३५८। या - स्कोति:। प्रोति:। यापीनोऽस्य: त्रापोनसुधः, को ३५८। प्राप्यानस्कर्भ-कण्डांसं रामम्, भ ५, ५६। प्राप्या-यन्ते यतः प्राप्य यज्ञभागान् दिवी-कसः। प्रभूतधनसम्पत्तेराध्यायन्ते च यत्प्रजाः ॥ कवि १३५। णिच्, (प्रीण-नम्। श्राप्यायितोऽहं भवतामनेन वच-नास्तेन, हितो। सम् – हाँद्वः। मन्यु-रस्य समाविष्ये, भ १४, ३२। प्रध्याय-नीयः, पा ८, १, ३४।

प्रच्छ्

प्युष्-प्युषिर्, दि, प, वो। १दाइः। '२भागः। सान्तोऽपि। चु प, वो। उत्सर्गः।

😾 प्ये—प्येङ्, स्वा, ह्या। इडि:। प्यायते। प्रयो प्याता। श्रष्यास्त ।

प्रचर्तु, पाचीलाः। जिल्लासाः। प्रमः। अनुयोगः । प्रच्छति। अप्रच्छ-बाद्याणं स्रोतास्, भ ६, ८। ब्राह्मणं कुंगलं प्रच्छेत्, मनु २, १२७। निट् पप्रच्छ। पप्रच्छतु:। पप्रच्छिय, प्रमुष्ठ। लुट्पद्या ल्डट् प्रस्थित । प्राधिषि, प्रच्छात्। लुङ् अप्राचीत्। अप्राष्टाम्। अप्राह्माक क्योंकि, एक्यते i अप्रिक्टः। ए च्छाते पुनरसी वितिपालः, सहाना क, श्वार सन् पिप्रच्छिषति, पार्श, P, मा अ. २, ०५ । यङ् परीप्रकाती। । प्रष्टि। विच् प्रच्छयति। अध्यक्षकात्।

मोध्

प्रदा। • प्रच्छा। प्रष्टः। प्रच्छः। प्रच्छः। प्रच्छः। प्रष्टः। प्रच्छः। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यम्। प्रव्यानकाले स्थाप्रच्यम्। प्राप्रच्छते, की २४३। ज्ञाः च्रिच्छः स्व स्वद्यचनम्, रामा। सर्वा सातृरा-प्रच्छा प्रययुः, सारत।

भी

विख्याति:। प्रसिद्धः। प्रथते, प्रयते

पृथ्वद् यस्य पृथ्विच्यामुक्त्वलं यसः।

प्रथयन्ति प्रथीयांसी गुणाः, कवि १८८।

पप्रथे, तदाख्यवा तथ्ये भृवि पप्रथे, र
१५, १०१। प्रथिता। प्रथिखते। चप्रथिष्ट। चप्रथिवाताम्। णिच् प्रथयति,
घटादिः। चप्रथद गुणान् भ्वातुः, भ
१५, ७२। प्रथ्, च, प। विख्यातिः।

प्रचेपः, वो। प्राथयति। प्रथितम्।

प्रथनम्। प्रथा। पृथिवो।

प्रम् भ्वः, श्वा। १विस्तारः। १ प्रस्तः, वो। प्रसते। प्रसयति, घटादिः।

प्रा—बदा, पा पूरणम्।

प्राति। पप्री। प्राता। प्रेयात्, प्रायात्। भ्रप्रासीत्, भ्रप्रासीदिष्ठ् भ-स्रुंखम्, भ १५, ६८। कर्माण्, पप्रे दी-नेस मेदिनी, भ ४, ४२। णिच् प्राप-यति। त्रप्राणः। प्रातः। प्रायः।

प्री—प्रीञ्स्वा, ड, बो। तर्पणम्।
प्रीङ, दि, जा। १ प्रीति:। २ प्रीणनम्। ३ कांन्तिः, वो। प्रीञ् नगः, ड।
१ प्रीणनम्। २ प्रीतिः। ३ कामना।
इच्छा। सट् प्रयति। ०ते। प्रीयते, यः
प्रीयते प्रणियषु प्रस्ते न सत्यान्। कि

१, १७। प्रीयाति। प्रीयीते। लिङ् ग्रीगौयात्। प्रीगोतः। सङ्भप्रीगात्। श्रमीणीत। लिस् विपाय। विप्रिये। सुरान् पिप्राय पश्चतः, स५, १०४। पितृन् पिप्रियुः, भ ३, ३८। नदी पर्ध्यम् पिप्रिये, र १५, २०। सुट् प्रेता। लृट् प्रेष्यति। ०ते। लुङ् पप्रैषोत्। भग्रेष्ट । सन् विभीवति । ०ते । युङ् पेमीयते। पेप्रयौति। पेप्रेति। णिच् प्रीज्, प्रीणयति, पा ७, ३, ३०। प्राप-ग्रीगत्। प्रीङ् प्राययति। प्रीञ्, चु, प्रीयनम्। प्रीययति। केवित्तु, प्राययति । प्रयति । •ते । यं प्राययन्ति कविभूतिरसायनानि, कवि ९। प्रीता। प्रीतः। प्रयाम्। प्रीचितः। प्रोचनम् । प्रीणियत्वा। प्रिय:।

पु—पुङ् (चुङ्) भ्वा, या। गतिः।

प्रवते । पुप्रवे । प्रोता । श्रपोष्ट । मा न प्रोद्धं दुतं वियत् भ ८, ७७ । णिस् प्रावयति । श्रपुपवत्, श्रपिप्रवत् । प्रपा विययति, पिप्राविषयित, पा ७, ४, ८१। प्रावयन्ती वनेरभोकवनिका (व्याप्रवाना), भ ८, ५८ ।

प्रम्—(भ्रुष्) प्रेग् (पैग्)।

प्रेड्डोल-घदन्तः। चु, प। चापलम्।

प्रेष-प्रेषु (एषु) स्वा, आ। गतिः।

प्रोय्-प्रोयृ, स्वा, उ। १पर्याप्तः।

परिपूर्णता। २ सामर्थम्, दुर्गा। प्रोथति। ०ते। प्रप्रोथः। प्रप्रोथे। प्रप्रो-शासी न क्षयन, भ १४, ८४। प्रोथि-ता। प्रप्रोथीत्। प्रप्रीथष्टः। नापी-योदस्य क्षयन, भ १५, ४०। 7

क्षच्—(भच्) खा, छ। भचणम्। प्रव्—श्वा, चा, वो। गति:। प्रति:। प्रिच्—श्वा, चा। गृति:। प्रेडते। प्रोच दीप्ताविति प्रदीप:। प्रोचा, प्रोडानी।

म्रो-क्रा, पा गतिः। प्रिनातिः। मु-मुञ्, (चुङ्), स्वा, क्रा

१गीतः। लैम्फः। २ उत्तरणम्। ३सन्त-रणम्। प्रवर्ते। प्रस्तुनि मज्जन्यला-वृति ग्रावाणः प्रवन्ते, वीर १३। पुप्रु-वे, स्मा: पुष्नुवे, भ ४, ४८। पुष्नुवे सागरं नीक्या, भारत। म्रोता। म्रोध-ते। अप्लोष्ट। अप्लोषाताम्। अप्लोष्ट च निरक्षाः भ १५, ४६। सन् पुषु-वते। यङ् पोम्न्यते। पोप्नोति। णिच् प्रावयति । प्रषुप्रवत्, प्रिप्यवत् । प्रपा-वविकति, पिपाविषयित, पा ७, ४, ८१। (प्रावनम्) गङ्गा दिचियां दिश्रं यावयन्ती, भारत । अव-अधःपतनम् । चा-ववगाइनम्। सानम्। सम्भा जल पाप्रुत्य, मह ४, ७७। उंद्-उद्मम्पः। तदबमुत्युत्यः भचयासिः हिती। उप ंजत्योडनम्। पील-स्वीवद्भृता देवाः, र १०, ५। वरि-व्याप्तिः। चलनम्। वि-विश्ववः। बि-पत्ति:। ध्वंता प्रथे विद्वावयन्ति ये, मा २, ५६। सम् हिंद्रः। दुःखानि बंद्रान्ते, उत्तर १४२।

मुब्-पुष्-मुषु, पुषु, स्वा, प।
मुब्, दि, प। दाइ:। सम्मीकरणम्।
मुब्, मृष्, काा, प। । सोडनम्।
२पूरणम्। ३चेवनम्। १सेचनम्, वो।
१ मोचनमिति सहसम्नः। इदाइ:।
मोचनिति पोष्ति। मुख्यति। मुख्याः
ति। पुष्पति। पाषान् मुख्यातः वानकः

(दहतु, धातूनामनेकार्यत्वात्) म, २०,३४। मां भ्रुवाण वहु, भ २०, ३०। पुद्राव। पुप्रुवतुः। भ्रोविता। भ्रोविष्यति। पद्मोषोत्। दि, पद्भवत्। भ्रावित्। व्युव दाहे भ्रुव च इत्यत्व पाठः सिक्यंः, की १४३। (ड) भ्रोविता, भ्रुष्टा। भ्राव्य। भ्रा भ्रुष्टा, भ्रवितः। भ्रोवणम्। भ्रोवः।

म्रुम्—दि, पा १दाष्टः। २भागः, वो । प्रुस्यति। श्रम्भुसत्हः प्रम्नोसीत्, वो ।

> क्षेत्-क्षेत्र, स्वा, श्रा, वो । सेवा । पा-चदा, प । सन्त्रणम् ।

साता। पसी। साता। सास्यति । सायात्, सेयात्। असासीत्, मास-मप्सासीत्, भ १५,६। पिप्सन्सितः । पाप्सायते। पाप्साति। साप्यति ॥ अपिप्सपत्। सातः। सानम् । प्रिप्प्-साति।

(**'tr**)"

पक्क्—भ्वा, प । १ सन्दग्रितिः। २ प्रसद्द्रवद्वारः । प्रकृति । घपका । प्रण्—भ्वा, प । १ स्तिः। २ निःसेष्टः।

चनायामोत्पत्तः, दुर्गा। फ्रावितः प्रकाराः फेयतः, प्रकाराः, प्रवादः, प्रकाराः, प्रवादः, प्रकाराः, प्रवादः, प्रकाराः प्रकाराः। फिर्माण्यतः। फिर्माण्यतः। प्रकारितः। प्रकारितः। प्रकारितः। प्रकारितः। निःसेहे, प्रावयतः। पर्वेषं यटादिः। निःसेहे, प्रावयतः। पर्वेषं यटादिः। निःसेहे, प्रावयतः। पर्वेषं टादितं नेच्छन्तोतिः केचित्, को देशः तः, फार्यः, पा ७, २, १८, प्रकाराः का खाराः। स्वादः। स्वादः।

वैदिया बचात्। अवदीत्, अवादीत्।

बदरो । वध्—स्वा, श्रा। १ वन्धनम्।

३ चित्रविकारै:। ३ निन्दा, वो। (चिप्विकारे सन्) बीभसते, वा ३, १, ६। शिमताते परस्तीभ्यः, कवि ५४। बाभक्सिता। श्रवी-बीभवाइको। भित्सष्ट। बीभित्सतः। बीभत्सा। ब्रन्थ-नादी, बधते। सा विधिष्ठा जठार्यु माम् (मा वधीः), म ६, ४१। वध्, चु, प । बन्धनम् । बघः । बाधवति । बधिति । बाधयन्ति न दुःखात्तीः वैद्यान् यद्दियोगितः, क्वि ५४।

बस्य - का, प्। वस्तनम्।

सट् बद्धाति। बद्भीतः। बद्धन्ति। यो बम्नाति रिपुंरणी, कावि ५81 फलं बम्नन्ति नीतय (जनयन्ति), र १२% ६८। सर्ति वधान सुगीवे, म २०, २२। जिङ्बभीयात्। जङ्भवमात्। प्रविद्योताम्। अवधन्। तमवधाद् ब्रह्म-पाग्रेत, भ'ट, ७५ । बिट् वबन्ध । बब-स्वतुः । बबन्धिय । बबन्ध । प्रभिकार्षे मनो ववस्य, र. ३, ४। असं वबस्य क्रितिम् (क्रितवान्), भर, ८। जुट् बस्या। इट् भन्त्स्यति। प्राधिषि, वस्रात्। लुङ् ग्रभान्त् भीत्। प्रवा-साम्। प्रामान्त्यः। कर्मणि, वध्यते। प्रवस्थि। हणेगुंजलमापने वध्यन्ते मत्तः दन्तिनः, डितो। सन् विभन्तसति। यङ्बाबध्यते। वाबन्धि। वन्ध् (दध्) चुं, पा बस्वनम्। बस्ययति। अवव स्यत्। बहुा। विषया बहुः। बहिः। वस्वनम्। बन्धः। बन्धम् वन्धाः। बन्धः व्यम्। प्रतु प्रनुवस्य । सम्बन्धः। कृषेरित्यागः । अनुवस्तम्। भक्केऽपि /हेणावानामनुबद्गान्ति । तनावः । हिती।

ज फल्-जियला, खा, प। भेदः। फंल्, स्वा, प। १ निष्यत्तिः। परि-गामः। क्तिषादनम्। इगमनम्, वीन लट् फलिति, इट्यें में फलिति सहस्रधा द्रोमा। बाल्मीकिः फनति स्म दिया गिरः, अनर्घ ४। मणीनां रवि-करमंविता: पालन्ति मास: (वर्ड-न्ते भा ५, ३८। तिट् पपाल । फी लतुः, पा ३, ४, १२२ । कल्पद्रमा योगः बलेन फेलु:, भ ३, ४२ । लुट् फलिता। स्टट् पालियति। लुङ् श्रपालीत्। चक्का विष्टाम्। चक्का विष्ठः। सन् पिक-लियति। पम्फुल्यते। पम्फुल्ति पा ७, ४, ८७, ८८। णिच् फालयति। श्रपीफलत्। फलिला फलितः। जिपला, पत्तः। पुत्तवान् पाट,र, प्रेर्। प्रकुल्ता प्रकुल इति फुल्लधाती-रच्। संपुत्त खतपुत्त इति पद्मनाभः। फंजामस्य फंजितमस्य। पेपुल्तः पेफ-नित इति प्रदीप: । प्रति - प्रतिविश्व-नम्। सुखं प्रतिपालत्, नै ४,१३। च्योतिष रीप्यभित्तिषु प्रतिपत्निति (समा च्छेति), मा ४, ६४ । • क्युक्त + स्वाह च विकासः ।

फुलति। युफुल । जिक्कुलीत्। प्रफुलम्। प्रकृतितः । े ु विद्यागान्य

प्रेन्-पोस्ट (पेस्ट) भ्वा, प। गतिः।

्र (ब्र.) वट (बट) बंग् (बग) बन्। वर्—भ्वा, प। १ खोल्यम्। २ सामर्थम्, वी। बठति। 🧭 बेठतुः।

ंबर्-"बन्द्" स्वा, प। खें थ्यम्। बदति, बन्दति। बनाद। बेदतुः। भवतो सानसं विषं स्रोहसन्वभातिः चाडो। शा-वस्त्रनम्। करणम्। नि - निवस्थः। ग्रत्यनम्। रचना। निरोधः। निर्-निर्वस्थः। शार्यकः। प्र-प्रवस्थः। प्रति-प्रविवस्थः। प्रतिब्रभातिः कि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः, र्रू, . ८०। सम्-सम्बन्धः।

• बस्त् (वस्त्) बर्ष (वर्ष्)। बस्त्व (कस्त्र्) स्ता, पा हिंसागत्योः। बस्त्रे (कार्ष्) स्ता, पा गतिः।

वर्ष् (वस्क्) भ्वा, या। १ स्वयनम् १ २ हिंसा। ३ शाच्छादनम्। ४ प्राधान्यम्। ५ दानम्, वो। वर्षते। बस्कि। बर्ष्ट् बस्क् (सुप) चु, प। दीप्तिः। बर्ष्ट्यति। बस्च्यति। बर्ष्ट् (स्रूप) चु, प। हिंसा। बर्ष्ट्यति। दन्यादयोऽप्येते। निवर्ष्ट्यति बुद्यारीन् तपसायो निवर्ष्ट्ति, स्विर्भ्रः। निवर्ष्ट्वितां इसा, मा १। बर्ष्ट्याः। वर्षम्।

बल्-भ्वा, प। (जीवनम्।

२धान्यावरोधनम्। ३सम्हिपंतिकस्यः। बल् (भल्) भ्वा, द्या। १ निरूपणम्। २ इंदा। ३दानम्। बल्ति। ०ते। बबाल। वेले। बल्तिता। बल्, चु, प। लोवनम्। बल्यिति, घटादिः। प्रदी-बल्ति। चु, द्या, वो। निरूपणम्। बाल्यते। बालः। बल्म्।

वष् (वष्) वस् (वस्)। । गाँग

विस् विहा भाषा। हिमानिक वंहते। बवंही। दन्यादिय।

बाड्—वाडु, खा, श्रा। डबाजनम्। सानम्। बाडते। दन्यादिय। प्राह्

बाध्-बाष्ट्री सा, या। सोडनम्। 1573 प्रतिकातः। पोडनम्। प्रतिबन्धः

वाधते ॥ दन्खादिस । । सां वाधते नहि तथा विधिनेष् वासः, संदाना ३, ३७। बाधते, •बीराणां समयः स्नेहक्रमं उत्तर १८३। बबाधे। जन न प्रस्ते व्यक्ति ववाचे, र २, १४। स -१४, 841 वाधिता। भवाधिष्ट। भवाधि^र बिबाधिषते। बाबाध्यते। षाताम्। वाबादि। वाधयति । अववाधत्। वा-धिता। बाधितः। बाधनम्। बाधा। षावाधन्ते सनसिज-चा-दमनम्। मपि जुमार्थः, शकु ३, १३८। परिपोड्नम्। प्रवाधमानस्य जगन्ति, स १२, २।

बाइ (वाइ) बिट (विट्) बिड (विड)। बिन्द्-बिटि, भ्वा, प। अवयवः। बिन्दति। बिन्दः।

बिल्-तु, चु, प। सेदेः। विलिति। वैकिता। वेलयित। विश्-वेश, विश्-वेम (पिस्) स्वा, प। गतिः। वेशति। वेसतीलै वे। विश्-टि, प। प्रेरणम्। प्रविसत्।

ाबीम् प्या, धां। श्राचा बीभते। हुः , इंग्लिक्ट्र होइस्ट इक्ट्र (इं

बुक् सा, प। भाषणम्। स्वादिरवः। चु, प। भाषणम्। दुक् ति। बुक्स्यति। बुक्कः। बुक्तितः। प्रकृति।

ह **बुक्र् (हुक्र्)** ।

बुट्-चुं, पं, वो । चिसा । प्राहित नविश्व चुंखमाबीटयन्ति । विश्व चुं

बुड्ति। बुबोड़। बुड़िता। अबुड़ीता।

्रोत्र बुध्—भ्वक्षय । १ अवस्यः ।

वुध्

श्विज्ञापनम्, वी । बोधित । बुबोधी बोधिता। बोडा, बो। बुधिर, भ्या, छ। ज्ञानम्। दोधः। बीधित्। ०ते। बीधते ब्रह्मविद्यां यः चत्रविद्याञ्च बोधति, कवि प्र। बीधिता। (इर्) श्रंबुधत्। भवीधीत्। भवीधिष्ट। बुध्, दि, भा। बीध:। ज्ञानम्। चैतनम्। जागरणम्। लट् बुध्यते। पटुलं सत्यवादिलं कथा-योगेन बुध्यते। ब्रह्मात्मानच बुध्यते, कवि ५३। निट बुबुधे। बुबुधिये। पपि सङ्घितमध्यनि वृद्धि न बुधोपमः, र १, ८८ । लुट् बोडा। लुट् भोस्यति। नाभी-क्यात भवानजम्, भ २१, १६। आणिष, भुत्सीष्ट, पा १, २, ११० सीता मुक्तीध्वम, भ ७, १००। लुङ् अबीचि। अबुद्ध, पा ३, १, ६१। अभुक्ताताम्। अभुक्तत। चमुद्रम्। चबोधि दुःखं वैबोक्सम्, भ ६, ३२। चभूकीत् धनैरवीधि सः, भ १५, ५७। कर्मीण, बुध्यते। प्रवी-धि। सन् बुभुताते। य**ड**् बोब्धते। बोबोडि। जिच् बोधयति। भवूतुभव्, चवृत्वत् वासासाम्, भ १५,५। (विका सः) सविता बोधयति पङ्गजान्येव, शकु प्, १५६। बोद्या। वृद्धः। वृद्धः। बोधः नम्। बोधः । बोडा । बोडव्यम् । व्यक्तः । किए भुत्। श्रेतु सार्यम् । भार्यो सम्यगनुबोधितोऽस्मि, यकु १, १५ धव—धवबोधः। श्वानस्। **छद्—** उद्-बोधः। विकासः। जागरणम्। सार-णम्। नि—ज्ञाणम्। अवणम्। निबी-घ यज्ञाङ्गभुजरमीप्सितम्, १, १४। निबोध वचनं सम, भारत । प्र-जाग रणम्। विकासः। ज्ञानम्। तं वेता-लिकाः प्राबोधयम् प्रसि वान्धिः, र ४,

६५ । प्रवीधितः सामनहारिषा इतः, र ३, ६८। प्रवीधयत्यूईमुखैर्मयूखैः, कु १,१६। प्रति, वि—जागरणम्। सप्ता मयेव भवती प्रतिबीधनीया, रका ३,४७। सम्—ज्ञानम्।

• बुन्द्—(बुद्, बुन्व्, चुन्द्)

उबुन्दिर्, स्वा, छ। निमासनम्। श्र-वणम्। प्रणिधानम्। बुन्दित। •ते। बुबुन्द। •न्दे। इति बुबुन्द सः, स्व १४, ७२। बुन्दिता। श्रबुद्द । श्रबु-न्देश्त्। बोदित। •ते। बुन्धित। •ते। बोधित। •ते, वो। चुन्दित। •ते। बुन्ध्, खु, य, बों। बन्धनस्। बुन्ध्यति।

बुस् दि, प। त्यागः। अवसत्।

बुस-चु, च, वी । सानम् ।

ा क **मुख्या्मा(पुस्या्) सुरुष ।** चादराकादरकीशी क्रम्मान क्रमा

बह (वृष्ट्) बृंष्ट् (वृंष्ट्)।

. जुन्का, पा श्वरणम्।

प्राधिनम्। २भरणम्। वृत्र क्राः, ज । वर्षम्। प्राधिनम्। वृषाति। वृषीते, पाः ७,३,८०। ववार। ववरे। विस्ताः, वरोता। वृर्ध्यात्। वरिषीष्टः, वृषीष्टः। षवारीत्। धवारिष्टाम्। धवरिष्ठः, षवृष्टे। कर्मणि, वृर्ध्यते। प्रवारि। सन् विवरिषति। ०ते। विवरीषति। ०ते। ववृष्टि। ०ते। यङ् वोवृर्ध्यते। वावर्ति। जिन् वार् प्रति। प्रवीवरत्। ता वृष्टे। वृष्यः। रह् (वेह) व्युष् (व्युष्) व्युम् (व्युम्)।

वर्ष-भ्या, प, चो। मध्दः। वर्षति। ब्रू—ब्रञ्, घदा, ख। कथनम्। सट् ब्रवीति, श्राप्त । ब्रुत:, श्राप्ततु:1 बुवन्ति, चाहु:। ब्रवीषि, चात्य। ब्रूयः, बाइयु:, पाट, २, ३५। ब्रया ब्रुति। ब्रुवते। लिङ् ब्रुयात्। ब्रवीत। चङ् पत्रवीत्। पत्रतः। सिडादी वचादेगः, पा २, ४, ५३। वच्धातुवत् रूपम्। खवाच। जचे। अबोचत्। •ता इत्यादि।

that the same भन् (भन्) स्वा, छ। भन् चि, प्रा भवणम्। भचति। ०ते। वभच। **ंचे। भविता। भविषाता**ा ०ते। षभचीत्। षभचिष्ट। भन्नवति। कथमेतनांसं सुललितं भच्चगामि, हितो। भर्त्वयन्यस्य भन्तन्ते मांसं भचन्ति ग्रीणितम्, कवि १०२। भच-यामासः। भचयिता। भचयिष्यति। प्रवस्तत्। भचियता। ०भच्या भ-चितः। भृचणम्। भर्चाषतव्यम्।

- अज्- खा, उ। भिता:। सेवा। श्रनुरागः। शाययः। प्राप्तिः। वि-भागा। बट्भजति। ∘ते। इस्थिज। श्रभितप्तमयोऽपि मादेवं भजते, र ८, ४४। भ्वातरं समंभनेरन् पेटनं रिक्-यम्, मनु ८, १०४। लिट् वसाम। भेजतु:। भेजिय, बभक्ष। भेजिव। भेजे। वनानि भेजतू राववी, भ ६, ७२। मिजु: ककुमो दंग, भ ६, १२३। पुनरेव दोलीं भेजे, र २, २३। जुट् भक्ता । । खट्भाद्यति । •ते ॥ प्राधिष् भज्यात्। अधीष्ट। जुङ् अभाचीत्। वभाताम्। वभातः। वभना। भूभ-

चाताम् । प्रभन्तः । वर्षेषि, भन्यते । त्रभानि। सन् विभव्यति। ०ते। येङ् बाभज्यते। बाभिता। विच् भाजयति। भवीभजत्। दिशोऽरीमभाजवत् स १७, ८०। भज्, चु, प। दानम्। भाज-यति। भन्ना। ० सच्य। भन्नः। भन्निः। संजनम्। भागः। भागी। साजकः। भजनीयम्। भज्ञत्यम् । वि विभागः। श्रहोराक्षे विभन्ते च्याः, मनु १, ६५१ विभवन दार्थ पित्राम्, मनु -win ton les légels e l'appli

अञ्च अनुको कः पा श्रामदेनम्।

भङ्गः। सट् भनिता भङ्कः। भञ्च लि । अन्ति । जामिनीमाच एखा मानसन्द्रवत्, कवि १३३। अनत्रध्य-वर्ण विषि:, स ८, २। सनज्ञि सर्वः मध्यादाः, भ ६, ३८। हि सङ्ग्रि। लिङ् भन्नगात्। लङ् सभनक्। स कन्याशक्कं धनुरमनक्, स ५, ३६। बर्भ्स ख्रय, लिट्बभका। बभकातः। बभक्षा बभच्चर्वस्यानि, भ ३, २२। जुट् भङ्जा। जुट् भङ्गाता चा-शिषि, भन्धात्। लुङ् श्रमाङ्गीत्। त्रभाङ्काम् । अभाङ्गुः। परिवर्ममा-जीत, स १४, १२१। अस्य मा भाई प्रतिचास, भारत। कर्मान, भज्यते। प्रभाजि। श्रमिल्लिं, पा ६, ४,३३। धनुरभानि त्वया, र ११, ७६१ सन् विभङ्गति। यङ् वभाज्यते। वसाङ्ति। चिच् भञ्जयति। अवभञ्जत्। भन्नि, चु, पा दीप्ता । अर्घवति । दीर्था यो विषतां । दर्ध अंज्ययाञ्चनेयवत्, वावि १३३। भिङ्जा, भक्ता, पार्द, 8, इर्रा । ०भन्य । भग्नः । भन्नम्। भक्ता - भक्तम्।

भट्नशा, या सति:। भरणम्। भटति। बभाटा क्यटतुः। भटिता। भाटयति। भटयति। परिभाषणे घटादिः।

्रभण्—(घण्) खा, प। घब्दः।
क्यनम्। भणिति। बभाण। बभाणितः। इशेणा च हृष्टा च बभाण भैसौ,
नै है, ६७। भणिता। घभणोत्, सभाणीत्। सभाणीद् युज्ञम्, भ १५, १५।
कर्मणि, भण्यते। सभाणि। बिभ-णिषति। बभाण्यते। बभाणि। भणिवित। सभाणि। भणिवित। सभाणि। भणिवित। भणिवित। भणिवित। भणिवित। भणिवित। भणिवित। भणिवित। भणिवित। भणिवित। भणिवित।

भण्ड् — सङ्, भा, आ। १ परिशासः।
्रसनिन्दोपालभानम्। निन्दायुत्तभव्यंनम्। भड़ि, चु, प। १ तत्वाणम्।
२ प्रतार्णम्, वो। भण्डते। भण्डयति।
भण्डति। भण्डः। भाण्डम्।

भन्दू-भदि, स्वं, चा १क ख्याणम्। श्चाष्टम्। श्रीणनम्, वो। भदि, चु, प, वो। क ख्याणम्। अन्दते। अन्दयति। अन्दति।

सस्य (तर्ज्) चु, मा। सस्य नम्। सस्य वि। वित, वी। न सस्य वि कसेस्य न् न च सर्स्य वि परान्, कवि २४८।

भर्° भव् स्वा, प। हिंसा।
भन् भेंत् स्वा, पा। १कष्यनम्।
२ हिंसा। ३ दानम्। ४ निरूपणम्,
वो। भन्, चु भा। पाभण्डनम्। निरूपणम्। भन्नते।
वभन्ने। भन्नते। वभन्ने। भन्नते।
वभन्ने। भान्नवते। भान्नकः। भन्नतः।
अष् स्वा, प। १भण्णम्। खरवः।

म्बादिरवः, दुर्ग। २ खलीतिः, वी । २ भर्कति प्राचः। भवति म्बा। भष्यत्यत्यदोषं खन्ः। भषति म्बा पान्यम्, दुर्गा।

भा—प्रदा, प। दीप्तिः । ग्रीसा । भाति। अभात्। अभान्। असुः। बभी। बभतुः। बभिय, बभाय। बभिवा भाता। भार्यति। भायात्। श्रभान सीत्। श्रभासिष्टाम्। श्रभासिषुः। विभासति। बाभायते। बाभेति। भाषयति। धबौभपत्। भातः। भाति:। भानम्। व्यति—व्यतिभाव:। परसारशोभाः। जोकयुगं दृशीं रमणी-गुणा अपि व्यतिभावे, नै २, ३२। प्रा-प्राभा। ताः स्त्रियो दच्युता दवावभुः, र २, २२। प्र-प्रमा। ताः प्रभातम्। प्रभाता धर्वेरी, रामा। प्रति प्रतिभा। प्रतिभानम्। धर्मेः क्लिक्गेसार: प्रतिभाति, कु. ५, ३५। विचार्सूदः प्रतिभाषि मे लम्, र S 801

भाज-चदन्तः। न्, प्। प्रथकर्णम्। भाम् भ्वाः, द्याः। क्रोधः। भामः चदन्तः। चु, प। क्रोधः। भामते। बाभास्यते बन्धास्यते दति न्यासकारः।

्र भाष्—भ्वा, या। क्रंयनम्।

भाषते। बभाषे। तं वाक्यसिदं बभावे के। भाषिता। भाषित्यते। भाषित्रीष्ट्रं। प्रभाषित्रं प्रभाषित्रं प्रभाषित्रं प्रभाषित्रं प्रभाषित्रं प्रभाषित्रं प्रभाषित्रं प्रभाषित्रं वित्रं स्थापित्रं ती, भ २, २७१ विभाषिषते। बन्नाष्ट्रते। बन्नाष्ट्रते। बन्नाष्ट्रते। भाष्यति। प्रवीभषत्। प्रवास्त्रं स्तास्त्रं प्रवास्त्रं प्रवास्त्रं प्रवास्त्रं प्रवास्त्रं प्रवास्त्रं स्तास्त्रं प्रवास्त्रं प्रवास्ते प्रवास्त्रं प्रवास्त्रं प

• सार्थ। भाषित:। भाषणम्। भाषा। भाष्यम्। अप-निन्दा। यो महतोऽप-भाषते, क्राप्, ४२। • श्रीम—सम्भाष-चाम । नोदकायाभिभाषेत, मन् ४, ५०। या-याभाषणम्। यालापः। कथनम्। परि-परिभाषाः। सङ्केतः। परिभाषणम्। यः सनिन्द डपालभ-स्ततं स्वात् परिभाषणमित्यमरः। प्रति-प्रत्युत्तिः। वि-विभाषा। विकल्यः। सम् - समावयम् । तान् हञ्चा न समावसे, भ्रमराष्ट्रजम इ।

भाम-भास, खा, या। दौरि:। भासते। बभासे, बभासे रणे प्ररै:, भ १४, ८३। भासिता। अभासिष्ट। भास-यति। अबीमसत्, अबमासत्, पा ७, ४, ३१ प्रवसासन् स्वकाः ग्राह्मीः, स १५, ४२। साः। भाषः। भास्यः। भासरः।

्रिच्-भ्या, था। १भिचा।

ा यायजा। २ लाभः। ३ लोभोतिः। इ क्लेग:, दुर्गा। भिचते। गुरो: कुले न भिचेत, मनु २, १८४। भिचमाणा वनं प्रियाम, म ६, ८। भिचित:। भिना। भिन्ः।

भिद्—भिदिर्, त, छ। भेद:।

विदारणम्। भङ्गः। विच्छेदः। त्यागः। चट भिनत्ति। भिन्तः। भिन्दन्ति। भिन्ते। भिन्दाते। भिन्दते। भिनद्वि कुलपर्वतान्, स ६, ३५। सुभग त्वत्-क्षणारकी भिनत्यङ्गानि साङ्गना, दर्पणः। दूत एव डि संस्थते भिनस्वेव च संहतान्, मनु ७ ६६। हि भिन्धि। बिङ्भिन्द्यात्। भन्दोतः। बङ्ग्रिभिन नत्। श्राभन्ताम्। श्राभन्दन्। श्राभ-श्रीमनत्। श्रीमन्त्। समयमभि-

नत्, र ४५, ८४। खिट् विमेद। विमे-द्विष । विभिद्धि । विभिद्धे, न कार-णात् स्वाद् बिभिदे कुमारः, र ५, ३०। लुट्भेता। ल्टर्भेत्स्यति। ०तीः मेत्स्यत्वजः क्रमामयोम्खिन, र ५, ५५ । 🛹 मामिषि, भिद्यात्। भित्सीष्ट। (इर्) श्रभिदत्, श्रमैलोत्। श्रभिदताम्, यभैताम्। यभिदन्, यसैत्ः। यभिः त्त। प्रभित्साताम्। प्रभित्सतः। प्रभेत्-सोत्तं घरै:, भ १५, १९७। कर्मणि, भियते। श्रमेदि। भिखते हृदयग्रन्थः भागवतम्। ग्रुष्वाजाष्ठच सूर्वंश भिदाते न तु नम्यते। सन् विभिन्सति। ॰ते। यङ् बेभिदाते। बेभेत्ति। णिच भेदयति। भनीभिदत्। कुंगलैर्विप्रै: कुन्तीपुतान् भेदयामः, कुन्तोपुतान् भेदयामः, भारता भिन्ताः ०भिद्याः भिन्नः। भिन्तिः। भेदनम्। भेदः। भिदा। भेत्रम्। भेता। भिदुर:। भेदाः। भिद्यो नदः। भेत्तव्यः। उद्-जड्वं भेदः। प्रकाश: 1 उद्भिन्या रत्नग्लानया, कु १, २४1 यावन्नोज्ञियते स्तनी, स्मृति:। निर्-भेद:। प्रकाश:। श्रायंषि लच्चु निर्धि-द्य, भ ८, ६०। रहस्यं निर्भित्रम्। प-प्रभेदः। प्रति-भर्त्तनम्। निरा करणम्। प्रत्यसेत्सुरवदन्य एव तस्यु-विन्दुभिः, र १८, २२। प्रतिसिख कान्तम्, मा ८, ५८। सम्-सिय-णम्। संस्थेष:। कदञ्चमच्यित्रः प्वनः, म ७, ५।

भिन्द-भिद्ध (बिदि) स्वा, प। श्रवयवः ।

भिल्-(बिल्) चु, प। भेदनम्। ्भी जिसी, हा, प। भवम्। लट् विभेति। विभीतः। विभिनः, भुन्

भू

पा ६, ४, ११५। विभ्यति। न विभेति नरेन्द्रेभ्य:, कवि १२१। सिङ् विभी यात्, विभियात्। लङ् श्रविभेत्। श्रविभीताम्, श्रविभिताम्। श्रविभयुः। विभेतु स्त्रीभ्योऽपि, कु ३, ८। देवाद बिमोडि, भ २०, २७। लिट् विभाय। विभयाञ्चलार, पा २, १, २८। आम-भावपचे विभ्यतु:ो विभयिष, विभेष। न विभाय न जिज्ञाय, भ ५, १२। प्रविभयाञ्चकार की कुत्स्थात्, भ ६, २। लुट्भेता। लुट्भेषति। लुङ् श्रमेषीत्। श्रमेष्टाम्। श्रमेषु:। भैन्नी:। सा भैः, इति पद्मनासः। सा स्म भैषी:, भ ५, ५८। सन् विभोषति। यङ् वेभीयते। वेभयौति, वेभेति। णिच् भाययति। भरैभी समभाययत्, भ ५, ५१। प्रयोजकाद भये तु, भाप-यते, भोषयते, पा ७, ३, ४०। १, ३, ६८। शत्न भीषधमाणः, भ ५, ५८। भोला। भीतः। भौति:। भयम्। भेत-व्यम्। भीतः। भीलुकः। भीमः। भीषाः। भीषणः। भयानकः। भी, क्रा, प, वो। १ भयम्। २ भरणम्। भीनाति, भिनाति। भी, चु, पा भयम्। भाययति, भयति। दृभी इत्यत्र हमोति धातुदयमिति रमा-नाथ:।

े सुज्—भुजो, तु, प। वक्रीकरणम्।

भुज्, रु, प (चा, चवालने, पा १, ३, ६६)।१ पालनम्। रचणम्। २ श्रभ्य-वहार:। भाजनम्। उपभोग:। अनु-भवः। चट् भुजीति। भुनिता। भुङ्कः। या भुङ्क्ते भुवनं धर्मे यस्य धीर्न भुज-

राजा। हडो जनी दु:खयताति भुडती, दुर्गा। इदां स निवलं भुङ्तो यः पच-त्यात्मकारणात्, मनु ३, ११८। रामां भुनिता बुभुजे न च भोच्यतीयः, महा-ना २, ४८। लीट् भुनतु । भुङ् विधा भुनजानि। भुङ्च। लिङ् भुन्नगत्। भुन्नीत। लङ् अभुनक्। अभुङ्काम्। ग्रभुञ्जन्। ग्रभुनजम्। ग्रभुङ्काः ग्रभुः ज्ञाताम्। त्रभुज्ञत। राज्यसभुनक्, र १२, १८। लिट् बुभी ज। बुभी जिय। बुभुजे। बुभुजे मेदिनी बधूमिय, र ८, ७। लुट्भोक्ता। ऌट्भोर्च्चातो ०ते। त्रागिषि, भुन्यात्। भुन्तीष्ट । बुङ् श्रभीचीत्। श्रभीताम्। श्रभीचः। श्रभुतः। त्रभुचाताम्। प्रभुचत। वर्माण, भुज्यते। श्रभोजि। सन् बुभुचति। ०ते। यङ्बोभुज्यते। बोभोत्ति। विच् भोजयति। • ते, पा १, ३, ८७। अबू-भुजत्। ०त। भुद्धा। ०भुज्य। (घा) भुग्नः, पा ८, २, ४५। भुतः। भुतिः। भाजनम्। भोगः। भाजुम्। भोता। भोग्या पृथिवो । भाज्यसन्तम् । भा-त्राभोगः। परिपूर्णता । उप-उप-भागः। पय उपभुज्यते, र १, ६८। परि, सम्-सभागः।

भुगड्—भुड़ि, भ्वा, श्रा। तोड़नम्। दारणम्। भेदः। भुग्डते। बुभुग्डे। भुग्डा दति प्रदीपकारः।

भू-भ्वा, प। १ सत्ता। विद्यसानता। २ डत्यतिः। सम्पन्नता। भावः। भू प्राप्ति:। (प्राप्तिसम्पन-भ्वा, ड, वो। जन्मिख्ति भद्दमतः) बिट् भवति। भुचन्ति। भुङ्क्ते। भुचाते। भुच्चते। ०ते। भवते दुरितचं यथोक्तैः ऋतुमि-भीवयते व नाकलोकम्। भवति त्यनम्, कांव २५८। भुनिक्त प्रथिवीं ∕ि तिदशैस पूजिती यस्तृणवद् भावयति द्विषय सर्वान्॥ मावि ५०। यागात् संगी भवति, की २२। स्रोट् भवतु। ०ताम्। लिङ् भृतेत्। भवेत। जङ् श्रमवत्। ०त। गर्भोऽभवद् भूधर-राजपत्नग्राः, कु १,१८। लिट् बसूव। बभूवतु:। बभूविद्य। बभूविव। बभूवे, पा €, ४, ८८। ७, ४, ७२। लुट् भविता। ऌट्भविष्यति। ०ते। यति यसिन् चेप्सिसि सन भविष्ति, भारत। पाणिषि, भूगात्। भविषौष्ट। लुङ अमृत्। अभूताम्, पा २, ४, ७०] ७, ३, ८८। घभूवन्। घसूवम्। अभू-बृषः, स १, १। विवयीतो भरतोऽभूतः, भ १, १४। ब्राह्मणानां चरणचानने क्षणोऽभूत, भारत। भावकमणोः, भूवते। बभूवे। भाविता, अविता। भाविष्यते, भविष्यते। भाविषीष्ट, भवि-षौष्ट। श्रमावि। श्रमाविषाताम्। सन् बुभूषति। ०ते, पा १, २, ८। यङ् बोभू-यते, पा ३,१,२२। बीभवीति, बीभीति। णिचु भावयति। अबीभवत्, पा ७, ४, ८०। विभावयिषति। भू, चु, प। १ चिन्ता। २ सिञ्जणम्। ३ ग्राडिः। भावयति। भू, चु, चा। प्राप्तिः। भावः यते। मवते। भवतीत्वेके। भूत्वा ७ ०भूय। सूत:। भूति:। भवनम्। भवः। भाव:। भवितुम्। भविता। श्राद्यमा-विष्णुः। भृष्णुः। प्रभावकः। पाद्यकाः वुकः। परिभवी। स्यव्यम्। ब्रह्मभूयम्। भवनौधम्। भवितव्यम्। भूः। ष्रिधमूः। प्रतिभूः। स्वयन्भूः। विभुः। प्रभुः। प्रभु:। भुवनम्। श्रन्तर्—श्रन्तर्भाव: । कमीयोगे सर्वाखेलभ वन्ति, मनुः १२, ८७। श्राविस्-शाविभावः। तिरम्-तिरोभावः। • त्रैणीम्—तुणीकावः। न्युक् न्यग्भावः। पुनर् पुनर्भावः। 🎙 भूषणम्। भूषति। भूषयति। भूष

पादुर्-पादुर्भावः। ग्रिधि-ऐश्वर्थम्। भूनु भनुभाव:। न वं तेनान्वभाविष्टा नान्वभावि लयाऽप्यसौ। चनुभूतो मया चासी तेन चान्वभविषहम्, भ प्, इध्। श्रामि—श्रमिभवः। वयः 🖻 न्युनीकरणम्। प्रव्लमिनीभभूयते, मनुः ७, १७८। श्रामिभवति सर्वेभूतानि तेजसा (श्रतिश्रेते), सनु ७, ५ । क्षुन्यमध्मीऽभिभविष्यति (प्राप्नीति), गी १, ४०। अध्यभूतिलयं भातु, भ ६,११७। उद्-उद्भवः। णिच्-कल्पना । मायां मयोङ्गाव्य परीचितोऽसि, र २, ६२। परा—परामवः। न्यूनी-भाव:। न्यूनीकरणम्। परि-अना-दर:। सामां महात्मन् परिभूः, सर् २२। प्र- उत्पत्तिः। ऐखय्यम्। दिम-वती गङ्गा प्रभवति, पा १, ४, ३१ 🕏 प्रभवाणि, पा ७, ४, १६। प्रभवतिः निष्ठ दोषो भूरिभावे गुणानाम्, ज्यो-'तिषम्। प्रति—प्रतिक्पत्वम्। प्रति-भूत्वम्। वि—ऐष्वर्थ्यम्। णिच् चिन्ता। सम्—सम्भवः । घटनम्। उत्-पत्ति:। मिलनम्। भाग्येनैतत् समा-वति, हितो। सम्यूयाकोधिमध्येति महानद्यां नगापगां, सा २, १०० 🛚 णिच् समावनम्। श्रीमनन्दनम्। यव-बोध:। चिन्ता। सानः। सत्कार: । समाधासनम्। बन्धं न सन्धादितः एव केशपाश: (चिन्तित:), र ६, ७। धारां शितां रामपरम्बधस्यः समावय-लुत्पलपत्रसाराम् (मन्यते), र ६, ४२। सम्भावय चिर्प्रसृद्धी ताती, वीर ६२। विश्वेन जायां सम्भावयासास्र कु ३, ३०।

भूष्—स्वा, (तिस) चु, प।

भर्जनम् ।

याङ्गम्, भ २०, १५। बुभूष। बुभूषते क्षन्या खयमेव । भूषा। भूषणम्।

ञ्—स्ञ्, खा, डा भर्णम्।

पारणम्। यञ्चम्। प्राप्तिः। पूरणम्। २ पोषणम्, वो। प्रतिपालनम्। डुम्डंञ्, ह्या, उ। १ धारणम्। २ पोषणम्। ३ दानम्। बट् भरति। ०ते। भरति कुम्भ-सिक्किन:, दुर्सा, यो सुजाभ्यां सुवो भारं भरते अरतीपमः। विभक्तिं च यगोराणि भूयां चं घस्य भूरिष ॥ नि १२०। द्रिदान् भर कौन्तेय, हिती। विसर्त्ति। विस्तः। विस्तति। विस्ते। विभाते। विस्तते। हि, बिस हि। चानिप्, विभराणि। लिङ् विस्यात्। विश्वीत। साध्वीं भार्यां विश्वात्, मनु ८, ८५। लङ् प्रविभः। प्रविश्व-ताम्। प्रविभवः। प्रविस्त। सन्वास-सविमः, भ १७, १८। श्रविभरः शाल्यौ वादि सुर्देभिः, भ १७, ५३। लिट् विभराञ्चकार। वभार। वस्व, पार्क, २, १३। विभराञ्चको। वभ्ने बस्वे। ध्रं धरित्रा बिभरास्वभूव, र, १८, ४५। बलित्यं बभार वाला, कु १, ३८। नुट् भर्ता। लट् भरिष्यति। ्ते। श्रामिषि, भियात्। स्वीष्ट। लुङ् युभावीत्। यभाष्टीम्। यभार्षुः। अस्त। अस्वाताम्। अस्वत। अस्-दुस्। सभाषींद् ध्वनिना लोकान्, भ १५,२४। कर्मण, स्त्रियते। श्रमारि। सन् भ्वी, वुभूषीत । ०ते। विभरिषति। ॰ते, पा ७,०२, ४८। हा, नुसू र्षेति। वो ,यङ् वेश्वीयते। बर्भित्ते। णिच् भारयति। प्रवीसरत्। सत्वा। •स्व। स्तः।सृतिः। भर्ता । स्यः। भार्या। भरा । भराम् ।

भर्यः। अस्त्रिमप्रिवारी, ३७। सम्--सङ्गल्यः। सञ्चयः। इदि:। परिपूरणम्। परियोषणम।

<u>स्त्र</u>म्

सन्-(भन्) भा, छ। भन्पम्। भृज्—सूजी, (ऋजि) भ्वा, शा। भर्जनम्। पाकविश्रेषः। भर्जते, तपसा भर्जते पापम्, कवि ८७। बस्जी। भर्जिता। श्रभिजेष्ट। (ई) स्त्रम्।

स्ड्-(ऋड), तु, कु, प। मज्जनम्। ं स्य—स्य, दि, चु, प। संयः। संग्—स्था (भाज) चु, प। दीप्तः।

भू — क्राा, प। १ भर्काना।

२ पोषणम्। ३ धारणम्। ४ भजनम्, वो। भ्रणाति, कर्भवीजानि सर्वाणि योगाभ्यासाद् स्याति यः, कवि ८७। वभार। वभरतुः। भरिता, भरोता।

भेष्-भेषु, स्वा ७। भयगत्वीः। भेषीत । •ते। देवेभ्योऽपि न भेषते।

भ्यम्—भ्या, श्रा। भयम्। भ्यमते। स्व - भृष्, भा, छ। भष्णम्।

स्त्रण् (श्रण्) स्वा, घ। शब्दः । स्रम्-स्रमु, भ्वा, दि, प। १ चलनम् ।

पादविचरणम्। अनवस्थानम्। अत मणम्। पर्यटनम्। अस्मिन्धे सन्तर्भन कोऽकर्मक्य। २ स्वान्तः। लट् स्वयति। स्राम्यति, पा ३, १, ७०। कौर्त्ति-

भ्वीस्यति यखोव्यी गुगाः खर्गे सम्बन्त च, वाव २६२। भाग्यन्यभौताः परितः पुरं नः, स १२/७२। न काने

°को हेतुर्भेमाति विधि/ भिक्तुक ५वः ुर्गा अमरोव च मे मुनः, मी १, अर्थ।

भारा। सत्। (दु) संविद्यम् (दुवो) / विद् वस्त्राम्। वस्त्रमतः। स्रोमतः

₹.7

ण ६, ४, १२४। चौग्सामी लयं
सेडिति वसाम, कौ ५५। सेमु: शिलो-चयांसुङ्गान, भ ७, ५५। लुट् स्नम-ता। ल्ट्सिम्थिति। लुङ असमोत्। असमिष्टाम्। दि, असमत्। अस्य-मोत्, को। सन् विस्नमिषति। यङ् वस्त्रस्यते। वस्त्रस्ति। णिच् समयति। अविस्त्रमत्। अक्तिमिक्समत्, भ १५, ५३। स्नमित्वा, स्नान्ता। स्नान्तः। स्नान्तः। स्नमणम्। स्नमः। स्नामः। स्नमः। समो। समरः। डद्-डपरि स्नमणम्। परिस्नमणम्। मारोचौद्-स्नान्तदाताः, र ४,४८। वि—विस्नमः। सम्—सम्नमः। स्रम्।

भंग-भंग-भन्य, भन्म (धन्म) स्वा, गा। सन्ग्र, सग्र, वो। दि, ष। प्रवस्त्रंतनम्। प्रधःपतनम्। भृंश-ते। भूसते। भृष्यति, पा ६, ४, २४। भू शते दुरितं राष्ट्रे प्रजाभ्यो यत्प्रभान वतः। भुष्यत्यरिपताकिनी, कवि १७६। भृष्यन्ति क्योत्पनग्रययः, सहाना १, ३८। बभुंश। ०श्री। बभुंशेऽसी धते:, भ १४, ७१। संग्रामाद वम् ग्रः (प्रकाशिताः), भ १४, १०५। मुंशिता। संशिष्यति। ०ते। भ्वा, प्रभुंशत्। श्रम्बाष्ट दि, श्रम्यत्। सुग्रीवी-उखामुमद् इस्तात्, भ १५, ५८। भावे, भृत्यते। अध्यक्षं यि। विभुं शिषति। •ते। वाभृष्यते। वाभृष्टि। भृन्स्, बनीभुखते। बनीभुं सीति, पा ७, ४, ८४। भ्वा, बनीभुष्यते इति कचित्। भुंशयति। अवभुंयत्। भुंशिला। भुद्धाः भृष्टीः भृष्यनम्। भृषः। परि, प्र-च्युश्विः। हानिः। . भूस्ज्—तु, •डी पाकः । भजेनम्शे

े बट् स्कति। जी, पा ६, १, १६%।

तेजसारीय सञ्ज्ञित, कवि ८०। वि वभूजा, बभर्ज, पा॰६, ४. ४७४ वर् ज्ञिय, बभुष्ठ। बभजिय, बभुष्ठ बमुज्जिन, वसर्जित्। त्रमुज्जे, बसर्जे वेभुक्त योको रावसमन्तिकत्, ू १४, ८६। बुट् भृष्टा, भर्षा। 😎 भृच्यति। ०ते। अच्यति। ०ते। आपि षि, मृज्यात्। भूजीय, भर्जीष्ट। यभाचीत्, यभाचीत्। यभाष्टीम्। यभाष्ट्रं, यभार्ष्युः। यर ष्ट, प्रभष्टे । सन् विभुचति । 🍑 त विभृज्जिषति। •ते। विभर्जिषति ॰ते, पा ७, २, ४८। यङ्बरीसञ्चते बाभृष्टि, बाभिष्टै। गिच् भुजावति । भक यति। अवभ्जत्, अवभर्जत्। देहं विभ चुरस्ताग्नी, भ ५, ५०। लोकान् विभृद् रिव तेजसा, स ८,३४। सृष्ट्रा। • सृज्य स्टः। स्टि:। मुज्जनम्, सर्जनम् मृष्टुम्, भष्टुम्।

भाज्-भाजृ (एजृ) रुभाजृ,

स्वा, था। दीति:। योभा। भाजते वस्ताजे, स्रेजे, पा ६, ४, १२४। स्र जिता। स्त्राज्यते। श्रस्ताज्य । श्रस्ताज्य । श्रम्ताज्यतः। श्रम्ताज्यतः। श्रम्ताज्यतः। व्याच्याच्यतः। वास्त्राष्ट्रः। स्त्राज्यतः। वास्त्राष्ट्रः। स्त्राज्यतः। श्रम्भाजत्, धा ५४, ३३। श्रद्भमाजच्छतिः तिस्त्रान्, १४, ८३। (८) भाजयः। भाजियाः ८ भाज्यतः। भाजियाः ८ भाज्यतः। भाजियाः ८ भाज्यतः। भाज्यतः। भाज्यतः। स्राज्यतः वर्षे ५७, १३५।

भाग—दुभाग, दुभासः। दुभाग, दुभासः, खाः, जाः। दीप्तिः गोमाः। भाग्वते, भागने। भास्ते शस्त्रेषीत्।

भामते। भाष्यते, भाषते। भाष्यते, भामते, पाँ ३, १३,०७०। बभाग्री। भू शे, पा ६, ४. १२५। चर्भाष्यन्ते परं लोके ये भिनावतचारियाः। दीना दु: खिता: केचिद् भृश्यन्ति यस्य मग्डले॥ कवि १६३। भी कारा, प। १ भयम्। २भरणम्। 'भोगाति'। बिभाय। भिणाति

मजा

भृग्—च, या। १ यागा। रविग्रङ्गा। स्त्रेज्-स्त्रेज (एज्) भ्वा, या। दीप्ति:। भ्रेष भ्रेष, भ्रेष, भ्रा, छ। भयगत्यीः।

(म)

'मक्'(मस्क्) मच् (स्रच्)। मख्, मङ्ग, मखि (इखि) भ्वा, प। गतिः। मख्ति, मङ्गति।

मङ्कल्मिक, भ्वा, श्रा। भूषणम्। गतिः, वो। समिक्किरेऽखाः, स १४,

🏖 भक् मिंग (श्राम) स्वा, प। र तिः। मङ्चमित्र, स्वा, प। सूषणम्।

मिव (अघि) भ्वा, श्रा। १ गति:। २ चाचेष:। निन्दा। ३ चारमः। गत्या-रमा । त्रज्ञा । प्रकृतवम्। ६ अच-क्रीड़ा, दुर्गा। सङ्गति। ०ते।

मच्-भा, चा। १८मः।

२गाळम्। ३७तिः। सचते। "मञ्ज सुञ्च सुच।"

मज्ज — टुमम्को, तु, प। शुद्धिः। स्रानम्। अवगाइनम्। मज्जनम्।

मज्जिति। समज्जाः समज्जतः। सम-ज्ञिय, समङ्थ। समज्जिव। सङ्ताः, पा ७, १, ६०। मङ्काति। श्रमाङ्गीत्। श्रमाङ्काम्। श्रमाङ्गः। भावे मञ्जाते। श्रमां जा। सिमङ्गति। सामं जाती। मामङ्क्ति। मज्जयति। असस-जात्। उद्-उकाजनम्। सरित्ती गज उनामज्ज, र ५, ४३। नि—निम-ज्ञनम्। एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जिति, कु १, ३। शोकी न्यमा-इनैत्, भ ३, २०। प्राखिनो न्यमा-इन्म्बुधी, भ १५, ३१। मङ्क्का, मला, पा ६, ४, ३२। सम्नः। सज्ज-नम्। (टु) मज्जयु:। मङ्क्तम्। मङ्क्त-व्यम्। मज्जनीयम्। साध्यमक्। मज्जा। मद्गुः। मद्गुरः।

मञ्-मचि, स्वा, था। १धारणम्। २ उच्छायः। ३ पूजनम्। ५ दीक्षः, वरे। मञ्जते। निर्-नीराजनम्। तं निर्मेच्या, नै ७, ४३। सच्च:।

मञ्ज् मिञ्ज् मिञ्ज (क्षण) चु, प। दीप्तः। मञ्जयति। मिञ्ज-यति। मिनि, चु, प। ग्रुडिः। मार्ज-नम्, वो ।

मठ्-स्वा, प। मदनिवासमदेनेषु। मठति। मठः। माठः।

सण्—(भण्) स्वा, प। शब्दः। मण्ड्-मठि (कठि) भ्वा, त्रा।

भोकः। सग्छते। समग्री। स्यड्-मड्, भ्वा, प / भूवणम्। मृद्धि (विद्) भ्वा, श्रा। १विभाजनम्।

र्वेष्टनम्, वो। मिडि, चु, प। १ भूषा। २इष:। मण्डति। ०ते। मण्डयति। स्याद्वयन्ति गुणाः सर्वे यो गुणानिव मण्डति, वावि २५०। श्रममण्डत्। कांपसैन्यैरमख्यत्, भ १०, १३। मग्डियता। मग्डितः। मण्डनम्। बर्ध मग्ड यितारः, पा ३, २, १३५। मग्डनः। मण्डकः। मग्डलः। मगड्कः।

मय्—मये, भ्वा, प। विलोड्नम्। मधति। मनो मधति नारीणां, कवि•६२। सद्—सदी, दि, प। १ हर्षः।

२ मत्तीभावः, वो। मार्खात, पा ७, ३, ७०। सर्वे लोकातिशायिन्या विभूत्या नच माद्यति, कवि २४३। ममाद। मेदतुः। इतरा तु समाद, मा १०, २७। महिता। मदिर्थात। प्रसदत् (अमादीत् अमदीत्, वो)। सिम-दिषति। सामदाते। सामत्ति। (इर्ष-दैन्ययोः) मदयति। अन्यत, मादयति (चित्तविकारमुत्पादयति)। ग्रमीम-दत्। अमदयत् सहकारलता मनः, र ८, २८। मद्, चु, या। व्हिंसयोगः। त्रतीकरणम्। मादयते, मनो माद-यते यस्य योगाभ्यासरसायनम्, कैवि २४३। मदिला। (ई) मत्तः, पा ८, २, ५७। सदनम्। सदः। सदनः। मादकः। मद्यम्। उद्-उन्मादः। चित्तविकारः। प्र-प्रसादः। अनवधा-नता। धर्मात् प्रमाद्यति खहितात् प्रमाद्यति, भ १८, ८। प्रमाद्यन्ति प्रसदासु विष्यितः मनु २, २१३।

सन्—भ्वा, प्रै वो। पूजा। गर्वः ।

मनु, त, औं। ज्ञानम्। अवबोधै:। मनति। मनुवे, मनुवे मनुत्र्योऽक्षी

प्रजामात्मजवत् प्रभुः। पिल्वकान्यते तुच मान्धं जनपदः सदा॥ कवि १५६। .ससान। सेने। सन्ति। सन्धिति। ०ते। प्रमनीत्, अमानीत्। अमता श्रमनिष्ट। समयाः। समानिष्ठाः, पा २, ४, ७८। मन्, दि, श्रा। ज्ञानम्। अवबोधनम्। सन्भावनम्। मन्यते। आतानं मन्यते बलिनं बली, स ५, २५। को बहु सन्धेत राघवस् (ञ्चाघेत), भ ४, ६४। न त्वा खणाय मन्ये, पा २, ३, १७। मन्ये स विज्ञः, नै १, ३२। मेने। सन्ता। संस्थते। मंसीष्ट । अमंस्त । अमंसाताम । •अमं-सत। धमस्त स्थितिमन्तरमन्वयम्, र २, २७। सिमंत्ती। मस्यन्यते। मस्यन्ति। मानयति। श्रमोमनत्। मन्, सु, श्रा। १स्तमः। २ गर्वः। मान्यते। मन, अदन्तः। चु. प. वो। धारणम्। मनयति। मला। ० मत्य। ० मन्य दत्येके। सत:। सति:। सननम्। सानः। मन्तुम्। मन्ता। मन्तव्यः। दश्रीनीय-मानो भार्थ्यायाः। शूरमानी। शूर-मान्य:। अनु—अनुमति:। देवराय प्रदातव्या यदि कन्यानुसन्यते, सनु ८, ८७। राजन्यान् स्वपुर्गन हत्त्रये दनु-मेने, इ. ४, ८७। श्राभ श्राममानः। संदाति:। संशातिः। अव- अवसानः। अवज्ञा। धवामंस्त स तान् दर्णात्, स १५, ६६॥ चतुर्दिगोशानवमन्य मानिनो, कु ५, प्रशः सम्—समाति:। पूजा¶ काले संमन्यसेऽतिथिम्, भ ६, ६५। सममंस्त वन्धून्, भ १, २।

सन्त्—मति, चु, श्रा। सन्त्रणा। गुप्तपरिभाषणम् । मन्त्रयते, इतस्य यां सन्त्रयते, नै ३, १००। श्रमसन्त्रती अनु, श्रमि—श्रमिमन्त्रणम्। मन्त्रकर

चाकृसंस्करणम्। उपाक्षतः पश्चरसी यौऽभिमन्ता अते इत इत्यमर:। आ-प्रामन्त्रणम्। कश्रनम्। प्रस्थानानुमतिर प्रार्थनम्। सस्बंश्धनम्। निर्मन्वगम्। तसामन्त्रा जगाम, भारत। पामन्त-यत संक्रात: समितिम्, भ ८, ८८। श्राम-न्वयेत तान् प्रहान्, भ १८, ७। नि-निसन्त्रणम्। तं न्यमन्त्रयत सम्भत-कतुः, र ११, ३२।

सन्य-भ्वा, क्रा, प। विसोड्नम्। मत्यनम्। गाहः। मंचीभः। मथि, माथि (कुथि) भ्वा, प। १ हिंसा। २पौड़-नम्। सन्धति, सान्धति। सथाति। मयोतः। मयुन्ति। दिधि मयुःति प्रतम्। मधाति वादिन: शास्त्रे वर्षे मन्यति वैरिणाः, कवि ६२। मां मधातीव मनायः, भारत। सिङ् मशौयात्। बङ्गमथात्। तस्यामथाचतुरी इयान्, भ १७, ४१। लिट् मसन्य। ममन्यतुः। रयं मूमन्य संहयम्, भ १४, ३६। लुट् सर्मिययति। मयात्। मन्यिता। सचि, मन्यात्। लुङ् चमन्यीत्। स्थिष्टाम्। शमस्यीत् परानीकम्, भ १५,४६। कर्मणि, सप्यते। सिंध, सत्याते। प्रमत्य। देवासुरैग्सतमञ्ज निधिममस्य। सन् मिमन्यिवति। यङ् मामण्यते। समन्ति। णिच मन्य-यति। अममस्यत्। मथित्वा। मस्यि ला। मृथितः। मिथि, मन्यितः। सन्य-नम्। सन्यः।

मन्द्-मदि, भ्वा, भा। १स्तुति:। २मोदः। ३मदः। गर्वः। अखप्रः। निद्रा। धकान्ति:। इगिति:। जड़ी-भाव:, वो। सन्दते, सन्दते यो त सुन्दरः, कवि १७६। समन्दे। मन्दि-

ता। धमन्दिष्ट। मन्दः। मन्दरा। सम्बरम्।

सभ् —(श्रभु भ्या, प। गतिः। सस्ब-(प्रस्त) स्वा, प। हिंसा। सय् (श्रय) भ्वः, ग्रा। गति:। मर्च्—(गर्जं) चु, प। शब्दं:। सर्व् — भ्वा, प, वो। गतिः। मव् (पर्व) स्वा, प। पूरवगत्थीः। मल् मस्, स्वा, शा। धारणम्। मलते। मन्ते। मलम्। सलिनम्। माला। श्रामलको। परिमलः। मशिका। मनः।

मव्—मञ्—स्वा, प। वन्धनम्। सवति। सर्चाता समाव। मेले मुङ्कलादिशि:, भ ८, ८०। मविता। षमवीत, प्रमावीत्। क्रिप् सूः, स्वी। मश्—मिश्—स्वा, प। १ शब्द:। २ रोषकतयब्दः । ३रोषः, वी । सम-मेयति। समाथ। सम्बन्धः। मिमेश्रा मेशिता।

मष्क्, सस्क् (क्रिकि) स्वा, आर्। गतिः। मम् मसी, दि, प। १परिणामः। २ परिमाणम्। सस्यति। समास। मेसतः। समिता। अससत्, अमासीत्, वो। (ई) मस्तः। सासः। समी, सस्य-तीत्येके।

्रमाइ — स्वा, प। सह, श्रदन्तः। चु प। पूजा। सहित। असहीत। महयति। जिल्हें सहति साहियीं भत्त्या सहयति दिजान्, कवि ३४। महो। महः। मंह—महि (वहि) था, |ग्रा। वहि: । ं (प्रजि) चु, च। दिशिः। संइते। मं इयति। लच्चीय मंहते, कवि ३४।

मा-प्रदा, प। दि, या। मानम्। ह्या. मा। १परिमाणम्। २ भव्दः। खट् माति। मायते। मिमोते। मि-माते। मिमते, पा ६, १४, ११३। श्रुत्या धर्में मिमीते। यः कचित् सात्या च सायते। कवि ७८। यो सिमौते च मीमांसाम, कवि १८१। लड् अमात्। षमुः, प्रमान्। श्रमिसीत। श्रमिमा-ताम्। श्रामिमत। पुरः सखीनामिन-मीत जोचने, कु ५, १५। जिट् ममी। ममिष्य, ममाधा मसे। तनी समुस्तव न कैटमहिषो मुदः, सा १, २३। लुट् माता। ॡट् सास्यति। ०ते। त्राधिषि, मेयात्। मासीष्ट। लुङ् श्रमानीत्। श्रमानिष्टाम्। श्रमानिष्ठः। यमास्त । यमासाताम्। यमासत। कर्मणि, सीयते। श्रमायि। श्रमायि-साताम्। प्रमासाताम्। सन् सित-मति। वित, या ७, ४, ५४, ५८। यङ् मेमीयते, पा है, 8, हह। सामिति। सामाति। विच् मापयति। अमीस-पत्। मिला, पा ७, ४, ४०। ॰ माय। मितः। मितिः। मानम्। अनु—अनु-मानम्। महतां विगभक्षीरन्मीयते, जु २ २५ । इट् उचानम्। तोजनम्। उप-उपमानम्। वाक्यार्थेन वाक्यार्थं उपमीयते, दण्डो २, ४३। निर्-नि-र्माणम्। निर्माति यः पर्वणि पूर्णसि-न्द्रम्, नै ३, ३२। स्टिखितिविखयमजः खेक्क्या निर्मिसीते, महाना १, १। तांभ्या दिवं भूमिच निर्मम, मनु १, १३। परि-परिमाणम्। उदरं परि-माति सृष्टिना, ते २, ३५। भवनरच-नामन्यथा निश्चिमाण, धनर्घ १३। प्र-प्रमाणम्। विश्वयद्भानम्। न प्रमिन मीतिऽनुभवाष्टतिऽल्पघीः, मा १६, ४०।

माङ्ग्-माचि, काचि, स्वा, या। घाकाङ्वा।

° :मात्—मार्ट, भ्वा, उ। मानम् 🛌

सान् आ, भा। १पूजा।

श्मीमांसा। विचारः, वो। पूजादां विचारः, वो। पूजादां विचारः। पूजादां तिवादयो न खारिति रसानाथः। लट् मीमांसते श्रास्तार्थम्, पा ३, १, ६। यस मीमांसते श्रम्में सान-यस्त्रिये हिजान्। सानित स्वजनं सर्वे शास्त्रं सानयते परम्॥ कृति ३२। लिट् मीमांसाञ्चक्रे। लुट् मीमांस्स्ता। लुङ् समीमांसिष्ट। मान् चु, पा पूजा। प्रश्नंसा। सानयति। मानित। मानित। मानित। मानित। मानित। सानवम्। सानयिता। सानवम्। सानायता। सानवम्। सानायता। सानवम्। सानायता। सानवम्। सानायता। सानवम्। सोमांसितः। सानवम्। सानायता। सानवम्। सोमांसितः। सानवम्। सोमांसितः।

मार्-चु, प। अन्वेषणम्।

प्रतिसन्धानम्। सार्गयति। सार्गति। यो सार्गयति सन्धार्गे सार्गति स्ते समान् तानः। नृपतेः स्तमस्पदे वर्गसमार्गीत्, स १, १३। सार्ग्, चु,प, वी।,१संस्कारः। २ सप्रसम्

मार्ज — (गज) चु, प। १शब्दः। २ श्रुंबि:। मार्जनम्, वी। मार्जेयति।

माह्याह, खा, उ। मानम्। साहति। •ते। माझ इत्येके। मान दिता, माटा।

मि—डुमिज्, सा, छ। प्रचेपणम्।

मीज, क्रा। हिंसा । वधः। बट् मिगोति। मिनुति। मीनाति। मीनी-तै। मिनोति मार्गणीन् युद्धे मीनाति हिंदनी वसम्। यो मार्था मीयति सान्यो

भर्मेग मयतेऽधमम्॥ कवि १८ । लङ् श्रमिनोत्। श्रमिनुत। श्रमोनात्। ्यमोनीत। लिट् ममी, पा ६, १, ५०। मिम्बतुः। मसिब, ममाध। मिन्यित्। मिम्ये। लुट् माता। लुट् मास्यति। र ति। ग्रागिषि, मौयात्। मासीष्ट । लुङ् ग्रमासीत्। ग्रमासिष्टाम्। ग्रमा-सिवः। अमास्त । अमासाताम्। अमा-सत्। कर्माण्यः मीयते। श्रमायि। सन् मित्सति। •ते, पा,७, ४, ५४। यङ मेमीयते। मेमयौति। मेमिति। गिच् मापर्यात । भ्रमीमपत् । मिला, मीला । ॰माय। सितः। सितिः। सानम्। मातव्यम्। (डु) मिलिमम्। अनु त्रंतुमितिः। उप-उपमितिः। प्र-प्रसितिः। प्रसाणम्। प्रसीगाति, पा E, 8, 941 मिक् लु, प। खत्योड़ा। मिच्छति। मिज्ञ-मिजि (कुप) चु, प। दीप्ति:।

मिक् तु, प। षत्पोड़ा। मिक्कति। मिक्ज मिनि (कुप) चु, प। दीप्तिः। मिद् मेद, मिथ, मेथ, मिध्, मेध्, मिह, मेह, मिथु, मैथु, मिध्, मेधु,

भ्वा, उ। १मेधा। २ इस्सा। मेथू, मेघ। सङ्ग्रमे, वो। मेदित। •ते। मेथित। •ते। मेथित। •ते। प्रजायै ग्रइमेधि- नाम, र १, ७। मेदः। मेदकः। मेधा। मेधः।

मिद्-जिमिदा, था, था। दि, प।

सेहनम्। सिन्धोभावः। मेदते। मे-द्यतिः, पा ७, ३, ८२। कि चित् किल ने मेदते। इति व्यायामयीकोऽसी महाकायो न मेद्यति, कवि १३६। सि-मेद। सिमिदे। मेदिताः। मेदिच्यति। •तः। चमिदेत्। चमेदिष्टः। दि, प्रसि-दत्। चमेदीत्, वो। सिद्, मिदि, चु. प, वो। सेहः। मेदयति। मिन्दः यति। मिदिलाः, मेदिला। मिनः।

प्रसिद्धः। प्रमेदितः पा ७, २, १७। प्रमेदिताः सपुत्रास्ते (सिन्धीभिक्तिः सारक्षाः), भ ८, १७। सेदः।

मिल्-तु, था संस्रोवसम्।

मिल, तु, छ। सङ्गमः। मिलनम्।
मिलति। ॰ते। मिलति भङ्गमाकुष्ययन्ती,
महाना २, ४४। मिलति प्रत्यहं
यस्य वाजिवारणसम्पदः, कवि १४५।
मिमेल। मिलिखे। मेलिता। मेलि॰
धित। मिलिधितीति संचिप्तसारः।
अयं कुटादिरिति कुलचन्द्रः, दुर्गा।
अमेलीत्। अमेलिष्ट। मेलयित। अमेलिमलत्। मिलिता। मेलिनम्। मिलिता। मेलिनम्। मिलिता। मेलिनम्। मिलनमिति पद्मनाभः। व्यालन्त्यभिलनेन, गौतगो ४, २।

मिन्व् (पिन्व्) मिश्, मश्।

्रिञ्च चु, प्। षदन्तः। मित्रणम्। सम्पर्कः। सित्रयति। सिस्त्रयति, वो। सुस्रादिगणे सित्रपाठः कथं। ।

मिष्-सिषु (जिषु) स्वा, प। ड, बो।
सेचनम्। सिष्, तु, प। स्पर्धा। सेषति। ०ते। मिषति। सिमेष। सिमिषे।
मेषिता। समेषोत्। समेषिष्ट। सिषतामास्क्रिनत्ति नः (पश्चताम्), डु
रं, ४६। डद्—डन्मेषः। नि—निमेषः।
डिकाषिक्रमिषचिष, गो५, ८। सत्साः
सुप्तो न निमिषति, भारत।

सिह्—स्वा, प। सेचनम्। खरणम्। मेहति। सिमेह। सिमेहिष्य। सिमेह रत्तम्, स १४, १००। मेटा। सेख्यति। श्रीमचत्। सिमिचति। सेहयति। सीठः। सेहनम्। सेदुः

मी-सङ्, दि, पा। हिंगा। मीयते। भिग्ये। भेता। मेखते। भ्रमेष्ट । मिस्ति । ज्ञा, मीनः। मी, चु, य। गति:। साययति। सयति। मेता। न चानुमाययत्यन्युस्तस्य यज्ञेतसि ख्यितम्, कवि १४३। मी, क्राा (मि)। मीम्-(द्रम) स्वा, प। गतिश्रक्दयोः।

पत्रवीऽपि न मीमन्ति यहेभे दुःख-घोड़िताः। कवि १८१।

्मील्—म्बा, पानिमेषः। सङ्गोचः। भीनति। भीनन्ति रिप्रनारीणां मुख-पंचावनानि च, कवि। मिमील। तखा मिमीनतुर्नेत्रे, म १८, ५१। मीनिता। मीनिष्यति। प्रमीनीत्। मिमी लिषति। मेमी खते। मेमी ल्ति। मीलयति। श्रमिमीनत्, श्रमीमिलत्, पा ७, ४, ३। मीबिला। श्मीला। मीजितः। मोलनम्। उद्-उन्मोल-नम्। इदय:। इदमीलीच नीचनी, स १५, १०२। चन्द्रोऽयमुन्मीनति, संदाना ४, २२। नि-निमीलनम्। सुद्रगम्। निमिल्य नेते सहसा व्यव-धात, कु, पूर्व । निममील नरीत्तम-पिया (ममार), र द, ३७ । प्र-प्रमीला। तेन्द्रा । वर्ताक १८ १ वर्षा । अस्तर १८०

मीव् (पीव्) भ्वा, प। स्थीस्थम्। सुन् सुन्छ, तु, छ। । मीचणम्। व्यागः। वियोगः। चेपणम्। वर्षणम्। िवसंसनम्। बन्धनर्श्वतीसावः, दुगी। कट् मुचति, •ते। सागरिकाया इस्तं सुचति, रता २, २०, १। लिट् सुभीच। सुमीचिय। सुसुचै। सुमुचतुः। घेन्सवेम्मोच, र २। मुमुचुः कधू-पान्, भ ३, १ (परिधान) उण्णोर्ष सुस्चे, भ क्रि, ८५ा तुट्ः मोता। . खट् मोच्छति। व्ती । मोच्चते तेषुर-बन्दीनां वेथी:, कुर, ६१ । आधित,

मुचाता मुचीष्टा लुड् चमुचत्। चमुक्ता यमुचात्मम्। यमुचता यक्ति तस्यामुचत्, भ १५, ५३। कर्मीक, मुचता अमोचि। मुचन्तामभीषवः, र्यंतु १, १८। कमकत्ति, महापात-किनस्तपसैव मुच्चन्ते किल्विषात्ततः, मनु ११, २४०। तसामाची, र १, ७३% सन् सुसुचिति। •ते। सीचर्ति। सुसु-चति वलां क्षणः। मोचते सुमुचते वा वत्सः खुयमेव, पाः ७, ४, ५७ । यङ् मोस्चते। मोमोक्ति। णिच् मोचयति। श्रम्भुचत्। सुच्, चु, पः। प्रमोचनम्। सर्वायसं करिणि सुञ्जति कङ्गपत्रं यसा प्रमोचयति पापचयश्च कार्ये, कार्कि ४८। सुद्धाः। ०सुच्यः। सुत्तरः। सुत्तिः। मीचनम्। मोता। सुक्। अव- उसी-चनम्। या-परिधानम्। यामुखद् वर्म, भ १७, ६। भामुचतीवामरणम् र १३, २१। छट्- उन्मोचनम् । विभू-षणान्यसमुचुः, भ इ, २२। निर्— उत्कर्तनम्। सुतिः। चर्मनिर्मोकः नेऽपि वा, साति:। सेयं रामभद्रवेजसम एनमो निर्मुचात, वीर ८। प्रक स्ति:। पापात् प्रस्चिते, सनु ११, २३०। प्रति—परिधानम्। प्रत्यपैणम्। तुरकः प्रतिमोन्नुसर्हसि, र ३, ४०। वि—विस्ति:। त्याम:। पुरका वाचे विसुच्चय। नादान् विसुच्चति, भारतः। सुच्—सुञ् (मच्) सुक् (युक्)। मुज्—मुज्ज, मुजि (गुज) खा, प। चु, प, वो। १ मर्व्दः। २ मार्जनस्, वो। मोनति। मुद्धति। सोनयति।

सुच्चवति ।

सुद्धाना, प्रामर्दनम्। सुट्, तु, प । १ चा चेवः। २ प्रसद्देनस् ।

मोट्रा मुट्रात । सुट्रात दिषतां द्रपं तेष् चड्ड मोट्ति। यो मोट्यति राष्ट्रेषु तत्कीन्धीऽमरमण्डपान्॥ कवि १०४। सुमोद्रामीटिता। अमोटीत्। तु सुटिता। श्रमुटीत्। मोटयति। मोटिति, बो । स में संसारित्यं परि-मोट्युत्, छन्दो । सुटि, सुर्खत, वो। मुड्, मोडति इति अश्वित्।

सुड

सुण्यत्तु, या प्रतिज्ञा। सोणिता। ुः सुग्छ्⊬सुटि,∳वा, भा। पाननापस्त्योः। सुग्छते।

सुख् सुडि, खा, पा खगडनम्।

नेशमुख्नम्। मुख्, भ्वा, प। मदं-नम्। पोडनम्। सुडि, भ्वा, ष्रा । मार्जनम्। ग्रुडिः। मकानम्। मुण्डति। १ते । सुण्डितः। सुण्डनम्। सुण्डी। सुण्डः। सद्ग्रस्त, या। इपः। वित्तोत्साहः।

मोदने, व्यखनं गन्धमात्राय मोदन्ते तत्प्रसिद्धयः, विवि । २१७। मुसुरे। स्वमावीन् गीपाङ्गनानां सुसुदे विस्रोक्य, म रे, १५। मोदिता। मोदिखते। मोदिष्ये कस्य सीख्यै: म १६, २४। अमोदिष्ट। श्रमोदिषाताम्। मुमोदि-षते। सुसुदिषते। सोसुदाते। सोसो-ति। मोदवति। अम्मुमुदत्। मोदयव्यं रवृत्तमम्, भ ७, १०१। सुद्, चु, घ। संसर्गः। सिद्यणम्। मोदयति यज्ञन् ष्टतेन । मोदयन्ति यदुखाने साहतं पुष्परेणवः, कवि १०७। मोदिला, मुदिला। ॰ मुद्धा मुदितः। मोदितः, ण १, २, २९। मीदनम्। मोदः। सुद्, सुद्रा। सुद्दिर:। यनु - यनुमोद-नम्। पाक्यामनी रामभद्रस्याभिवैत-। आविवैक:। सोइः। स्कारहितीभावः।

प्र— इन्:। प्रमुदितवर्यक्रम्, र E . 1

सुर् सु, पा विष्टनम्। मोदिता। मुर्क (मूर्क) सुर्व (सूर्व) सुल (सूल)। सुषु क्रा, प। स्तियम्। चीर्थ्यम्। लुग्छनम्। वचनम्। सट् म्पाति। मुण्णीतः। मुण्णन्ति। तस्य मुण्णाति या शिरः, वावि ११५०। हैवं प्रजा स्थाति, भारत। विषयवाहुत्यं काज-विप्रकर्षस नः स्मृति सुणाति, बीद ६६० हि, सुषाणा सुषाण रतानि, मा १, ५१। जिल् म्योयात्। जल् भमुखात्। लिस् स्मोष। सुमुषतः। लुद् ?मोषिना। लुद् मोषिष्यति। लुङ् षसोषीत्। सन् सुमुविष्वात्, प्रा १ २, ८,। यङ् सोसुखते। सोसोष्टि। शिच् मोषस्ति। असूम्मत्। मुषिला, षा १, २, ६। ० मुख । सुषितः । मोषः णम्। सोषः। सोषिता। सुर्। सैन्य-रेणुमुमितार्कदीभिति: इ. ११, ५३। मुषिला धनदम् (विञ्चला), भ % ८७। भौन्नं न यात यदि तन्मुषिताः स्थ, रता ४,४१। परात्मीयविदेकञ्च प्रामुख्यात्, भ १७, ६०।

सम् सूष् दि, व। ख्राङ्नम्। मुखति। मुर्खति, वी। मुखति दुःखं यः, किव ११५। श्रमुसत्। ० वत्। राघ-वस्यामुण्यत् कान्ताम्, भ १५, १६॥ सुर्व (सूर्व) का ना १०० , १ । ११ के लिए

मुख्त ्य, प। राशीकरणम्। मुइ-दि, प। वैशित्तम्।

मनुमोदते, बीद । १६७। के द्यूतमन्त- मुधिकि। भीदस्तक न क्षुद्धति, गी ३, मीदल के चैतक् प्रताविधयन्, भारत। (३ मुमोद्रा मुसुहतु:। मुमोदिय,

सुमोख, सुमोढ । स शुश्रवांस्तहचनं सुमोद, भ १, २०। मोहिता, मोग्धा, मोढ़ा। मोहिष्यति, मोद्यति। श्रमु-हत्। मा सुहो मा क्षोऽधुना, म १५, १६। सुमोहिषति, सुमुहिषति, मुम्चति। सोमुह्यते। सोमोखि, मो-मोढि। मोहयति। श्रमुमुहत्। मोदि-त्वा, मुहिता, सुग्धा। मृद्या। सुग्धः। मूढः। मोहः। मोहनम्।

मून-सूड, श्वाधा। वसनम्। सूत्र-धदन्तः। चु, प। प्रस्नावः। सूत्रयति। यङ् सोसूत्र्यते, कौ १०६। सूर्क्-सुर्च्छा, श्वा, प। १सोइः।

श्रे च्छायः । द्वाहाः। व्याप्तः। सूर्च्छातः। च्योत्साच्छलेन सूर्च्छातः यहुषाः प्रश्नाच्छलेन सूर्च्छातः यहुषाः प्रश्नाच्छलेन साम्बन्धान् न रहः, र २, ३१। सूर्च्छल्यमी विकाराः प्रायेणेखय्य-सत्तानाम्, प्रज्ञ प, ८५। सुसूर्च्छान्। सूर्च्छला। सूर्च्छला। सुर्च्छला। सुर्च्छला। सुर्म्च्छला। सुर्म्च्छला। स्मूर्च्छला। स्मूर्चित लात्कादि-लात्। स्मूर्च्छला। स्मूर्चा। स्मूर्वा।

मुर्वे सुर्वी, स्वा, प। बन्धनम्। मुर्वे स्वा, प। इ, वो। प्रतिष्ठा।

स्थिति:। युवति। •ते। मुमूल।
•ले। मुलिता मूल्, मुल्, चु, प।
दोषणम्। मूलयति। मोलयति, वो।
दूरु चत्पाटनम्। निर्-विनायनम्।

द्धपानि नोबानयति प्रभचनः, दितो। इस्मितारः कपिकैतनेन, मा ३.१४। इस्मुनयति यः प्रवृत्याकति तमासि च, कवि २५१।

ा सूष्-भुष्, स्वा, प। स्तेयम्।

मूषित। मौषिति, यो मौषिति पर-द्रव्यम्, कवि ११५। सूषिता। मौषिता। सूषकः। सूषिका।

मुड्, तु, या। प्राणत्यामः । सरणम्। स्त्रियते, पा १, ३, ६१ । नैकोर्डाप स्मियते नरः,। कृषि १०५ । ससार। सस्त्रतः। समर्थे। सिमृषा सन्ति। सिर्धात। मृषीष्टा यमृतः। यमृषाताम्। यमृषतः। यमृद्वन्। सम्पूर्णतः। सेमृोयते। समर्ति। सार-यति। यमीमस्त्। यन- यनुसरणम्।

प्रमाणिक । जिल्ला प्राची के प्राची के किए किए क

स्य-भदन्तः चि, भा । स्या

दि, पा अन्वेषणम्। सगयते, सग्य-ति। यस्मिन् सग्यते नित्यं जनो धनम्, कवि ८०। रामो सगं सग्यते वनवीय-कास्, महाना ३, ५६। सग्यतीति कास्त्रादः, कौ १८४। मृग्यतः धदवीं तथात्यकर्णा व्याधा न मुझन्ति माम्, दुर्गी

गा । मुज्-मुज्, घटा, प। ग्रह्मेभावः ।

यही करणम्। सार्जनम्। बर्ट्सार्छे, पा ७, २, ११४ । सृष्टः। सृजन्ति, मार्जन्ति। सार्चि। सर्गर्छे तीर्थोदके-नित्यम्, कवि ५५। डि सङ्दि। लिङ् संज्यात्। सङ् घमार्टे। अस्-ष्टाम्। अमृजन्, समार्जन्। सिट् समार्जे। समृजतुः, समाजेतुः। ससा-

र्जिथ, मेमार्छ। कहान् ममार्ज्य मस् जुश्च परम्बधान्, स १४, ८२। चुट् मार्जिता, माष्टी। खट् मार्जियाति, माच्यति। लुंड अमार्जीत्, अप्रमान ु र्जीत् । अमार्जिष्टाम्, अमार्ष्टाम् । अमा-जियु , श्रमार्चः। श्रमाजीद् भवतोम रम। प्रमाचीं चामिपवादीन, भ १५, १११। कमीर्गा, सुन्यते । असार्जि। मन मिमाजिषति, मिस्तिति, मिमा-र्चतीत्वेति। यङ् मरीस्टचते। मर्मार्ष्ट । णिच् मार्जधिता प्रमीस्जत्. अम-साजत्। सजुरू चु,:प। १ श्रीचम्। २ भूष-णम् । मार्जेयति । सार्जेति, सार्जे-त्यालिवनैर्द्धिजान्। यो मार्जयति सा-म्बाज्यं त्रियशापत्यवाच्यताम्, कवि ं सार्जिता, मार्छी। सार्जि-त्वाः **स्ट्र**ाः • स्वा । स्टः । ः मार्छः । मार्जनम्। सृत्रा। मार्जितुम्, मार्ष्टम्। मृज्यः, मार्ग्यः। मन्युप्तस्य लया सार्खी सुन्धः ्योक्स तेन ते, भ ६, ्रद्रा ्परि, वि, सस् च्योधनम्। अना प्रवास । वाचं खारीन प्रवाशः परि मार्ट्रम्, र १४, ३४। जिलेतः को पने प्रस्तवः, र १, ४१ । अवगः । प्रस्टम्, है, है, : 8१ के प्रावासे सित्तसंख्ये अ अंग्रेस्ट्रिया व राष्ट्र वा अवस्थित सञ्ज्-सन्, भा, प। मन्द्र हरे के नमृड्—(पृड्) तु, प। १सुखन:। मधुरध्वनि:। २ इवे:, वी । संड् (संट्) क्राः प्रार्थितादः । सर्वनम् । २ इषेः ।

मुडति। सिंड्याति। असिया सुड्ति मृह्णाति सरख्या च ये! सदा, कवि २७१। समर्ड । सम्बन्ध । मर्डिता। मृडितम्। यम्डिला सहस्राचम्, अ ७, ८६। सङ्। । अनुस्ति । सामा वितिकार विवेताः। सामा समीष्टदेवतां

मृग्-तु, प। हिंसा। सर्विता।

मृणति वारणान्, कवि १०५। मृणा लम्।

सद्-क्रा, प। चोदः। सद्नम्।

चूर्णीकरणम्। सङ्गाति, सङ्गाति दिवता द्यें यो भुजाभ्यां भुवः पतिः। कवि १४४ हि, सदान । सहीयात्। अस-द्रात्। बनान्यस्द्रात्, र १, ८५। समदौ मदिता। मदिश्वति। मस्दत्:। क्रमदीत्। धर्माईष्टाम्। धर्मार्द्धः। तानमदीत, भ १५, ३५। मिमर्दिषति। मरोमुद्यते। मरोमर्त्ति। मर्दयति। यम-मर्दत्, चमोम्दत्। मदिला, पा १, २, ७। स्टितः। सर्वनम्। मर्दः। श्रमि, श्रव—श्राक्षमणम्। भङ्गः। दल-नम्। वि—घर्षणम्। सम्—पोडनम्। सञ्जूषेनम् ।

सूध् सुधु, स्वा, छ। बाद्रमावः ।

स्थ्नतु, प । बामर्टनम् ।

स्पर्धः। प्रशिधानम्। परामगः। चिन्ता। स्थाति। समग्री। सस्यत्। समिशिया मर्छा, स्त्रष्टा, पा ६, पटा मर्खति, संस्थित। प्रमाचीत्, प्रमा चौत्, प्रस्वत्। प्रमाष्टीम्, प्रमाष्टाम्। पुरु जताम्, की १०४। कर्मण, सुखते। षमि । मिस्वति। मरोस्यते। मरोमर्ष्टि। मर्भयति। प्रमौस्यत्। मुद्दा। सुख्या सुष्टः। सर्थनम्। मग्री या-सर्गी ् पाक्रमणम्। बाम्छं नः परैः पदम्, √कु २, ३१ । स चमर्डीत्। सङ्ख्या, ।पा १६ २, ७। श्रीरवं दग्रथस्य महिमामृशन्, प्रतिष १२। परा-परामग्री जानम्। ग्रस्कत् परास्त्राति, काव्यप्रकाशः।
परास्थ्रम् इषेज्ञहेन पाणिना, र ३,
६८। पूर्वोत्तं परास्त्राति। वि—परासर्थः। वितर्कः। प्रृणिधानम्। रामप्रवासे व्यस्यन् न दोषम्, भ ३।

स्व-स्यु, भा, प। उ, वी १

१सेचनम्। २चमा। सहनम्। सृष्, दि, उं। समा। मर्पति। •ते। स्थति। ०ते। ममर्ष। मस्वै। मर्षिना। मर्षि-थति। वी। प्राधिष, स्थात। मर्षि-बोष्टा अमर्बीत्। दि, अस्वत्। अम-षिष्ट। मिमर्षिषति । •ते । मरीस्थते। सरीमष्टि। स्व. च, उ। जमा। तितिचा। मर्षयति। ०ते। मर्पति। ०ते। सृष, घदन्तः। चु, प। भ्वा, ड, वो। चमा। स्वयति। स्वति। •ते। स्वः स्वभूव। स्विता। स्विष्यति। •ते। भस्वोत्। भस्षिष्टा स्वयति न मृपाणां मृष्यते चोडतानाम्, श्रनुचितः मनुसातं न दिवां मर्वते यः। अपि शतसपराधान मधेते बाह्मणांनां, सित-वसनस्तां यो मर्धयस्यागुमजः॥ कवि १५। (ड) समिला, मिलला, सप्ता, पा १, २, २५। पा १, २, २०। स्टम्। सर्वितः, पा २, २। • सर्वेषम्। सर्वः। पप-निन्दा। पपस्थितं । वाकाम (त्रविस्पष्टम्), कौ ३५४। परि-चान्ति:। परिम्राव्यति, पा, १, ३, ८२। सघोने परिमृथन्तम् (प्रमुयन्तम्), ⊏, भेरा

मृ—क्या, प। इननम्।

चणाति, युद्धे चणाति सद्वृणास-खान्, कवि ०५। समार। सूर्य-रतः। सूर्णः १ , मे मेङ्, खा, श्रा। १ विनिस्यः।

गर प्रस्तर्थणम्। सयते। समि।

गाता। सास्त्रते। प्रशास्त्रता सिस्तते,

पा ७, ४, ५४। मिमोयते। सामाति।

गामिति। साप्यति। अपिसित्य। अप
गाय, पा ६, ४, ७०। ३, ४, १८।

यो निङ्गेनानुसयते क्षत्स्रमप्यरिचेष्टितम्, नवि।

मेट्—मेत्—भा, प। उन्नादः।
मेय्, मेद्, मेध् (मिद्),
मेप्—मेष्, भा, घा। गतिः।
मेव्—मेव्—(ग्रेह) भा, घा। सेवा।
सोच्—चु, प। चेपः। सोचनंस।

मोचयति। मोचति, वी। सङ्घेषु मोचयति यद्य धरं मनुष्ये, कवि ४८। वि भाषान् मोचयिष्यति, भारतः।

मा-भ्वा, प। बाहित्तः। बभ्यासः।

पौनःपुन्धेनानुगीननम्। मनति, पा ७, ३, ७८। मनन्ति मानिनो ॰ यस्य यशः, किव ७८। मन्ति। मन्ति। स्राता। सास्यित। स्रायात, स्रेयात, यसामीत्। सम्बासिष्टाम्। स्रसासिष्ठः। मिन्नामित। मान्नायते। मान्नाति। मान्निति। साप्यिति। सम्नित्ति। स्रान्निति। स्राप्यिति। सम्नित्ति। स्रान्निति। स्राप्यिति। सम्नित्ति। स्रान्नित्ताः। इतिः। स्राप्य-मायती स्रोभादाभनन्यनुजीविनैः, भ १८, १। त्यामामनन्ति प्रकृतिम्, कु

म्ब-म्ब-या,मं। मृचणम्।

्रमङ्गातः । चु, प्राश्चेच्छनम् । भ्रप-यच्दः । २ स्त्रचणम्, वो । ३ स्त्रेष्ट्रनम्, बो। सन्ति। सन्ति। सन्याति। सन्नयति। सन्नितः। सन्यगम्। सन् इत्येके। सन्निकादित प्रदोपः।

* * *

स्वद्-स्वा, या। सदैनम्।

्रस्नदते। स्नदन्ते चरणी यस्त्र, कवि १४४। स्नद्यति, घटादि:। धमस्तर-स्त्, पा ७, ४, ८५। सदा।

मुन्-सुञ्-सुन्, सुन्नु, सा, प।

गति:। स्रोवति। यस्वत्। यसीः चौत्, पाः, १,५६। स्वद्गति। यस्-चौत्। स्वत्वा। स्रोचिता, स्वा। स्वा:।

चेट्-चेड्-चेट्, सेड्, खा, प।

् इनादः। सेटिति। सेडिति। प्रा-णिच्, प्राम्बेडनम्। पुनः पुनः कथनम्। एतदेव यदा वाकामाम्बेडयति देव-राट, भारतः।

स्तव चु, पे। छेदनमिखेने। स्तुच स्तुच स्तुच, स्तुन्च, स्ना, प।

ाति:। म्हीचिति। प्रस्तुचत्। प्रस्ती-चीत्। स्तुचिति। प्रस्तुचीत्।

ह्योक् स्वाप्ता १ प्रवस्ताबदः।

असुट्यब्दः। २ पपयब्दः। देखोक्रिः, वो। बसंस्कृतकथनम्, दुर्गा। स्ते च्छति, विद्वान् न स्ते च्छति छतवतः, कवि १८९। ्रिस्ते च्छ। स्ते च्छिता। स्तेच्छः यति। स्तेच्छितः। (अस्सुट्यब्दे) स्तिष्टः, पा ७, २, १८।

म्बेट्-म्बेड्-भ्वा, पा उन्हादः। म्बेव्-म्बेड (गेड्डे स्वा, प मेरीका। म्बे-(ग्बे) भ्वा, पा पर्यंचयः। कान्तिसंचय:। ग्लानि:। स्तायति। मस्तो। तीपिष्य न मस्ततुः, र ११,८। स्ताता। स्तास्थित। स्तेयात्, स्तायात्। प्रसासीत्। प्रस्तासिष्टाम्। स्तानः। स्तानि:। स्तानम्।

(য)

यत्त् चु, त्रा। पूजा। यत्त्वसते। शिवं यत्त्वसते भक्त्या, कवि २६७ ।

यज्-भ्या, च। १ पूजा । यागः। २सङ्गमः । ३दानम्। लट् यजति । ०ते। पश्चना कट्टं यजते। जिट् इयाजा। देजतुः, पा ६, १, १७। इयन्त्रिय, इयस्र र्दाजन। रेजे। रेजुर्देवान् पुरोहिताः, भ १४, ८०। तुर् यष्टा। त्वर् यच्चति। की। श्रामिषि, इच्चात, पा ३,४,१०४। यचोष्टा लुङ् अवाचीत्। श्रयाष्ट्राम्। श्रयाचुः। श्रयष्ट्रा श्रयचाः ताम्। प्रयत्ता। प्रकान्ययाचीदिभितः प्रधानम्, स १, १२। तिदशानयष्ट, स ए, २। क्रमणि, इज्यते। प्रयाजि। सन् वियत्तता । ते । यङ् यायज्यते । याबजीति। यायष्टि। णिच् याजयति। प्रयोगन् । इसा। ०इन्य। इष्टः। द्षि:। यजनम्। यागः। इच्या। या-जवः। यष्टा। यज्ञा। यायज्वः। यियचः। यहीषीत् कष्णवर्तानम् समन यष्टास्त्रमण्डलम्, भ १५, ८६।

यत्—यती, भ्वा, आ। प्रयतः।
चेष्टा। यतते, यतते धर्म एवासी,
कवि ७५। दुतं यतस्य, भ १२, ४।
येते। यतिता। यतिष्यते। यतिष्ये
तिहिनग्रहे, भ ५, २८ १० अयतिष्ट।
प्रयतिषाताम्। अयतिष्ठतः। प्रनष्टुः
सरुतिष्ट च, भ १५, १८,। विद्यतिः
यते। यायस्यते। यायति। यत्, द्वः

[गणदर्षणः]

व । १ निकारः । परिभवः । तिरंकारः । ताड्नम्, वो । २ उपस्कारः । प्रबङ्कारः चम् । यातयति, यातृयस्यनिमं हिषः, कित ७५ । यतिस्वा । (ई) यन्तम् । यतितः मिष दृश्यते, इति संचित्रसारम् । यदः । पा—वश्रीभावः । वयं स्वयाः यतामहै, वौर १५ । निर्—प्रस्वपंषम् । धान्यसैनयोः प्रतिदानम् । परिवर्तः । वैरनिर्धातनम् । निर्धातयति चैरम्, कित ७५ । म—प्रयदः । विजेतुं प्रयति-तारीन्, मन् ७, १०८ ।

यन्त्—यति, चु, प्र। सङ्गोचः।

वस्थनम्। यन्त्रयति। यन्त्रिति। चन्त्रितः। यन्त्रणम्। यन्त्रणाः स्नेष्टकादुण्य-चन्त्रितः, भारतः। नि—वस्थनम्। नियमनम्। मेखस्या नियन्त्रितमधी-वामः, महानां २, ३। ज्ञोयन्त्रणामान-मिर्दे, रूथ्य, २३।

यम् भा, पा अस्यम्।

विपरीतरमण्म्। यमति। यसाम। येभतः। बेभिषः, ययसः। यसा। यप्यति। भयापीत्। भ्रयासाम्। भ्रयापः। यियपति। यायभ्यते। यायस्य। याभयति। भयीयभत्।

यम्—स्वा, पं। १डपरमः।

विरति:। निव्वत्ति:। २वस्वनम्।
यच्छति, पा ७, ३,००। ययामः। येमतुः।
येमिष्ठ, ययन्य । यन्ता । यंस्यति । प्रयंसीत्। पर्यमिष्टाम् । प्रयंसिषुः, पा ७,
२,०३। भावे, यस्यते। प्रयमि, प्रयामि ।
यियंसति। यदस्यते। यंगन्ति। यम,
सु, प। १परिवेष्ठणम्। प्रसादेरपणम्।
२ प्रपश्चिष्णम्, वे । १वष्ठतम्। यमः
यंति (मान्नाणन् भोजयति) प्रसाद्यप-

समर्पेष वैष्टने च घटादिलम्, की ८६। यमयति चन्द्रम् (परिवेष्टते), को १७४। प्रन्यत्र, प्रायामयति (द्राघ-यति) यसंयति, यामयति अनं दिजाय ग्रहोति, दुर्गा। यमयति विमार्गात् प्रजा राजिति कश्चित्। नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्डः, पञ्ज १८। एक इस्तयमिल मूर्डजाः, यु १ । यता । •यत्य, पा ३७, ३८ । यत:। यसनस्। यमः। यामः। या- प्रायामः। दीर्घी-करणम्। पायकाते पादम्, पा १, ३, २८। बाचमुद्यतमायंसीत् (उपसंद्रत-वान), स ६, ११८। प्रायच्छति वर्षे मीर्वीमसी यावद्विभित्रया, कवि २१६। प्रायामयति, •ते। पा १, ३, ८८। व्या-व्यायामः। व्यायक्रमा-नयोस्तयोः, स ६, ११८ । उद्-उदामः (प्रवेगुम्यम् । यिताम्दयक्त्, भि १७, ८२ । वियपस्थारयं से बाहुत्तु-यक्तमानः, यन्धे १००। नित्यमृद्यक्त-मानाः चारमभोगकमसु नार्थः, म ८, ४७। उप-विवाहः। स्त्रीकारः। डग्रयच्छते कन्याम्, पा १, ३, ५६। सीतां — दिला ा दगस्य रिपुनीपरीसे यदन्याम्, र १४, द०। खुङ् उपायत् । उणायंस्त, वा १, २, १६। शस्त्रास्य पायंसत जित्तराणि, भ १, १६। कि-नियमः। ग्रासनम्। सखद्विपस्वया नियस्थाः, र ३, ४५ । सम् वश्वनम्। संयम:। योग:। वैशान् संग्रस्य, आरत । वानरं सा न संग्रमीः, भ ८, ५०३ दाखा मार्जा संयच्छते कामकः (दाखे ददाति),षा २, ५५, ०५। यस्—यसु, दि, प। प्र**यदः।**

चेष्टा। यस्यति। यमति । संयस्यति ।

संबस्ति। श्रत्यत, प्रयस्ति। पा। ययाच । येसतः। यसिता । अयसत्। (बयसत्, देशयसीत्, श्रयासीत्, वो)त यियस्विति। यायस्यते। यायस्ति। यामयति। प्रयोगसत्। (ड) यमित्वा। यस्वा । यस्तः । मा-मायासः । खेदः । षायस्यसि तपस्यन्तो, भ 🐛 ६८। (जिच्) पीडनम्। पायामयति। •ते. ण १, ३, ८८। प्र-प्रयासः। पुनः धुनः प्रायमदुत्रस्वाय सः, ने १, १२५। ्र या—घटा, ए। गमनम् । प्राप्तिः। ्य याति। प्रयात्। अयुः। घयान्, पा २, ४, १११ । व्यवीत य्वतः यविष् युवाय । याता । याता । यास्यति । प्रवासीत्। प्रवानिष्टाम् । प्रवासिषुः। थियास्तिम हे ग्रायायते । वाज्यायाति । यायेति। 🤛 यापयति। 📨 श्रयीयपत्। यालाः। - । अयाय । ११ यातः। व्यानम् । यातव्यः। यायावरः। प्रति-प्रति-क्रमः। धतुः भवाणं जुवं मातियासीः भ २, ६१ । चतु संदर्गमनम्। निध-बैऽप्यनुयाति यः, सनु द, १७।ः अप-प्रवायनम् । 🖂 📜 प्रसि—प्राक्रसणस् । क्षवेगदभियास्यमानात्, र ५, ३०। या-पागमनम्। प्राप्ति:। उद्-उदय:। इहति:। इति मतिबदयासीत्, नै २; १०८। प्रखुद्-प्रखुद्गसनम्। प्र-प्रवाणम्। प्रायादरप्रम्, भ ३, RAATMITT REMARKS LINES

याच् — दुयाचृ, स्वा, ७ । याच्जा।
प्रार्थना। भिद्या। याचित। ०ते।
याचतेमान् वरान् वितृन्, मनु ३,
२५६। यायाच। ०चे। ययाच्रभयम्,
भ १४, १०५। याचिता। याचिष्यति।
०ते। भयाचीत्। भयाचिष्ट। कर्मणि,

याच्यते वरं देव:। श्रयाचि । यिया-चित्रति। १ते । यायाच्यते । यायान्ति । याचयति । श्रययाचत् । याचित्वा । •याच्य । याचितः । याचनम् । याञ्चा । (टु) याच्यः । याचित्रिमम्, वो । याच-मानः श्रियं सुरान्, स ६, ८ ।

यु अदा, प्रा १मित्रणम्।

्रश्रमित्रणम्। युज्, क्राा, ख। बन्ध-नम्। योति। युतः। युनाति। युनोति। योति वाले कुलस्त्रोभि: चेवसलान-वृद्धि। युनाति यौवनस्योऽष न वैद्या-वस्य को जन्मेः ॥ व्यक्ति १८५॥ युगाव। युर्वे। यनिता। यविष्यति । यूयाव । प्रयावीत्। क्रास्टिशनद्। योता। योचति। ब्ते। प्रयोषीत्। प्रयोष्ट। कर्मीण, यूयते। अयावि। सन् यिय-विषति, पा ७, ४, ८०। युयूषति, पा ७, २, ४८। क्राा, युयूष्रति। •वे। योगयते। योयवौति। योयोति। याव-यति। प्रयोगवत्। यु, चु, भा, वो। निन्दा । यावयने । युतः । युतिः । यवः नम् । यवः। , यवितुम् । घदा, याव्यम्, पा ३, १, १२६। योतम्। ्रं युङ्ग्—युगि (जुगि) भा, प। वैजनम् ।

युक्तं 'पुक्त् मुक्, भ्वा, प । प्रमादः ।

युज्—दि, शा। समाधिः।

समाधानम्। चित्तद्वात्तिनिरोधः। योग्यभावः, दुर्गा। युन्तिर्, र, छ। योगः। सङ्गतिः। युन्यते योगो। यद् येन युन्यते लोके वृषस्तत् तेन योजयेत्, हितो। त्रेलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्विय सुन्यते, हितो। त्रेन पादैः प्रष्टुं नगत्पून्यम्युन्यतार्कः (नाहेत), मा

a. २ । युनिता युङ्तः। युद्धन्ति। युङ्तो । युद्धते। यमं युनज्मि कालेन, हि गुङ्ग्धि। ख, **ब** ₹% | युङ्खः। निङ् बुद्धात्। युद्धोतः। लङ् प्रयुनक्। प्रयुङ्का। लिट् युयोज। युगुजु: स्वन्दनानस्रो, युयजे । १४, ८०। भन्दो महाराज इति तस्मिन् युयुक्ते, र १८, ४२। सुट्योत्ता। खट् योज्यति । ुन्ते । प्राधिषि, युज्यात् । युत्तीष्ट । लुङ् भयुजत् । प्रयीचीत्। प्रयुजताम्। प्रयोक्ताम्। प्रयुक्त । प्रयु-चाताम्। कर्माण, युज्यते। प्रयोजि। स सद्गुकः क्रतोरश्रेषेण फलेन युज्य त्म, र हि, ६७०, प्रजिताधिगमायः स मन्त्रिभियुँयुजेः (सङ्गतः), र ८, १७। सन् युयुचिति । •ते । यु योयुच्यते । योयोक्ति। युन, चु, प। संयमनम्। वस्वनम्। चुन्नाः, वो। तन्दा। योज-यति । योजिति । प्रयोचीत्। योज यते। युक्ताः । व्युज्यः। युक्तः। युक्तिः। योजनम्। योगः। योत्रव्यः ! योज्यः। थोग्यः। युनन्नोति युङ्। युज्यत इति युक्, की १६५। प्रनु—प्रत्योगः। प्रश्नः। साचिगोऽनुयुद्धीतं, मनु ८, ७८ा व प्रक्षिः फ्रिंभयोगः ॥ ृ विवादः। ब्रसियुङ्तो, को २५५। पा संबस-क्त, प्रशंसा। तुरमानायुद्धन्, नम् । प्रायुक्ती दूतकसँणि, भ भारत । ११५। डट्—डट्योगः। उद्युक्ते, की २५५ १ - उप-- उपयोगः । ः सीगः । सेवा। उपयुङ्तो, पा १, ३,६४। षाड्गुखमुण्युद्धीत, मा २, ८३। नि, प्र-नियोगः। प्रेरणम्। प्रयङ्त्रों, पा १, ३, ६४। कार्ये गुक्सासमम तियोच्ये, कु रे १३। प्रराण्ययाने प्रिता मां प्रायुक्त्ता, भ ३, ५१। नियुक्तो

गुलाबाबायो नियोजयति रचकान्। यो नियोजिति सामन्तान् स्वयमानि युज्यते॥ अचि ४२० वि-वियोगः। प्रन्यः प्रायोवियुज्यते स्विते। सम्

युत्—(जुत्) स्वा, प्रा। दीसिः। युष्—दि, प्रा। सम्प्रहादः।

्युदम् । प्रभिभवेष्मा । सुध्यते । तुष्ट-घातम्युष्यतः भ ४, १०१। युष्यते चौर राजा (इन्ति) दुर्गी। को इंदरडेन युध्यति, इत्यादी युधमिच्छतीति काच् की १३७ । युयुषे । योदा । योत्यते। युत्तीष्ट ः चयुद्धः अयुत्तीसाताम् । ष्युक्षतः तेऽयुक्षताइवे, स १५,३५। युवलते। योयुध्यते। योयोदि। योध-यति । प्रययुक्षत् । एकः मतं योधयेत् प्राकारसः, मनु ७ ७४। योधयिषातिः संयाम राजानम्, भ १६, २८ । युद्धाः । • युध्य । युद्धम् । योधनम् । योधः । युष् । योजा । योज्ञ्यम् । नि नियु-हम्। बाहुयुदम्। प्रति-प्रतियुदम्। क्षणं भीयमिष्ट्रिं प्रतियोत्सामि मी २, ४॥ को दुर्खीयन प्रता प्रतियी-ध्यति रणे, भारताम क (क्षेत्र) क्री

मुक्-(पुन्स्)।

ग्रुष्—ग्रुषु, दि, प । विस्विधनम् । ग्रुष् 'जूष् भूष्' स्वा, प । वधः । श्रेष् (श्रेष्टुं) स्वा, पा, वी । यतुः । वीट्—'श्रीड्' स्वा, प । श्रीमः ।

TO LOTE AT WELL TO

रक्—ंचु⊭ पः। ख्वादः । राकवति । ्रच्—स्ता, पः। १पानसम् । 889 रम्ब

Latince at 1 ् रत्त्रणम्। अविनाधनम्। २ रोषः। ३ शंघानः । रचाति । प्रात्मानं रचेद्द्रारे-्रिषि धनैरपि, सनु ७, २१३। सर्व तात मन्त्रच सप्रतांच समोदर, भारत। < रच। रचितां। रचित्रति। त्ररचीत्। , अर्राच्छाम्। अर्राचषुः। रगेऽरचोट्रा-चमान्, म १५, ८७। कमेणि, रस्थते। चरित्रा कार्तस्या रच्यतास्त्रम्। दिर-चिक्ति। रार्क्वते । रार्रष्ट । रच-यति। प्रराचत्। रचिता। ०रस्य। रचितः। रज्यम्। रचा । रचाः। रख्—रङ्क् —(इ.खि.) स्वा, प । मति: । ा रम् रगे, स्वा, प। शक्का 🔭 🧟 रगति। रराग। रगिता। (ए) अर-बीत्। रमयति, घटादिः। रग, रघ (रक) चु, पा स्वाद:। प्राप्तः, वी।

रागयति, राघयति, वो। ्री राष्ट्र, रिम (असि) भ्वा पा । गतिः। .

रहर्—रचि, था, घा। मति: i

र इते। राष्ट्री। दारं रर इतुर्यास्यम् (परकोपटं चिनसम्), स १४, १४। रिष (पनि) चु, पा दीसिः। रक्षवित ।

रच-प्रदन्तः। चु, पा रचना।

प्रचयनम्। करणम्। रचयति। प्रर-रचत्। रचयति शयनम्, गीतमा ७, २३। मया रचितोऽच्चलि:, रामा। तैन परिचिती राजा, भ १२, ३७। विरचितानुक्षित्रेग, र ६, ७६।

रख् रन्स् था, दि, छ। १ रामः।

अनुरागः। आसक्तिः। ३ वर्णान्त्रोस्पा दनम्। रज्ति। । । ते, स्वा ६, ४, २६। रज्यता वते। चित्तं रजति नारीया ख्यं ता अनुरुखते, कवि २६०। । रह्या।

ररिद्धियं, ररेष्ट्य। ररुद्धे। रङ्जा। रङ्चाति। व्रते। व रच्यात्। रङ्गेष्ट। अराङ्गीत्। अराङ्काम्। अराङ्गः। धरङ्का । चरङ्घाताम्। चरङ्घत। कर्मणि, रज्यते। जिर्मित कर्मकर्त्ति, रक्वति । जी, या ३, १, ८० । रिर्ह्तत । वता रारच्यते। रारङ्क्षि। रच्च-यति। (सगरमची प्राखेटके) रजयति स्मम् (मार्यति), घटादिः । अन्यत्, रख्यित पचिषः। रख्यित स्मान हर्णदानेन, की १८६। रङ्का, रक्का, पाइ, ४, ३२ । ० रच्य । रता: । रता: ।

रचनम्। रागः। रंड्रबयम्। रजनः। रजनी। यनु—प्रनुरागः। स्नाह-भार्यायां योऽनुरच्येत कामतः, मनु र, १७३ । स्थिमन्बरज्यदतुषारकरः, सा ८, ७। यप-विरागः। उप-उप-

रामः। राच्यासः। वि-विश्वाः।

त्रट्-रठ्, स्वा, प। कथनम्। रटित । रठित । साधे मासि रटेन्सकः, स्मृतिः। रेराट। रेटतुः। कश्या

रेट्टः, भ १८, ५।, रिटता। परटीत्, पराटीत्। विशासाराटिषुः प्रिकाः, स ११, २७।

रण्—(प्रण्)स्वा, पं। प्रव्दः। र्यात। रराय। रेयतः। रियता। अरगौत्, अरागीत्। रिर्णिवति।

रंग्णते। रंग्णिट। ग्रामधित। अरो-रणत्, अर्राष्ट्रत् । रण् (कृष्) स्वा, प। गति:। रचति। रचयति, घटादिः।

्र्र् स्वा, प। विलेक्ष्यम्। मेदः।

्रदिति। रदिता। यदः । रदनः।

र्शनप्रात्तः। ३पाताः, यो। सट्रध्यः त। लिट्रस्स, पा ७, १,६१। रर-बतुः। रास्थिय। •राखा रास्थिन, घ्य। ररस्थिम, रेघा। बुट् रधिता, डा, पा ७, २, ४५। स्ट्रिष्यति, (त्यति। तुङ्गरधत्। पेङि तुम्। र नदितामिति ननोपः, की १४०। प्रस्तु, वो। कर्मणि, रध्यते। प्रस्या सन रिरधिवति, रिरत्मति। यङ् रारध्यते। रायद्वि। णिच्रस्थयति। प्ररस्थत्। रिधत्वा, रङ्गा। ० स्थ्यः। रङ्गाः रस्थनम्। रस्थः। रिधतुम्, रङ्गम्। पर्चरिं वित्यारेमे, संट, रंट। केस रेघिबान्। रेधिवान्।

रण्-भा, पा उत्ति:। रपति। रफ् रम्फ्, रिफ, स्वा, प्रा गतिः। बघः, वो। रफति। रम्कति। **'wia' L**

रभ्—स्वा, बा। राभसम्। डत्सकोमावः, दुर्गा। तिर्विचारप्र-हत्तिः, गोविन्दभृष्टः। रभते। रेभे। इस्याः। रम्स्यते। रसोष्ट्रा प्रस्थाः। प्रशासम्। घरपत्। कर्मण्, रभ्य-ते। परिवा, पा ७, १, ६३ । सन् रि-पाते, पा ७, ४, ५४। यङ् रास्थ्वते। रारकीति, रारब्धि, पा ७, १, ६२। णिच् रभावति। अररभात्, पा ७, १, १३। रब्याः १२स्य। रखः । रक्षणम्। रक्षः । रक्षो। रक्षम्। रब्धव्यम्। षा प्रारक्षः। सारब्धा बिबियदम्, स प्र, ३८। पेष्टुसारिक चितौ, स १५, ५८। परि-परिस्मः। प्रालि-इनम्। इमां जतां खत्यासिबुद्रा परिरम्मनः, र १३, ३२। सम् संबंधाः। विशेषाः।

्रम् – रसु, स्वा, पा। क्रीड़ा।

रमणम्। प्रासिक्तः। रसते। रेमे। संखीनां सध्यमता रेमे, कु १, २८। रन्ता। चंद्यते। दंतीष्ट्रा अरंद्धा अरं-साताम्। घरंततः व्यरंगीत्। व्यरं-सिष्टाम्। व्यर्गसमुः, पा ७, २, ७३ ह चरस्त नीती, भ १, २। मा रक्षाः जीवितन नः, भ ६, १५। रिरंसते। र्रम्यते । रंरन्ति । रमयति । घरोरमत् । कामपि रमयति - रामाम्, गीतगी १, ४६ । सन्धोगस्त्रे हचातुर्ध्ये राजानं रस-यासास सा, भारत। रत्वा। रसित्वा। रान्ता, दुर्गी। •रत्य। •रम्य। रतः। रतिः, पा६, ४, ३७, ३८। रमणम्। रामः। रमः। रन्तुम्। रन्तव्यम्। रमणीयम्। रमणः। पनुः प्रभिः, पा यासितः। प्रतीषु राजाऽभिरेमे, भ १, ८। पारमति, पा १, १, ८३। धारमन्तं परं सारे, भं ८, ५३। ७०-निव्वत्तिः। सरणम्। उपरमति। श्ते, पार, ३, ८४, ८५। खणारसी चिकी-वितात, नाव सेति खुणारस्त, स. ८, ५४, ५५। देवदत्तसुवरस्ति (डपर्-मयति), संचित्र। चणं पर्यारमत्त्रस दर्भनात्।(तुष्टिमानस्वत्), स प्, ५३। वि तिवृत्तिः। विश्वतिः। विद्यति। व्यवंसीत् सतासर्वेभ्यः, स ३,०२१ः। ः ।

रख्-रभ्-रवि, रभि (ववि)

भ्वा, आ। प्रब्दः। रिवि, रिवि, रिवि, रिवि, स्वा, प। शति:। रखते। रकाते। रखति, रुखति। रिखति, रिखति।

CRIMER TO THE LEGISLE. ः रय्—भ्वा, जा। गतिः। रयते।

रस्—(तुस्) स्वा, प। शब्दः।

्रसित। रसिल्त मधुरैः कग्छैः पततिणः, किव २०२। रसतु। रसना,०
गातगो १०, ६। ररास। रसतुः। प्रवृषं
ररास, र १६, ७८। रसता। रसिष्यति।
प्रसीत, प्रसारीत्। गोमायुसारकृगणा
भीममरासिषुः, भू १, २६। रिरसिषति। रारध्यति। रसित कोकिले,
मा ६, ७०। रस, भट्टनः। चु, प।
१ भास्तादनम्। रसेहनम्। रसयति।
रसयन्ति सुखायानि तत्करप्रतिपासितरः, किव २०२। घररसत्। रसितवती मद्यम्, मा १०, २०। रिरसथिषति भूष्यम्, मा १९, ११।

ं ब्रह्माओं हा प्रात्तिक प्रदल्तः।

चु, प। त्यांगः। रहति। राहयति। प्रशेरहत्। रह-प्रशेरहत्। रहयति। प्ररहत्। रह-यत्यापदुपेत मायतिः, भा २, १४। विरहयन् मलयाद्रिम्, र ८, २६। 'रहत्यविदुषां सङ्गं रहयत्यप्रियं सदा, कवि २६२।

रंड्—रिंड, स्ना, प्रा। गतिः। रंडिता ररंडा ररंडाश्वकुत्तरम्, स १४, ८५। धंडियिका रंड्यात्। धरं-डोत्। रडि (प्रजि) चु, प। दोप्तिः। रंडयिता रंड, पदन्तः। चु, प। गतिः। नंडयित, वो।

्र रा—घदा∞ प । १ दासम्।

्रेष्ट्रचम्, बी,। राति। न राति रोगिणेऽपर्यं वाञ्छतेऽपि भिष्ठकृतमः। भागवतम्। ररी। रीता। प्रसासीत्। राख्—(द्राख्) राघ् (द्राघ्)।

राज्—राजु, भ्वा, उ। दीप्तः।

शोभा। राजति। ०ते। ति दिव राजिस, गीतगी ४, १२। राजते भैभी सर्वाभरणभूषिता, भारत। रगान। रराजे। रेजे, पा ६, ४, १२४। तास्मी-त्पलानि रेजुः, भ २। राजिता। राजिष्यति। ०ते। घराजोत्। घराजिन् ष्ट। रिराजिषिति। ०ते। राराज्यते। राराष्टि। राजयति। घरगजत्। रा-जितः। राजनम्। राजा। राट्। वि— स्दोसिः। नभीगता देव्य द्व व्यरा-जन्, मा ३, ४३। निर्, षिच्—निर्म-व्हनम्। नीराजना।

ाध्—दि, प। संसिद्धः।

निष्यत्तिः। राघोऽकर्मकादेव म्यन्। राध्यतीदनः (सिध्यति)। साधाय राध्यति (क्षण्य दैवं पर्याकोचयति), की १३८। वाविरहस्ये सवसेकार्दाप यान् दृष्यते। याञ्चनानि च वाध्यति की ११8। रराध। रराधतुः। रराधिय। राजा। राष्ट्रं स्वा, प। निष्पाद-नम्। राष्ट्रीति बीदनम्, दुर्गी। रराध। रराधतुः। (हिंसायाम्) रेघतुः। रेघि-य, पा ६, ४, १२३। वानरा भूधरान रेष्ठः, भ १४, १८। राजा। रात्खति। परात्मीत्। श्रेराष्ट्राम्। श्ररात्सा। रिरात्सति। (चिंसायाम्) रित्सति, को २०३। राराध्यते। राराद्वि। विच् राधयति। अरीरधत्। अयं चुरादिय, को १३८। पाराध्य सपतीकः 'सरभः सुताम्, र १, ८२। राष्ट्रा । । राष्ट्रा राडि:। राधनम्। राड्म्। अप-अप-राय:। द्रोह:। प्रतिष्टाच (ग्रम । विका

यनस्त्रमपराध्यति, सा २, ११। स नापसभिति सिवानाम्, भारतः। यसि, या—त्राराधनाः। सेवाः। सुग्रे-राहाधयामसमुर्गुरुम्, र १, ५५। सन्नः सुखसाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशे-पन्नः, हितो। दस्यमाराध्यमानोऽपि कित्राति भवनवयम्, सु २, ४०। वि—प्रपकारः। द्रोष्ठः। विराष्ट्र एवं भवता विराष्ट्रा बष्टुधा च नः, मा २,

राम्—रास्—(णाष्ट्र) भ्वा, पा । मन्द्रः । राम्रवे । राम्रवे । रि—(पि) सु. पुन, समनसु ।

े रियति । रिराय । रिवैतः । रेखति । प्रदेवीत् । रिरीधति । रेरीयते ।

विक्-दिक्' (बज्र) था, या गतिः। दिक्-दिनि (प्रिंग) था, या गतिः। दिक्-दिनिर्, ब, उने विरेचनम्। ...

शुन्दीकरणम्। पीनःपुन्देन पुरीषी-क्सर्गः, दुर्गा। बट्रिएक्ति। रिङ्तः। रिचन्ति। रिपचि। रिङ्क्ते। रिचाते। रिक्ती रिपुर्यदाकान्ती धनैः, कवि ८८। रिश्वच्या जलघेस्तोयम्, अ .६, २६। निङ् रिच्यात्। रिच्चीत। निङ् ष्रारिणक्। प्ररिङ्ताम्। प्ररिञ्जन्। परिज्ञा। बिट्रिरिच। रिरिचे। बुट् रिका। ऌट्रेच्यति। •ते। लुङ् प्ररि-चत्, घरेचीत्। अरिचतास्, अरेकाम्। ष्रारचन्, धरेत्तुः। अरिता। अरिचा-ताम्। प्रिचता वर्मण, रिचते। परिच। सन् रिरिचति। •ते। यङ रेरिच्यते। रेरेति। णिच् रेचयति। श्ररीरिचत्। रिच, चु, प। १ वियो-

जनम्। श्रम्मार्कः। रेच्यति। रेचति।
रेत्राः। रेच्यति। कम्म्येष रेचति।
रेत्रांगति च यवारी स्थेचनान्यश्ववारिभः, कृति ८८। रिक्राः। रेच्यः।
रितः। रितिः। रेचनम्। रेकः। रेच्यः।
प्रति स्रितेकः। प्रतिग्रयः। स्थातः
एवातिरिच्यते हितो। स्रितः स्थितः
व्यतिर्च्यते ह्रीण चरितानि ते, र
१०,३१। उद् - उद्रेकः। वि- विरेकः।

्रिक् स्था, पान भक्तनम् । चन्नते, वी ।

्राहिक् ति । १ कल्यनम् ।

िसाघा।। श्युदम् । क्विन्दा ३ ४ हिंगा। पृद्धिम् । रिफतिन दिफतिन । विद्यु दिहित । यिशुं व विद्यानिकीरिङ्गि, सी १५१। अस्ति ।

रिभ्—स्या, पं । रवः । रेभति, वो । रिफ् (ऋफ्) रिज्ञ् रिर्वेट् (रज्य) १ रिफ्—(देश) तु, ष । विस्ता ।

रियति। दिरेशं। रिरियतः। रेष्टा। रेषति। प्रशिवत्। रिरिवति। रेरि स्रते। रेरेष्टि। रेशयति। प्ररोरि-यत्।

रिष्—(कष्, रुष्) भ्या, दि, ए।

हिंसा। रेषति। रिष्यति। दिरेष।
रिरिषतुः। रेषिता, रेष्ट्रा, पा ७, २, ४८। रेषिष्यति। प्रतिषेत्। दि, परिष्यते। परिष्यते। रेरिष्यते। रेरिष्यते। रेरिष्यते।

रिह्—(रिफ्) खा, प्र। वध:, वी।

री—रोड्, दि, पा। श्यवणम्।

ः चरणम्, वो। िरी, कारा, पं।

श्वतः। श्वकप्रब्दः। श्वपः, वो।
रोवते। रिणाति। रिराय। रियो।
रेता। रेवाति। वी। रोयात्। रेषीष्ट।
विरेषोत्। प्रदेष्ट। णिच् रेपयति, पा
७, श्, श्रूशात्, रीणः।

্ব ব

रीव् रीह, श्वा; छ। ग्रहणसंवस्थीः। द-वङ्, श्वा, खा। श्वातः।

र्शिमा। के, चटा, प। रवः। लट् रवते। रौति। रवौति। इतः। इवौतः। बवन्ति, पा ७, ३, ८८, ८५। लिङ् क्यात्, क्वीयात्। सङ् परीत्। पर-बीत्। लिट् बराव। बरविध। बनवि। क्रव्यामियं विवाः, भ १४, २१। सुद्ध रविता । इद्ध रविष्यति । व्हे । पाणिषि, रुयात्। रिवधीष्ट्रा, बुङ् त्ररावीत्। प्रराविष्टाम्। प्रराविषुः। परविष्ट। (रोता, रोखति, बरोधीत्, वो) । सन् कृष्यति। •ते। यङ् शेष-यते। चोरवीति। चोरोति। णिच् रावयति। अधीरवत्, पा ७, ४, ८०। रावयाचा सं स्रोकान् यत् तसादावण छचते, भारत। क्ला। क्ला। क्ला कृति:। रव:। रवज्रः। विद्राव:। संदाव:। ेंबा, वि—उच्चै.गब्दः । रोदः नम्। स्नाता विरोति ते, भ ५,५४। विरीर्मि शुन्धे, म १८, २८।

्रेच्—भ्या, पा। १दोतिः।

्रम्भिप्रीतिः। अन्यकर्तृकोऽभिकाषो वृत्तिः। देवदत्ताय रोचते सोदकः, पा १.४,३३। वृत्ते। रोचिता। अक्चत्। व्यरोचिष्ठ, पा १, ३, ८१। कृक्चिषते। वृरोचिषवे। यङ् निषेधः। पिच् रोच-

यति। वित । शक्ष्यत्। वता नारी-चयतासानम् भ ८, ६४। यदि वापं रोचयत गुरोः तेले, मनु २, २४३। रोचिता, कचिता। कचितः। रोच-नम्। कचिः। रोचना। रोकः। वि— दीप्तः। विकक्षे कक्षेष्टितभूमिषु, र ८,५१। व्यक्ष्यन् सुमुदाक्षराः, भ ८,

क्ज्-क्जी, तु, पं। भक्ष:।

रोग:। क्जिति रोगबीरस्य। नदी

क्किलि क्जिति, पा २, ३, ५४। तस्य

धर्मरते रोगा न क्जिन्ति प्रजामिष,

किव १८६। करोज। क्किजुईरिराचसाः,

म १४, ४८। रोजा। रोज्यति।

रावणस्थे रोज्यन्ति कपयो भौमिन
क्रिमाः भ ८, १२०। प्ररोज्योत्। धरी
क्राम्। धरीजः। क्विजितः रोक्ज्यते।

रोरोज्ञा। रोजयितः। सक्किल् क्विज्यते।

रोरोज्ञा। रोजयितः। सक्किल् क्विज्यते।

स्रोगः। रोजयितः। क्वा। क्वा।

रोगः। क्जा। रोगे। धर्मारस्यं विक्

जित गजः, प्रजी १, २१०। विक्रगोद
ग्रंथारायः कुल्थाः, मं ४, २५।

ु **ब**ट्, कई, खा, आ। १प्रतिचातः।

श्रीकादिना पतनम्। पुनर्छननम्,
दुगी। २दीसिः, बी। कट् (क्ष्) चु, प।
१रोषः। २दीसिः, बी। रोटते। रोठते,
बी। अकटत्। अरोटिष्ट, पा १,०३,
८१। रोटयति। कठ, खा, प। परिभाषणम्। कठ् (उठ्) खा, प। उपवातः। रोठति।

्र वर्ष्ट्—'क्ष्ड्' भा, प्र। स्तेयम्। ्र वर्ष्ट्—(बुंग्ड्) क्षड् (गुंग्ड्)। क्ष

रोरोत्ति। णिच् रोट्यति। अक्रद्रत। कदिला। क्षय। कदितः। रीदनम्। क्द्र:। अनु चीर्तः। अतिपङ्तिगैर-श्रोकामनुरीदितीव मान्, कु 8, १५.। ड्या-विलापः । श्रीकः । सुंसुद्दतीसुपा-बरोदेव तौरतरः, भ र, ४। प्र-

g. इट्रा भावे, कदाते। परोदि। कर-

दिवति, पार, २, ८। येड् रीवयति।

क्ष-दि, या। यभिनावः। •

डचेरोदनम्। राज्यस्यः प्रा**त्दस्**चैः, स

190,081

श्रयमनुपूर्वः प्रयुज्यते। दिधिरं, इ, छ। प्रावर्णम्। रोधः। सट् पंतुरुध्यते। चनुक्ञाल मा चनुगच्छन्तम्, वीर ६३ l कुनुह्नि, पा ३, १, ७८। सन्धः। सन्धन्ति। क्यत्सि। कस्ये। कस्याते। कस्यते। क्षां रीदमी की ची खवमें मनुक्थते, कवि २५३३ इणिधा सवितुमीगम, भ ६, ३५। यादवासीनिधीन् रसे वेलेव भवतः चमा,मा १, ५८। लिङ सस्यात्, बोट् रूपदु रिना रूपधानि। लङ्

घर्षत्। भरमाम्। अरुवान्। श्रक्षात्। अकण्धम्। ञ्रहण:। यह्य । यह साताम्। यह सत्। यह स किल स्त्री दल्पास्य क्रमासकराभ्यास, मा १०, ६०। लिट् तरीघ। तरीध्या कर्च। तमुदद्रन्तं पथि भीजकन्या वरोध राजन्यगणः, र अ ३५। लुट रोडा। लाट् रीत्स्वत्। ०ते । मानु-रोत्स्ये जगन्नस्मीम् (कामियिष्ये), भ .६, २३। प्राप्तिषि, कथात्। कत्-मोष्ट**। लुङ् यरधत्। यरौत्**मीत्। परीडाम्। प्ररीत्तुः। अत्रः। प्रत्-साताम्। अक्तसत्। अरीत्भीत् स पुरीविसाम, सा २, ३८। पुर नः परितोऽत्थत्, म १५,१०। कमीण, क्ष्यते। परोधि। सन् क्रूबिति। •ते। यङ् रोत्रध्यते। रोगीद्वि। णिच् रोधयति। श्रक्षवत्। रहा। • कथ्य। कन्नः। रोधनम्। रीधः। रीडा। रोडव्यम्। अनु-अनुदर्भनम्। यनुरोधीऽनुवर्त्तनसिखमरः। व्यमनु-बुध्यन्ते भवन्तोऽपि, श्रनर्घ ८। अव— चवरोध:। चवरणिं सां वंजम्, पा १, ४, ५१। शोकं चित्रमवीद्वत, भ ६,८। या-यात्रसम्। बस्ता सचमा-क्षात्, स १७. ४८। उप-निर्वेस्यः। निवारणम्। निवेधः। श्राच्छोदनम्। नागैरन्धानुपक्रोध ४, ५३। क्षकरीय सूर्य्यम्, र ७,३८। कासु-परीदं नाभ्युकाहे, र ६, २२४ नि— निरोध:। नियमनम्। न्यार्थसम्बद्ध पत्थानम्, सं १७, ४८। प्रति-प्रति-रोधः। वि-विरीधः। ग्रहेक्सम्। युतिस्मृतिविरोधे तु युतिरेव करो-थसी, सातिः। संग्-प्रतिबन्धः। प्रियः क्रनम्।

ब्य-(युपु) दि, प। विमी हनम्।

4.6

क्य-तु, पर्इननस्।

क्यति। क्रोग्रं। रोष्ट्रा। रोचिति। क्वचत्। क्वचिता रोक्यवे। रोरोष्टि। "क्य्-क्यि (स्रजि) चु, पादीप्तिः। क्ययति। क्यति।

क्ष्-(कष्) भैंग, प। हिंसा।

क्ष, दि, चु, प्रोषः। क्रीषः। शेषित । क्ष्यति, यस्मै क्ष्यति तस्यासी कुनमेवाभिरोषति, कवि ८६। ततो ऽक्ष्यदनदेच राविषः, स १७, ४०। वरोष। क्ष्यति । रोषिता, रोष्टा, पा ७, २, ४८। रोषिष्यति । यरोषीत्। दि, प्रवषत्। मा क्षीऽधुना, स १५, १६। योषुं सीऽप्यक्षच्छ्वोः, स १५, १२। क्वष्यति । क्रो०। रोक्ष्यते । रोरोष्टि । रोष्यति । ष्रक्ष्यत् । रोषित्वा, क्षितः। क्ष्यः, पा ७, २, २८। रोष्यम्। रोषः । क्ट।

कह-भ्या, प। १वीनजन्म।

जत्पत्तः। रप्रादुर्भावः। स्मूर्तिः।
रोहति। याद्यभुष्यते वीजं ताद्यग्
रोहति, मजु ६, १६। वरोह। ववहतुः। वरोहिष्य। रोढा। रोचति।
यवचत्। भावे, वद्यते। प्ररोहि।
ववचत्। रोवद्यते। रोरोढि। रोइयति। रोपयति, पा ७, ३, ४३। प्रवःचेषु देशेषु वचानरोपयन्, रामा।
कृद्या। वद्या। कृदः। कृदः। रोइयम्। रोइः। रोद्यम्। रोइणीयम्।
प्रावः, भा भू, १०६। ग्रीनमावरोद्याम-

साधनः, र ४, ७४। (चिच) पारीपचन्। धासञ्जनम्। धन् धारोपयाधन् । प्रविद्यादिषु, भ १४, ८। प्रव
— धवतरणम्। तीमवारोष्टयत् प्रवोम्,
र १, ५५। प्र— डत्पत्तः। न पर्वताग्रे
निलनो प्ररोष्टति, सच्च्छ १२३।
प्रति— चिच् प्रतिरोपणम्। श्रव्युतृबृख्यः
प्रतिरोपयन्, र १७, ४२। डत्खातान्
प्रतिरोपयन्, नवरत्नम् ८। दि, सम्—
धननम्। विकद्श्रष्यं गह्नरम्, र२, १६।
प्रेसदुमाः संवच्छः, म ११,५।

क्च — घदनः । चु, प । पार्षम् । घिष्मिभीभावः । क्चयित क्यः,दुर्गः । क्य — घदनः । चु, प । क्यकरणम् । क्यदर्भनम् । क्पयित । घनु — घनु-करणम् । नि — निक्यणम् । स्क्य-कथनम् । निर्णयः । निश्चयः । दर्भनम् । प्रय दायभागे निक्यते, दायभा २ । न च रामं न्यक्पयत्, भ १७, ६५ । इतस्तो निक्ययिदः भावकास्थीनि प्राप्तानि, दितो । वि — विक्यकरणम् ।

कष्—स्वा, ए। सूषणम्।

क्षति। क्ष्म, षदन्तः। चु, प, वी। विस्मुरणम्। क्ष्मयति। षदक्षत्। रेणुक्कषितः।

रेक्-रेक, श्वा, या। यदा।
रेक्-रेकृ (एजृ) श्वा, या। दीप्तः।
रेट्-रेटृ, श्वा, छ। कथनराचनयोः।
रेप्-(मेप्र) श्वा, या। मृतियव्हयोः।

रेभ्—रेस, स्वा, था। यण्टः। रेव्—'रेह' स्वा, थां। युतगतिः। रैष्—रेषृ। भ्वा, घा, वो। हक्तमब्दः। मध्यमब्दः, वो।रेषते।

रै—श्वा, पै। यव्दः। रायति । ररी । ररतुः । राता । रोड्—रोड्—रोट्—रोड्,

्भा, प । रजकादः । २भगादरः, वो। रोडति । रीडु, रीटु, वो । भा, प । पनादरः । रीडति । रीटति ।

(ল)

🖓 🗢 संक् — चु, प। पीस्तादनम्। 🧖

fight if the Larry

सत्त् चु, ज, वो। १८ भैनम्।

ज्ञानमा २ अङ्गम । चिक्रीकरणम्। ब्रच (प्रस) चु, शा। शालीचनम्। बचयति। •ते। चरितान्यस्य बचय्, भारत। बहुलचेश ता गा जचवामास, भारता न चीभावष्यनच्चेताम्, स १७, १०६। जचियता। । । अस्य। बचितः। बचणम्। बचणा। अनः। खन्धः । शा—प्रालोवनम् । ज्ञानम् । मदनम्बानेयसानच्यते, प्रकु ३, ४८। उप-जानम्। प्रतुभवः। सरयगुप-बचितं भवत्या, शक्तु, १, १८३। (विशे-ष्रयम्) वेशेरपलचितः। (लच्चया बोधः) काकेभ्यो रच्चतामबासित्यादी दध्युपचातवर्त्तृत्वेन म्बादिक्पलस्वते। वि—विस्रयः। विरुचित्रतस्रितसुधाः मुखाननः, बीतगी २, १८। सम् सम्यग्दृष्टिः। यशैचा। हेन्नः संब्र खते छानी विश्वविः स्वामिकापि का,

Fiber Internation

सन् — सङ्, सन्ति, भ्या, व । मतिः । सन् — सने, भ्या, प । सङ्कः ।

मेबनम्। जगति। इंसस्य प्रवासगिति स्रो, ने ३, ८। जजाग। लेगतः। लगिता। (ए) प्रवगीत्। जगयति, घटादिः। जग्, स्रु, पं, वी। १स्वादः। २ प्राप्तः। क्ष, जन्मः शंसती। प्रन्यतः स्रागतः।

बङ्ग समि, (प्रमि) स्ता, प्रमि

्रशतः। २ खन्नः, वो। नक्ति। ननकः। नक्ति।

बङ्ग्-बिन्न, भ्वा, पं। १योषणम्।

षलीकरणम्। २मृतिः, दुर्गा। लिखि,
भ्वा, या। १मृतिः। सङ्ग्तम्। २भीजननिवृत्तिः। उपवासः। सङ्गति। •ति।
नः सङ्गति युरोराक्षां न सङ्ग्यितः
यः स्थितिम्। यं व्याधिरितदीप्तार्ग्यं
कराविष न सङ्गति॥ स्विति ६७।
सस्द्रिष्ट। यंग्ये त्यसङ्गिष्ठः ग्रेसान्,
भ १५, ३२। सिस्ति इप्रति। •ते।
सासङ्गते। सासङ्घि। स्वि (सुप)
सु, प। १सङ्गम्। २दीप्तिः। सङ्ग्यति।
यसस्यति। स्वस्त्रम्। २दीप्तः। सङ्ग्यति।
अससङ्ग्रेन। मिरमसङ्घ्यत्, र ४,
५२। यशो भवद्गुक्तं इप्रतु ममोस्वतः, र ३, ४८। उद् वि—इक्कु-

जक् (जञ्कः)।

ie, 03 1

नम् । हेलोस्रास्त्रतवाहिनोपतिः। व्यज-

क्ष्यं गोष्यदवत् ससुद्रम्, सद्दीना ५,

बज् - बज्, श्रीवजी, पीलप्जी।

त्, (सा, वो), पां सळा। बीड़ा। सजती सळाते। सळाते न रसना तद,

ने भा ११७। सेजा समजी। सेजि-·रें जो वार्तिताः, असे रुष्ठ, १ • ५ l सजिता। संक्तिता। धनजिष्टा, घस-जिए। जानयति। ज्ञायति। जञ् (माल) चु, प। अपवारणम्। लाजयति। ब्रिक्तिता। व्यक्ता। स्वयंनः। स्विक्तितः मिति लजाग्रव्हानारकादिलादितच्। विगलितन जिति जयदेवकाविप्रयोगस्त दु:साध्यः, गीतगो १,,३२। जीविताः स्मीति बिज्जितित रघी १२,७५। कर्त्तरि क इति संज्ञनाधी ऋसपि विल्यम्। सा चीरक पढ़ंतं वसां ल ज्ययन्ती न ल जिता, बीर ६६ । ल्ला।

्रात् **बज्**बद्धास्त्रिक्ता, पार्

्रभनिनम्। २ भस्तिनम्, वो । सनिति। क क्वांता कि (क्वप) चु, पा दीप्तिः। सञ्चयति। सज, सञ्ज, घटन्ती। चु, प। दोति:। सजयति। सञ्जयति।

कट्-धा, प। १वास्थिम्।

ुव्यामोदः। २ कथनम्। सटित। MIST SE LESTING FORTH

मेड्-ध्या, पाविकासः।

्र जंडति इनयोरेकत्वसरणात् चलति इति खाम्यादयः, की ५५। विजननित भनेस्तृप्ताः, कवि १८४। **लला**ड। खंडितार अलडोत्, शबाडीत्। विच् खंडयति जिहाम्। जिह्नोनायने घटादि:। उचात्र्यनं चापनम्। जिह्ना धन्देन षष्ठातत्पुरुषः खतीयातत्पुष्वो वा, नड्यात निद्वया, की देश वोष देशमते, वह, भा, प। १ पोडिती-भागः। २३त्विसोभावः। १ जिह्या

, जिह्ना । अंबर्डात जिह्नां सर्पेः, दुर्गा। विच् संख्याति। संख्यति लच-मुझलटत्यमून् (पीड़यति)। कपाटची-मिन्दु: विरणलक्रीसुक्रनयति (इत्-चिपात), धनघं ५१। कैनासगिरि-स्वालयति (चानयति), प्रन्यं १९०। तावत् खरः प्रखरसञ्जलयाञ्चकार (उत्-पचात, सा ५, ७। खड्, चु, प। १डपसेवा। चलान्तपाननम्। नम् १ २कम्पनम् । चाड्यति । चाच-यति। लालयत्यखिलाः प्रजाः, कवि १०३। जालयेत् पञ्चवर्षाण प्रवम्। वालकसुपलालयन्, शकु ७, ८८। लड्, चुं, या। १६ मा । २ सामः। साडयते। संड, साड, प्रदन्ती। चु, प। याचेपः। बड्यति। बाड्यति। बर्क् विडि (प्रोविडि) हु, प । चत्चेपणम्। सण्डयति। सण्डति। (घो) ह्राच्छित:। खच्छ्य:, दुर्गी। खाँड, चु, प्रावी । अधनम्। अख्यति। लक्ति। ः सप् (रप) स्वा, प। कथनम्। १८४। लगरे, मकु ५, ८। बनाय।

बंग्

व्यापारः। सङ्ति सता वायुगा। सङ्ति

् लपति, लपति झिम्धया वाचा, कवि स्पेपतुः। सीपथा। सपिता। सपि-श्रात । प्रल्योत्, प्रलायोत्। प्रवाः विष्टाम्।) प्रजाविषुः। जिल्पिषति। बालप्यते। जानप्ति। बापयति। चलीलपत्, चललापत्, दुर्गा। सपिता। ०लाय। लिपतः। लपनम्। यनु सुहुर्भोवणम् । श्रेष्ठ क्रवः। अपनानाम । पाण्डुताम्, ्ते १, १५ । अभि ÷ श्रीनंत्।घः । मनस सङ्ख्याति वाचीऽभिन्यति, स्वृतिः रे श्रान्तायः। प्रन्यसायः। प्रसप्तयः त्येष वैधेयः, श्रक्त २, ३८। वि निवस्यः। परिटेवनम्। पत्नो किसपति कर्णम्, रता १, ७। बह्ने विससाय सः, भ ६, ११। १४, १०१। सम् सियो-भाष्यम्।

सम्बद्धसम्बद्धाः स्वा, प्राप्ताः । जाम:। लमते, बभतेऽधं ततो भूमिम, कवि २०८१ पुतं सभस्तासगुणानुद् पम्, र ५, ३४ । लीभे । सब्धा। सपाते । लेपाष्ट्र। प्रसन्धाः प्रतपाताम्। चलपता चोऽलब्ध ब्रह्मणः यस्त्रम् भ १५, ८६। कर्मणि, सभ्यते। प्रसन्धिः घनाभि, पा ७, १, ६८। यन् निपते, पा ७, ४, ५४। इतां लिपामहे, भ ७, दि । यङ जार्जभ्यते । नानभोति, पा ७, १, ६४। नानस्य। लक्षपति। प्रजलकात्। वसीिण, प्रजिक्षा, बनाभि, पा ७, १, इट। सन्धा। ं लभ्य । जन्म । जन्म । जन्म नम्। बाभ:। पालभा:। विप्रज्ञाः। सुलभः। क्रथः। बालकाः। (हुं) जब्भिमः। (व्) सभा। विच्, सभयिता। सभितः। संभागम्। श्रा—सार्थः। है हिंसा। गामासभ्य विश्वध्यति, मनु ११, २०२। गावसालेभिरे घटः, भ १४, ८१। गामालमेत पालभगा गीः, पा ७, १, हेप्। उपा-मत्सनम्। उचैव्यानेस स के कयोम, भ ३,३०। समा संग्री:। चतुर्तेपनम्। समाले भे र प्रमुखेपन क्षतम्), भ १४, ६२। उप जाभः। छपलिक्यः। शनुभवः। न चोपलेभे बिक्तिं प्रवाया, सं ३, २७। उपल्या विद्या, पा ७, १६ ६६ । विप्र—विष्र बसा: । प्रतारणा है कि कि कि कि

सम्ब्रम् सिव (श्रवि) स्वा, श्रा। १ गब्दः १ • २ प्रवसंसनम्। लखनम्। लख्ते। सलको। सकिता। सक्षिययते। प्रस-खिष्ट। अस्विविवाताम्। अस्विविवत् निर्वास्वयते। लालस्वाते। नासम्प्ति। लक्षयति। प्राललक्षत्। 🚁 की लब्बयेदाहरणाय हस्तम्, र ६, ७५। लिख्ता। •सम्बा। सम्बितः। सम्ब नम् । अव—अवलम्बनम्। आव्ययः । ययौ तदोयासवलम्बा चार्डुलिस्, 🕻 ३, ३५। जनस्वासवलस्वते, स १८, ४१। प्रा–मालस्वनम्। प्राययः। बादानम्। बालकस्वे महास्राणि, भ १४, ८५। नालम्बते दैष्टिकताम्, मा २, ८६। वि-विलम्बं:। विलम्बंते, विडस्तते। प्रभातकत्यां रजनीं व्यड-स्वयत् (घनुचकार), इति पदीपः। विङ्ख्यन्तं शितिवाससस्तत्तम्, मा 🍇 the (private) tradeprimeria

सम्भ सिन्निः सा, यो । यदः । सय्—(रय) भ्वा, पा। मितः । सर्वे (सर्वे) भ्वा, पा गितः । सर्वे सुरुषा। सन्, पदन्तः ।

ा चुन् प, वो । ईप्सा । प्राप्तु सिच्छा । ज्ञाजयते । सज्यति । सज् (लङ्) । सर्ग, सर्प् (कस्) ।

सष्टा। सर्वति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। स्वयति। स्वयति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। श्री। स्वयति। स्वरी। स्वयति। स्वरी। स्वयति। स्वरी।

ष्रभिनाषः। सामना। प्रभिन्यति साधूनामुद्यं सर्वेतीद्यः। साधनोकोऽपि नि:सीमं तस्याभिन्यते प्रियम्॥ कवि २२५। तेन दत्तमभिनेषुरक्रना-सुखासवम्, र १८, १२। सा ८, ५१।

लस्∸स्वा, पा१ क्षेत्रणम्।

२ क्रीड़ा। क्रमित। खकाम। चेमतुः। क्रमिष्यति। प्रजमीत्, प्रजामीत्। बम्, क्रम् खल्, चु, प। प्रिल्ययोगः। क्रास्यम्। जामयति। जामयन्ति रमाभिन्ना यस्यापे भरतीयमाः, क्रावि १८५। क्राय्यति, जापयति, (वो)। बामित्वा। क्रमितः। इद्यु-छन्नामः। इषेः। स्मूर्त्तः। णिन्-छन्नामनम्। छन्नास्य कावतरवानम्। परस्ररोन्नामितग्रष्य-पन्नवे, न १, ६८। वि-विजामः। क्रोडा। स्मूर्त्तः। विजमित इसी, क्रम्दो २२, १। इतस्ततो विजमित्त स्पिमानुरागाः (प्रमरन्ति), का ४, २९। प्रमर्त्ति), का ४, २९। प्रमर्त्ति, मा १५, १४। विज्ञामः। विज्ञामी।

सा। प्रदा, प्रा, १ दानम् ।

ं र प्रणम्। साति। सेखो । खतुः खडुान्, स १४, ३२। चाता । खास्यति चलाग्रीत्। जना स्टाम्। वियहतां प्रतिमनाचीत्, स १५, ५३।

्रवाख्—(द्राख्) साव् (द्राव्)।

साज्—साञ्च, साजि, भा, प्र। १मर्कनर्म्। २ अर्जनम्। प्रावाविश्रेषः।

शानति। साम्नति।सानाः।

साञ्च्—साहि (सक्) थ्वा, प।

सम्बन्। चित्रीकरचम्। साञ्कृति।

मचाञ्छ। समाञ्छतुः। साञ्छितम् साञ्छनम्।

্লাঙ্(অঙ্)। ।

लाभ—घटन्तः। चु, प। प्रेरणम्। लिख्—तु, प। श्रचरित्वासः।

लेखनम्। चित्रोकरणम्। स्व निकृति। सिकृति यदि प्रारदा सर्वेतास सिति पुष्पदन्तः। निकाधिनीस ग्रहिमित्तकाविष, नै १, ३८। सि

लिलेखा सिलिखतु:। सिलेखिय जिलिखिया सिलेख भेमी नखनेष नौमि:, नै ६, ६३। सुट् बेखिता

खद् सेखियति। सिखियतीति मेचित्र मारे। सुङ् मसेखीत्। मसेखिष्टाम् मलेखिषुः। सूप्ती दिवसिकासेखीतः १५, २२। कमीण सिख्यते। मसेखि

मन् बिलिखिषति, विवेखिषति पा १, २, २६। यङ् बेबिखते। पि त्रेखयति। भूजीनिखत्। विविव वेखिता। • विख्या विवितः। बेर

नम्, लिखनम्। लेखः। खेखकः लिखितव्यम्,। लिखनीयम्, लेखनीयम् लिख्यम्, खेंच्यम्। प्रयं विभाषः कुटादिः, दुर्गः। टनादी बहुत्तीर्मा

भंगनामः । श्रामि, शा—कर्षणम् चित्रीकरणम्। स्ट्रयवज्ञमीऽभिणि रतिपतिव्यपदेशीनापस्तुतः, रता ८८। रतिव्यपदेशीन सागरिकामा

खित, रद्वा २, २६। छट्- उम्रेख कर्षणम्। मेदः। श्रीभनापः। मिर खुराग्रेः समुक्तिखन्, कु १, ५९ मास्यच्यतियोनासुक्तेखनसकुर्वाणो

फलभाग् भवेत्, स्मृतिः। वि—विखे ह्रम्। कर्षणम्। चिद्रीकरणम्। पार्

विजित्तेख पौठम्, र क्षेत्र ११। वा

ं सिप्

स्तस्थोपरि स्थिला चचा निमपि विनि-खतु, डितो।

लिङ्क-लिखि, स्वा, म, वो। गतिः।

निङ्क-निग (श्राग) भा, प। गति:। लिगि, चु,प। चित्रीकरणम्। निक्रयति। निक्रति। निक्रयति गन्द स्त्रीपुंतपुंसकै: ग्राब्टिकः, दुर्गा। श्रा-यानिकृतम्। लच्मीमानिकृति से हाद य:। पालिक्रयति रक्षांग्रजालेख मणि-कुडियम्, कवि २४१। पालिलिङ्गः यीवितः, म १४, १२।

लिप्-तु, छ। उपदेहः। वृद्धिः।

सियनम् । सिम्पति । ०ते,पा ७,१,६८ । निमातीव तमोऽङ्गानि, मुच्छ २७। रस्येर्जिस्पेत वर्णकेस्तम्, स १८, ११। न सां कामीणि जिम्मन्ति, गी ४,४। लिलेप। लिलिपतुः। निनिपे। चन्द-नेन जिलेप सः, भ १४, ८४। जेमा। लेफाति। ॰ते। निष्यात्। निष्पीष्ट। श्रानिपत्। श्रानिपतः। अनिप्त, पाः १५३, ५४। प्रतिपेताम् अविषाताम्। प्रनिपन्तः। प्रनिप्सतः। तस्यानिषत शोकाग्नि: स्वान्तं काष्ठमिव प्रवत्नुः। श्रातिप्रेवानिल: गीत:, स ६,२२। कर्माण, लिप्यते। अलेपि। लिप्यते न स पापेन, गी ५, ८। लिलिए मति। जी। सीलि-प्यते। बेबेसि। बेपयति। अनीनि-पत्। लिप्तुः। ॰ लिप्य। लिप्तः। लेप-नम्। लेपः। लेसुम्। अव – भवलेपः। गर्व:। भागेव भूति हि नामाविष्यते, वीर ४१। या, उप, वि लीपनम्। बोद्यधीभि: प्ररीरमालियन्, भ १५, १०६। युचि देशै मोमयेनीपलेपयेत्,

मनु ३, २०६। व्यक्तिपच गन्धे:, म ३, २०।

तिश्रुटि, प्रा। प्रस्वीभावः।

निया, तु, ए। यति:। नियती-। सियति। सिसेग। निसिये। सेष्टा। लेचात। •ते। विद्यात्। विद्योष्ट। म्बिचत्। चलिचतः। चलिचाताम्। सिनिचति। •ते। सेनियते। सेनेष्टि। लेशयति। प्रलीलियत्। लेगः।

तिष्- त्रदा, छ। श्राखादनम्।

सेहनम्। सट् सेढि। सीटः। सिड-न्ति। संदे। सिचे। सीद्वे। सेटि भेषजविव्यं यः प्रधानि, भ १८, ७। कोट् चेदु। कोढि। से चानि। कोढाम्। किङ् विद्यात्। विशेत्। या विद्या-द्वति:, सनु ७, २१। सङ् प्रसेट्। प्रलीठ । जिट् , जिलेइ । जिलिही लुट्ना चेढा । स्टर्ग स्टर्ग से साति। ंते। यागिष, सिद्यात्। निचीष्ट। लुङ् यसिचत्। प्रतिचतः। यस्रोठ। प्रजिज्ञाताम्। प्रविचन्तः। प्रविचा-विदि। सन् लिकिचिति। •ते। यङ् लेलिश्वते। लेलेडि। णिच लेड्यति। प्रजीलंडत्।। सीद्वा। श्रीक्षा। नीदः। लेक्नम्। ∵लेकः। ंलेक्कः। 'खेठव्यः। लिट्। अव अवलेह्नम्। मा-वैध-नम्। , सेनान्यमालोडमिवासुरास्त्रैः, र २, ३७।

बी-सीड़, दि, पा। सी, मा, पा

ऋषणम्। कीनभावः। सट् लीयते। जिनाति। जिनाति धर्म एवासी निन्द्र-यार्थेषु कीयते, कवि २६०। खत्याय

ं स्ती १५२ द्वदि नीयन्ते दिस्द्राष्ठी सनीरवाः,

हितो। खिट् खली। खिलाय, पा ६, १, ५१। जिल्लातुः। जिल्लिया, जिल्लीय, पाच्चे ललिय, ललाय। लिल्ये। सुट् लेता, जाता। जुट लिखति। ६ते। लास्यति। •ते। पाणिषि, लोयात्।

बेवोष्ट, बामीष्ट । लुङ् प्रसेवीत्। प्रजा-मीत्। प्रलेष्टाम् १ प्रजामिष्टाम्। प्रलेषुः। प्रलासिषुः। प्रलेष्ट्रा प्रलास्ता प्रले-वाताम्, प्रलामाताम्। प्रजीपत, प्रला-

मत। भावे, लोयते। प्रसायि। ध्वाङ्गः बिरसि लीयते, भ १८, १३। सन् क्लिबीवित। •ते। यङ् खेलीयते।

सेल्योति। लेलेति। (सन् (सेइद्रवे) विस्तानयति विसाययति विसासयति विलापयति वा इतम्। लीइं विला-प्रयति । असतुः विसाययति, की १८४।

पा ७, ३, ३८। पूजासिसववस्रनेषु चात्मनेपदम्, पा १, ३,७। जटासि-र्जापयते(पूजामधिगच्छति)। खेनो वर्त्तिका-

मुक्षापयते(श्रीभभवति)। वासकमुक्कापयते (बच्चयति)। जी, चु, पा द्रवीकरणम्। लाययति । लयति । विलयत्यवलानाञ्च हृद्यं मदनव्यया, कवि १८६। खेता।

बिचति। सीला। • साय, • सीय। लोनः । लयनम्, लानम् । लयः, लायः ।

बीतुम्, "खातुम्। बेता, खाता। बीतव्यम्, बातव्यम्। पप-न्यग्भावनम्। न्यक्-कर्त्वम्। अवस्वययमानः । शतुन्, स ८,

88 ह उद्(णिच् घा)प्रतारणम्। घसिभवः। पूजा। नि पतनम्। निलिखे मूर्भि राष्ट्री देखा, स १४, ७६ 🕅 प्र-षदर्भनम्। सह मेघेन तहित् प्रसीयते, कु ४, ३३।

वि-प्रवाधः। स्रोपवाम्। न भुवि व्यकौ-, यत (नातिष्ठत्), मार, १२। (णिच)।

द्रवीकरणम्।

सुच्च — सुन्य, सुन्य, भ्वा, प ।

ाम वर्

षपनयनम्। भपसार्णम्। उत्पादः नम्। लुचिति। लुलुच। केमान् लुल्चः, भ ३, २२। लुचिता। लुचियति। त्रलुचीत्। प्रलुचिष्टाम्। पल्चीत कर्णनासिकम्, सं१५, ५७। ल्चिता, लुचिता, पा १, २, २। लुचितः। • सुक्।

जुष्ड्—सुनि (कुप) चु, प। दीप्ति:। ं लुद्धायति। लुजि, चु, प। (तुजि)। [°]लुट्—भ्वा, दि, प्। १विडोड्नम्। सोटनम्। सम्बन्धीभावः, वो। तुर (क्ट) भ्वा. भा। १प्रतिघातः। १ दीप्तिः, वो। लोटति। ०ते। तुव्यति। तुव्यति भूमी, भ १८, ११। लुखन् स्राको भुवि, भ र , १२ । जुलोट । जुल्टे। सोटिता। सोटिष्यति। वते। प्रसी-टोत्। प्रबुटत्। प्रकोटिष्ट। दि, प्रबु-टत्। लुट्(कुष) चु, प। दीप्तः। लुट, चु, प। सञ्चर्षनम्। लोटयति। यतु-लुटत्। लुव्यत्यद्दालकान् दुर्गान् कव-चानि च लोटति। रिपूणां लोटर-त्याजी कुन्तराणां घटाच यः॥ कवि

लुठ्—ं(उठ्) भ्वा, प। उपचातः।

With the second

नुड् (क्ड) स्वा, आ। प्रतिघात:। पत-नम्। विचेष्टनम्। स्रोठति। ०ते। काचित् कार्थ्ये न कीठति, कवि ४६। लुलोठ। लुलुठे, लुलुठे पुष्पकादरे, स १४, ५४, ३०। चोडिता। चोडि-स्रोठिषोष्ट । र्ष्यात । , ०ते । जुळात् । बनोठीत्। बनुठत्। बनोठिष्ट, बनो र्गठष्ठ भूपष्टे, भ १५,५६। अस्य रहसा भाषिनोऽलुठन, भ १५, २५।

सुद्, तु, प्रम् संक्षेषणम्। सम्बन्धीभावः, दुर्गा। सुद्रित। मणिर्नुद्रित पादेषु, हिती। हागेऽयं हरिणाचीणां सुठति स्तनमण्डले, दर्पणः। • लुलोठ्। लुलुठिय। जुठिता। जुठिष्यति। अजुठीत्। अजु ठिष्टाम्। अजुठिषुः। जुठ्, चु, ए, वो। चौर्यम्। जोठेयति।

बुड्-भ्वा, प। विनोडनम्।

सम्यनम्। नीडिति। नुड्, तु, प, वी। १ मंवरणम्। २ श्लेष:। लुङ्ति। चुडिता । जाडता। जग्छ-लुटि (र्नाट) खा, प्रा

ु स्तियम्। सुगटति। सुगट्, चु, प, वो। १ पवज्ञा। २ चौर्यम्। जुग्टयति। सुग्रहि । दम्यनकारप्रक्रति: । ट्योगा-मुईन्यः। तेन खादिपचे यगादी तक्कोपे लुक्त दे दियोदासः। महिन

ाहा नुष्ठ् – सुष्ड्, सुडि, सुडि (बर)

^{गि} श्वा, प। १स्तेयम्। २गतिः। लुठि, अवा, पं। रचालस्यम्। २प्रतिचातः। ं चुंग्छति। चुंग्छति। चुंग्छ, नुग्छ, चु, प। स्तेयम्। यो नुग्छति परद्रव्यं र्माच्छरो च्यदयसी, कवि ४६। चुग्छयति, को १७२। लुग्डयति। जुरु सुधि (कुधि) स्वा, प।

ा १ हिंसा। २२ संक्षेत्रनम्। लुट्यति।

्र लुप्—लुपु (शुपु) दि, प।

🧈 विमोद्दनम्। स्याक्षलोकरणम्। श्राली-भावः, दुर्गा । • लुप्यति । पातुः लुष्यति लावण्यं नेत्राञ्चनपुटेन यः, जनवि ् १७३। न्नोपु िनोपिता । नोपियति । अनुपत्। अलीपीत्, वो। लुप्ल,

तु, छ। छेदनम्। उच्छेदनम्। स्रोपः। लुम्पति। ०ते, पा ७, ४, ५८। यो न लुम्पति पूर्वेषां स्थितिम्, कवि १७३। लुं नोप। लुलुपे। लोपा। लोपस्थति। ॰ ते। लुप्यात्। लुप्सीष्ट। श्रलुपत्। भलुप्त। भलुप्साताम्। भलुप्सत्।. कर्मणि, लुप्यते। अलोपि। तस्य मागो न सुप्यते, सनु ८, २, ११। तेषामेकः शिष्यते अन्धे लुप्यन्ते, या १, २, ६१। लुलुप्सति। •ते। यङ् (भावगङ्गिम्) कोनुप्यते, पा ३, १, ३८। नोनोसि। बोपयति। अनूनुपत्, अनुबोपत्। लुष्टा। • लुप्य। लुप्तः। स्रोपः। स्रोपः व्यम्। स्रोप्तम्। मांमान्धीष्ठावसोप्यानि, भ ५, १८। युवधैर्यं नीपिनं गुणीत्कर-मशुणीत, नै १, ४२।

नुम् स्वा, दि, प । गार्थ्यम्।

चाकाङ्गाः कोभः। बुभ्, तु, प। विमोचनम्। याकुलीक्रणम्। भ्वादे-राक्षतिगणलात्। चोभितः इत्यधाद्यः, की १४३। 'लोभति। लुभ्यति। लुभति। लुभत्यर्थे च कामे च धर्मे लुभ्यति यः सदा, कवि २६५ । लुलोस । जुलुमतुः। जुलोभिय। जुलुभिव। तथापि रासो लुलुभे सगाय, महाना। लोब्धा, स्रोभिता, पा ७, •२, ४८। नोभिष्यति। प्रजोभौत्। पनोभिष्टाम्। चनोसिषुः। दि, चलुभत्। लुल्भिष्ति, लुलो । लोलुभ्यते। लोलोब्य 🕨 लोभ-यति । चनुतुमत् । (विमोइने) तुभित्वा, नोभिला। नुभितः। विनुभिताः केयाः, प्रन्यव तुच्याः जुभित्वाः, जोभित्वाः। लुब्ध:। लुब्धवान्, एः, ७, २, ५४। बोभनम्। बोभः। बोध्ययम्, बोधि-तव्यम्। बोब्धा, बोिधता। बोब्धम,

खीमितुम्। लीभी। लीचनलीमनीया प्रस्थपङ्क्षिः, भ २, १३१ कुसुममिव लीभनीयं यीवनम्, प्रकु।

लुब्ब् लुबि (तुबि) स्वा, पा। श्रादेनम्। लुबि (तुबि) चु, प। १ श्रद-श्रीतम्। २ श्रदेनम्, वो। लुब्बति। लुब्ब-यति।

ज्लु (जुड्) भ्या, घा विजी डनेम्। चलनम्। लीजति। रोषी जीजति स्म वचनेषु बधूनाम्, मा १०, ३६। ता, जुलितम्। वनं जुलितपन्नवम्, भ ८, ५६। जुलिताङ्गरागः, र १६, ५८।

सुष्—भ्वा, प, वी। स्तेयम्। सुद्द्—भ्वा, प, वो। सिप्सा सोइति। सुलोइ। सोटा। अनुचत्। सू—सूञ्, क्राा, उ। स्टेदनम्।

बर् बुनाति, पा। बुनौतः। बुनन्ति। जुनीते। जुनाते। जुनते। जुनीहि चन्दनम्, मी १,५१। जिङ् जुनीयात्। लुनीत। ७७ प्रनुनात्। प्रजुनीत। ग्ररासनच्या मलुनाद विडीजमः, र ३, ५८। बिट् बुनाव। बुनविष। सुन्वे। नासां तस्या विवाद, भ ८, ८०। बुट् कविता। चृट् सविष्यति। ०ते। प्रा-शिषि, सूयात्। लिवषीष्ट। लुङ् प्रला-बीत्। प्रजाविष्टाम्। प्रजाविष्ठः। प्रज-विष्टं। प्रजविषाताम्। प्रजविषतः। क्षोक्तनलावीत्, भ २, ५३। कमीण, लूबते। प्रसावि। कंभेकत्तीर, प्रसाव। प्रजविष्ट विदार: खयमेव। सन् नुज्-षति। •ते। यक् जीजूयते। बोलोति। णिच् लावयति। प्रजीसवत्, पा ७, 8, ८०। जिलावेशिषति। जवित्वा। • जूय। जून:। जुनि:। स्वनम्।

लूषित । लूष्, चु, प । १ हिंसा । २ ही-यम् । लीप्-लीप्ट (मिर्प्ट) भ्वा, घा । गितः । लीप् (पैण) । लीर्क्-लोका, भ्वा, घा । दर्धनम् ।

लष्-(रूष्) भ्वा, प। भूषणम्।

लोकते। लुकोकी। लोकिता। प्रलोकिए। घोक, चु, प। दीप्तिः। लोकयति। घलुलोकत्। घन, घा—घालोकनम्। घालोकन्ते यमबला नालोकयन्ति यस ताः, कि २४८। घालोक्याचकुरिवादरेण, भ २। वि—विकोकनम्।
विलोकयन्यो वपुः (खार्थे पिच्),

र २, ११। जोच्-लोचृ, (जोक) भ्वा, मा। दर्भनम्। पर्यालोचनम्। प्रणिधा-

नम्। कोचते। खुकीचे। खोचिता।
भवोचिष्ट्र कोचृ (खोक्क) चु, प।
दौक्षः। कथनमिति रमानाथः। कोचयति। प्रजुकोचत्, पा ७, १, २।
प्रा—भावोचनम्। प्राकोचते सदा
नौतिमालोचयित सत्क्रियाम्, कवि

हि (ख्यकविवर-

र्समीपं गताः, हिती। षानीचयनौ विस्तारमधासाम्, भ ७, ४०। दृषः पूर्वं मवानुनोचे, भ १, २३। चेमङ्कराणि कार्य्याणि पर्यानोचयताम्,भ ६, १०५।

समा—समाबोचनम्। बोड्—बोद्—बोड्—(रोड्) स्वा, प।

२४८। इत्यालीच

्र जन्मादः। स्रोडितः। स्रोटितः। स्रोडितः। ति, वो।

् लोष्ट्—(गोष्ट) म्वा, पा। सङ्घातः। ि राश्रीकरणम्। स्रोष्ट्रते। लुलोष्टे।

स्रोष्ट्रम्।

्र स्थी च्यो — क्या, प्रवी । सेष्ट्रपम्। स्थीनाति । स्थिनाति । स्थी, क्या, प्रवी । नितः । स्थिनाति । स्थीनातीस्प्रिष्

वच्-स्वा, पा१ कीपः। ए मङ्गातः। वख्-वङ्ग्-विख (उख) स्वा, पा। गितः। वंखित। ववखतः। वङ्गति। वङ्ग-विका, स्वा, स्वा। १ कीटिच्यम्। वक्षीकरणम्, दुर्गी। वक्षीकरणम्, दुर्गी। वक्षीकरणम्, दुर्गी। वक्षीकरणम्, दुर्गी। वक्षीकरणम्, विष्टिः। विक्षितः। विवद्धः। स्विक्षितः। वक्षीः। स्वाः, वी। वक्षीः। विवद्धः। विक्षितः। वक्षीः। वक्षिः। वक्षीः। वक्षीः। वक्षीः। वक्षीः। वक्षीः। वक्षिः। वक्षि

. वच् - प्रदा, प। परिभाषणम्। वार्यनम्। लट् विज्ञा। वताः * *ग्रय-सन्तिपरी न प्रयुज्यते, बहुवचनपर इत्यन्ये। भित्रपर इत्यपरे, की १२०, । विता अन्यवचनस्थानं भिधानमा चचते इति प्रदीपः । ब्राचि । वक्षः । वच्मि । हितं सिंदञ्च यो विता, कवि ८४। कोट वजा। वजाम्। * * विष्या लिख वचात्। लङ् अवक्। अवकाम्। लिट् ६,१,१७, जचतुः। जचुः। **डवाच,** पा **उवचिथ, उवक्थ । ज**िच्व । दशसूद्वानं वर्षः, भ ५, ७६ । जुट वता। खट् वचाति। प्राधिष, उचा-त्। जुङ् प्रवोचत्, पा ७, ४, २० ा भवोत्रत्तम्, र १०४२ । विदादी

ब्रुधातीरात्मनेपरे, जरे । वस्यते । वसीष्ट्रा कर्मणि, उचाते। अवाचि। एतद-दैकानां युगमुचाते, मनु १, ७१ । प्रहें-युनाध्य चितिपः श्रभंयुक्ते वचः, १, २०। सन् विवचति । यङ् वावचते।। वाविता । णिच् वाचयति । प्रवीवचत् । वच, चु. घ । परिभाषणम् । वाचनम्। पाठः । सन्देशः । खस्तिवाचनम् । वाच यति। वचिताः न वचत्यन्द्रतं वचः। नानादेशसम्दभूतां वाचयत्यखिलां लिपिम्, कवि ८४। ववाच । ववचतुः । वता । प्रवाचीत्। प्रयं सेट् इति भट-मझः। विपानवाचयन् (स्वस्तिका मने कारितवन्तः), भ १७, ११ वयनीय-मबीवचत्, स ६, ४६ । उत्ता १ • उच । उताः । उताः। वचनम्। वाकः। वत्तुम् । वत्त्रव्यम् । वचनीयम् । वाच्यम्। वता। वाक्। वचः। अचिवाम्। प्रमु-चान:। णिच, वाचियत्वा। •वाच्य। वाचितः। वाचनम्। वाचकः। वाच यिता। अनुः - प्रनुकादः। निर्- निर्- निर्- निर्-कति:। व्याख्या । प्रनेक्यनम्। वर्षे नम्। प्रति-प्रतिवचनम्।

वज्—भ्या, पं। गमनम्।

वजति । ववाज । ववजतः । वेजतु-रिति चान्द्राः । वजिताः । स्थवजीत्, प्रवाजीत् । वज्, चु, पः । १ संस्करणम् । २ गतिः । पंचादिनाः वगणसंस्कार इति प्राचाः । मार्गणसंस्कारयोरिति के वित् ॥ वाजयति पचैकीणं कारण्डकारः, दुर्गाः ॥

वश्-वन्तु (चन्तु) स्वा, प

मृतिः। वस्ति। वस्ति। वस्तिः च मरसर्वः मृत्यो दिस् तद्गुणाः, कि १७८ । वनस्र । ववसुरास्वाचितिम्, भ १४, ७४ । वस्ति। वस्तिष्कि । वस्ति ॥ वण्ट्

अवृञ्चीत्। अविञ्चिष्टाम्। विविञ्चिषति। विग्र्-विज्-विज्, स्वा, सा। १ वग्रहनम्। ्वनीवचाते, पा ७, ४, ८४। वनीवङ् ति। वनीवतः। वच्चयति। पहिं वच-यति (परिचरति)। वन्चु, च्, आ। विवलकाः। प्रतारणम्। वञ्चना। वञ्च-यते॥ सृष्टीस्वामववद्यन्त, भ १५,१५। विचला, विचला, पा १, २, २४। चित्र् वञ्चयिता । वञ्चनम्। वञ्चना । वञ्चयितव्यम् । वञ्चनीयम् । ना वस्तीयाः प्रभवीऽनुजीविभः, भा १, ४ । (इ) विच्चिता, वक्ता । वतः।

वट्-भ्वा, प। वेष्टनम्।

वैटति। ववाट। ववरतुः। वटिष्यति। भवटौत्, भवाटौत्। भयं वर्ग्योदिरपि। बटति। बेटतुः। बाटयति। परिभा-षणे घटादि:, वटयति। वट श्रदन्तः (वंच्ह्र)। वटः। वाटकः। वाटः। वटः। वटिका ।

बठ्-भ्वा, प। स्थील्बम्। सामव्यम्।

्रवण्—(पण) स्वा, प । प्रव्हः। ्वणति। ववाण। ववणतुः। प्रयं

वर्ग्यादिरपि। वेगतुः। विभिता। अवः णीत्, श्रवाणीत्। वाणयति। श्रवीव-खत्, पववाणत्।

विष्ट्-वटि, आ, चु, प।

विभाजनम्। वण्टनम्। वण्टति। इराटकं विग्राः, कवि ७५। वस्ट क्ति वण्टयति, वो। वट, वटि वण्ट श्रदन्तो । च, पाँ विभाजनम्। वग्टनम्। वट वेष्टनेऽपि, वो 🗠 वटयति । व गृहयति । वर्ष्टापयति। वर्ष्यक्तं च रहानि भूमि वयरापयन्ति च, कवि ७८। वार, वहि, खा, प्रां। विकच्या । सहार्य विना प्राचरणम्। प्रसद्धायः गमनम्। वग्रुते, की ५२। वर्ष्टते।

२ विष्टनम्। वण्डते। ववण्डे। विण्ड-ता। वांड, चु, प, वो। विभाग:। वग्डयति।

वद्—भ्वा, प । कायनम् ।

लट् वदति। सत्यं वदति अभवेत्र, कवि ८८। दीप्तिसान्वनज्ञानोत्साइ-विवादप्रार्थेनासु श्रात्मनपदम्, ३, ४७। प्रास्ते वदते (भासमानी ब्रवीति) (सम्यग्बीधपूर्वेकं वदति)। चेत्रे वदते (उसाइमाविस्तारोति)। बिट् डवाद। उवदिय। जदिव। जादे। सुट्वदिष्यति। ०ते। पाणिष्रि उद्यात्। वदिषोष्ट। जुङ् भवादोत्। यवादिष्टाम्। यवादिषुः, पा ७, २, ३। अवंदिष्ट। अवंदिषाताम्। अवंदि-षत। कर्माण, उदाते। भवादि। सन् .विवदिषति । ०ते । यङ् वा**वद्य**ते । वाविता णिच्वादयति। •ते। अवीः वदत्। •तः। (वादनम्) अवादयन् वेणुः स्टङ्कांस्यम्, अ ३, ३४। समेरीयावी-वदन् असाः, सः १५, ४। वादयते सृदुवेषुम्, गौतगो। वद्, चु, छ। चातानेपदौति केचित्। १ सन्देशवच-नम्। वयनम् वो। वोदयति। ०ते। वदति। ॰ते। सर्वस्य वदते हितम्। यस सत्यं न च हितं न वादयति तद्वः, कवि ८८। ववाद। ववदे। वदिता। वद्यात्। वदिषोष्ट। डदिला। • उद्या चदितः। इति:। वदनम्। वादः । वदः । वदितुम् । वदिता । वदौ । वादनः। वाद्यम्। धवद्यम्। प्रची द्यम् । स्वोद्यम् । त्रंप्रयंवदः। वावः दूक्षः। अनु । अनुवादाः। तिरमनु-

वदित गुक्तस्ते, र ५, ७४। चनुवदते कठ: कालापस्य, पा १, ३ ४८। उत्त-मनुवदति। घोषस्यान्ववदिष्टेव सङ्गा पूतकातीः पुरः, स ८, २८। अप-अप-वाद:। निन्दा। भ्रापवदति। •ते। द्यपवदते धनकामी न्यायम्, पा १, ३, ७३। नार्त्तीऽप्यपवदेत् विप्रान्, मनु ४, २७६। नुभ्योऽपवदमानस्य (कुप्य-तः), भ ८, ४५। श्री-- विच् श्री-वादनम्। पादग्रहणम्। प्रणामः। सर्वी-नभिवादये वः, शंकु ५, ७२। उप —सान्त्वना। प्रार्थना। प्रजोभनम्। भृत्यानुपवदते [सान्त्वयति]। परदारा-नुपबद्ते [प्रार्थयते प्रजोभयति वा], पा १, ३, ४७। काश्विकीपावदिष्ट. भ द, ३६ । प्रशिक्त प्रशिक्तादः। निन्दा। परिवदन्नन्यांसुष्टोः अयति 🔊 दुर्जनः, प्र-क्षथनम् । कोर्त्तनम्। विप्र-विरोधीतिः। प्रवाद:। वद्ति। ०ते, पा १, ३, ५०। प्रवदमानै-क्तां संयुक्तां राजसैः, भ ८, ३०। सम्प्र-सहीचारणम्। सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः। सम्प्रवद्गति खगाः, पा १, ३, ४८। तान् प्रत्यवादी-प्रति—प्रतिवचनम्। दश राघवोऽपि, स २, २८। वि--वि-वाद:। चेते विवदन्ते, पा १,३, ४०। उभी विवदेशातां स्त्रिया धने, मनु ८, १८१। केनचिद् व्यवदिष्ट न, भ ८, २८। सम्—संवादः। साष्ट्रश्यम्। षड्जसंवादिनी: केका:, र १, ४०। बाचिकषड़िकों न संवदेते इति भाष्यम्। विसम्-विमंबादः।

वस् (इन्)।। १९०५ ।।

वन् भवा, पु। समातिः। सेवा। ः वन् (ष्टन) स्वा, प। ग्रब्दः। वनु, स्वा,

पा १ व्यापृतिः। २ हिंसा। प्रयन्तं कायत् क्रियामानं • इत्यन्ये। वत्, तं, प्रमा । चान्द्रमते पग्सोपदी। याचनम्। वन्ता। चनोति। चनुते। ववान। ववन्तुः। ववने। वचने। वग्योदिरिप। वेनतः। विनिष्ठे इति चान्द्रः। वनिता। वनिष्ठा। वेनिष्ठे इति चान्द्रः। वनिता। वन्ष्यित। वत्र्यादिको वनुर्यटादिः। वन्यति, यान्यति। प्रमायति। वन्, चु, प, वो। १ छपन्वारः। २ यद्वा। ३ घातः। ४ प्रवद्रः। प्रयापः। वान्यति। वन्तः। अपवद्रः। प्रयापः। वान्यति। वन्तः। अपवद्रः। प्रयापः। वान्यति। वन्तः। वन्तः। वन्तः, व्या। वतः। वतः।

ः वस्य-वदि, भ्वा, प्रााप्तः

१ मिभिवादनम्। नमस्कारः। २ स्तुतिः। वन्दते। ववन्दे। वन्दिता। वन्दिषते। वन्दिषीष्टः। वन्दिषोष्ठा दिवोक्तमः, भ १८, २७। भवन्दिष्टः। भवन्दिषाताम्। भवन्दिषतः। विवन्दिषते। वावन्द्यते। वावन्ति। णिच् वन्द्यति। भववन्दित्। वन्दिता। वन्द्यः। वन्दितः। वन्दनम्। वन्दिकाः। वन्दो।

वन्दारः। वन्दा।

वय्— ड्वण, स्वा, डा १वणनम्।

चेत्रे वीजपचेपणम्। २गर्भाष्ट्रानम्।

तिषेतः। ३केदनम्। सुष्डनम्। वपति।

ते। केणान् वपति। यदि वपति

स्वाणः चेत्रमासाद्य वीजम्, खातः।

डवाण। जगतः। डवण्य, द्ववण्य।

जणे। वण्यति। जवार्षः। उवण्यत्। वत्
सीष्ट। अवाणसीत्। सवार्षः। अवण्यत्।

अवस्। अवण्यति। सवाणि। याद्यस्थति

वीजम्, सनु ८, ३६। विवण्यति।

वीजम्, सनु ८, ३६। विवण्यति।

यति। यवीवपत्। स्वा। • स्या। स्तः। स्तिः। वपनम्। वापः। (ह) अप्तमः। सन्तिः। वपनम्। वापः। (ह) अप्तमः। सन्तिः। वापो। वप्तयम्। वीकं न वप्तः। वापो। वप्तयम्। वीकं न वप्तः सन्त्रमः। दिल्याः। दिल्याः। निवपः सन्तारमञ्जरीः, सु ४, १८। यमायन्तं निव्वापः भ १४, द्रात्यमभ्यः परिनिर्ववप्ताः, भ ३, ४८। प्रत्मित्ववप्ताः, भ ३, ४०। प्रत्मित्ववप्ताः, भ ३, ४८। प्रत्मित्ववप्ताः। मिलं प्रत्यूपः पद्मरागिष्, र १०, २७। प्रत्युपः। प्राप्तिः। मीलं प्रत्यूपः पद्मरागिष्, र १०, २७। प्रत्युपः।

वय्

वस्य वस्र (श्रम्म) स्वा, पा गतिः । वस्य दुवस्, स्वा, पा ७द्गिरणम्।

वसनम्। वसति। फणी पीला चीरं वसति गरलम्। ववाम। वव-मतुः, पा ६, ४, १२६। भागहत्ती तु वेसत्रित्याद्यदीहृतम्। तद् भाषादी न दृष्टम्, की ८८। वर्तमतुः, वेसतुः, वो। विमू किंघरिमति चुक्ही, दुर्गी। विमिता। विभिष्यति। अवमीत्। अव-सिष्टाम् । प्रविमिष्ठः, रक्तमविमिष्ठभुष्ठिः, भ ११, ५३। विविधिषति । वंबस्यते। वैवन्ति। वसयति। वामयति। उदमन यति, घटादि:। (ड, वो) विमिला, वास्ता वास्तः। वास्तिः। भावार-श्रावी: श्वान्तम्, विमितम्। वमनम्। वसः। वामः। वसिः। (दु) वसप्रः। वसितव्यम्। उद्- उद्दमनम्। वय-नम्। सा वरावुद्ववास, र १२, ५ ।

वय्—(भय) स्तार्भा। गतिः। वयते। ववये। वयितासे। वर-भदन्तः। चु, प। ईप्सा। वरयति। कन्या वरयते रूपम्। वर्ष-भ्वा, श्वाधि दीप्तिः। वर्षते। वर्ष-भ्वाः। चु, प। १वर्षिक्या।

रद्धनम्। २ विस्तारः। वर्षनम्॥ ३ स्तुतिः। ४ उद्योगः, वो। ५ दीर्पनम्, वो। ५ दीर्पनम्, वो। ५ दीर्पनम्, वो। स्वर्षं वर्षयति। प्रतिमां वर्षं-यति। क्यां वर्षयति। तन्तुं वर्षयति (विस्तारयति)। इरिं वर्षयति (ख्ती-ति)। वर्षयति (उद्युक्ते दीप्यते वा), दुर्गा। वर्षयति (उद्युक्ते दीप्यते वा), दुर्गा। वर्षयति। व

वर्ष — चु, प। १क्टेटनम्।

न्द्रप्रणम् । वर्षयति । वर्षयस्यरिवी-राणां कान्वाः सूर्वानसाहिते, व्यादाः दर्गः। वर्षनं केद्वे इत्यमरः । अस्य वर्षन्ति वर्षाः

वर्ष स्वार्ण, वा। गतिः। वर्षः। निर्मारकः कार्यः । महत्तिः। - वर्षे निवर्षे अभाः भाः। सेष्ट्रवर्षः। - वर्षे (वर्षे)। विवर्षः।

वल्-वज्-स्वा, या। १संवरणम्।

रसच्चरणम्। वसते। वसते। वसते। वसतेइभिमुखं तथ, मा ६, ११। वस्तार्धाः
राधाम्। त्वदभिसरणरभवेन वसन्तो,
गोतगो १, २६, ६, ३। ईत्यादी
परस्रोपदम्पि। वस्ति। वस्ति।
परितृताः), सा ६, ३८। वस्ति।।
परितृताः। स्वस्तिष्ठाः।

145

[गण्डपंपः] •

णिच् वलयति, वालयति, घटादिः। क्षवलयं वलयन् मनदाववी, मा ६. ३। सम-संवलनम्। मित्रणम्। ऋषि-लिष: संविता विरेजिरे, मा १, २१। तिमिरसंवितिव दौतिः, भा प्र, ४८। विस्ति:। विस्ति:। वाल:। ·

वल्ल्—चु, प। उतिः। वल्लयति। वला — (ग्राम) भ्वा, प। गतिः।

ञ्जतगतिरिति भट्टमन्नः। वस्मति। ववला। ववस्मुच पदातयः, भ १४, ८। विलाता। श्रवलीत्।

वला — बरुम्' स्वा, आ। भोजनम्। विख्युल, वस्त्रूल, अदन्ती । खु, पा

१ छेद:। २ पवित्रीकरणम्। वन्युन-यति। वत्युनयति। पत्युनयति, पत्यु-खरित, वो कि । महाह व क्षिप । अनि

INDIE THE SIE INCH TOWN वस् (बस्) वरह (बरह्)। ्रवा, बा, वा। ं व्याप्यदा, पा १ कान्तिः।

२इच्छा। स्पृहा। त्र्यं छान्दसः, की १२६। लट्वछि। उष्टः। उपन्ति। जयाय सेनांन्यसुमन्ति देवाः, कु ३, १५। हि, डड़ि। वमानि। लिङ् उप्यात्। श्रीष्टाम्। भौधन्। बङ् भवर्। श्रवसम्। बिट् डवास्। जसतुः। डव-शिथ। ऊथिव। लुट्वशिता। स्टर् वशिष्यति। श्राशिषि, उधात्। **लु**ड् अवशीत्, अवाशीत्। सन् विवशिषति। यङ् वावस्थते, पा ६, १, २। वावष्टि। णिच् वामयात । भवीवमत्। उमिला। • उम्म । जिम्रतः । जिष्टः । वमनम्। वार्थः। वश्चित्सम्। वर्षः। वर्षः। सद्योरः। म्डगोर।

वष्—(कष) खा, पं। हिंसा। वस्—भ्वा, प। निवासः।

ं सट्वसति। वसति वने वनमाली, गीतगो ५, ६। सिट् उवाम । जवृतुः, पा ८, ३, ६०। उवसिथ, उवस्य। उवा-स पर्णेशासायाम्, स ४, ७१ लुट् वस्ता। ऋट् वत्स्थ्लि, या ७, ४, ४८। स्टङ् अवस्यत्। आधिषि, उषात्। खुज् अवासीत्। अवासाम्। अवास्ः। भावे, उद्यते। अवासि। सन् विवत्-सति। यङ् वावस्यते। वावस्ति। णिच् वाभयति। ०ते । अवीव्सत्। ंत। यस्यां वासयते सीताम्, भ ८, ६४। उषित्वा, पा १,२,७। ॰ उष्य। राघवः प्रोष्य पापौयान्, स ५, ८१। तत्र तासुषिला रजनीं, भारत । उषितः, पा ७, २, ५२। डप्टि:। वसनम्। वासः। वस्तुम्। वस्तव्यम्। वस्तिः। यधि, यनु, या वासः। यधिष्ठानम्। यामसधिवसति, पा १, है, ४८। सदा-सनं गोत्रभिदाध्यवासीत्, भ १,३। दण्डकानध्यवत्तां यी, भ ५, ६। सी,ध्य-वासीच गां इतः, भे १५, ६८। शून्यमन्ववसद्दनम्, भ ५, ७५। ग्टंड-खात्रममावसेत्, मनु ३,२। उप-निवास:। भोजनहत्ति:। "उपवास:। ग्रामसुप्रवस्ति, पा १, ४, ४८। एका-दशोसुपवसन्ति निरस्तुभचाः। नि-निवास:। वनेषु वासते येषु निवसन्, भ ४, ८। निर्-णिच्-निर्वास-नम्। प्रवासनम्। प्र—विदेशाव-स्थानम्। प्रवासः। शिच्-निर्वासनम्। भूपतेरपि तथीः प्रवत्यतार्नेस्वयोद्दपरि-वार्ष्यविन्दवः, र ११,४। ताम् प्रवासः येद दण्डियला, मनु ८, १२३। प्रवा-

सयति यः ऋदः कुलं विदिवास, कवि १४। परि-क्त, पूर्यीषतम्। प्रति-निवाम:। तस्य कीटरे जरहवनामा ग्रञ्ज: प्रतिवमति, हितो। वि.—वाम:। णिच्-निर्वासनम्। पित्रा यौ क्या-्सिती, स्राध्य ३५। वस्, ऋदा, सा। पाच्छादनम्। परिधानम्। सट् वस्ते। वमाते। वसते। वस्ते। वस्ते। सिट् ववसे। वसनं ववसे, मा ८, ७५। सुट् विमिता। एटट् विभिष्यते। लुङ् प्व मिष्ट। मन् विविभिषते। यङ् वाव-खते। वावस्ति। वसित्वा। •वस्य। वसितम्। वसनम्। वस्त्रम्। वासः। वासींमि वसित्वा, भ ३, ४५। नि, वि-परिधानम्। निवध्यं साध्यम्, स ३, ४४। मनोरमे न व्यवमिष्ट वस्त्रे, भ , २०। निवासयति यश्चित्रं चीनां-ग्रकम्, कवि १४। वसु, दि, प। स्तमाः। दुर्गा। द्रपै:। नस्रतारहितोसावः, वस्यति। यो वस्यत्यस्यि, कवि १४। ववास । ववलतु:। प्रयं वर्ग्योदिरित्येके। वेमतुः। वसिष्यति। भवसत्। भव-सत्, भवसोत्, भवासीत् (वो)। वम, चु, प। १स्त्रेडः। प्रीतिः। २क्टेदः। व्यवहरणम्। ४वघः, दुर्गा। वाम-यति । भवीवसत्। वस्, भदन्तः। चु, प। निवश्सः। वस्यति।

वस्त - वष्त् - वक्ष् (कि। भ्वः, श्रा। गतिः । वस्तते । वष्तते । वक्षते । वस्त् - चु, श्रा। श्रदेनम् । वस्त्यते । वह्-भ्वा, छ । प्रापणम् ।

वहनम्। धारणम्। वायो गीतः। स्यन्दनम्। चर् वहति। ०ते। नदी वहति, कौ २४७१ तं जनमस्त्यमस्य वसुधे कथं वहसि, हितो। वहते विह-

तारातिबँ इरूपस्य यः श्रियम्, कवि २११। वीर भरं वहासुम्, भ ३, ५१। सिट् उवाइ। डवोढ। जहे, पा ६, १, २७। लुट् वोढा, _{पा} ३, १,१२। खट् वच्चति। •ते। शामिषि उद्यात्। वनीष्ट। जुङ् प्रवाचीत्। श्रवोढाम्। श्रवाचुः। श्रवोढ। श्रवः चाताम्। भवचत। भवादुम्। युवां भुवनस्य भारं दीर्भिःवादम्, भार, २०। वार्भीण, उद्यति। अवाहि। वसुधा तथोहे, भ २, १८। जिहिरे। सृधि मिडार्थाः, भ १४, ८१। सन् विवचति। •ते। यङ् वावद्यते। वावोदि। चित्र वाह्यति। अवीव हत्। चिप्रं वाह्य रथम । वाइये तरिम्, भारत । स वाह्यते राजपथ: शिवाभि:, १६, १२। जदा। उद्या जढ:। जढ:। वह-नम्। वाइ:। वीदम्। वीदा। वाही। वाइकः। •वाट्। वोढव्यम्। वाद्यम्। वद्यम्। वहति मलयसमोरे, गीतगो ५, २। यति—णिच्—यतिवादनम्। नर-पतिरतिवा इयाम्बभूव तियामाम्, र ८, ७०। अप- उत्सारणम्। अपोवाह वासीsæा मार्तः, भारत। श्रा—उत्पाद-नम्। धान्यं शाक्य वासांसि गुरवे (दस्वा) प्रीतिमावहैत्, मनु २, २४६। **खद्-विवाह:। धारणम्। उ**हहेत विजो भाष्यीम्, मनु ३, ४। उद्द-कोकतितयेन, भा १०, ३६। उदहन् परिष्ठं गुरुम्, भ ८, ७। तमुद्र इन् धरणिधरेन्द्रगौरवम्, भागवतम्। निर्-निर्वोद्य:। उति निर्वेद्यति, र, ही, द, ७५। नगाधिराजल निर्वोद्धम्, कु, टी १, २। सर्वधा सत्यवचने देही स निवंहित्, सागवतटीका ८, १८,३२। प्र-वहनम्। प्रवाहः । गस्रोराः प्राव-

ૄ ામલ્પમાં ુ

इसदाः, स १७, ६३। वि—विवादः। व्यूहर्वना। चम् व्यूदां दुपदपुत्रेण, गो १, ३। सम्—णिष्—संवाहनम्। प्रक्रमर्दनम्। संवाह्यामि चरणी, यक्ष ३, १२८।

धह (बंह)।

वा — प्रदा, प्रा श्वातः ।

वायोगैति:। रहिंसा। अयं वन्योदिस। चट वाति। वातः। वान्ति। न वाति वायुस्तत्पार्खे, कु २, ३५। वाति वातः पुरे यस्य तावस्यावेण भीतवत, कवि २१४। वासि वात यतः कान्ता, महाना ४, २८। खङ् घवात्। ष्रवाताम्। ष्रवान्, ष्रवुः। वायवी-उबान सुदु:सडा:, भ १७,८। बिट् वबी। ववतुः। वविद्य, ववाद्य। वविद। बुट् वाता। खट् वास्त्रति। बुङ् प्रवा-सीत्। प्रवासिष्टाम्। वायवीऽवा-विषु भौमाः, भ १५, २६। सन् विवा-सति। वा, चु, प। १ सुखाप्तिः। २ गति:। ३ सेवा। वापयति। प्रवीवपत्। बाला। •वाय। वातः। वनितः। वानम्। वायुः। पा—समन्ततो वायुसञ्चलः नम्। भाववृत्यवी घोराः, १४, ८७। निर्-निर्वाणम्। श्रीतन्त-त्वम्। निर्वृति:। निर्वाणी सुनिवः प्रा-दो निर्वातस्त गतेऽनिले इत्यमरः। तस्य वपुर्जलार्द्रपवने ने निर्ववी, मा १, ६५। निरवात क्रगानु:, राघ-वर्षा ८, ४२। दीपनिर्वोपकोऽन्धः खात, स्रति:।

वाङ् — काचि (काचि) स्वा, प। प्राकाङ्का। वाङ्गित। वाङ्क् — वाङ्गि, स्वा, प। वाञ्का। इच्छा। वाञ्केति। ववाञ्का वृवा-

च्छतः। वाञ्छिता। धवाञ्छीत्। धवा-च्छिष्टाम्। वाञ्छिता। वाञ्छा। वाञ्छा। वाञ्छितः। वाञ्छनम्। वाञ्छा। वाञ्छ-नौयम्। समवाञ्छताधिषः, स १७, धूद्व। न राति रोगिषेऽपेष्यं वाञ्छतेऽपि सिषकासः, स्मृतिः।

वाड् (वाड्)।

वात—श्रद्गतः। चुः, पः। १गतिः। २सेवा। १सुखम्। वातयति। श्रववा-तत्। गतिसुखमिति रमानायः। वातयति पान्यं वातः।

वाध् (बाध्) बाहत् (हत्)। बाग्—वास्, वास्र, वास्र, दि, चा।

यन्दः। तिरसां यन्दः। दन्त्यान्तोऽय-मणि, दुर्गा। वाखते। वाखते। ववाधि। ववाधिरे धिवाः, भ १४, १४। क्रूरा ध्वाङ्वा ववाधिरे, भ १४, ७६। वाधिता। वाधिष्यते। धवाधिष्ट। विवाधिषते। वावाखते। वावाष्टि। वाध्यति। अव-वाधत्। उद्—धाङ्कानम्। उद्वाखीमानः पितरम्, भ ३, ३२।

वास - घटनतः। चु, प। छपसेवा।
गुणान्तराधानम्। वासयति वस्तः
चन्दनः। प्रश्वदासयति व्रजन् दय-दियः कस्तूरिकासीरभैः, कवि १४।
छिदे चन्दनतम् बीस्यति सुंखं कुठा-रस्यः हितो।

वाइ —वाह (जेह) था, था। प्रयतः।

वाहते। वर्धाद्य। वाहते। वाहते वाहिनों हन्तुं वाहुभ्यामाहवेषु यः, कवि २११। वयाहे। वाहिता। चथीन् वाह्याच्रक्तः (व्यापारितवन्तः), भ १४, २३। ता. (प्रतिज्ञास्थययोः) वाढम्। चन्यत्र वाहितम्, पा ७, २, १८।

विच्-विचिर्, ह्वा, वी, क, छ। ु पृथक्करणम्। ृवेवेक्ति। ,वेविको। • विनित्ता। विङ्त्ते। वेवेति वेदान्तं यास्त्राभ्यापेन पर्वदा। विविन्ति च गत्गामाजी समहनच यः, वावि . १ई४ । अविवेक्। अविविता। अविनक्। षविङ्का। विवेच। विविचे। योधान् भौवितेन विवेच, भू १४, १०३। विक्ता। वैद्यति। •ति भिवचत्, अवैद्यीत्। प्रविज्ञा। विविचिति । ०ते। वेविचिते। वैविता। वैचयति। प्रवीवचत्। वि-प्रथकरणम्। विवेचना। विविनचिम दिव: सुरान्, भ ६, ३६। धर्माधर्मी व्यवेचयत्, मनु १, २६। विक्-तु, प। गमनम्। विञ्चायति। •ते, वो, पा २, १, ३८। विच्छति, वो। यत्र विच्छति तद्व्यूइ:। यत विच्छायति । स्वयम्, कवि १२०। विच्छायाञ्चकार । विविच्छ, पा ३, १, ३। विच्छायिता, विच्छिता। विक्, (क्पप) चु, प। दीप्तः। विच्छ यति । विज्—विजिर्, हां, उ। प्रशंभाव:। वैविक्ति। वैविक्तः। वैविज्ञति। वैविक्ते। वैविजाते। वैविजते। वैविज्यात्। वैविजीत। भवेवेक्। भवेविकाम्। भवे-ैं सट् वेति। वित्तः। विद्निता विति विज्ञः। १ विवेज। विवेजिय, वित्य:। वित्य। विद्या विदः। विद्यः ११३। विविजे। विका। वेद्यति। पचे वेद। विदतुः। विदुः। वेस ॰ते । प्रविज्ञत, प्रवैचीत्। विविच्चति। विद्यु:। विद। वेद। विद्व। विद ॰ते। विविज्यते। विवित्ता। वेजयति। पा ३, ४, ८३। तस्य ताइका. वेर् षवीविज्ञत्। विजी, तु, पा। प्राय-विक्रमम्, भ ५, ३४। सर्वे भवा णायस्तपूर्वः प्रयुज्यते। पो विजी, वेद, र २, ४३। लोट् वेत्तु। वित्ताम् क, पा १भयम्। उद्देग:। २ चलनम्। विदन्तु। पचे विदाइरोतु। विदाइ ष्टिजते।विनित्ता।विङ्ताः। विञ्जन्ति। ताम्। विदाङ्गवैन्तु, पा ३, १, ४१ विङ्भि। प्रविनक्। प्रविङ्-विदाद्विन्तु रामस्य वत्तम्, म ताम्। पविञ्चन्। विवेज। विविजे। १६। बिङ् विद्यात्। बिङ् प्रवेत्

विविजिय । विजिता, या, १, २, विजिष्यति। । वि। पविजीत्। प्रा जिष्ट। यसाम्रोदविजिष्ठाः, स ६, ६८ भावे, विन्यते। स्रवेजि। विविजिषित ०ते। विजित्वा। ०विज्य। (१) विग्नः। विक्तिः। वेजनम्। वेग विजितुम्। विजितव्यम्। वेजनीयः मनो नोद्दिजतै यस्य। उद्दिनिता संसारात्, कांवि १८८। विट्—स्वा, ए। १ यब्दः। २ आक्रीयः। याक्रोयवाची पोष्ठग्रादि शित मा वादय:। दन्खादिरिति वोपदेवादाः वैटति। विवेट। वैटिता। भवेटीव वेट:। विट:। विटप:। विड्—भ्वा, प, वो। प्राक्रीय:। विडम्ब-घदन्तः। चु, प्र। भनुकरणम्। विङ्ग्वयति विङ्ग्वयः शितिवाससस्तनुम्। मा १,६। (वि-वित्त- घटनाः । चु, प, वो। त्यागः। विष्—विष्, विष्, वेष्, स्वा, पा याचनम्। विधते। विधते। 'विध वेधते।

विद्—ग्रदा, पा ज्ञानम्। बीधः।

जातम्। संवित्ते, की २४६। संवि-

दते। संविद्रते, पा ७, १,७। के न

संविद्रते वायो मैंनाकाद्रि यथा सखा,

भ ८, १७। संवित्तः सहयुध्वानी तच्छित्तां,

खरद्रपणी (सक्तमं कला द्वाताने पद्भा),

म ५, १०।
 विद्, दि, घा। विद्यमानता। सत्ता।
विद्यते। खर्गे विद्यख्न, भ २०, ३३।
विविदे। वेता। वेत्यते। वित्योष्ट।
पवित्त। प्रवित्यातम्। प्रवित्यते।
विवित्यते। का, विद्रम् । विद्रन्द्रतु, ७।
जामः। प्राप्तिः। ज्ञानम्। विन्दति।
०ते, पा ७, १, ५८। मीता संस्वर्तारं
न .विन्दति, जत्तर २३०। विन्देम
देवतां वाचम्, जत्तर १। नचत्रैविन्दते
दियः, भारता विवेद। विविदे।
व्याप्रमुखादिमत्तेऽयं सेट्र, चान्द्रादिमतेऽनिट्, की ३१। वेदिता, वेता।
विद्यात्। वेदिवीष्ट। वित्योह। प्रवि-

दत्। भवेदिष्टा अविसाः विविद् दिष्ठति। ते। विविद्धाति। ते। विदिली, विवाः। वित्तं अनप्रतीतयोः। भन्यत्र विवाः, पा ८, २, ५८। विविदिवान्, विविद्वान्, पा ७, २, ६८। प्रधि— प्रधिवेदनम्। प्रधिकविवाष्टः। नि—' पिष्ण्, निवेदनम्। छत्याः। देखं राज्यञ्च तसौ न्यवेदम्त, र १५, ७०। निर्—निर्वेदः। भात्मावज्ञा। निर्वेदा, नै, ३, १२४। परि—प्रविदेतम्। स्थेष्ठवर्जे दार्शाननाभः। दाराज्ञि-कोत्रसंयोगं ज्ञकते योऽयजे स्थिते। प्रवेता स विज्ञेयः परिविश्वस्तु

विद्, क, भा। विचारणम्। मोमांसा ।
विक्ते। विन्द्रते। विन्द्रते। विन्द्रते। विन्द्रते। विन्द्रते। विन्द्रते। विन्द्रते। प्रविन्द्राताम् ।
प्रविन्द्रते। प्रविन्तः। प्रविन्द्राताम् ।
प्रविन्द्रतः। विविद्रे। वेत्ताः त्रा, विन्द्रः,
विन्तः, पा ८, २, ५६ । विद्रः, पु, भा। उ, वो। १चेतनम्। ज्ञानम्। ३ प्राच्याः नम्। ३ वासः। ४ खेळेम्, वो। ५ व्यथाः दुर्गा। वेद्यति। ४ खेळेम्, वो। ५ व्यथाः दुर्गा। वेद्यति। विन्ते प्रविद्रते। विन्ते प्रमुख्याः विद्रति। विन्ते प्रमुख्याः स्ति स्ति। विन्ते प्रमुख्याः स्ति स्ति। प्रविन्ते ।

विध्—तु, प्रविधानस्।

रिक्ट्रिकरणम्। विधितिच्छिट्रिती विक्रे इत्यमरः। कर्णवेधः, दुर्गाः विक्रिति ह विवेध। वेधिता। बेधिष्यति है प्रवे-धीत्। विधित्वा, वेधित्वा। विधितः। वेधनम्। वेधः। विधिः। वेधाः। विध् (विथ्)।

विष् चु, प, वो। चेष:। विज् तु, प, वो। भाच्छादनम्। परिधानम्। भेदनमिति प्रदोक्तः।

विष् ् [गणंदपेषः] वीन् 8 3 8 विनति। विवेता विकाता प्रवेतीत्। — हा, ख। पा, वो। व्याप्तिः। वैवेहि। विज्ञ, चु, प। पेदनम्। वेजयति। विविष्ट:। वैविष्ति। वैविष्टे। वेवेष्टि विसम्। विसः। विष्टपं सर्वे की सिं येख, कवि १८१। विश् कतु, प। प्रवेशः। विविधात्। विविधीत। हि, विविद्धि। ु अन्तर्गमनम्। विगति। विवेशा। भवेवेट्। भवेविष्टाम्। भवेविषु:। भवे-विविश्रतुः। विवेशिष्य। विवेश कथित्त-विषम्।, प्रविविष्ट। विवेष। विषा पोवनम्, कु ५, ३०। वेष्टा। वेच्यति। अविषत्। (अविचत्, वो)। अविचत। ग्रविचत्। चिवर्नत् सदः, स ११, ४५। षविचाताम्, पा ७, ३, ७२। पवि-विविचति। वेविश्यते। वेवेष्टि। वेश-चन्त। विष:। वेष:। परिवेष:। वेषो यति। प्रवीविश्वत्। विद्या। • विश्व। मट:। विष्णुः। परि-षिच, परिवेद-विष्ट:। विष्टि:। वैशनम्। वेष्टमुम्। वेष्ट-णम्। अवाद्ययममप्रेणम्। विष्टनम्। व्यम्। पा-प्रवेशः। गौरीगुरी गृहर-उपनीय मांसानि परिवेषयेत, मन मानिवेश, र २, ६। उप-उपवेशः a, २२८। विष—क्रा, पा विषयोगः। नम्। उपाविचदधान्तिके, भ विश्वेष:। विष्णाति। विष्णीयात। 24, द। नि—प्रवेश:। धवस्थानम्। णिच् विश्वाति विषवत् प्रांगानसी, कवि —स्विवेधनम्। स्थापनम्। निवि-१८१। इ. विषाण। प्रविष्णात्। श्रते, पा १, ३, १७। रामशानां न्यवि-विष्क्—चु, पा। हिंसा। विष्क्रयते। ्चत, भ ४, २८। निवेधयामास सैन्धं ं विष्क्र, घटन्तः । 😷 . प । दर्धनम् । नर्मदारोधसि, र.५, ४२। निवेशया-विष्क्रयति। वेच वेच विष्क इत्यपि मास सक्ष किरेकान् नामाचगणीव, केचित्। " कु 3, २०। प्रभिनि—प्रभिनिवेशः। समोनिवेधः। निर—निर्वेधः। उप-वी - चदा, प । 🛚 १ गमनम् । भोग:। क्रीड़ारसं निर्विधतीव बाख्ये, ् २ व्याप्तिः। ३ इच्छा। ४ चे वणम्। क्का १, २८। परि—्षिच्, परिवेश-५ खादनम्। ६ मर्भग्रहणम्। वैति। नम्। प्रवाद्युपममप्रवाम्। वेष्टनम्। वीत:। वियन्ति। वियन्ति बीरमन्तानं म-प्रविध:। स वहद्गुनान्तरं प्रविध्य, वडी यस्य कुनाङ्गना, कवि १८८। हि, र ३, ५६। सम्-संवेध:। निद्राः। वोदि। वीयात्। चवत। चवौताम्। संविष्ट: कुश्रययने नियां निनाय, र पविषन्। पञ्चन् इत्येकी। विवास। र, ८५। क्रमेण सप्ता सन् संविवेश. विव्यतः। वेता। बेच्चति। प्रवेषीत्। ₹ € 381 पवैष्टाम्। पवैषु:। विवीषति। वेवी विष्-विषु (जिषु) भ्वा, प। यते। वेवधीति। वेविति। वाष्ट्रणति े सेचनम्। वर्षेणम्। वैषति। विवेष। वापयति वा गां सुरोवातः (गर्भे विवेषिय। विविषिव। वेष्टा। वेच्यति। याच्यति), या ३, १, ४५। प्रविचत्। विविचति। वैविष्यते। 🦠 ्र बीज् स्वा, घृ । १गति:। वेवे छ। बैषयति चनीविषत्। वेषित्वा, विष्टा। विष्टः। वेषणम्। विषक् ्रकुतानम्। वीजते। नायं वहसमातः।

वीज, बदन्तः। चु, प। वीजनम्। वायुसञ्चाननम्। वीजयित । तं वीज-याम पर्नोः, ने ३, २२। वीज्यते स संसुप्तश्चामरैः, जु २, ६२। सख्यो मकु-न्तनां वीजयतः। मजु

वीर—घटन्तः। चु, पा, वेश ग्रीर्थम्। उद्यमः। वीरयते। घिन-वीरते। वुद्ध-वुगि (जुगि) भ्वा, प। त्यागः। वुद्ध (विद्धः)।

ह्य हज्, भ्वा, स्वा, क्या, वो, छ। वरणम्। प्रार्थना। हञ्, स्वा, छ। षावरणम्। रोधः। दृङ्, क्राः, द्याः। समाताः। सेवा। लट्वरति। •ते। हणोति। हणुते। हणाति, वो। हणीते। व्रणते विसृष्यकारिणं सम्पदः, भा २, ३। हि, वणु, वणोहि। वणुया-द्दत्वजम्, मनु ७, ७८। व्हङ् चहणीत्। प्रवृत्ता प्रवृत्तात्। प्रवृत्तीतः। हणीते-उध्वरे। तेत्रोभि जंगदाहणोति, वरति ज्ञातीन् ययार्डे धंनै:। सत्कीर्त्ताष वृणाति यो वरयति चेमं यशो बीयते। युद्धे वारयति दियो निवरते नित्यं प्रियोपद्रवस् ॥ कवि ११। सिट् ववार । वब्रतः। ववरिष्य, की १४६। वहव। वब्रे। वहषे। वहबहै, पा ७, २, १३। ववार रामस्य वनप्रयाणम्, भ ३, ६। यदेव वब्रे तदपखदाच्चतम्, र ३,६। बुट् वरीता, वरिता। खट् वरीखति। कते। वरिष्यति। वते, पा ७, २, ३८। चाश्रिषि, वियात्। वरिषोष्ट, दृषोष्ट, पा ७, २, ३८। बुङ् पवारीत्। प्रवा-रिष्टाम्। प्रवारिषु:। प्रवरिष्ट:, प्रव रीष्टा पहत् पा ७, २, ४२। कर्माच, ब्रिवते। प्रवादि । प्रवादिवाताम्।

ष्यवरीवाताम्, प्रवरिवाताम्, प्रह्नवा-ताम्। सन् विवरीषति। •ते। विव-रिषति। •ते। वुवृषैति। •ते, पा ७, • २, ४१। ७, १, १०२। यह विवीयते। क्येवूर्थिते। वर्वत्ति। णिच् वारयति। प्रवीवरत्। हुज्, चु, छ। प, वी ११ चावरणम्। २वारणम्। वारयति। •ते। यवेभ्यो गां वारयति, पा १, ४, २७। प्रविधन्तं नं कसिदवाग्यत्, भारत। इत्वा। इत्य। इतः। इतिः। वर्णमः। वारः। वरः। वरीतमः, वरि-तुम्। गिच् वारयित्वा। • वार्य। वारितः। वारगम्। वार्यितम्। हतस्व पालेसमितै: (विष्टित:), भ ५, १०। बप-गोपनम्। विदू-प्रणवार्थः, रहार, १७३। चा—चावरणम्। गीप-नम्। रोधः। चावरीतुमिवाकार्यं वरितु वीनिवोखितम्, भू८, २४। प्रा-परिधानम्। प्राबुदृषु स्रीगाजि-नम्, भ ५, ४८। नि—चित्र, निदा-रणम्, निर्-निर्देतिः । वि-विष-र्षम्। व्याख्यानम्। प्रकाशनम्। विद्य-खती ग्रेनसुतापि भावम्, कु ३, ६८। धम् स्तं विद्यखते, ने १, २७। परि-वेष्टनम्। प्रति—निवारणम्। निषेधः। सम्—संवरणम्। योपनम्। निरोधः। संवृशिषो सर्वं ग्रवोः पुराक्रमम्, भ ट, २७। चंतुवूर्षु: स्वमान्तम्, भे ८, २६ ।

वक्—(कुक) स्वा, था। धादानम्। वर्कते। हकः। वर्करः। वर्क्च—स्वा, था। वरणम्। वृष्कते। वृच्—वृष्की, कं, पं, वो। श्वतिः। श्वजंतम्, दुर्गी। वृष्कि। वर्षिता। वृज्—वृक्षी, घरा, था। कं, प्। वि परित्यागः। विज्ञ देखि (हजी) सदा, मा।

परि.

बावर्जितसम्बद्ध, र १, ६३।

वर्जनम्। हर्जते। वहन्ते। हिन्तिता। हण्-हण्, त, न, वो। भन्नणम्। हणोति। हण्ते। वर्णीति। वर्णुते। हण्(एण्) तु, पा प्रीणनम्। हणति। ववर्णा वहणे। वर्णिता। (गु) वर्णिता,

हेत् - हतु, भ्वा, भा। वर्तनम्।

वला भगना ने ।

खितिः। विद्यमानता। वर्तते।
वहते। वहतिषे। निर्वाण मिज्या वहते,
भ २, १७। पितरि वहतिरे क्रियाः
र १२, १६। वर्त्तिता। वर्त्तिष्वते।
वर्ष्ट्रिति पा ७, २, ५८। इयं वर्त्तिः
धते यमः, भ १६, १७। भविष्ट्रित।
पवर्त्स्यत्। वर्त्तिषाताम्। भवित्तिः
पति भावे, इत्यते। भवित्ते। विव-

क्तिषर्त । विद्यस्ति, पा १, ३, ८२। सीतान्तिके विद्वत्सन्, स ८, ६०। यङ वरीव्रत्यते । वर्वतीति, वरिव्रतीति, वरीवृतीति। वर्विर्ज्ञ, वरिवर्ज्जि, वरी-वॉर्त्ता णिच् वर्त्तवति। प्रवीष्टतत्, भववर्त्तत्। वृतु, चु, प। दीक्षिः। वर्त्तयति । वर्त्ति । श्यापनम् । श्याबः नम्। करणम्। ३जीवनम्। जीविका। ४ वर्णनम्। एते कविसम्प्रदायप्रयुक्ता प्रयी षिजन्तस्य इते चेंया: । (उ)वित्तित्वा। इत्ता। ॰ दृत्य। द्वत्तः। द्वतिः। चिच् वर्तितः। वत्तम् अधीतम्, पा ७, २, २६। वर्त्तनम् वर्त्तः। वर्त्तितुम्। श्रति-श्रतिवर्त्तं नम्। षतिक्रमः। उज्जङ्घनम्। षपत्यस्रोभात् या स्ती भर्तारमतिवर्त्तते, मनु ४, १६१। त्रतु—श्रतुवर्त्तनम्। श्रतु-रोधः। सेवा। सङ्गमनम्। प्रजास्त मनुवर्तन्ते ससुद्रमिव सिन्धवः, मनु ८, १७५। अनुरोधोऽनुवर्त्तनमित्यमर:। भप-अपवर्त्तनम्। संचित्तीकरणम्। व्यवज्ञानम्। प्रतिनिङ्कत्तिः। तसाः दपावत्ते दूरकष्टा, र ६, ५८ । व्यव-निवृत्तिः। व्यवनतेन एषः वीरः, उत्तर १७५। श्रमि—श्रमिसुखगमनम्। श्राग-मनम्। जगामास्तं दिनकरो रजनी चास्यवत्तेत, रामा। ग्रा-ग्रावत्तेनम्। चागमनम्। धेनु रावद्यते वनात्, र १, दश । णिच् बावर्त्तनस्। दुग्धादिपाकः। षावृत्तिः। चण्डी भतमावर्त्तयेद् य स्तु, स्मृति:। अपा, डपा-निवृत्ति:। व्या — व्यावत्तिः। उद् — उदत्तेनम्। प्रतिरेकः। विलेपनम्। उद्दर्जनोत्-सादने हे इस्यमरः। उद्दर्तयामि देवि र्वा नाना सुगस्यिद्रयोग, साति:। षहुतम्। नि—निष्टत्तिः। स तं निवर्तस्य विष्टाय जामा र २, ४० विष्-

निष्यत्तिः समाप्तिः। प्र-प्रवत्तेनम्। प्रव-त्तेतां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, ग्रांकु ७, २११। वि — विवर्त्तनम्। परिवर्त्तनम्। घूर्णनम्। भ्रमणम्। कुग्देवीं व्यवीवतत्, उत्तर २१२। धम् सत्ता। भावः। डत्पत्तिः। स्त्रिनाङ्ग्लिः संवत्तते कुमा-री, र ७, २२। हत्, वाहतु, दि, या। १वरणम्। २सेवा वो। हत्यते। वहते। वर्त्तिष्यते। अवर्त्तिष्ट। वाद्यत्वते। वा-वृताञ्चन्ने। वावत्तिथते। अवावर्त्तिष्ट। वाह्यसाना सा रामगालां न्यविचत' भ ४, २८। इत—इती, तु, च। हिंसा। यत्यः। इति प्रदीपः।

्रहर्म् वृधु, स्वा, श्रा। वृद्धिः। 🙃

वर्डते। यस श्रीवर्डते नित्यं यो-उर्चे वेडियति द्विजान्, कवि ८०। वर्डते ते तपः, भ ६, ६८। ववृषे । ववृषिषे । वर्धिता। वर्धिष्यते। वत् स्यति, पा ७, २, ५८। भवर्षियत। भवत् स्वत्, पा १, ३, ८२। आणिषि, विद्विषीष्ट । बवर्षिष्ट। बवुधत्। चुदस्यावृधत्, भ १५, १८। विवर्षिपते। विवृत्सति। वरीवध्यते। वरीवर्षिः वर्षयति। प्रवी-वृधत्, अववर्डत्। वृधु, (कुप) चु, प। दीप्ति:। वर्षधिति। वर्षति। (७) विद्विता, बद्धा । वृद्धः । (णिच् विद्वितः)। वृद्धिः। वर्डनम्।, वर्डितुम्। वर्डिणाः। सम्- णिच्, धंवर्षना। प्रतिपालनम्।

्र हण्—दि, प। वरणम्।

हम्यति। ववर्षे। वर्षिता। श्रहमत्।

१सेचनम् । वर्षणम् । र हिंसा। प्रार्थना स्त्रीकौरः । वृ, क्राः, प । १ इक्रीय:। धर्मभग्रहणम्। प्रश्चित्र्यम्,

वो। वर्षति। गर्जति वारिद्यटनी वर्षति .नयनारविन्द्रसवनायाः। ववर्षे। .वड्डषतः। वर्बाषेषा वर्षिता। वर्षि-व्यति। अवधीत्। अवधिष्टाम्। विव-र्षिपति। वरीष्ट्रधते। वरीवर्ष्टि। सूप्र चु, या। १ प्रक्तिबन्धः। २गर्भाधानस्। इएक्येंम, वो। वर्षयति। वते। प्रवी-व्यत्। •ता (ड)• वर्षिता, व्रष्टा। ॰ वृष्य । वृष्ट: । हृष्टि: वर्षेग्रम् । वर्षेम् । वृत्री। वर्षुत्रः। स्वीर्वेषुता षुष्यचयम्, में २, ३७ । वृषः। ह्रषा । h MIT

बृह् ब्रह्म बृहर, वृहि, (इह)

भ्वा, प। १वृद्धिः। श्यान्दः। वृदि, भ्वा भा, वो। वृद्धिः। वृद्धित। वृद्धित। यस्य वर्हित नित्यं जीदीनं यतिस हं हति। वृहन्ति किंह-वद् यस्य हिपा हद्दारिवारणम्॥ कवि ८५। ववर्ष। ववृंह। ववृंहि। ववृंहिरे गजपतयः (भाषानिपदं चिन्त्यम् टी), मा १७, ३१ । बहिष्यति । वृद्धियति । ॰ते। अवृहत्। अवहीत्। अवृहीत्। भवृं हिष्ट । हिहि (क्षिप) चु, प। दीप्तिः। वृं इंग्रित । वृं इति, वो। वृं हितं करि-गुजितमित्यमरः। वृष्ट्, भ्वा, प, वी। वृद्धिः। वहिता वहिता। प्रवहीत्। हुइ, तु. प। उद्यमः। हुइति। ववर्हे। वहहतु:। बवर्हिय। ववर्ट। वहहिव, वहाहा विहिता, वटी। विहिष्यति, वच्छीत। अवद्यीत्, अव्यत्न अयं वर्गीदरपि। मित्रमदब्हद् गुरुम्, भ १७, ८०। वहिंगः। वहीं।

हण् हषु (ष्षु) भ्दाः, पा वृह्णम् क्याः, छ। वरणम्।

वरणम्। २मरचम्। सट् वणाति।

हणीतः। हणितः। हणीते। हणाते।
हणते। प्रव्न वरं हणीयः, र २, ६३।
किल् प्रहणात्। प्रहणीतः। किट् ववारः।,
वविष्यः। ववरे। लुट् विरताः, वरोताः।
स्ट् विष्यति। ०ते। वरोष्यति। ०ते।
पाधिषः, वृर्योत्। दन्योष्ठपूर्वोऽपि
पोष्ठापूर्वी भवति। विष्णेष्टः, वृष्टिः,
पा ७, २, ११।, लुल् भवारीत्। भवा
रिष्टाम्। भवारिषः। भवरिष्टः, भवष्टे।
कर्मणि, वृर्यते। भवारिः। मन् विवरिषति। ०ते। विवरीषति। ०ते। वुष्पेति। ०ते। यस् वोवर्यते। वावति
णिच् वार्यति। भवीवरत्। वृर्वा।
०व्र्यी। वृर्णः। वृर्णः। वर्षम्। वरः।

8 F E

वारः । वरितुम्, वरोतुम् । वि—वेञ्, भ्वा, छ । तन्तुसन्तानः ।

वस्त्रनिर्माणम्। वयति। •ते। यशः-पटं वयति सातद्युणैः, नै १, १२। लिट् ववी-। ववतु:। वविद्य, ववाय। ववे। पत्ते, खवाय, पा २, ४,४१। जयतुः, जवतुः, पा ६, १, ३८, ३८। उविधिय। जाये, जावे। खम्युयु वैस्था मृतुः सायका रज्जुवत्तताः, भ १४, ४८। सुट् वाता। स्टट् वास्थति। ०ते। पाशिषि, जयात्। वासीष्ट । लुङ् पवा-मोत्। पवासिष्टाम्। पवास्त। प्रवा-साताम्। क्रमंचि, जयते। प्रवायि। मन् विवासति। ते। यक वावायते। वाबेति, वावाति। णिज् वाययात, पा ०, रद्भरु । भवीवयत् । छत्वा । •वाय, पा ६, १, ४१। उत:। खति:। (जत-मिति तु कथी इत्यस इवम्), पा ६, ४, २। वानम्। वायः। वातुम्। वाता। व यकः। वार्यो। तन्तुवायः। वात-व्यम् । वानीयम् । न्य-विधनम् । प्रत्य-नम्। एकार्यंतन्त्रपोतासाना, मा २,

८२। शक्तपोतं सुनियुत्रम्, र ८, ७५। वैच-वृची घदन्ती, दर्भने इति वेचित्।

विग्-विन्, वेमृ, वेनृ, भ्वा, छ।

१गितः। २ज्ञानम्। ३चिन्ता। ४नि-शामनम्। चाच्यज्ञानम्। ५वाचमा-गुड्य वादनार्थग्रहणम्। वादनम् दुर्गा। वेणति। ०ते। वेनति। ०ते। वेखिः।

वेष् (विष्)।

्रविप्—टुवेष्ट, भ्वा, शा। कम्यनम्।

विपते। हिमात्ते इव वेपते, मक् ५, १२८। विवेपे। वेपिता। वेपिषते। भवेपिष्ट। भवेपिषाताम्। णिच् वेप-यति। भविवेपत्। वेपितः। (दु) वेप-यु:। प्रवेपनम्। प्रवेपनौयम्। भूत-जातं प्रवेपते, उत्तर १८८।

वेख्-वेज्ञ, वेज्ञ, भा प।

बृद्ध विज्ञु विज्ञु (किन्नु)। कम्पनम्। विज्ञति। वेज्ञति। उद्देजना कुन्भोनसाः, उत्तर ७०। विज्ञद्दनाका घनाः, काच्यप्र।

वेस-भदन्तः। चु, पं। कालीपदेगः।

ै समयक्षणनम्। वेजयति। पविवेखत् वैवो-वेवोङ्, क्षान्दसः। पदा, पा।

श्गितिः। २व्याप्तिः। १५ च्छा। ४ चेप-ग्रम्। प्रकादनम्। ६ गर्भेग्रहणम्। विवोते। वेव्यते ऐप्, वेव्ये, पा १, १। वेव्यास्त्रके। वेविता। वेविव्यते। प्रवे-विष्टा वेवित्वा। प्रावेव्या वेवितः। वेव्यनम्। वेव्यकः।

वेष्ट्—स्वा, पा। वेष्टनम्। बेष्टते। विवेष्टे। वैश्विता। प्रवेविष्ट। विवेष्टिवते। वेषेष्टाते। वेषेष्टि। वेष्ट-यति। व्यविष्टेष्ट्तः ध्रववेष्टत्, या ७, ४, ८६। वेष्टिवता। १ वेष्टा। वेष्टितः। वेष्टनम्।

विम—वेस्, स्वा, प्रको। गति: । वेद्य-वेद्य (जेद्य) स्वा, प्रा। प्रयक्षः। वस्योदि रपि। वेदते। विवेद्ये। वेद्यिता।

वै— जो वे (पे) स्वा, पं। गोषणस्। वायति। इदायति यथा स्तीणां स्रोदादें वपुः, कवि २१४। ववी। वाताः। प्रवासीत्। णिच् घूनने। वाययति, पा ७, १, ८८। प्रस्तात, वापयति। (पी) वानः।

व्यच्-तु, प । प्रतारणम्।

विचित्रं, पा ६, १६, ११ विकास । विविचतुः, पा ६, १, १०। विकासम, विविचतः, वो । खनिता, जो १५०। (विचिता, विचिखति, पविचीत्, वो)। धर्मिखति। पाणिषि, विचात्। पैय्य-चोत्। विख्यिषति। वेविचति। वास्य-चौत्। वाद्यति। श्राप्तयति। विचित्रा। • विच्य। विचितः। विचनम्। श्राकः। विचितुम्। विचिता। विचित्रश्रम्। श्राप्तकः। उद्यापाः।

व्यथ्-भ्या, या । १भयम् । २ चलमम् ।

कार्यनम्। क्यया। दुःखानुभवः वो।
दुःखेन चलनम्। भयेन चलनम्, दुगै।
व्ययते। विव्यये, पा ७, ४,६८। न
विव्यये तस्य मनः, भा १,२। व्ययिता।
व्यथ्यिते। प्रथ्यिष्ठः। प्रथ्यिकः
वाताम्। मा व्यथ्यितः, प्रथािकः।
भावे, व्यथ्यते, प्रथ्यिः, प्रथािकः।
विव्यथिषते। वात्र्यव्यते। वास्यिन्।

व्यवयित, घटादि:। षविव्यवत्। रषे-नाविव्यवृद्दीन्, भ १५, ८६। व्यवित्वानः • व्यव्य। व्यवितः। व्यवनम्। व्यवा। व्यवितुम्।

गणद्भयः ।

व्यथ् दि, प्राताइतम् । पौड्नम्।

विधनम्। विध्यति, पा 👢, 🐧 १६ । विष्याधां विविधतः। विष्यः, विष्यः धिष्य। विविधु स्तीमरे:, स १४, २४। व्यक्षा। व्यत्स्यति। जाशिकि, विध्यात । प्रभातमीत्। प्रव्यादाम्। प्रव्यात्सः। तसैन्द्रेव हृदये छात्सीत्, भ १४, **८८। कर्माण, विध्यते।** ष्रव्याधि । भन् विष्यत्सति। यङ् वैविध्यते। वाव्यक्ति। चित्र व्याधयति। पविव्यः भत्। विद्वा। •विध्य। विद्वः। विद्विः। व्यथनम्। व्याधः। व्यवस्। व्यादा। क्षिप्, सगावित्। पतु—सम्पर्वः। व्याप-नम्। ग्रत्यनम्। इन्द्रनीले स्तामयौ यष्टि रत्तविका, र १३, ५8 । सरसिज-मनुविष ग्रीवलीन, श्रांतु १,. ८१ । प्रय-प्रत्याच्यानम्। निरासः। चिपः। •प्रेर-णम । ज्ञायातुः प्रभावतस्य अपविदयः-चाविव, र १०,1 ७४। बा—चेप:। धारणमे। पाविध्य च स्त्रज्ञम, स २०, of Right Strike, afterta, par

व्यप्—चु, प, वो। चयः। व्ययः। व्यय्—स्वा, ड। गतिः।

व्ययति। ०ते। यस्य न व्ययते पद्म्। व्ययति स्वर्भको नाय न को तिः सुक-तास्मनः, काव २२१। वस्यायः। वस्यये। व्ययता। व्ययिकति। ०ते। पञ्चयोत्। पञ्चयिष्टः। कोषास्त्वसूच्ययोः (त्यकः वान्) भ १४, १७। व्यय, चु, पः। चैषणम्। व्याययति। व्यय, पद्तः। चु, पः। वित्तसमृत्स्राः। धनव्ययः। ५३० वर्ग ्याद्धमः।

ह्राम

व्यययति । भवव्ययत् । बहु व्यय-यति द्रव्यं तद्यं त्ये व्ययस्यरीन् । व्ययते यद्यभोविस्वं त्रेसीक्याद्यतां गतम्॥ कवि ११७।

ू व्युष् वुष्, दि, प, । १दाइ: 1 "

े र विभागः। ब्युष्यति। वृष्यति। वृद्योष। व्योषिता। दाहार्थे, षव्योषीत्। विभागे तु, षव्युषेत्, की १४२। षय-मोष्ठग्रदिः। व्युम् वुम् पुष् पुम् हत्येके। व्युष्यति। व्युष्, प्युषं, पुम्, चु, पं। चक्षगः। व्योषयति हत्यप्यन्ये।

बो-बोज, खा, उ। पाच्छादनम्। पेरिधानम्। लट् व्ययति। ∙ते। बिट विव्याय, पा ६, १, ४६। विव्यतु:। विव्ययिष, पा ७, २, ६२। विव्याय। विव्यवर्गविव्यव। विव्ये। खर् व्याता। खट् व्यास्ति। •ते। पाणिष, बीयात्। व्यासीष्ट। तुङ् प्रवासीत्। प्रवासिष्टाम्। प्रवास्तः। अव्यक्तिताम् । कार्मीण, वीयते । प्रव्यायि । सन् विश्वासित। •ते। यङ् वेबी-यते, पा ६, १, १८। वेवेति। वेव-बीति। षिच् व्याययति, पा 🦦 🤾 ३७। वींला। •व्याय। परिवोग, परि व्याय, पा ६, १, ४३, ४४। बीतः। वीतिः। न्यानम्। व्यायः। व्यातुन्। सम् पाच्छादनम्। पात्राः संविद्यु-

द्धज्—(वज्) भ्वा, प । गति:। त्रजति। त्रजि इत्येके। त्रज्जति।

रम्बर्शवकाशि रजः, स्थ, ह्व । 🗁

वज्राज । ज्ञजिता। ज्ञजिष्यति। अज्ञा-जीत्, पा ७, २, १। विज्ञजिषति । वाज्ञज्यते। वाज्ञिता ज्ञाजयति । ज्ञज् उ, प, वो । १ संस्कार्दः । २ गतिः । ज्ञाज-यति । वज्, बाजयति इस्वेके । परि —तीर्थभासणम्। प्र— प्रवृक्ता। वनः प्रस्थानम्। चतुर्देशसमा नामं प्राव्धाः जयत्, र १२, ६। पनिव्राट्। व्रजः। व्राजः। व्रक्ताः।

व्रग्—(प्रण) भ्वा, प। शब्दः।

व्रणति। ववाणः। व्रणिताः व्रण्, घडन्तः। चु, पः। गाव्यविचूर्णनम्। घङ्गमेदः। चतम्। व्रचयति।

व्रथ् — प्राव्यस्तु, तु, प । केंद्रम् । व्यति, पा ६, १, १६ । व्ययः । व

हसति, पा ६, १, १६ । वत्रसा वत्रः
सतुः । वत्रस्या, वत्रष्ठ । वत्रसुः, भ
१४, ७७ । त्रस्यता, त्रष्टा । त्रस्यिति, वस्यात् । प्रतः
स्रोत्, प्रताचौत् । प्रतस्यात् । प्रतः
स्रोत्, प्रताचौत् । प्रतस्यात् । विव्रस्यि
एति, विव्रचति । वर्षस्यति । प्रवित्रस्य
वर्षाहस्यति । त्रस्यति । प्रवित्रस्य
तर्ष्त्रस्या, पा ७, २, ११ । व्रस्याः
तर्षन्, भ ८, ४१ । व्रस्याः हत्यः

मी नगा, पा बीज, दि, चा। प्राचनमा सानस्य क्रिकार

म १२, ७५ । व्रवन्त्। व्रवनः। क्रिप्,

TO THE PARTY OF TH

प्रार्थनम्। याचनम्। विवाति। व्रीकाति, वो। व्रोयते। प्रयं गत्यर्थी-ऽपि। विवाय। विविये। वेता। वेष्यति। •ते। प्रवेषीत्। प्रवेष्टः।

ब्रीड्—दि, प । १ प्रेर्षम् । चेपणम् । २ चजा । ब्रीडाति । विद्रीड । द्रीडिता । प्रजीडोत् । द्रीडिता । ब्रीडितः ।

बीस्-ब्रूस्, चु, प, वो। बधः।

बोडा ।

्त्रीसयति, त्रोसति । त्रुपृयति, त्रुसति । त्रुष्यति, त्रुपतौति कश्चित् ।

🗝 भी – क्रां, प। गमनम्। 🎏

तिनाति । विद्वाद्यः द्वेताः। अर्थु-भेतः पित्रं द्वेपयति, पा ७, ६, ६६। इतः द्वेनः।

CONTRACTOR OF THE

शक्—रि, उ। सर्वेषम्। जमा। ॰ः

मिताः। मक्स, स्ना, पा गिताः। सामर्थम्। शकाति •ते इरिंद्रष्टं भक्तः, को १३८। शक्यति व्ते दःखं दौनः, दुर्गा। मक्कोति। मक्कृतः। मक्कृः वन्ति। सर्वेषां प्रकाने वसः। शक्ती-त्यशका मध्याजी विजेत् शक्त तेऽध्य-रोन्, वावि ६३। एतनाते डभयपदी। शक्तुयात्। अशक्तीत्। श्रशका श्री-भ निय, समन्य। मेने। ममन्य दैवान् जेतुम्, भ ८, ४७। तां धर्म् न प्रमाः क, नै ६, ५२। न प्रेकतुः के जिस्सा-दिरन्तुम्, नै ६, ५४। प्रक्षाः प्रकातः। •ते। पाणिष, प्रकात। प्रचीछ। दिवादिस्तु सेट् इति कश्चित्। तकाते शकिता, शकिषाति, नते, को १३८। सादिनेंट् इति क्रमदीखरः। साहि-वेंट् इति वीपदैव:। तमाते, शक्तिता, यक्तां। प्रयक्ता प्रयक्ता न योड्-मग्बन् वैचित्, भ १५, ४८। शिचति, ते, पा ७, ४, ५४। धनुषि, शिचते, को २४२। शाशकाते। शाशकीति। मामति। पिच् माक्यति। प्रमी-यनत्। यक्ता । व्यंका। यक्तः।

यतः यकितः घटः कर्त्तिति काधिका ।

यितः। यक्तनस्। याकः। यक्तुस्। यक्षम्। तत् क्ष्मयो सोद् सम्मि, वानाः भ ३, ६। यक्षीऽस्य सन्यु-भवता विनेतुमः, र २, ४८। यक्षाः सर्वेनापि सुदोऽमरायाम्, न ६,६८। यक्ष्-यितः भ्याः, या। १ वासः

भयम्। गङ्गा इसंगयारोपः, वी।
संग्रयः। गङ्गते। क्षातोऽपि गङ्गते नासी,
काव ६१। गगङ्गे। गगङ्गि । गण्डिला ॥
गण्डियते। पगङ्गिष्टा पगिङ्गिला ॥
गण्डियते। पगिङ्गिष्टा विवस्ततः, स १५,
१८। वश्चनगङ्गिष्टा विवस्ताः, गण्डितः।
१० वर्षामावयोः, गण्डितः।
१० वर्षामावयोः। गण्डितः।
१० वर्षामावयोः। गण्डिताम्,
भ वर्षाः। गण्डितसः। गण्डिताम्,
भ वर्षाः। गण्डितसः। गण्डिताम्,
भ वर्षाः। गण्डितसः। गण्डिताम्,
भ वर्षाः। गण्डितस्ताः। गण्डिताम्,
१८।

शही। श्राटकः। शहास्ता, पा १ स्वेतवस् । श्राक्रम् ॥ सितवस्तरम्। १ हिंसा । १ से क्षेत्रं भ्रानम् ॥ दुःखानुभवः। गठिता स्वर्गाठः। श्रेडेतुः। ग्रिटता। स्वर्गीत, स्वर्गाठोत्। ग्रेडः॥ गठः, खठः, खठिः, सु, पा १ श्रमंस्करः पम् । १ संस्कर्णम्, वी । १ गितः। श्रमानस्त्रम्, वी । श्रहं सु, सा। स्वावा। स्राठ्यति। वि । स्वर्गिताः स्वरूवित। सुद् सुद् दुर्खेके। सुद्

्यट्—स्वा, पं । १रोगः । २भेदः । श्रमतिः । ४षवमादः । यटति । यटः,

चु, मा, वी। साचा। प्रश्यंति।

- दुवीचनम्, हासी । क्रिक्स्यामाच स्वान्धे । ग्रहेषति क्रिक्स्य ति । क्रिक्स्यामाच स्वान्धे ।

श्रम् — (चण) स्वा, प'। १दानम्। रगतिः। श्रणति। श्रण्यति। दाने घटादिः।

्राच्छ- हड़ि, खा, था। 🕬

रोगसङ्घातयोः। श्रम्छते। प्रमुहः। पद्मप्रमुहः।

गद् गद्रस्तं, स्वा, तु, प। श्रांतः। श्यातनम्। हिदनम्। ३ विधीर्णेता। पतनम्। पातनम्, दुर्गा। शीयते, पा ७, ३, ५८। १, ३, ६०। शीयते हिन्

, र., ५८। १, र., ६०। ग्रीयते हिल्मानिए, स १८, ८। प्रभीयत न्यां-सारां बंखं सुग्रीवन। शितस्, स १७, ७०। ग्रियाद। ग्रेट्तुः। ग्रेट्यि, श्रा-ग्रेट्य। ग्रास्त्र। ग्रियद्व। ग्रियत्सति। ग्राम्यते। ग्राम्स्त। भातय्ति। ग्रीयतत्। बङ्गेऽगीय-

तबार्गीः, १५, ६८। गती तु, गाः याः दयित गोपासः, पा ७, ३, ४२। पा— यद, स्ता, प, वो। गतिः। पामीयते। पायता। पामात्सीत्। महुः। यदः। यादः। माइसः।

यप्-स्वा, दि, जा शत्काकोगः।। उत्तर

विक्डानुष्यानम्। शायः। २ उपाण-श्वनम्। अस्तना। ३ अपथवारणम्। शपति । ०ते। शप्यति। ०ते। क्षणाय शपते, कौ ३४३। शरीरस्पर्भपूर्वका शपये शासनेपदम्, तेन सस्यः अपानि यदि किञ्चदपि स्वरामि इति चिडम्। देवानिगुक्स्यः शपदे न यः। दासी

मंपि न प्राप्यति, कवि १७७। मैथिखे

बायपत् भ ६७, ४८। सहस्राभेदसी

मा, र १, ७०। यसा। यसाता •ती प्रमासीत्। प्रमामाम्। प्रमाप्ता। षशम । वश्रासाताम्। 🗯 प्राप्सतः। ष्यप्त। निञ्चवानीऽसी सीताये सार-मोहित:, भ ८, ७४। ताम्बोऽश्यप्सत वासिनः, से द, ३३। शिशय्सति। •ते। यागप्यते। गागित। याप-यति। चयौयपत्/कासा। ० ग्रप्य। शप्तः। श्रि:। श्रापनम्। श्रापाः। मसुम् । असन्यम् । अधि अधिभागापः। परि-पाक्रोगः। पर्यंशाप्सी दिविष्टासी, H.S. R. R. Polyan ्र ग^{ब्द्} चु, या १ चाविष्कार: : २भाषणम्। १प्रब्दः, वी। प्रब्दयति। सीपसर्गस्यवाविष्कारीऽर्थः। प्रतिशब्द-यति (प्रतिश्वत माविष्करीति) प्रमञ्द यति (गभीरमधे ग्रिष्यः स्फुटीवरोति)

यपथा नमस्यत् (जातवान्), भ ३, ३२।

यगाप। ग्रेवियाः ग्रेपे । त्वां ग्रमाप

यात (गमारमधा ग्राचः स्फुटोनराति) दुर्गा । परं शब्दयति द्वाःस्यः, कवि १८४। यम् - गर्मुं, दि, पः डपगमः। ग्रास्तभावः । निवृत्तिः। ज्यासी-करणम्, दुर्गा । ग्राम्यति, पा ७, ३,

98.) शास्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः, कु., ४०। वृद्धं रकोऽशाः
स्यत्, स १७, ६३। ग्रमामः। श्रेसतः।
श्रीसयः। श्रमाम वष्टमित विना द्रवाः
स्वः, र २, १४। समत्तरोऽपि श्रमामः
चितिपाणलोकः, र ७, ३। श्रमिता।
श्रीस्थितः। श्रममत्। (श्रमसत्, श्रमः
सोत्, वो)। श्रिश्रसिषति। श्रमसत्।
राग्रस्ति। वेकांसि श्रममञ्जाः, स १४,
६७। श्रमयति। श्रश्रीश्रमत्। श्रमयीः
द्रिप संगाने यो रिवम्, स ६, ८८॥

ग्रम्, चु, चा, बी, चालीचनम्। प्रणि-शव्—(क्षा) भ्या, व । वधः। श्रवति भागम्, दुर्गा । शामधने । (ड) श्रमि-ा प्रम् यस् स्वरं, व । हिंसा । त्वातः शास्त्वामः वशस्य । शास्तः ग • यमिति। ययासं। ययस्तुः, पा ६ यान्तिः। । विषच् यान्तः, व्यक्तिः, वर्ष ४, १२६ । ग्राम बह्रन् योधान्, भ अ, २, २७, । वरेण ग्रमितं तत्त्वः, क् १ है, १०३। मसिता। समसीत, प्रमा-र, प्रा गमी, पा र, १११। यम-मीत्। गम् (सम्) विश्वसत्युत्पथक्थि नम्। यसः। शमितुम्। छ्ये निवः तान्, कृति ३२ । मस्यम् । अस्तम्। तिः । विनाधः १०० नि-च्यवस्म् । विधे-ग्रंस् - श्रस्, स्वा, श्रद्धा । बम्हा बाज्ये तं निवस्य । प्रतिष्ठितम्, राष्ट्र २। उपितिध्वनीनावाजनान् निश्र र पामी: । वष्टार्थं ग्रंसनम्ह वो । नित्य-स्यामा स्राट (विषदेशीने घटाति:। प्राच माङ्गीकः। प्रायं वते । प्रायं सन्ते विनी निशमया स्तरम्, मा ६, १७ । मसितिषु सुरा सत्यम्, यक न, ८८। पागगंसे। पाणिवयागगंपिरे, भ दर्भने तु, रूपं नियास्यति । अस्मू मग्रामाः। निवित्तामः । : ए विश्वताम हो १ १४, ८०। पार्शिसता। पार्शिक्ष । बाङ्रिकोऽपि इस्यते। यः गंसते ग्रस्त्—(कस्त) भ्वा, प । १ हिंमा । सर्गा द्वासिम् कृषि १३ । । इक्र । । । र गतिः, वो। ग्रब्ब (प्रब्व) भूप। यन्तः भा को के स्तिता प्रांतक। 19 1 gradivipmen org 18.8 ा ते हिंगा । यंसति । न से क्रिया धंसति का अव्योत (अव्योक्ता, एक के इ किया है वाञ्चिदीपितम्, क्रांके, ध श्यति:, वो ॥ शर्वः (चर्वः) स्वाः पः। ममंसतः। क्रियमंसे ब्राचा पुनर्वतायेनः विसा। गर्वति। गर्वति। एए। रेए। र् ४२, .६६८ । ग्रंसिया १ . ग्रंसियाति ॥ यसात्। प्रशंभीत्। प्रशंकिष्टाम् । । एक मण्डानेबा, प। हरूमतिहार प्रशंमिषु:। कर्मणि, असते। प्रशंसि। रवेगः, वी। ग्रस्, भ्वा, भा। १ चस-शियं सिवति। भागां स्ति। यार्थास्ति। नम्। २ संवरणम्। प्राच्छादनम्। गंस्यति। प्रमासंसत्। गंसिलाः यस्ति। तो। यसनी सदगुणा निर्द्ध यस्का। भगसाः यसः। व्यस्तिः। प्रकल्लि चा सुरालयम्, कवि १०१। र्थं सनम्। यंसः। नृश्चःसः। क्षासः प्रसि यशाना शेसे। पंत्रातीत्। प्रशंकिष्ट। यायः । प्रमादः । प्रमानम् । यल् हु, या, वि । सावा । गालयते। पार्यं सता वाषगति हवाके कु ३,, हद्- उच्छन्नम्। पीच्छन्च्छोनित,-१८५ म मध्य सा । । । वाषां कीतं निर्मा मा १, ६६० व्यन:। यनभः। यनसः। Tingle 1 was blanked and I tologic श्रवाका । हार्ड ाणांस्यांस्, (संस् संस्त्)। ाण्या वा मा आवा। यस्मते। शाख् भाष्, श्वा, प । व्यक्तिः मन् स्वा, प्। १गति:। श्विकारः । याखति।(ऋ) भयमाखत्। याखाः मग्ना, प्। अतगतिः। प्रमति। गेगतुः। ग्रेभिषः। ग्रमः। 👔 💯 💯 गाड्-प्रांडु, खा, का। सावा।

प्रकोत्तिनी। इलादी तु घोणादिक-ती च्यो करणम्। श्रीकांमति । ने बास्त्रम्, पाकः, १,६। अन्यव शानयति। श्रीशां-वचा सिवि:। प्रामु. भ्वा, प्रदा, पान सते खद्रवतां मानयत्वाग्रगान् नित्यम्, १ इच्छा । २ पामिः। इष्टार्थामनम् वृद्धि १। वो। नित्व साङ्योगः। आयासते, वो। पात्रास्ते। पात्रासाते। पात्राः िक्षीक्षा क्षा विष्यु (साम्ख्)। पति। वियमाधापते कोकाम्, 🐲 शार-घटन्तः। चु, प, वी। प्रतिक । पामासत् ततः मासिम् स दीवेखम्। की स्वाहरू १७ र । यागमात्रे । प्रामासिता । मान्-प्रात्तः स्वाः, याः, वो। द्वाचा। पामासिम्बर्ताः मामासिवीष्ट । पामान गानते। ग्राबी । धनग्राकी । यस्त्र मिष्टा (७) याशासिता, पाशास्त्रा संग्रामधी कर्त यात्रमते वाष्ट्रयातिनः, पश्चमस्यग्रम्भग्यात् न स्वप् रति बाब १०१। यास्-शासु, घदा, ए। गोविन्द्रभद्दः । चद्रनुबन्धपालं कृष्यस्थेव दित घातुपदीयः। यामास्तः। पामान विश्वासनम्। उपदेशः। शामनम्। सनम्। क्षिप्, बागी:। धनु चनुमा-पामा। कट् मास्ति। मिष्टः, पा है, सनम् । षा-षादेशः। ४, १४ । यासतित यास्ति य बाजया रचांसि रचितुं सीतामाशिषत्, भ राजः म सम्बाट् रत्यमरः। स किंसका ६, ४। इतं कद्मणायाशिषत्, स ६, बाधुन मास्ति योऽधिवम्, भा १. ५। २७। प्रमासनम्। वेणे राज्य . बास्यरीन् । अर्मनाशास्त्रे, विवि प्रयासति, मनु ८, बे । ३१ ों • चि, ॰ माधि, या €, ⋅ 8, शि - शिज्, स्ता, वा तन्त्र रचम्। वप् । निङ् शियात्। नङ् भगात्। तीच्योकर्यम् । पद्मादेखेजनम् । चित्रष्टाम्। चेत्रासः। चेत्रात्। चेत्राः। भिनोति। भिनुतः। भिन्वन्ति। भिनुते। कुर नि:संगर्य सोक मित्यगात, र शिशाय। विश्वविष, शिश्वे। शिर्वे। १४, ७८। सिट् ग्रगाम। ग्रगामतुः। भेता। प्रेथित। प्रेथित। ०ते। प्रके चर्वी ग्रहामेनपुरी .मित, र १,। ७०। षीत्। प्रशेष्टः। शिशीषति । शेशीयते । शुद् गासिना। स्टट् गासिकति। पाणित, शिकात्। तुङ् पशिवत्। येथेति। प्राययति। प्रयोगयत्। राजी राज्य मणिवत्, र १८, ५५ । शिला। श्रीयस्य। यितः। निश्चितः। बर्मीब, शिखते। प्रशामि। सन् शिशा-सम्-संभितः। संभितव्रतः। निधिनोत्यसिपुतिकाम्, कवि ७६। विवति। यक् श्रीशयति। शाशास्ति। गासयति। ज्ञासयासन्, विच शिच्—भ्वा, श्रा। शिचा। षा ७, ४, ३। (७) ग्रासिला, ग्रिष्टा। विद्याय इसम्। शिवते। मदत् वि-•शिखा शिष्टः। शिष्टः। मनापि विचते, मे १, ७१। पवि-याचि-रिखीषादिकः। शासनम्। चताको पितुरेव सम्बद्ध, द ३, ३१। पीरवे बब्रमती बाबितरि, बक्क १, १४०। दी शिषाः। भेषः।

शिक् -शिवि, भ्यां, पा पान्नागम्। शिक्षति। शिश्वक्ष । शिक्षता । स्वीय-इत्। शिरस्यवशिश्वः तम्, भ १४, धरातं सूर्भ्रयाधिकत्, भ १०, ८५। णिञ्—िणिजि, चहा, जु, वो, पा। ष्रव्यत्रध्वनि:। शिक्तं। प्रशिङ्ता। शिशिक्षे। शिक्षिता। पशिक्षिष्टा शिक्षयते। शिक्षते। घएटां दीघं ग्रि-शिक्तिरे, भ १४, ४1 शिक्तानपतिन-संघः, अ ३, ४६ । स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानाच धिच्चितम् इत्यमरः । तानीः शिक्षद्वलयसभगे रित्यादी परसीवद-सपि। शिक्तितम्। शिक्ता। थिट्-(सिट्) भ्या, प । प्रनाद्र : । लं बेटित निरीच्य यः, वाबि २००१ अधित्-सित्-प्रिन् तु, य। डञ्कम्। कणाय चादानम्। कनियादा-र्जनम्। उद्गमशस्त्रीवा दरणम्। श्रिकति । सिवति। विकति। विकार। शिष्—(काष) आरं, पे हिंसा। श्चिष्ट, र, पा विशेषपश्चा विशेष-बारपम् । उपरचानम्, दुर्गा । ज्ञाट् चेषति । निःशेवं शेयति मोधात् प्रतिपचचमापतीन्। एकः श्रेवति योऽभेषसूनानां सर्षे भ्रुवम्॥ 💵 कवि १८२। जिन्हि। बिंग्टः। शिंवन्ति। रि, प्रिन्छ। शिनपाणि। सिङ्जि षात्। लङ् पश्चिन्द्। पशिष्टाम्। प्रतिवन्। बिट् विश्वेष । शिशिषतुः। शिशिविमा। बुट् श्रेष्टा। लुट् श्रेष्ट्यति। चुड् प्रशिवत्। इ. प्रशिषत्। कर्माच, शिकते। प्रश्रोषि। तेवा सेतः शिकते पन्छे सुप्यन्ते, पा, १, २, ६१। शिक्षि

चिति। ग्रेशियते। ग्रेगेष्टि। ग्रेवयति चमीकिवत्। त्रिष्ठः, चु, प । चमवीव योगः। परिशेषी करणम्। श्रेषयति शेषति। श्रेष्टा। अशिवत्। श्रिष्टाः •शिष्य। शिष्टः। सिर्हिटः। स्रेक्ष्यम् शेषः। शेष्टुम्। शेष्टव्यम्। अव— प्रव ग्रेव:। उद्-उच्छिष्टम्। वि-विशेष:। विधिर हो विशिवष्टि सनीर जम, उत्तर १४८ । पन्धात् काणी विशिष्यते। शिच् मतिशायनम्। विशेषयति विभोषति सम्पत्था भूपं विधिः, दुर्गी। बिधिनष्टि सारं नृत्यी त्रिया शक्त विश्रवति। विश्रवयित यो वागमी वाचा वाचसाते बेचः ॥ वाचि ८९ । सदन-मणि गुणैविशेषयन्ती, सच्छ ११७। निर्-नि:श्रेषयति य: श्रवृत् । बि:श्रेष-यति दानेन भाष्णागार दिने दिने, वाबि, १५१। गी-गीड, बदा, या। ग्रयमम् खप्रः। शेते, पा ७, ४, २१। ग्रीयाते। ग्रेरत, या ७, १, ६। भ्रेते। प्रशीत। पर्यता प्रयाताम्। प्रश्रेत सा बाइ-सतीपद्यायिनी, पू, १२। प्रिप्ये। मिश्यिषे। प्रायिता। अधिव्यते। प्राधि षीष्ट षश्चिष्ट । पश्चिषाताम् । " पृशं-विषता भावे, प्रव्यते। प्रशाबि। वयानी ग्रयनिकाः (ग्रयितुं याचनी), मंचित्रसारम्। प्रिश्ययिवते। गुश्ययते, ७, ४, २२। श्रेशयौति। श्रेशिति। भाययति। भभीभवत्। भविता। ॰ श्रय्य । श्रयितः। श्रयनम्। श्रयितुम्। गयनीयम्। प्राचितैव्यम्। अय्या। यथानः । यथानुः । य्रायुः । त्रति चति-कामः। श्रातिवत्तेनम्। पूर्वीन् सङ्गभाग तयातिश्रेषे, र ४, १४। वची वाचा-

A SALA SERVICE AND THE SELECTION OF THE SERVICE STREET SERVICES AND THE SERVICES SER ष्ठानम् । पाम् मिश्रीते, पा ती क्रि ं ४६ । वनं सिंहोद्धियोते, सार् • . ३३ । वाह्मान्यिधिश्विरे (पारुद्वन्तः), भ १४, ७४। धनु—शनुष्यः। हेव:। सम् संगयः। संभया कार्पादिश तिहते

मधीन योक, भा । १ सेचनम । क्षातः, वो। ग्रीकृते। ग्रिगीके। शिशोक शोणितं व्योस, भ १४, ७६। योकिता । प्रशीकिष्ट। मीक, मीकते। योक, सीक्षा इ. प। १दीमि:। २ ग्रामर्थनम्। स्पर्गः। अजमिति भट्टम्बः। ४सेकः वो। श्रीकणति। मोलयति । चन्द्रावतीतरङ्गाद्धीः ग्रीकः यन्ति च यहपुः (बायवः स्प्रशन्ति), कवि १८६। प्राक्तरः।

गोल्-भ्वा, प्रां समाधिः। प्रवृत्तिः। विश्वीद्व । इस् , व , हु । इतिहास । वैवात्यभावनम्। श्रोकति। यः श्रोकति सदा धर्मम् विविध्य स्था श्रीस पटनाः। इ. पं। (श्वधारपासः। षभ्यासः। २ प्रतिप्रायनम् । प्रतिप्रय-करणम्। ग्रीवयति। पश्चिमीवत्। योजय 'नीजनिचोसम्, गीतगो ५, ११। दस्योजितम्यनम् (सत्म्), गीतर्गो ८, ६। निधि गचनं श्रीतिः

ग्रीभ-ग्रीस, भा, पा। कलनम्।

पहित्तः ग्रेबी। ा प्राच्या, यी। यति रिखेने विकास ग्रम् भाः, पः, बो। गतिः।

तम, भौतगी ७, ४। पनुश्रीसनम्।

परिशोजनम्। श्रीतम्। श्रोते भदा

ग्रांकति। ग्रकः। ग्रकः।

पुत्रादे ग्दर्शनाद् दुखानुभवः, दुगा। श्राचिर् दंश्राचिर्, वा। दि, छ। १पूर्ती-भाव:। रश्रुषि:। शति द:। पाद्रीभाव:। ४मेदः, वो। भोतति। श्रचति। दते। विचित्राच्यानकानपायिक्ते स प्रचित, कि वि ३१८। न गोचित सदाः चारी यो सतानपि बासवान, कवि १०६। कि गोचते हाभ्युद्ये वता-मान्, स १, १२। पांप्कीचरसात्मान-मग्रोचन, भ ७, 5.1 श्रुशीच। ग्रंभे । एन मद्रे स्तन्या ग्रंभोच, र २, १०। गोचिता। गोचियति। ०ते। पशो बीत्। प्रशाचिष्टःम्। प्रशाचिष्ठः। रावणीऽयोचीत्, सार्पु पुरुष्टेशाङ्ग (इन्) पग्रवतः प्रामित्र । कर्मीण, ग्रुच्यते। प्रश्नोचि। ग्रुग्राच-वति । ते । श्रुशीचिवति । •ते । श्रीश-चते। संश्रांति। शोचर्यात । प्रश् ग्रचत्। ग्राविका, ग्राविका। ग्राचा यचितः। (६)यतः। मोचनम्। भोकः। मा चतुम्। मा चितव्यम्। भीचनीवम्। यक्। याचः। धनु धनुयाचनस्। गतास्नगतास्य नानुशाचित्त पण्डिताः, आहे २) रेस्ट्रा , विश्वविद्यालया, १९५५ हा

The Part of the Pa

हो हा प्रवयविश्वास्त्रीकरणस्। १०० सुरास-सानम्। इसानम्। (प्रीडनन्। कथः नम्, दुर्गा) मचिति । चुचिति । ग्रम्च । म्बिता। पमचीत्। प्रची, नुची, वो। सा, शतः, जुताः।

्येट्—प्रस्टू—प्रित, स्वा, प । प्रतिचातः । गत्याचातः । प्राठि, स्वा, प । गावणम्। गुष्कोभावः। भोठति। गु-

। यणस्यमः ।

200

श्रव्

किति। यहं, वि. प्रांतस्यम्। युद्धि, इ., प्रांत योषणम्। युद्धिकरणमिति स्मान्यः। युद्धिभावः, दुगो। योठ-यति। युद्धस्यति, युद्धति। युद्धः। युद्धी।

यण् — ग्रहि, स्वा, पा १ खण्डनम्। १ प्रसद्देनम् । ग्रंग्डिति। ग्रंगुण्ड । यण्डिता।

्यभ्रह्मार्ट्यामीत्रम्। युक्तिः। युक्तार्ट्यामाच्छ्यति यक्षतः

जित १०। रजसा मुख्यते नारी नही विगत मध्यति, सनु ५, २०८। श्रमी धा । सीत्स्रिति। धा ग्रियति। सीम्रिक्ति। सोम्रिक्ति। सोम्रिक्ति। सोम्रिक्ति। सोम्रिक्ति। सोम्रिक्ति। सोम्रिक्ति। सोम्रिक्ति। स्मर्मिक्तः जिल्हां सिम्रिक्तः जिल्हां सोम्रिक्तः विगति। सिम्रिक्तः विगति। सिम्रिक्तः सिम्रिकतः सि

परियोधयति, पा १, १, १६। तत् वर्षे परियोधयन्तु गीतगीविन्दतः, गीतगी १२, २८। वि—ग्रुडि:। प्रदि-पंस्करणम् ।

मादिसंधीधनम्। दान्ने देखं भागं

भन् तु, प। गतिः। मोनिता। ग्रस्-भा, प। ड, वी। ग्रहिः।

श्रस्ति। वि । यो मां श्रस्ति ससीन श्रस्ते तपसा तनुम्, कि ३०। श्रश्स्य । वसे । श्रस्तिता। श्रध्यात्। श्रस्य-वीष्ट । श्रस्य, चु, प । भयमास्त्रीप-दौति केचित्, दुर्गा। श्रीचक्रमा । श्री-भनम्। श्रस्यति । श्रस्ति । श्रस्तिता । भश्योत्। श्रष्ट, श्रद्यतीत् केचित्।

यंभ्-त्या, पा । होतिः । घोमा । • योभते । योभते क्यमस्यत्योः, कृति ४१। यसमे। गोमिता। गोभियते। पक्षात्। प्रशामिष्ट, या १, ३, ८१। ययभिवते, यशीभिवते । स्यार्थे यह-निषेषः । योनःपुम्बे तु, योग्रस्यते, क्रो २०६। योभयति। त्रम्यभत्। खन्भ, सम् सन्स्, स्वा, प। १भाष-पस्। कथनम्। स्थासनम्। दीप्तिः। १ बिना। गोभति, यभति। मोभति, धभतीति कंबित्। गोभनम्। योभा। यभम्। यभम्। यभः। निष्ठभः। यस् प्रन्स् तुः - यः। ग्रीभा । स्मति, असति । नहार्षेद्धि तम् को १४१। समृति स्मीतसा त्रिया, जवि(धर्। याल्य- थु, य । १. प्रतिसारं नुम्। वर्षनम्। १ सवतम्। १ सहिः, वी।

वजनम्। २ जनम्। १ स्टि:, वो। युक्तवति। युक्त-चुः व। १ मानम्। २ स्टि:, वो। युक्-दि, व। योषणम्।

चेकरिकतीसावः। यचितः। यमोवः।
यमपतः। ग्रोहः। ग्रोक्तिः। स्यपत्।
यमपतः। ग्रोहः। ग्रोक्तिः। स्रोहः।
ग्रोह्मतः। प्रयुपत्। ग्रोह्यः सनः
सिवतापन्, ग्रोहगो (२, ४। ग्रहः।
॰ ग्रवः। ग्रुह्मः, पा ८, २, ५१। ग्रोहः
चन्। ग्रोहः। ग्रोहुन्। ग्रोह्मम्।
परि, वि, सम्—चित्रगोषणम्। परि
ग्रुष्णन् मकाष्ट्रदः, स १०, ४१। सर्थः
ग्रोणं हेक्वहिगुष्तः, स १, १४,। प्रताः

प्रसंगोषितमन्पन्नः, र ६, १६। ग्रार् स्र-ग्री, स्री, दि, या। १विसा। रस्तमनम्। जिल्लोमावः। श्रुकेते। मुकेते, वे। ग्रम्रे। ग्रारिता। (४)

23

शुर्णै:। शूर, पदन्तरा हु, या । विक्रम:। ख्यमः। शुर्यते। प्रश्रम्यते। विवाहः शूर्ष (शूख) चु, प। मानस। १९ ्राम् भाग प्राप्ता । श्याकः । े बङ्गातः । शूनति । शुशून । शूनिता । ्राव् भ्या, यो प्रसंबः । श्रुवति । मध—ग्रध (सर्घ) आ, द । ः उन्दरम्। क्षोदरम् । पाद्रीभाषः। श्राभिति। वी। श्रामधे। श्रमधे। श्राधे-ता। प्राचीत् । युषु, भ्वा, प्रान कुत्-सितग्रन्दः । अपानग्रन्दः । । ग्रार्थते । श्राभुषे। प्रधिताः। प्रतीस्वति। प्रधि-ेखते। यर्धियते। प्रमत्स्यत्। प्रम-विचत, पा ७, २, १८ । प्रश्वता षशिष्ट। विश्वत्यति । विश्वधिवते, पा १,३,६२। भरोग्ध्यते। शरीकधि। यथ्, खु, प। १प्रसहनम्। १प्रहसनम्। श्रर्वयति। श्रिकेति। श्रश्राधित्। अयो-मध्यत्। प्रक्षिता। मुद्दाः। सृदः। मृ, त्रा, म। इननस्। हेदनस्। मुणाति । । मुणीतः । मुणन्ति । मुणाति भोषा । यस्तान, भा १४, १३।। परशुः सर्वेशस्तारं मृणातु, वीर ४,ई। श्रमार। गणरतुः, पा ७, ४, ११। अञ्चतः, पा ७, ४, १२। धशरित, श्रामित। चर्णम्। धासेचनम्, वा । स्रोतित। शरिता, शरीता। शरिवात, शरी-खोतति । चिता ग्रीचात्। प्रशारीत्। कर्मण, ग्रीर्थते। ' प्रमारि। शिशरिषति, शिमरीपति, शिमीर्पति। भेमीर्थते। यायर्ति। यार्यति। प्रशीशरत। मीर्षः। मीर्षिः। श्रील् भेट (पेट) आ, पा १गित:। २ थायः, यो। ग्रेसति। येखा श्रेसति।

धीव (सेव) । ्ये—श्रे—से, स्वाप । पाकाः। शायति। श्रायति। सायति, बी।

यथी। याता। यास्त्रति। स्रमासीत् त्रे, त्रपयति। पाने घटादि शित प्रकीपारम् । व सहस्र हो हा स्कृति ्र_{ाप्ता}यो दित्या तन्तर्वम्

षंखीवरणम्। अस्ति, पा ७,३, ७२ गर्थो। मगतुः। माता। प्राचाति। षणांसीत्, षणात्, पा २, । ४, । ७८। प्रमासिष्टाम्, प्रशाताम् । विकासित । शामायते। शाययति, पा ७, ३, १७

माला । ॰ मास । । भितः। भितवान् । मातः, गातवान् पा 🦠 ३, ४१ । वते नित्यं संभितं व्रतम् (सम्यक् सम्पा-

दितम्)। संगितो ब्राह्मणः (व्रविष-यक्यववात्), को २५८। नि—निया-नस् । तेजनम् । त्यायान् अस्ताचि, भ १७, ४ । तसुदात निमातासिम, स 8इन सा १, 8५ । मोग्-योगु, भा, प। १वर्गः।

्रागः। रिक्तीभावः। २ मतिः। ग्रोण-ति। स्थोष। ग्रीचिता। स्रयोपीत। मीट्—भीड्—भा, प । गवः।

यः शौटति सभामध्ये, कवि २७०। बात् चुत् स्रातिर्, स्तिर्, स्वा, प।

धाराः खातिन्त, उत्तर ११३। सिट् चुस्रोत। चुस्रततुः। चुच्यीत व्रणिनां रत्तम, स १४, ४०। योतिता। योतियति । (१र्) प्रया-तत्, प्रयोतीत्। रत्तमयोतिषुः

चुसाः, भ १५, ५१। चुन्रोतिषति, चुयातिषति। चीयात्वते। चोयोति बातियति । यनुबातत् ।

त्रय् भ्या, प्रश्निष्ठ इति कश्चित्। त्रयति । त्रययति, घटादिः । त्रमोल् समेन् (मोन्) भ्या, प्रश्निष्ट निमेषः ।

म्ये-मोड्, भा, भा। गतिः।

ध्यावते। ग्रंथे। प्रश्नस्ताः जाः, ग्रानः गोतः सर्गः। ग्रीनं एतम्, प्रा ८, २, ४७। सा—गोषणम्। प्रथ-याध्यानकदेमान्, र ४, २५ ।

गुङ्ग-सङ्ग-सङ्, यकि, सकि,

् स्नितं (सेक्ष) भ्वाः प्राप्तः । सङ्क्ते । सङ्क्ते ।

यक्ष, या (प्रकि) स्वा, पा गति । यण्-स्वा, पा दानम् ।

त्रणित । त्रणयित, घटादिः । भणि-त्रणतं, भग्रत्राणत् । त्रण्, पु, प । दानभ् । त्राणयिति । वित्राणनं वित-रण मित्यमरः । वित्राणयिति यः त्रीमान् विग्रेभ्यो विष्ठुलं वस्तु । वित्रणितः ॥ व तेऽप्यसे सत्यवासः सद्यिषः ॥ कवि १७०॥

अष्-(म्रांष) खा, पा हिंसा।

त्रथितः। त्रथयति, घटादिः। त्रथू,
इ. पं। १पयतः। स्मोज्ञणम्। श्रातिइष्टं। प्रतिक्षेः। त्राययति ग्रियं
(पुनः पुनर्हेकेयति, दुर्गो)। त्रथः, चु,
पं। १मोज्ञणम्। १हिनाः स्वन्यः।
वो। त्राययति। त्रथति। त्रथः(सार)
पटनाः। चु, प। दीकेल्यम्। त्रथयति॥
त्राय्यं त्राययति स्मृटार्थ्यस्यं गर्यायः
पर्यः त्राययति स्मृटार्थ्यस्यं गर्यास्यः
पर्यः पदा भावाकद्यतिप्रशं त्रथः
पर्वति स्मष्टाचरं नाटकम्। त्रथाति
स्रितावदानचरिकः सास्तः विचित्रयः
स्रितः इत्रायुक्षः।

र्यस् — यति, श्वा, या। ग्रीधिकाम्। त्रत्य (ग्रत्य) क्रमा, प। सन्दर्भः। त्रस्थनम्। (चना। अस्य, क्रााः, ए। १विमोचनस्। २प्रतिइष्टें। यन्यते। अस्यिता। प्रश्नस्यिष्ट्। ययभी। त्रथाति । अधीतः । अधिकतः अधीः यात्। भयवृत्। लिट् भयतः। भयः न्यतः। हरदत्तादीनां मते, शयाय। श्रेयतः। सेथियः। इतमे तु गत्रायः, गञ्जा इति साधवः। ततः सुन मृत्यम्, को १६७। सन्यता । सन्यतः व्यति। सम्बर्गत्। समन्वदाम्। प्रवस्थितः। स्वस्य, चु, प। सन्दर्भः। रचना। वधः, वो । स्रत्ययति । स्र-न्यति। श्रविला, श्रान्थिला, वा १, २, २३:। सन्दर्भी रचना गुन्फः त्रव्यकः चन्यनं संसा इति हेमचन्द्रः।

श्रिम् असु, हि, पा श्रुपस्या। १ २ खेंदः । यमः । क्वान्तिः। याम्यतिः पा ७, ई, ७४। अत्राम । अत्रमतुः । वीरी ग्रम्मतानेच, भ १४, ११० ह त्रमिता। श्रामधात । पत्रमत्। नात्रः मद् प्रन् प्रनक्षमान्। मृ १५, ८८ । शियमिषति । श्रेत्रस्यते । श्रंत्रस्ति । अमयति । इतिकारमते, विश्वासयति। धूर्यीन वियामय, र १, ५४। रजी वियास वन् 'राजां' खत्रशृत्वेषु मीलियुः र १, ८५ । (ह) यमिला, यान्वा ध • अस्य । 'वास्तः । गुनितः ॥ असः ॥ क्रमणः । सभी, पा क, र, १८१।। पाचमः। विश्वषः। विश्वाम इतिह चान्द्रः। वरि—परिचनः। व्यथं परि-वास्यपि वा विभिन्नम्, ने र, इर १ विन्वामः। कि विश्वास्थित कथा-मोगिभवने, गौतगो इ. १२। विसालह विषयक्षाः, १,,३३ ।

या-पदा, व । १पीवः । १खेदः । दारः । अषिता अषिता, त्रिपिता, वमार्त्तभावः, वो । त्राति । त्राति भिष्टा । (१) (१) बेहं इवि:, कवि (८) यत्री। बाता। बार्स्सति। कायात, खेयात्। प्रता-कोत्। वित्रासति। ग्राकायते। ग्रा-त्री—त्रीज्, क्या, उ। पाकं:। त्रीचाति । भीषीते । विश्वाय शिश्विम श्रेता। क्षत्रेषीत्। प्रशेष् चाति, याचेति। पाने घटाहि:। श्रेयः (साम्युक्तासः । विकासी स्थापन । यं पर्यात चक्त् (भिक्त दयति)। पाका-श्च-भा, पं। १ यवणम्। १ यति:। दग्बत, मापवति (सेदबति)। ता, श्राण:। चौरष्टविष्ठी: पाने, श्रुतम्, यणोति, वा ३, १, ७४। सण्तः। ulative in the state of the state of म्बादित । मृत्यः, मृत्युवः । मु, गतो 11977、运动。 的 1798年 11970 चवति। रेफरहितोऽप्यवसिति बे-भासः चदनाः हिषु, प्रत्यो । सन्दैः। चित्। शवति, दुर्गा। दि, ऋणु। ुरोणिः। प्रिस्वीकर्यम् । याम-मृणुवात्। कङ् यमुगोत्। यमु-यति। रजी विशासयन् रति दुर्गा। गुताम्। अञ्चलन्। स्थानः। सञ्च त्रि—विज, भ्रा, छ। हैवा। वतुः। श्रनीय। इत्रुवः पा ७, २, १३। युवाव घोषे न जनीधजन्यम्, स षात्रयः। , त्रयति । •ते । धित्राय । क, २७। सुद् योता। सुद् गोशति। शियथिय। शियिये। तद्वार्या शि-न्यात्। तुक् पश्चीकीत्। पश्चीष्टाम्। श्रिये, र १, ७०। श्रविता। श्रविन ष्रक्रीहः। वसंशिः यूवते। पश्चाव। चिति। •ते। पाथिषि, श्रीवात्। अधिबोद्ध। प्रशिवियत्। •त, दा १. नवीनमञ्जाव : प्रवाननादिदम् ने १, ४८। शेलं व्यथित्यसामा, भ ६, ८, ४१। वंतानि चायोषत षट्पदा-१७। नर्सण, श्रीयते। स्थायि। नाम्, स २, १०। सन् (सेवा) गुरु शियविषति। ०ते। शियोषति। ०ते. ग्रम्पते, पा १, ६, ५०। ग्रम्पत षा ७, २, ४८। येत्रीयते। वित्रयीति, ग्रम, यक् ४, १५८। मोत्र्यते। यशेति। अययित। प्रशिविषत्) योश्रुवीतः। योश्रीतः। याक्यति। जिला, पा ७, २, ११। • त्रिखा बार्यम्बत्, बनियुवत् या ७, ४, ८१। मुक्ताविषति, मियुविषति। त श्वितः। श्रितवान्। श्रवणम्। श्रय:। यविसुष् । यविता। यवितव्यम्। हत्तान्त समिम्बत्, भ ५, ५१। युला। संग्णीयम्। तीः। पा—पात्रयः। •श्रुत्थ। श्रुतः। श्रुतिः। ग्रुवणम्। अववानम्। चतो भूतनमाग्रियाय, अवः। भोतम्। भोतव्यम्। आ. भ १४, १११। क्रब्यंतर च्छाया मास्रिता, मति पतिज्ञा । विवाध गा सायः र १, ७६। उद्-उक्कायः। उद् पोति, पा १, ४, ४०। पायम्बन् मनम्। म-प्रययः। प्रवयः। स्पर्वा। वार्ताम्, स ८, ३६। कार्स राजे प्रति सम् पात्रयः। ज्ञानाः । ज्ञानाः । ज्ञानाः ।

त्रिष्-त्रिषु, (ग्रुषु) स्वर्ध प ।

ं शब्द (सब्ध)।

सम्-(पनमंत्राहातानेपदम्) संयुक्ते, | १६ । सम्बि, सिवते। पश्चीता बी २४०। इति।च यः संमृत्ति स पश्चिताम्। पश्चिताः। पश्चित्वम्। किंप्रभुः, भा १, ५। संख्योति न गिश्चित। गिश्चिती चोतानि, सं ५,१८। जोष्ट्र सम-स्वयति। चार्यसम्बद्धः सिव् मृयोष् रसतः, म ६, १। रजांबीति प । श्रीवसम् । योगः । श्रीवयति । पुरावि संयुष्पाष्ट्रे इति सुरारिपयीगः इ:सेवाणावि बार्याचि विवा सेव-रंबर पामादिकाः, को २४७। यति चुचात् वाचि देश विद्या। चैक् (सैक्) चे (से)। • शिषा । शिष्टः । श्रेषणम् । स्रेवः । ्रेत्रोष-त्रोणृ, स्वा, प्रा, संवातः। से हुन्। या चालिक्रमस् । योगः। वि-विक्रयः। वियोगः। यिरो विक्रि-्रिकोणित। बोक्षिः। 🏸 🗇 🕝 संव, भ संवं, भ १४, १४। प्र—प्रश्वेष:। वियोग:। सम्—संयोग:। समझ्वित् सक् - सिंत (सेता) स्वा, चा। गति:। अक्र् में ब्रिंग (चेनि) आ, प। गति:। बय-(बय) घटनाः । पुत्र । बाब्येन् । जंतुकाष्ट्रम् । श्चरते दीघे मंसारप्रत्यः, सवि १६८। ा को म् कोल, आ, या। पंचातः। श्राक् शाकु, (गासु) खा, प। प्रमानम् । चयमानम् व्यापारः। व्याप्तिः। पश्चिमकामकः। की १७। प्रविधतः काच् साष्ट्र, खा, था। कत्यनम्। व्यापारः। छन्दीववयास्वरचनम्, दुर्गा। , साथा। प्रशंसा। साधते देवदत्ताय, क्रीवति। यद्योके। क्यांकिता। प्रज्ञी-बिष्ट। श्रीकर्यति। अयश्रीकत्। या १, ४, ३४। शस्त्राचे । साचिता । बाविष्ये जेन, में १८, है। पद्माविष्ट । षीकः। कोण्, स्रोकृ (कोणु) श्वा, प पञ्चाविवाताम्। ज्ञाव्यति। प्रमुखा-वत्। जावमानः परस्तीयः, ८, १७। । चंत्रतिः । म , मारुः । ग्रामः । ग्रामः वाचा। कह, खिक (किंक) खा, पा । मति:। श्चिष् (मुख्) खा, य। दाषः"। मच-मच-मच, मां। श्चेषति। शिश्चेष । श्वेषिता। प्रयं बैट्। श्लिष्, दि, या पालिक्रनस्। गति:। याज् याजि याचि इत्येके। प्रत्यामितः। योगः। श्रिष्यति। यः क्षवते। क्षत्रते। क्षत्रते। प्रस्ति। किष्यति प्रियां प्रेम्णा स्रेपति विषतां उच्चित्र । '' पुरम्, कविं ६१। जिल्लाति वामणि, कंट पहला। कु ए, हो। गीतगी १, 84 । शिषति इसं खता, दुर्गा। यित्रेव। विशिषतः।

हुर्वाकाम्। सस्यग्भाववभिति दशाः नायः। सन्यग्भान दलकोते। क्रक बंख (बंड)। विद्या विद्या । १९५ क

विस् - इ. पं. को ११ र स्वार्थम् ।

हैं । साने क्रिज: प्रियं प्रिये, स 4,

बेष्टा। क्षेत्राति । प्रश्चिवत्, युवादिः,।

पालिक्नने तु, पश्चित, पा शृ १,

BOND CONTRACTOR OF THE

ये ग्रेष्टि।

शांतिः। ३ दीखास्। तद्धाः वास्तं-यतः। खर्तः—(द्वर्त्तः)। खर्तः—व्वज्ञः, स्वा, य। ग्रीव्रगतः। मतोऽप्रिः विष्वसनीयताऽस्य , वपु यक्तुको ६१ । । । । ाषि - दुर्घोषि, था, प। १गति:। र इद्धिः। स्कोतिः। व्यवति। विः ्याला (वर्षा) वु, ए। वयनम्। यंगाव, पा ६, १, ३०। मुगुवत ा जिस्सम् अदा, प्राप्तस् । । ती अ श्चयविष्य। पर्चे, शिष्ट्यायं। शिष्टियुत खास: । नीवनम्। खिसित, पा ७, निष्विया। ग्रागुतु भुना, स १४, ७ म्बयिता। म्बयिष्यति। प्राप्तिति, श्रुयाः २, ७६। खसित:। ध्यस्ति। पुंचि विखिति जुल जुमारी, नै ४, ११०। पशिष्वयत्, पा ३, १, ५८ । प्रव बसात्। हि, बसिहि। अखसंत्, पा ७, ४, १८। प्रम्बयीत्, पा ७, प्रमानीत्, पा ७, ३, ८८, ८८। प्रम्ब-५ । । । । । इदतोऽशिष्वियञ्चनुरास्त्रञ्च सितास्। यखसन्। यखास्। यख-तवास्त्रवीत्। भः ६। १८। ग्रध्नक्षेत्रास्त्र सत्। अवस्ति। अवस्थित। अव-पची कारी, भार, श्रा वर्मा सीत्। प्रवासिष्टाम्। प्रवासिष्ठः, पा मुयते। अक्षायि। भिकायिषति। श्रेष ७, ॰, ५। शिक्षसिवति। शाम्बदाते। यते। शोश्यते, पा ६, १, ३०। शेः याम्बस्ति। महासयति। प्रशिषसत्। वीति, ग्रेंग्बेति। आययति। प्रशि म्बसिता। श्रेष्ठस्य। म्बस्तः। विम्बस्तः यत्, अशुश्वत्, पा ६, १, ३१। ग्रु विख्यित: ग्राम्बुस्त: पाम्बस्तित रति वृयिषति, शिकाययिषति। व्ययित कलापमुख्योचे। खन्तः खचित् इति · श्य । (पो) श्न:। श्रृति:। श्र्यनः प्रदीय:। भावे, म्बस्तम म्बस्तिति (ट्) खयशुः। खयः'। आ।। चद्, सम् पद्मनाभाः। व्यासनस्। व्यासः। व्यास-स्क्रीति:। अत्रत्वदितो च्छ्नज्यम तुम्। असन् बदुणाम्, भा ३, १८। मांचीपभीगसंश्नः, म ८, १६। षा, समा पाषास:। साक्वना। मित् मिन् मिन्, व्रजाखिसिंहि मा बदः, भ ४, १८। भा, या। वर्षः। ग्रुक्तीभावः। खेतते ततोऽक्रन्दीद् दशमीवस्त्रमाधिमा-वद् यद्यः स्रोतते दिच् स्रिन्दते सदिन्द्रजिल्, भ १४, ८५। समाम्बस-त्रावये, कवि २३३। मिन्दरे हि सदामिति, शकु ६, २०३। छद्-गिषिते। खेतिता। खेतिषते। पा डक्यानः। पन्तर्यसम्बद्धाः। उक्त-तत्। प्रश्वेतिष्ठ, या १, ३, ८१ मास दीना, स १८, ५५। मि, निर-सदस्तदम्बे ति इंसे:, इत्तर्ने १२, १२ नि:म्बास:। बहिम्बम्बास:। दीर्घ (घा) खितितम्। जित्तम्। नि:वस, यहा ६,१८०। वि— विका-सः। विश्वस् पन्तिगर्थः समन्तात् Lating material भ २, २५। न विष्यं रेदविष्यंद्व सिति g of the think of न मधो बुक, की १२१। पालसेयु-, वृक्ष — जक् — जर्ज — (किंका) निमाचरः, इति अहि:। गणकार्यः-भ्या, पा। गमनम्। पुताते। खबा

मनित्य सिति विषय, प्रदीय: । दी

21.9 । । गणरूपणः 219 ्रव्यकाती पुषुको । विष्यको । विष्यको ।

यस्त - प्लाइ इत्यवि के चित्। एष् — एमि (स्क्रिंभ) ध्वा, या॥ प्रतिबन्धः । एकते । टएको । एकिता । ष्ट्री भा, प, बो। १संदातः। २ गन्दः। द्यायति । उद्यो। द्याता। हिन् हिन्, भ्वा, दि, प । निरसतम्। जिष्ठीवनम् । अस्मादिवस्तम्,। जुतुः कार इति । भट्टमनः। । । छोवति, । पा ७, है, ७५। होव्यति, पा ८, २, ०७। घोतमिन्दुं होवासः, भ १३, १८। डिक्टेब, तिक्टेब, की ६८। टिक्टिबतुः, तिष्ठिवतु:। राचसार्व नितिष्ठिवः, भ १४, १००। क्षेतिता। क्षेतिकता चा-गिषि, डीव्यात्। प्रष्ठेवीत्। प्रष्ठेवि-ष्टाम्। प्रष्ठेविषु:। टिष्ठेविषति, तिष्ठे-विषति । दृष्ट्रावति , तुष्ट्रावति । देही-व्यते, तेष्ठीव्यते। ष्ठेवयति। (ड) ष्ठेवि ला, श्राला। ० डिया ह्यूनः। द्र्यातः। ष्ठेवनम् । छेवः । छेवितुम् । नि-किष्ठी-वनम्। निष्ठेवनम्। रहाः । ज्यष्ठीवत्, भ १७, १०।। निक्यूतः, मा ३, १०। । होव् छोव् छोव्, स्वा, प, बो निरमनम्। ष्टीवति। टिष्ठीव। श्री-विता। ष्ठीविला, ष्ट्रांला। ष्ट्रांत:। निष्ठोवनम्। 🐪 🧎 The Company of the Company ging thing (4) as in , so A STATE OF THE PARTY OF THE PAR

। संग्—वर्गे, स्वा, प। संवेदग्रम्। सगति। सगिता। प्रसगीत्। सग-यति विकास सम्बद्धाः

ा सच् पन्, सा, प। विसा सम्रोति। स्थितुः। प्रस्थीत्, प्रसा-वित्। ।।। ।।। (वह) क्व-क्व

सहेतः प्रदेश्यः । च । प्रायस्यवम् । सङ्गेतयति । सङ्गेतितः ।

25

सङ्गाम—यदन्तः । चु, या।

युंबम् । संख्यामयते । अस्तंत्रामत । सच् वच्, स्वा, या। १ तेचनम्।

२चेवनम्। धन्, भा, उ। समवायः। रामीकरणम्। सचिति। सत्तः।

.०० जीव सर्व्य संस्थानसङ्ग्रह्म षस्त् धन्य धन्त्, धाः प। बति:। संव्यति।। व्यवसासनेपदीति केचित्।

सकते। पासस्त्रमानेचगः, मञ्जू २, Register them, were therefore संब् प्रमुक् भ्या, पा सङ्गः। संद्रोव; । योग: । सजति, यो दि, ह,

२५। सस्जा। सम्बातः। सस्जाः फल-रेवावो सत्तीभकटेषु, र ४, ४,७। सङ्का। सङ्ख्यात । सन्यात्। प्रसाद्वीत्। यसाङ्काम्। यसाङ्चुः। भावे, यज्यते। असिका विसङ्गति। अभिविषङ्चिति। संस्काती सामङ्क्ति। सञ्जयाती प्रसर्वेञ्चत्। स्काः। •स्वयः। स्काः। स्काः। सञ्जनम्। सङ्गः। सङ्क्षुम्।

संज्ञी। यन्-प्रनुषद्धः। यन्त्रितस्य पुनंदन्तयः। श्रीम-श्रीमवृष्टः। परा-भवः। अव-योजनम्। अवसत्तः। पित सोडब सत: स्वन्धे भ्जाइस:, भारत। या-चासितः। यीगः। पास-सक्त अयं तेषाम्, अ १४, १०६ । भुजे

म भूमेर्षर माससञ्ज, र.२, ७४। चाप-मासच्य कारहे, कुर, ६४। प्र-प्रसङ्गः। पासितः। प्रसन्धिन्द्रयार्थेषु नरः पतनसञ्ज्ञितः । स्मृतिः। पिष्टमः

रणादावि मांसभी जनं प्रमुख्येत, स्रातः। P. (POR UN) W. (Company)

```
ं सर्-भर्, खा, प्रा अवयवः।
सद् - पर, चु, प । चिंचा ।
 पढ़ सह (यह)। हा व
  ्रा सत्र चदन्तः। चु, था।
 सन्तामक्रिया।
                 सङ्-वद्ख, भ्या, तु, प ।
   १भेदः। श्रामनम्। १षवसादनम्।
 विषाद:। सीदति, पा ७, १, ७८।
 न सीदति काचित् कार्ये, वाव ७०,।
तहादी सदे पाठः। मतरि तुम् विका
चार्थः। चीदती, चीदती। त व
 बीरावसीदताम् भा१७, ५४। सवादः।
 सेदतः। सेद्यं, सन्य। प्रमदाः सेदु-
 रेकासिक्तियं विविज्ञागिरै:। (इप-
विष्टाः), अ ७, ४८। सत्ता । सत्यति।
चसदत्। 'स्वित्संति। (भावगर्शवां
 यङ् ) सामवाते, पा ३, १, ३४। साम्ति।
सादयति। पसीषदत्। (शिंसा)
ये: बादिताः, र ७, ४४। सर्वा।
 • सदान सनः १ सतिः । सदनम् । सादः ।
यतुम्। पव-पवसादः। सङ्तां
निया नित्या किंद्रे नैवावयीदति, भ
4, २४। पा—बद्, चु, प। प्राप्ति:।
गमनम्। संविक्तवे:। पासादयति।
सर्गेत्रासद्ति त्रियम्। पासादयति
विद्यानां धारम्, कवि ७७। धास-
साद। धासता। धासात्सीत्। धासा-
दिती क्यं न गजे:, भ २, ८५। सुयी-
वान्तिश्रयारेट्: भ ७, ३१। उद्-
णिच, ज्यालनम्। जद्दत्तेनम्। जद्दत्तं-
नोत्पादने हे दखनरः। उप-प्राप्ततिः।
प्राप्तिः। उपवेदु देशयोवम्, भ
८, ८२। नि उपवेशनम्। विष्णायां
निषीद, र २, ८८। न निषीदति
पीक्षे, मा २, ८६। प्र-प्रशादः
निर्मेत्रीभावः। दिशः प्रसेदुः, र ३,
```

१८। प्रचीद विद्यास्यत् वीरवज्ञम्, १, ८। प्रति—प्रतिचीदति, पा १, ६६। वि—विषादः। प्रकृत विषोदनाः, स. ७, प्रदा विषयाद, प्र, १, १, १ । सन्—वण्(वन) स्वा, पा सन्मतिः। सेवा। पण्, त, छ। दानम्। सर्नी सनीति। सनुति। समान्। सेवी।

सेवा। येथा, ते, छ। दानम्। सर्गी सनीति। सनुते। सदानं। सेने। निता। सनिचति। •ते। साय सन्दात, पा ६, ४, ४३। सनिवी पसनीत, पसानीत्। पसनिष्ठ, प ते, पा ६, ४, ४२। पसनिष्ठाः, प

था:। कर्मण, सायते, सत्सते। रि निष्ठति, सिषाचिति, पा ७, २, ४, संस्काते, सासायते, पा, ६, ४, ४ संस्काते। सामयति। असीषण (च) समिला, साला। सातः। साति सितः। सम्बद्धाः ४, ४, ४५।

्सप् अप् स्वा, प । १समवायः । सम्बद्धः । २सम्यगवदोधः । सप्ति सभात पदन्तः । पु, प । १प्रीतिः २दर्भनम् । **२सै**वनम् । सभाजवि

पुष्ययोकः सभाजयम्, उत्तर ।

सम् स्तम् जम्, छम्, स्वा, प ।
१ पवेकस्यम् । पविद्वलता । १वे स्यम्, वो । समित । स्तमित । समि यदियोगेन सोमन्तिन्यः स्वरातुर कवि २२३ । एम् पदस्तः । सु, ।

वेक्कव्यम् । समयति । सम्ब्—वस्त्, स्वा, प, वी । गतिः । प्रम्, चु, प । सम्बन्धः । साम्ब, प प्रत्येते । सम्बन्धिः ।

सय् पय् (पय) भा, पा। शति

सर्जे — वर्ज (वर्ज) भ्वा, प। यर्जनम्। सर्जीतः। समर्जे। सर्व - प्रवे (कवें) श्वी, ए। गति:। षव् (प्रवे) भ्वा, पा श्रिंसा। सर्वति। सर्वति । . सन् पस् स्वा, प। गति:। सस् - संस् - वम्, प्रस्ति, पदा, पा खंद्रः। संस्ति। संस्तः। समन्ति। समाम सिमतुः। समिता। अमसीत्, भसा नीत्। सन्ति, पा द, ३, ३८। सन्तः। संस्तान्ता तंस्ति संस्तः इत्येके, की १२७। संस्मि, पाट, ४, ६५। समस्ता। समस्ततः। मंस्तिता। चसंस्तीत्। इमी वैदिकी। तालव्यादी दति कथित्। सङ्-जह, भा, था। मधीगम्। महनम्। चमा। यतिः। सहते। ्षेहे। यबनीसुखपद्मानां संहे सधुमदं न सः, र ४, ६१। संदिता, भोढा, पा ७, ४, ८। महियते। क्यं महियते तत् प्रथमावनस्थनम्, कु ५, ६६। भवराधिसिसं ततः सहिधी, ग्रंकु ३, ११८। सन्तिषेष्ठ। असन्तिष्ठ। असन्ति-षाताम्। प्रसिद्धवतः। सिसहिवते। मामद्वाते। सामहीति, सामोडि। साहयति। श्रसीवहत्। पर्थ्यसीवहत्,

मोदुा। सादुा इति केचित्। अस्त मोढ: मिडि: महनम्। बोद्रम्, सहितुम्। सहिन्तुः। सोढवार्म्। संक्रमीयः। दुःषद्यः। तुराषाट्। छद्-उवाष्ट्रः। षा'द, ३, ११६। सिसाइधिवात, पा द, इ, ६२। यह, चु, पा सर्वणम्। सहनम्। साइयति। सहति। स एवायं नागः सहति कलभेभ्यः परिभवम्। माहयत्याइवे । चोभं महति द्रिवृष्-व्ययम्। प्रन्यासं सहते नासी सद्यति वितिरचणे॥ निवि ३१। सहिता,

राज्यधुरी प्रबोद्ध" বার্ঘ कनीयानच सुत्सहेंग, भ है, ५४। चणमप्युत्स इते न मा विना, कु ४, है ६। परिषद्धते। निषद्धते। विषद्धते। पेथेंबहत, पर्थसर्हत, पा द, ७, ७१। षरिसोडा । परिसादुम्। परिसोडः, पाट, ३, १।४। वह, युह, दि, ए। १व्हितः। १ चमा, वो। सञ्चाति। सञ्चाति। सुवाह। बसुहत्। सुहितम्। सोहित्यं तपेणं विशिशित्यमरः। साट-प्रदन्तः। चु, प, वी। प्रकाशनम् । साध् (राष) वाध्, वो। हि, स्वा, प। संसिष्धः। निव्यत्तः। निष्पादनीत गोविन्दशहः। साध्यति । साम्रीति। ससीध । ससाधतुः । ससाधिय । माजा । सात्स्वति। श्रमात्सीत्। श्रमाहास्। बसात्सः। सिसात्नति, सिवात्नति। वो। सामाध्यते। सामान्ति। साधयति। मनीसंधत्। (१६भगादनम्। ग्रन्थधः। ३ पाति:। ४ परीचा। ५ गस्तम्) प्राधीच प्यमानाः साधि गैमिस्याने प्रयुक्तिते, दर्णेषः। सार्षाः। •साध्यां •साहः। याधनम्। साबुम्। चित्रः, साम्रायत्वा। •साध्य। साधितः। साधनाः साधिः तुम्। प्रचाधनम्। प्रकारणम्। क्षण्डकशोधनम्। वैर्गियतिनम्। प्रसा-धितीऽसङ्गतस भूषितस इत्यमर:। मेदिनों भीक्षुमेक भुजनिर्जितिहवा न प्रसाधितुंमस्य के किला, र (€, ₹1

साइ:

चहिता

सहितव्यम्

सोढाः।

सिचते। अमेचि। सिमिचति। •ते। समाखासनम्। सान्वयति। प्रस्तान् परिषिषचिति। ०ते, की २०५। सेसि-सान्तयः, भ १८, २४। चन्द्रकर्ती चाते, पा द, ३, ११२। प्रसिसिचाते। बनानि सान्त्वर्यं, उत्तर २०६। सान्त्व न्द्रस्थित । उपायक वात्र विकास सेसेति। सेनयति। प्रमोधिनत्। माम-प्रदन्तः, इतन्तय, वो। सिका। रेतः मिका स्त्रीषु, मनु ११, १७०। १ भिचा। मिक्त:। प्रावासे सितासंख्ष्टे, सं ५, ८०। धेचनम्। सेकः। अ चु, प । सन्तिना। प्रियकरणम्। येत्म । सेता। मंत्राव्यम् । संचनीयम् । समामासनम्। सामयति। श्रवि—चागम्। श्रवि सिचे: क्रशानी सांस्व (सस्व्)। लंदर्गम्, भ, ८, ८२। म्राभ—प्राप्त-घेरनम्। तर्पणम्। म्राभिष्यत्। नार-कप-प्रदन्ती। चु, पा अध्यविञ्चत्, पा ८, १, ६७, ४५। दीर्बेखम्। सारयति। सपयति। स्नानाभ्यसिचताचोऽपी तथाभ्यविक्र सि—षिज्, खा, क्रा, ख। वारोषि पित्रभ्यः, स 🐧 २१। इर बर्खेतम्। ्रिजोति। - सिनाति। जलेर्मामभ्यविचत्, भ ६, २१। १५, ३। राज्येऽभिषेच्ये सुतम, भ ३, २। विनुते। सिनौते। सिनुयात्। सिनौयात्। सिन्दोत । सिनीत । असिनोत् । असिन-सैनापत्थे मा सभिषिच, भारत। नात्। प्रसितुत्। प्रसिनीतः। सिषायः। **उद्—उत्रेकः। गर्वः। न तस्योत्।स-**सिषयिय, सिषेय। सिष्ये। मेता। विचे सनः, र १७, इ। नि—निवेकः। बियति। वते। प्रसेषीत्। प्रसेष्ट। चर्णम्। गर्भाधानम्। सतं निविधन्त-सिसीष्रति। •ते। सेषीयते। सेषयीति। मिवास्तं लेखि, र ३, २६। बेषेति। सायग्रति। प्रसीपद्य । सिला। सिट्-षिट्, भ्वा, प। प्रनादरः। • सित्य। सितः। सिनी ग्रासः स्वय-सिध् — विधु, विध्, वी, खा, प। मेव, पा ८, २, ४४। सयनम्। सेतुम्। गति:। सेधति। सिषेधः। सेधिता। विषितः। विषितः। विभिनोति। सिधिष्यति। प्रसिदीत्। (३) सिधला, परिवितः। निषयः। परिवयः पा ८, मिडा। सिड:। विभू, सिभित:, वी। 4, 4. Land of the land. गङ्गां विसेधति। प्रसिर्धधति गाः, पा ्र विच्-विच्, तु, छ। चरणम्। .८, ३, ११३। परि—वेष्टन्म। 'दियो सेचनम्। . सिञ्चति। •ते, पा ७, १, घन् परिषेधतः, भ ८, ८८। प्रति-पट। सिषेच। सिषेचिय। सिषिचे। प्रतिषेधः। शिष्यमकार्य्यात प्रतिषे सिषियुरवनिमस्यवाताः, भा १८, धति। विध्, स्वा, प। र्यास्त्रम्। पतुः १९। सेता। सेच्यति। ०ते। सिच्यात्। यासनम्। २माङ्गस्यम्। सङ्गलक्रिया। सेघति। सिवेष। सिविधतुः। विषे विचीष्ट। प्रसिचत्। असिचत, प्रसिक्त, पा र, १, ५३, ५8। बसिचेताम, बसि-धिय, सिषेद। सिषिधिव, सिषिधा

चाताम् । प्रसिवन्तं, प्रसिचतः । प्रसीचः

सान्त्र — वान्त्र, चु, पा सान्त्रना।

मेडा, मेचिता। मेस्यति, मेचिव्यति। चमैत्सीत्। असैदाम्। असैत्सः। असै-भीत्। असे धिष्टाम्। असे धिषुः। कर्माण, सिध्यते। प्रसिध। सिषित्सति। सिसि-धिषति, सिसेधिषति [सेषिध्यते। सेवेचि। सेधयति। प्रमीविधत्। चय- खण्डनम्। पापसपसेधति, धनु ११, १८८। श्र भन्भवरोधः। **डद**—डसीधः। ः डचीमावः । अार्जन, प्रति—निर्धेष: । निवास्त्राम् । भूत्राः णान् न्यवें धीत्, भ १, १५) ग्रस्तु न्यवेषत् प्रावकास्त्रेण, स १७, ८०। तेन न्यमेषि श्रेषोऽप्यन्यायिवर्गः, र. ४। अनुष्टानं कथं प्रतिषेधत, उत्तर **१८४। विध्,दिणा मं**राज्ञिः। निष्यत्ति:। जदन्याठः प्राप्तादिकः, की १९८। विध्यति। यते क्षते यदि न निर्ध्यात कोऽब दीवः, डिती। सिषेष । सिषेषिया सिद्धा । से स्थाना प्रिवित् विविद्याति। सेविध्यते मेवें वि। विष्यु साध्यति अवस् षा ६, १, ४८ । पारली जिले तु, सेध-यति नापमं तपः। धिर्षित्वा, सिद्धा। •सिध्या सिंहा सेधनम्। सेधः। वेदुम्। चिन् साधियला। वसाध्य। साधित:। साधनम्। साधितंम्। षाधकः। विसिद्धति, पा ८, इ; ६५। सिन्त्-'सिवि', स्वं, व। सेचनस्। विभ्—मिभ् —विशु. विन्धु, स्वा, पं। इंसा। सेमति। सिम्मति। मिथिमा। सिल् - (धिल्) ।

सिव्, विधु, दि, प। तन्तुमन्तानः। सीवनम् । तन्तु भिर्यत्वनम्, दुर्गा । मीव्यति। तद्यम्चा मनोभवः सौव्यति

दुर्यमः पटी, ने १, पणा

त्मक स्तन्तुः नामेर्याणि सीव्यति, सक्त १५२ । सिषेव। । सिषिवतुः । सेविता सेविषति। शीव्यात्। प्रसेवीत्। प्रसेविष्टाम् । कर्मणः, सौन्यते । प्रसेविः। विवैविवर्ति । चस्यूवर्ति, वा जु र ४८। सेवीव्यते। सेवयति । प्रसीविक वत्। न्यसीविवत्, भा ५, ११६। (७) चेविता, स्ता। •स्तम्। देवनम्। सीवनं स्वातिरित्यमरः । " विश्व कृत (PD) YD methods च व, भ्वर, घटा, प । (प्रस्ता ।) षस्यनुता। ३ ऐखयम्। स्वादि-

गैत्यर्थोऽपि। सर्वति। स्रोति। स्रुतः। सुवन्ति । सुषाव । सुषुवतुः । सुष्विधः स्त्रीय। सीता। सीव्यति। प्रसीवीत्। षसीष्टाम्। प्रसीषुः। षुष्ण्, स्वा, छ, वो। मति:।षुष्णः, स्वा, छ। ।सानम्। २ स्वयनम्। १ वीडनम्। ४स्रासस्यान नम्। ५ योगः, वो । ६ मन्यनम् । सुवति । वते। सनीति। सत्ति। सन्ति। सन्तिहे, सनुबन्धे। सुवाव । सुव्वे। स्रोता। सोव्यति। •ते। इयात्। सोवीषाः मसाबीत्। प्रसाविष्टाम्। प्रसाविष्ठः, या ७, २, ७२। प्रसीष्ट। प्रसीपा-ताम्। असोकत । सुस्वति । •ते । सोव्यति । सोववीति । सोवीति । साव-यति। प्रस्थवत्। सत्वाः •सत्व।

मोमसुत्। राजस्यः। सभि-सानम्। वीन् वारानभिष्ठन्वते, " जनमे •सप्राव ।

स्तः। सवनम्। सुलाः सुलानी।

॰सोर्थाता। ॰धमोर्थत्। सुप्रवति ।

ं सूचः, पा द, ई, ११७ ह TA: B **उत्सवः ४**

चराविष्टाम्। चभिषुवति। परिषुवति, सुखयति । एतावदवश्चापि मां सुख-पा ८, ३, ६५। सविता। स्तः। यति, शक् ।, ६०) ⁶ सूच - भदन्तः। चु. प। पेश्रन्यम्। सह - बुह् (पह) खु, प। १ चर्नादय:। व्यक्तीकरणम्। स्वनम्। स्वयति। षसुस्यत्। यड् सोस्चते, को २०६। ्रतीच्छम्। अस्योभावः। सुदयति। मन्त्रो गुप्तदारी न स्चते, र १७, ५०। (१) सुम्, मुक्स् (ग्रम्)। स्त्र-चदन्तः। चु, पा श्वेष्टनम्। सर्- पुर, तु, या १ ऐषायाम्। े देविसी चनम्। इग्रन्थम्। स्तः रदोप्तः। पुरति। सुकोर। सोरिता। यति। प्रमुस्तत्। यङ् सोस्त्राते, की २०६ सुड् (सञ्) स्ट्-वृद्, भा। १ सर्वम् स्-वृंड्, घटा, दि, या। प्रसवः। श्रीनरासः, बो। निचेषः। सुदते। प्राणिप्रस्वः। जननम्। उत्पादनम्। न सुदते मति येख यः स्ट्यति गात-खट् स्ते। सुवाते। सुवते। स्वते। वान, कवि २५६। सुष्टे । स्टिता। विरंडजता • पञ्चवं स्ते। नोट् सुवै। बस्दिष्ट। सुम्दिवते। संष्ट्रदाते। स्वावहै। स्वामहै, पा ७, ३, ८८। सं। वृत्ति। वृद्, चु, प। १ चरणम्। लुक्ट् यस्त । अमुवाताम्। अमुवत । अस्त सदाः जुमुमान्यंशीकः, कु १६, २ इन नम्। ३ निरासः। असञ्ज्याम्। प्रक्रिनम्। स्टयति। पस्युदत्। -२०। अस्त सा मैनावम्, कु १, २०। लिट् सुयुवे। "सुष्ठेविषे। सुषुविवह, नि—निस्दनम्। डिसनम्। को १, ३४। सुट् सोता, सविता, पा स्र (यूर)। ७, २, ४४। खट शोषते, सविषते। सूर्य - वृष्ट्, स्वा, प। पादरः। षाणिष, सोबीष्ट, सविबीष्ट। सुड् धनादरः, वा। सूर्धता स्पूर्ध। यसीष्ट्र, अस्विष्ट । कामेणि, सुधते। मुसूर्यं, वो। स्थिता। प्रस्कीत्। प्रमावि को शस्त्रया उसावि सुर्खेन रातः, भ १, १४। सन् सुस्वते, सीष्-चवहेलमस्चेण[सत्यमर: । सूर्क्य —(ईर्ष) खा, प। ईर्षा। यते। सोषवीति। सोषोति। णिच मानवति। प्रस्ववत्। सुवावयिषति। स्र्विति। सम्बी। सृष्ट्यं, वो। स्वान रैस्य। स्तः। दि, स्नः। स्ष्— वृष् (शूष्) भ्वा, प । स्ति:। • पृति:, प्रा ८, ३, ८८। सव-प्रसवः। स्वति। सुवृतः। नम्। सवः। सोतुम्, सवितुम्। प्र— स्—स्वा, प । गतिः १ भसवः। प्रांसीष्ट श्रश्चन्नम्, स १, १८। किए प्रसः। घु, तु, प। प्रेरणम्। क्षरति (वेगे धावति), पा ७, २, ७८। सुवति। मुवावी सुवतुः। मुविया समार्गः सस्तुः। सम्ब्री सस्ता स्वता। स्विष्यत्राः प्रसादीत्। सत्ती सरिष्यति, पा ७, २, ७०।

पुष्य-शदन्तः। चु, पो पुष्यवस्यम्।

स्वियात्। श्रमाधीत्। श्रमाष्टीम्। गिर सामभू, जुर, ५३। स्रष्टा, पा चनार्षुः। चसरत्, वो, पा ३, १, ४६। ७, ४, १६। स्वाति। वते। स्ट्यात्। इह लुमग्रवा श्रासिना साहच्यात् धचीष्टा बसाबीत्, पार्क २, १११ सर्व्धतीं जी होत्यादिक विव रखीते. षस्राष्ट्राम् । पस्छ । अस्ट-तेन स्वाद्यो र्नाङ्, को ८७। प्रजनाभ-चाताम्। अस्चत्।, अस्ताचुः रस्त्रम्, अ मते भ्वादे रैवाङ् ऋस्यास्तित स्रवः ३, १७। पस्ट योऽसान्, भ ३, १३। निर्देशात्। सिमीर्वेति। सेस्रीयते। नमंगि, सञ्चते। प्रमर्जि। सिस्चिति। सर्वति । सारयति । असीसरत्। स, •ते। सरी सच्चारते। सन्दीर्धाः सर्जयिता चु, पा १ बास्तरणम्। २गितः, वो भमीस्जत्, भसमजैत्। सङ्घा। • सञ्च सारयति। स्वा। ॰स्त्य। स्तः। सृष्टः। सृष्टिः। मुज्जनम्। सर्गः। स्रति:। सरगम्। सर:। सार:। सन्म। सष्टुम्। स्रष्टा। स्त्रष्ट्यम्। सर्जनीयम्। सत्त्रम्। अनु—अनुसर्णम्। अनुगर्म विखस्क्। पति पतिसर्भनम्। नम्। अय-अपसर्णम्। दानम्। भव-निचेवः। भर्षणम्। डद्-पनाय-नम्। दूर मपसर न चेडन्तव्योऽिं चत्मगे:। नि—परित्यागः। न स्वामिनाः मया, हितो। यभि-णिच्, प्रभिमा-निस्टें श्रे दास्यादिम् चते, रणम्। कान्तार्थिन्यः सङ्केतयानम्। मनु ८, ४१४। वि-विस्केनम्। एवा भवना मभिसार्थितुमागता, दानम्। त्यामः। मोचनम्। प्रेषणम्। मुच्छ २३०। उद्-णिच्, डत्सारणम्। विसर्जेयेद यं स्तनका हिंती, है है, दूरी तरणम्। उप-मसीपगसनम्। निर्-निःसरणम्। निष्क्रसणम्। प्र, २०। चोकान् व्यसज्यत्, स २,४३। विस्त श्रुस्नी क्षेपाणम्, उत्तर २, वि—व्याप्तिः। विस्तवरी विस्तिर १०। सम् संसर्भः। संकृतिः। इत्यमर:। सम्-संमरणम् । हिन्नवार-सप् सप्छ, खा, य। गति:। षम्। भूनानि संसारयति चन्नवत् सर्पति । समर्पे । सस्यतुः । समर्पिथ । मनु १२, १२४। सप्ता, स्त्रमा, पा ६, १, ४८। श्रमा ति, स्ज तु, प, दि, भा। १विश्वमैः। संस्थाति। बस्यत्, प्रशासीत्। त्यागः। श्रीमीणम्। करणम्। प्रसाप्सीत्, वो। प्रसूपताम्, प्रसा-स्टि:। व्यद्भ्यां परस्यागार्थः। चन्यत माम् प्रसाताम्। विस्पृपति। धरी-तु करोत्वर्थः। सृजति। स्रज्यते। क्यते। सरीसित्री। सर्पयति। भूगानिकालः स्जिति, भारतः। उपा-कपत्, भ्रममपत्। स्मा। •सूधा। मनामिल पितुः सा सृज्यते, नै १, स्तः। सर्पेणम्। सर्पः। सर्तुम्। स्त्रुम्। ३४। संपूर्वोऽय सक्तमेक:। सङ्गमार्थः। सर्वि:। धतु—धनुगमनम् । घप—धप-संस्त्रकाते सर्भिजरक्षांग्रभिने निया-सर्णम्। तर्गहनेनापसंपति, उत्तर परिणासवायु, र ४, ६८। की १३७। घनुषा बाण सस्चत्, र ११, ४४। १६८। छद्-विद्वार: । उज्जाहनम्। षण-समीपे गमनस् । प्र, वि ससि-समर्जे। सस्मत्: । समर्जिंग, सस्रष्ठ, पा गमतम्। इषि:। कमे प्रस्पेत्, स इ ९२,६८। सस्जे। सस्जिषे। सस्जे रटी सम् सञ्चारः।

वृत्तु, वृन्तु, स्तितु, स्तिन्तु, स्वा, प । हिंगा। समेति। मुखता। स्रेमति। स्थित। :

programme and the second

्षु (स्)। सेम्-स्रेक्-श्रेक्-स्रेक्-

ी सेजा, श्रेजा, भ्या, भा। गतिः। सेवारी। प्रवीपदेशता क हः। सिसेने। की 891 THE PERSON LANGUES IN THE STATE OF THE STATE

बैड् (श्रेल्)।

चैव-भैव-वेह, भेह, (शह) भ्वा, पा। ड, बो। सेवा। पाराधना।

भक्ति:। व्ययोगः। पात्रयः। धैवते।

भेवते। धैवति। •ते, वो। नीचं सम्बद-मपि बेवति नीच एव। खाधीने विभवे उर्घन्ने नरपति सेवन्ति कि मानिनः, दुर्गाः। सिषेवे। सिषेविषे। तं पवन: सिधिवे, र २, १३। तं यान्त क्राचादः सिषेविरे, स १४, ८०। सेविता। वैविष्यते। सेविषोष्टः प्रसे-विष्ट । असेविषाताम् । असेविषतः । कर्मणि, सेव्यते । असेवि । सिसेविषते । बेषेव्यते। बेवयति। प्रसिषेवत्। प्रयं दन्खादिया प्रसिवेवत्, वो। सेवित्वा। •सेव्य। सेवितः। सेवनम्। सेवा। . सेवित्म्। सेविता। सेवकः। सेवि-तव्यः ि सेव्यः। देव्या नितस्वाः किस् भूधराणा सुत् सारस्रेरविकाधिनीनाम्, काव्यवकार्यः। मा—उपभोगः। यद्वायः किराते रावेब्यते, कु १, १५। नि-सेवा। पात्रयः। उपभोगः। पतित एव

निवेच्य दि वादबीम्, ने ४, ७०। निवे-

वते। विषेवते। परिषेवते। न्यंबे-

ा चै पे (चै) खा, प । चय:।

41/1444, Q| E

संयति। सरी । साता। सायात् चनामीत्। सिषामति। सिसामिति

वाक र र

षी थी, दि, य। श्रन्तवर्म। विनायनम् । स्थति, पा ७, १, ७१ षभिष्यति, घा ८, १, १५। प्रसी

चिसस्ते। साता। सास्यति। सेगत्, पार्द, 8, ६७। असात्। असासीत् पा ९, ४, ७८। अमाताम् । अमानि ष्टाम्। नर्सणि, मीयते। जनावि।

सिवासति। सेवीयते, ६, ८, ६६। सामेति। साययति, पा ७, १, १७। सिला। •साय। सितः। सितिः। सातम्। सार्यः। अव-भवसानम्।

समाप्ति:। प्रवसेयाः कार्य्याणि धर्मेण पुरवासिनाम्, भ १८, २८। वच्छव-सिते, सु २, ५१। प्रध्यव-प्रध्यवसायः। उता ह: । पर्येव-पर्यंवसानम् । एरि

णामः। सीकान्तरं पर्यावसितासि,

उत्तर १७२। प्रत्यव प्रत्यवसानम्।

भोजनम् । व्यव—व्यवसायः । उद्यमः। र्वेष्टा । पातुं व्यवस्थति । शनुष्यव— प्रमुख्यवसायः । बुहार्थस्य पुनर्वीधः । स्कान्द् - स्कान्दर्, भ्वा, प। १गति:।

चस्कन्दतः। चम्कन्दिषः, चम्कन्य। स्कन्ता। स्कन्त्यति। अभवन्तयत। चाधिषि, स्कदात्। (दर्) चस्कदत्,

रंगीषणम्। स्वन्दति। चमकन्द।

प्रम्कान्त्मीत्। यम्बद्धाम्, प्रस्का-न्ताम्। प्रस्कदन्, पस्कान्तसः। कर्मणः,

स्तियते। प्रमुकन्दि। विस्तन् स्ति । चनीस्कदाते, पा ७, ४, ८४।

चनौस्कन्ति। स्कन्दयति। नरितः स्कन्दयेत् क्वचित्, मनु २, १८०। भव-स्कन्दत्। स्कन्ता, पा ६, ४, ३१। यन्भो मूर्जि स्कन्ता भुवं गता गङ्गा, भ २२,११०।० स्कन्य। स्कनः। स्कन्तिः स्वन्दनम्। स्वन्दः। स्वन्तुम्। स्वन्तव्यः। पव—प्रवरोधः। पाक्रमणम्। पुरी मवस्कत्द, मा १, ५१। दहति यद-बम्बन्द्य इंदयम्, इत्तर १४०। वि-मध्यपरः प्रभविष्णु रिव मामवंस्क-न्दर्गसि, वीर ४३। पा चार्चगति-विश्रेष:। श्रिममनम्। पीड्नम्। सर्वानास्कन्दन् रिष्टून्, भ १७, ११। पास्कन्दन् लक्षाणं वाणै:, भ १७, ८२। गरि-परिश्वमणम्। परिम्कन्दति, परिष्वन्दति, पा ८,३, ७४। प्ररिस्वन्नः, परिष्कर्माः। परिष्काव इति केचित्। मेघनादः परिस्कन्दन् परिस्कन्दन्त-मरिम, म ८, ७५। प्र-पतनम्। रथात् ग्रम्कन्छ। तस्य रेत: प्रचम्कन्छ, भारत। वि—परिस्त्रमणम्। विस्कतः। विष्कान्तुम्, विस्कान्तुम्, पा ८, ३, ७३। विष्करमुन् परिधेणाइन् कपि-हिष:, भ ८, ७४। स्कन्द् (स्कृन्द्)। खन्द-खन्ध-शदली। चु, प, वो। समाद्वति:। स्कन्दयति। स्कन्धयति। कार्य कास, स्वा, पा। प्रतिबन्धः। सामा:। रुषीकरणम्। स्कृतम्, सीत घातुः। क्राा, प। १ रोधनम्। २ स्तम्यः। क्षेत्राते। स्वभाति। स्वभीति, पा ३, १, ८२। पस्कमा । • भी। स्काभिता पस्ककौत्। प्रस्किकाष्ट। वि⊸प्रति-बन्धः। ः विष्कस्माति। 🐎 विष्कास्मोति। विस्वसते, पांद, १, ७७॥ गृहोतो विस्किभित्, समग्रीऽवि नाचलद् मनागीरवात् स ८, ७०। विष्कताते

प्रजारिष्टं विष्कासाति परोदयम्। विस्कन्नीति परीड्योगं तपः गीर्थं-क्लोन यः॥ कवि प्राः स्तु स्तुजं, क्राा, छ। १ पा प्रवनम्। २ वावरणम्। १ उदारः। स्तुनातिः खानोति, पा.इ. १. ५३। स्तुनीते। स्क नुते। राम मभुक्तनादिषुविधिमः, भ १७, ८२। चुस्काव। चुस्कुवे। स्कोता। प्रमुक्तित्। प्रमुक्तीष्ट। चुंसक्ष्यति। •ते। चोस्क्यते। चोस्-कोति। स्कावयति। प्रमुस्कवत्। स्कृ नाति च स्कृ नीते च स्कृ नोलाप्तव-तेऽपि च। स्कन्दते स्कुन्दते चापि षडा-प्रवनवाचिनः॥ इति भट्टमञ्जः। प्रत्य-स्कुनोइग्रयीवम्, भ १७, ८३ 🌬 खान्द्—स्वन्द्—स्वादि, स्वादि, वी। भ्वा, चा। चाप्रवर्णम्। छत् मुत्य गम-नम्। २ उद्यारः। स्कृन्दते। स्कन्दते चुस्कुन्दे। स्कुन्दिता । स्कुम् स्कृत्म, सोवधातः। क्राह्म पा १ रोधनम्। २ धारणम्, को १48। स्कुझाति, स्कुझोति, या ३, १, ८२ । चुस्कुन्धा स्कामिता। भ्यात्। प्रस्त्रभौत्। स्वद्—भा, भा। १सवद्गम्। विद्रावणम्। रखैर्थमिति रामः। ३पाटलमिति गोविन्दः। 8°क्के औ-गोयीचन्द्रः। ५ हिंसित त्यादनमिति रमानायः,। स्वदते। चम्खदे। स्वदिता। स्वदयति, घटादिः। पन्पत्र भ्यान्तु, प्रवस्तादयृति, परिस्तादयति। न्यासकारसते, विश्ववस्वादयति, द्रश भगवत, प्रस्तदयति। कातन्त्रः

सत, अवपारभ्याम्ब घटा।दलम्। यानन, नाव २४५। तस्ताम। स्तमिता भंवस्खदयति, परिस्खदयति । यस्तमीत्। ष्टम् पदन्तः। व प, वो। वैक्रव्यम्। स्तमयति। शत स्वज् स्वा, प। १ सञ्चननम्। 🗸 ' स्तमत्। , श्वलनम् । १ सञ्चयः, वो । श्वलति । हतः प्रेमा भग्नः सदसि रिव सन्धि न सभते समितापि प्राय: सुबस्ति खलुयके रिप एतः, दुर्गा। यात्वकः मात् सवतन्ती, श्रमशाना १, १६। चम्बान। चम्बुल्तुः। विवादसम् खाल विवास्त्रवि नार्धवानाम्, र १'८, ४३। रथा: प्रचन्खतुः साम्बाः, भ १४, ८८। सर्वासर्थात । प्रस्तानीत्। चिव्यक्तिपति। चास्तस्यते। चास्तस्ति। स्वलयति। स्वास्यति। स्वलिता। स्वितः। संबुड् (युड्)। स्तक् - ष्टक्, भ्वा, प। प्रतिघात:। स्तवति। तस्ताक। स्तकता। स्तक-यति, चटादि:। प्रतिष्टकत्। অনি-स्तकल, वो 1° स्तग (स्वग्)। सन् प्रन् स्वा, प। प्रबद्ः। स्तनति। तस्तान। तस्तनुः चतः, भ १४, १०। सानता। पदानीत्, अस्तानीत्। तिस्तानविता तंस्तन्यते। तस्तिनाः स्तनयति, स्तानयति। प्रतिष्टनत्। प्रतिस्तनत्, वो। स्तन-श्रद्रन्तकः चु, प। मेघग्रन्दः। स्तन-र्यात। अतस्तनत्। स्तनयिद्धं बेलाइक दलमरः। प्रिनि:सनात सदकः, पा र, १, ८६। श्रुभिष्टानः। वि— शब्दः। जाको दध्यो वितस्तान, स १४, ६०। , स्तम् छम् (वम्) स्वा, प। ः १ प्रवेकालम् । २ वेकाव्यम्, वो । विश्व-न्त्रीभावः। ब्दमति। नव ब्दामति

खन्य-एमि (स्वभि) खा, पा, स्तभः। जड़ीभावः। जड़ीकरणम् प्रतिबन्धः। क्रियांनिरोधं इति भीमः दोषव्वविरिति, गोविन्द्रभट्टः। वृद्धी करणम्, दुर्गा। स्तम्भते। धनेन स्तम्भते सर्वः स्तन्धात्यन्यस विद्यया। धनविद्याः सम्बोधि न स्तन्तीति स सन्तनः। कवि ८२। तस्तको। गाचं तस्तको (काष्ठविश्वसमभूत्), स १४, ५५। स्तिकाता। चस्तिकष्ट। ज्ञा, स्तिकातः। स्तन्भु (बीत्रधातुः) क्रा, पाड, वो। १रीधनम्। आवर्णम्। श्रीष्ठिकोष-णम्। स्तमाति। स्तमीति, पा ३, १, ८२। खन्नोते। सम्भते। हि, स्तमान, सम्बद्धाः सोऽस्तमात्तत् सदुर्जयम्, स १७, ४५ । तस्तका तस्तका । स्त-भिला। प्रस्तभीत्। प्रस्तभन्, पा र, १, ५८। अस्त अष्ट। तेवां सामर्थं सी इस्तकीत् विक्रम मख नास्तमन्, भ १५, ३१। तिस्तिकावति। •ते। यङ तास्तभ्यते। तास्तभौति। स्तभः यति। पतस्तकात्। (उ) साक्षिला, सर्व्या। •सभ्य। सुन्धः। स्त्रिः। स्तकानम्। स्तकाः। स्तकात्म्। स्तका। स्तिकता। स्तिकतव्यम्। स्तभानोयम्। स्तब्धा भयात्, भ १४, ३१ । अव-पालस्वनम्। सामीयम्। भवष्टकाति । अवष्टकोति । भवतष्टभा पवातस्तकात्। पर्य्यतस्तकात्, पा ८, ेर, ११६। धनु रवष्ट्राय, उत्तर् ७५। यष्टि मवष्टभ्यास्ते, पा ८, ३, ६८। प्रव-ष्टभा गीः (निवदा समीपे प्रास्ते)। षभि - षभिभवः प्रभ्यष्टकात् । क्रिभि

तप्रभा जड्-जनभाता। उत्तिभ-\$39 यवू स मः संदा, भ पू, १४। निष्ट् तुम्, वा ८, ४, ११। उप-उपष्टमः। तृष्टोव। तुष्टीय। तुष्टुक, पा % २, डपक्रमः। परि—निरीधः। परिष्ट-१ हैं। वृष्ट्वे। सुट्स्तोता। स्तिवता, भाति। पर्यतस्तकात्, या ट, १, ६७, वो। स्तोष्यति। •ते। पामिषि, स्तू-११६। निः, प्रति - श्रासिभवः। प्रति-यात्। स्तोषोष्ट। जुङ् पस्तावीत्। बसः। निस्तकः। प्रतिस्तकः, पा ८, पस्ताविष्टाम्, पा ७, ३, ७२। पस्तीः १, ११४। बाह्यतिष्टकाविवृहसन्धः, ष्ट । प्रस्तावाताम्। प्रस्ताविष्ठः सुरा र २, ३२० । प्रातिस्तव्यविकान्त मनि-रामम्, भ १५, ७०। अमेणि स्तूयते। स्तव्यो महाहवे, भ ८, ८८। वि— पस्तावि। सन्। तुष्टूष्ति। वते, पा 😜 निवारणम्। अवलस्यनम्। आक्रम-र, इ.१। तोह्रयते । तोष्टोति। विच षम्। विष्टभाति। विष्टभौति। व्यष्ट-स्तावयति। स्तुत्वा। ०स्तुत्व। स्तुतः। भत्, व्यष्टभीत्। तं व्यष्टभात्, सट, सुति:। स्तवनम्। स्तवः। स्तोत्रम्। ७२। विसादवन्त मस्ताणि व्यतसा-सुत्यम् । प्रसावः । संसाव ऋग्दोगाः भत, भ ८, पर। सम् संस्ताभनम्। नाम्। परि-श्रेयः। परिस्तीति निरोध:। संस्तभ्यात्मान मात्मना गी (चरति), भा ३, ७। प्र—प्रारकाः। B. 84 to the state of the second प्रस्तावः। प्रतृष्टुवुः कर्म ततः, मेर् ि क्षित्र—हिन्, सा, बा। २८। प्रास्तावीद्रासर्वकथाम् भ ८ १०३। पस्तूयतां भोः, उत्तर् । सम् षास्त्रस्तम्। मंद्रातः। परिचयः। असंस्तृतेषु भयेषु स्तिप —स्तेप — ष्टिष्, ष्टेष्ट (तिष्ट) जन्येत खली रिष पचपातः, सा क्षा, या। चरणम्। स्तेष्, चु, प। 22 1 स्तुन्- हुन्, म्वा, पा। प्रसादः। स्तिम्-स्तीम्-ष्टिम्, हीम् (तिम्) पाच् रत्येके। पयं सेचनायः, वी। दि, पा पार्टीमावः। सिम्बति। . सुम् हुम, हुम, वी। श्वा, शा। ह्वीस्यति। तिष्टेम। स्तैमिता। क्षा, सम्भः। जडीभावः। जडीकरणम्। खिमितः। विश्वित्यकायसिमितीः क्रियानिरोध इति भौम:। दोषविष् पतारे निते, कु ३, ४७। सितिती रिति गोविन्ह्सहः। स्तोमते। तुष्ट्री । नियलाईयो रिति मेदिनी। स्तीभिता। ,विष्टीभते। खु-षुज्, बदा, छ। सुति:। खुंच्यं —खन्भु (सीत्रधातुः)। नता, यं। प्रमंसा सट्सीति। प्रसिष्टीति। छ, वी। १ भावरकम्। रोधनम्। जुतः। सुवीतः। सुति। सुवीते। रनिष्कीवणम्। खुभाति। सुभीति। बङ् सुयात्। सुवीत। सङ् प्रस्तीत्। या ३, १, ८२। सुमोतै। सुभ्वते। स्तवीत्। प्रस्यक्रीत्। प्रयक्षीत्। र्वेत् एं - ष्ट्रंपिर्, स्तृपिर्, दि, प, बो। थंस्त्रोत्। यस्तुतः। यस्तुवीत्। स्तीषि े चु, वान चच्छोयः। रामी**कर्ण**

.सूर्यित । तुष्टूप्र स्तूपिता। अस्तू अस्तारीत्। अस्तारिष्टाम्। अस्त षुः। श्रस्तरिष्ट, श्रस्तरीष्ट, श्रह योत्, प्रस्तूपत्। सूप्, तुस्तूप। अते कौ १६५। तिस्तरिषति। ०ते। स्तूपत्। अस्ता १० विकार विकार स्तरीषति। •से। तिस्तीर्षति। स्तृ स्तृत्र, सा, छ। पांच्छादृनम्। तैस्तोर्थते। तास्तर्श्तां स्तात्य ेख्तु. स्वा, प, बो। १प्रीति:। २ स्वा। त्रतस्तरत्, पा ७, ४, ८५। स्तीत भगाषनम्। स्तृणोति। स्तृणते। स्तृण्यात्। स्तृण्वीत। सस्तृणोत्। •स्तीर्थः। स्तीर्णः। स्तीर्णः। स्तरण ष्ट्रियत । तंस्तारं । तस्तरिष्ठ, तस्त र्श्वा तस्तर। श्लारोमि मंडी तस्तार, द ४, ६३। स्तर्ता। स्तरिष्यति । ०ते। स्तर्यात्। स्तरिषीष्ट, स्तृषीष्ट्र। शस्ता-षीत्। प्रस्ताष्टीम्। प्रसार्षुः। प्रसन् रिष्ट, प्रस्तृत, षा ७, २, ४३ । कर्मा ब, श्रस्तारि। तिस्तोर्धति। स्तर्थते। •ते । तास्तर्थते। तास्तर्त्ते। स्तार-बति। पतस्तरत्। पतिस्तरत्। भूमिः सतस्तरहतेः, भ १४, ४८। स्तृत्वा। •स्मृत्य । स्तृतः । स्तृतिः । स्त् (णम्) स्तरः। बा, परि-भास्तरणम्। परि-दुस्तरः, भे १४, ११। वि-विस्तारः। शब्दसमूहे तु विस्तर:। पासने विष्टरं: १ स्तृच् (त्रच्) भा, प। गति:। स्तृइ - स्तृइ (छइ) तु, प। वधः। न्स्तुइति। तस्तुइ। तस्तुइतः। तः स्तर्हिंग, तस्तर्ह । स्तर्ष्टिता, स्तर्हा। स्ति चिथति, सार्चिति। पस्ति शीत्, प्रस्तृत्त्। सृह पृष्ठ, वो। स्तृहति। अस्तृ हीत्, पस्तृ चत्। स्तु — स्तुव, क्राा, छ। शाच्छादनम्। स्तृषाति। स्तृषीते। स्तृषीयात्। स्तृषीत। . । घस्तृषात्। । चस्तृषीत। तसार। तस्त्री। स्तरिता, स्तरीवा। स्त्ररिषति, स्तरीषति। स्तीर्यात्। स्तिषिष्ठ, स्तीर्षीष्ट, पा ७, २, ३०१

स्तेन — अदन्तः। चु, प। चौर्थ्यम् स्तै - है, स्वा, पा १वेहनम्। २ योभा। स्तायति १ स्ये ची, था, प। १मन्दः। ेरसङ्घातः । ३ शब्दसङ्घातः । स्थाय यत्कीत्तं: स्यायति चिती, ४०। का, स्यानः। प्रस्तीतः। प्रस्ती पा ८, २, ५८। संस्थानः। स्त्री। स्तोम—धदन्तः। चु, प । स्नावा ख्यग्—छगे, खगे, वो। (घगे) खा, संवरणम्। जीयनम्। स्थगति। खागिता। (ए) खाग। णिच् श्रागयति, घटादि:। स्था जलदाः, सा ४, २४। (ख्यग पा दने इति चौराटिकः) मन्नीन खगयति मोइ:, उत्तर ११७। र ता रजोभि दिशः, भ १२, ६८। स्थल्—भ्वा, प। स्थिति:। खलति ृंखा — छा, भ्वा, प। पर्शविषेषे प स्थिति:। गतिनिवृत्ति:। प्रवस्था विद्यमानता। तिष्ठति। •ते, प २, ७८। चलत्येकीन पारेन तिष्ठत बुडिसान्, दितो। सा देवता पेण तिष्ठति, मेर्नु ७,८। क

स्तृह (स्तृह) स्तेष् (स्तिष्)।

दग्रे तथीः, चण्डी। तस्त्री। परितष्ठी। व्यव-व्यवस्था। इति धर्मी व्यवस्थि-तिस्थिय, तस्थाय। तस्थिव। तस्थे। तः, मनु १०, ६८। इदि व्यवस्थायः समाधिवर्थं सनः, क्षा ३, ५०। स्रा-तस्यो सिसंग्रामयिषुः स ३, ४७। (पैशिज्ञायाम अन्दं नित्य खाता। खाखति। वी। खेवात् पा की (8३ । प्राप्ययः कृद्णमं प्रवलस्व-६, ४, ६७। स्थामीष्ट्रा स्थेयाः पितेव नम। संयमे यह मातिष्ठेत, सनु रू धरि पुनिपाम, र १, ८२। ग्रस्थात्. ८८। समाधि मास्याण, क्षा ४, २। षा २, ४, ४७। श्रखाताम्। श्रख्ः। चिख्तः। चिख्यातामः। पश्चिषतः उद्योगः। मुक्ताव्चिष्टते, पा १, १, घा १, २, १७। भावकर्मणीः, स्थीयते, २४। पौठादुत्तिष्ठति। प्रामाच्छतः पा ६, ४, ६६। स्थायिता। स्थाय-मुत्तिष्ठति। उत्तिष्ठमानं मिलार्थे, स चति। खायिषोष्ट। प्रसायि। प्रसा-८, १२। उदस्यादासमात, भ १५,७ 🎏 विवाताम । तिष्ठास्ति । •ते, पा ७, ४, ज्ञानम्। जिल्लितः, पा ८, ४, ६१ № प्रत्युत्थानम्। एनं प्रत्युत्थायाभिवाद-येत्, मनु २, १८ ॥ जप—जपस्थितिः। ६१। तेष्ठीयते, या ६, ४, ६६। ता-खाति। ताखेति। खाप्रयति। प्रति-ष्ठिवत्, पा ७, ४, ५। खिला। भौजनकाली उपतिष्ठते, या १, १, ३६ छ ० खाय। स्थित:। स्थात:। स्थानम्। (मन्वकरणकपूजनम्) ऐन्द्रा नाईपत्य-खाय:। खातुम्। खायी। खाता। सुपतिष्ठते, पा १, ३, २५। (परिचर्या) • र्थ:। स्थातत्र्यम्। स्थानीयम्। स्थे-पति सुपतिष्ठति यौवनेन। विनया-यम। खासाः। तस्थिवान्। स्थावरः। दुपास्यः म ३, ४३ । (देवपूजा) पाहि-मोपी खायुक्तम्। (प्राध्ययक्तभाने) त्य सुपतिष्ठते, की १४४। न त्रास्वका-क्षणाय तिष्ठते, पा ।, ३, २३ । स दन्य सुपास्थितामी, भ १, ३। (सङ्गमः) न्द्रेडनिर्णेथार्थं साययणे) मंत्रय्य कार्णी-गङ्गा यसुनासुपतिष्ठते। (सित्रकरणम्) दिव तिष्ठते यः (मन्दिग्धार्थे कर्णादीन रिधको रिधकानुपतिष्ठते। (वर्लगतिः) निर्णेहलेनाययित), भा ३, १४। अर्थे पत्याः काशी सुपतिष्ठते। लिप्-थि पिष्ठानम्। प्राप्तिः। पारी-सयोपगमनम्) भिन्नुकः प्रभु सुपति-इंगम। ग्राम मधितिष्ठति, पा १, १४, ष्ठति। ०ते, की २२४। प्र—प्रश्रानम्। 8६। जनो निकायं तेऽधितिष्ठति, स प्रतिष्ठते, पा १, ३, २२। प्रास्थिषता-इ, १६। साधिष्ठा निर्जनं वनम्, भ ८, द्रीन्द्रम, म ७, १०२। श्रायमायु प्रत-७८। प्राखिन: केचिद्ध्यष्ठ:, १५, ३१। रधीऽध्यष्ठीयत रामेण, भ १७, ८८। खें, भर, २४। प्रति—प्रतिष्ठाः सं-अनु—अनुष्ठानम्। कर्णम्। यस्य खापनम्। अस्मापि वाति देवलां महितः सुप्रतिष्ठितम्, • हितो । वि— शैलाधिपत्यं प्रजापतिः खय मन्वति-ष्ठत्, कु १, १७। अव—अवस्थितिः। प्रवस्थानम्। वितिष्ठते, पा 🐫 🥏 अवतिष्ठते, पा, १, इ, २२। ज्यु-२२। सम्-संखितिः। अवखानम् मवितिष्ठख, भूद, १९। न अनुसने संन्तिष्ठते, पा १९ ३, २२। न तस्त्र उवास्थित यो गुरूपाम्, भ र, ११ । वाक्यें सन्तिष्ठते जनः, सञ्कार्थाः

मातिष्ठते,

साव: । स्रोति । स्तः । स्वान्तः । खूल-पहलः। चु, था। प, हो। परिष्ठं इयम्। डीइः। स्थूजयति। सुणाव। सुणुवतु:। सुणाविष्य। सुणा-विव । स्विता, प्रा ७, २, ३६ । स्विनः खस्-पास, दि, प। निरस्तम । व्यति। स्यात्। प्रस्तावीत्। प्रसावि-स्त्री—च्युन, घदा, प। शीवम्।. द्वानम्। स्नाति। स्नाति गङ्गाजलै-निसम्, कवि २१८। स्नायात्। प्र-स्ति। प्रसः। प्रसान्। सस्ते। सस्त-तः। स्नाता। सास्यति। स्रेयात्। खायात्। पद्मासीत्। पद्मासिष्टास्। पद्मासिषु:। विश्वासति। सास्नायते। सामाति। साम्रेति। स्वयंगति। साप-यति। प्रसापयति। असि ग्रापत्। सप-यति दूदयेशं दृष्टिः, उत्तर । साला। •स्रायः। स्नातः। स्नातिः। स्नातम्। साता। सानीयम्। निश्वातः धा-खें यु नदी च्यातः, या द, ३, ८८। स्मिट्-चु, प । १ खेह: । २गति: । स्निह्—श्याह, दि, प। प्रीति: I केर:। किश्विति) नच किश्वित कस्य-चित्, अ १८, ८। सियोह। सिया-इतु:। सियोहिश, सियोक, सिया-ढ। खेखा, खेढा, खेहिता, पा, ७, २, ४५ । ८, २, २३ । स्रेस्ति, स्रेडि-व्यति। प्रसिद्धत्। सिस्नेहिषति, सिम्बिङ्कित, सिम्बिज्ञति। सेव्यिश्च-ते। सेणोधि, सेणोढि। स्रेड्यात। यसिणिहत्। णिह, चु, प। स्नेह-नम्। सिम्बोभावः। सेइयति वर्तिः का तेलेण, दुर्गा। चेडयत्याकवश्चुषु, याव २८४। चेडित्या, चिडित्या,

चिंग्झा, जोद्रा। श्रीबद्धाः विकाः। स्रोदः। स्रोहनम्। स्रोहः। स्रोहितुम्।

सेग्धुम, चेंदुम्। विप्र स्निक्, स्निट्,

र्ভाष्णक्।

ष्टाम्। अस्माविषुः। कर्साष्ट्रं, प्रस्नृयते। प्रस्तोता, या ६, २, १६। प्रस्तीषाते 🖡 प्रस्तोषीष्ट । प्रास्तावि । प्रसुति गीः स्वय-मेव। पारतोष्ट मो: ख्यमेव, पा ३, १८८। सस्तूष्ठति । सीचा यते । सीचा-वीति। सोणोति। स्नावयति। पस् ण्यत्। स्वाः • स्वासः। खुति:। मुवनम्। स्व:। सुवितुन्। स्य (स्तुच्)। स्म म- गास, दि, प। १ शदनम्। २ भादानम् । ३ भदर्भनम् । सुस्रति। स्इ—्णुइ् दि, प। उद्गिर्णम्। रवमनम्। सुद्धाति। सुत्रोद्धाः सुत्रानः ्रिय, सुपानिम, **सु**पानिहा सुपान चिव, सुणा हा। सांहिता, स्रोन्धा, स्रीढा। मृंदिष्यति, मृोस्यति। यस्तु-इत्। स्रे—णों, स्वा, प। वेष्टनम्। स्मवति। पिन् भूपयति। सूर्व-यति । स्पन्द् – सदि, खा, शा। विश्विच्यनम्। देषत्कस्पनम्। स्पन्दः नम्। स्कृत्यम्। स्यन्दते। सन्दते दक्तिः षो भुजः, सुच्छ २०४। पस्यन्दे। पस्य-न्दे बामनयनं जानकीजल्मदम्बयोः महाना १, २८। स्यन्दिता। स्यन्द्रवते। प्रसन्द्रिः। प्रसन्दिषाताम्। प्रसन्दिः षत्। असम्बद्धाचि वामन् १५, २०।

C. A. LALIA I MENAL

विस्तन्दिवते। वास्तन्दाते। वास्तन्ति। यन्दयति। प्रवसन्दत्। सन्दिता। ०सम्ब । सन्दितः । सन्दः। स्यन्दनः। परिवि—परिस्यन्दनम्। स भीमेन परास्टो व्ययन्दत यथा प्राची विचकर्षं च याख्वम्, भारत। सर्वर्ध्—भ्वा, प्रा। सङ्घर्षः। पराभिभवेच्छा। सर्वा। सर्वत। पसर्वे। सर्विता। सर्विधते। प्रस-विष्ट । **चसा**र्विवाताम्। चसार्वेवतः। चस्पर्डिष्ट रामेच सह सः, स ५, ६५। विसार्विवते। पासार्वते। पासार्वि। सर्वेयति। अपसर्वत्। सर्विता। ॰ सर्वतः। सर्वितः। सर्वते। सर्वितुम्। षा 🗇 श्रास्त्रद्धाः। स्वय्—सार्ग् — चु, घा। १ववग्रा र स्रोपणम्। सामयते। सम्भैयते। साम्, भ्वा, छ। १सामनम। १ पीड्-नम्। १यत्यनम्, वो । 🤏 सम्मति । ०ते (स्रगः। स्पर्वे (यर्षे)। स्य — स्वा, प। १प्रीति:। १पासम्म्। श्चलनम्। ४ जीवनम्। स्मृणीति। पसार। स्नु, स्नुयोति। स्मी हान्दर्शाः स्वय् त, प। स्वर्थः। चामर्थनम्। स्द्रमति। प्रसार्थे। पस्प्रमतः। पस्

धित्याइ:, कौ १४७। प्रदीपमते स्व। र्शिथः। पस्पृथिवः। इस्तेन पस्पर्धे तदङ्गः मिन्हः, क्ष ३, २१। सङ्ग, सर्हा, सर्हा, स ६, २, ५८। सम्बति, सम्बति। पस्र चत्, प्रसंख्त्। प्रसाचीत्, प्रसा-चीत्, प्रस्कृत्तत्, की १०४। प्रस्कृष्टाम्, प्रसाष्ट्रीतः, प्रस्कृतताम्। प्रसान्तुः पुछार्चः, प्रस्तुचत्। कर्मणि, सुग्रहो।

पस्पर्य । विद्याचित । परिसुखते। परीस है। समीयति। प्रपसमित्। भैविस्हम्रत्। (दानम्) सर्पनं प्रतिषा-दत मिलासकः। गाः कोटियाः सार्थः यता घटोझी:, र २, ४८। सम्हान •सृष्य। सृष्टः। सृष्टः। सर्गनम्। सर्जः। स्पृष्ट्म, स्पष्टुम्। उद-उप-स्पर्यः। पाचमनम्। उपस्पर्यः सन् मिल्यमर:। 🖓 😘 सृष्ट पदनाः। चु, प। रेष्सा। प्राप्तीच्छा। खुडा। स्रोभः। सृद्ध-यति। पुष्पेभ्यः स्मृहयति, पा १, ४, २६। सृहयति च विमेति प्रेमती बासभावात्, सङ्गाना २, ४४। तव जनन्ये स्प्रहयास्वभूव, महाना २, १८। सृहा। सृहगीय:। सृहयानु:। स्माट् स्माच्ड, स्माट, भ्वा, प, वी। विगरणम्। मेदः । स्फटति। स्कण्ट-ति। स्फटितम्, दुर्गी। स्फटः। स्फटा। स्मण्ड (समुण्ड्) समर्, स्मल् (समुर्)। स्फल् (स्फुल्) हु, प। सञ्चलनम्। स्कृतिः। स्मन्ति। एकासः। सन्तिः ता। या आस्फालनम्। चालनम्। ताड्मम् । - - ऐरावताम्साख्नकं केंग्रेन इसीन, का ३, २२। प्राम्पासितवक-कीयुषः, सा १/८। धनु रास्फाक्रितम्, महाना १ ३२। पास्फालितं यत् प्रमदाकराग्रेः, र १६, १३ । स्कार्य स्कार्यी (बीध्यायी) भ्वा, बान विकिं। स्थायते। अस्पायतास्य वीर-लम, भ १७, ५०। पन्प्राये। तयीः पस्पाये जललाव्यम्, स् १५, १०८। स्कायिता। प्रस्कायिष्ट्र। प्रस्काद्धः हो ।

णिच स्मावयति। स्पिम्बवत् पा

६,२,३१ । प्रिप्ययम् बन्धनां विका मम् सं ४, २३। स्कायित्वा । ्स्काय्य । स्मीतः, स्मातः, वो । स्मीतवानः पा है, १०२२। स्कायनम्। स्कायः। रफार्यितुम्। स्फातिः। स्फातिवेदावि त्यमरः। स्पति विति चिजन्तात् ४४८। यदिः स्कीतगब्दात् इः, जी परिश्रातक बस्फोतिरास्ताद-नीया। काव्यप्रकामा 📜 : अवस्ति है ।

स्काट्-चु, प्राः इंस्ता।

२ गावरणम्। ३ वघः। ४ श्रनादरः। क्षेत्रम्ति। अवकाशः । क्रीयुक्तिक

ि स्मिट् स्थिट्) चु प्राहिसा ॥ 🌬

सहट स्कटिर, खा, ए। श्वित्रारणम्। भेटनम्। श्वितसनम्, हुगी। स्कुट्, भ्वा, श्रा। तु, प। विक-मनम्। प्रकृतीभावः। स्कोटति। ॰ते।

स्मुटति। प्रमुक्टद्रविम्बद्धसम् स १९, ८। यस्योद्यानतटे स्मुटन्ति सततं बन्नोषु पुष्पच्छटाः, स्मोटन्ते नवर्तुः द्वानानि कुटना प्रायेषु वृद्धेषु च। क्कोटान्स दिवता । प्रियंसि । संदक्षा

मसामियं सुवतां, यशास्पीटयति समुदन् दश्रदिमः सुधैन्छरैः पृरिताः॥ का व १३ । पुस्कोट । पुस्कोटिश ।

तु, पुरुष्टिश । पुरुष्टे । मनो मे न गत् पुस्फीट सहस्रवा, स १४, ६

तुरकाः पुष्पुदु भीताः, भ १४, ५६। स्कोटिता। तः स्कृटिता। स्कोटिख-ति। वी। तु, स्कृटिषति। तुड् (११)

बस्फुटत्, बस्फाटीत्। बस्फोटिष्ट। तु, अस्फुटोत्। अस्फुटिष्टाम्। प्रासी-

उम्फीटीन तच्चोरचि, म १५, ७७। पुर्म्फुटिवति। अते। पुर्म्फोटिवति।

ते। बोस्पुटाते। पोस्पुटि। स्कोड-

यति । अपुस्पाटत् । स्पाद् । (चट) चुः प्। भेदनम्। स्लोटयति। स्सुट, नु, प, बो। हिंसा बाहताइनस्। शाह् पूर्वीत्य किति दुर्गीदामः। प्रास्फोट टयति । वाह चास्फोटयच्छनेः, भार-त । केचिटास्फोटयाच्चकुः, भ ३,२८। स्कोरिता, स्कृटिता। स्सुटा स्कृ रितः। स्फृष्टिः। स्फोटनम्, स्फुटनम्। स्फोटः। स्फोटितुम्। स्फुटितुम्। स्फुटः। स्मुटताम् (पंनायमानानाम्), भ १०० ८। समुट अटन्तः। इ. प। विश्वषुर-ग्राम्। विवयनम्। समुटयति। प्रपुत् फुटत्। एक एक अपने अविकेश

र मेर्ग्याक । सिंद (ईड़े) हे कि । इंकि॰

समृह् — पु, य, वो । यनादरः ।

स्फुराट् स्फुटि, स्वा, प्र। विधारणम्।

ह मेदा। समुग्रहित प्रमुग्रह। समुग्रह-ता। स्फुट स्फुड़िस्फड़ि, चु, प, वो । नसें। परिहामका समुख्यति। समुख यति १ समण्डयति । समृद्धि, स्वा, पा, वो। विकसनस्। समुग्डते।

स्कुर्-स्कुल, स्क्रुर, स्कल्-तु, पा १सपुरणम् । स्फूर्त्तिः । प्रकाश्यः । दीप्तिः । १सञ्चलनम्। कम्पनम्। स्पन्दनम्। स्फुलितः सञ्चारार्थः, वो। स्फुरित। स्फुलितः स्फरितः स्फलित। सप्ति मगडलं समुरति, मा ११, ३ । सळा नेवं समुरति, सन्द्रा २०४। समुरत कुच-कुमायो वपरि मणिमद्भरी, गीतगी १०, ६ । पुनुष्कीर । पुनुषनुः । पुनुषाः रिथा चाद पुरस्कीर बाहुः, सं २,२०१ पुन्तुक हेवमाः परम् भ ४, ८। स्कु िता। समुरिष्यति। वर्गाशिष, समृ र्थ्यत्। अस्फुरीत् विश्वस्कुरिष्टास्। पुन्नुश्वित । पोन्नुधिते। ्योस्

THE CLE SHIP THE CHESTING TO \$15 ।वाक्षाक्षय काकाः, ५ कः ६ म । गण् **५**४ । श्रपुस्करत्। श्रपुम्फुरत्। धनु-(प्रयोजकात् सारी) विस्नापयते, पा बपुस्फुरट् गुक, स १५, ८८। निःष्फु १. ३, ६८। ६, १, ५७। श्रम्धत, वि-रति, निःस्फ्रिति । निःष्फुलति, निःस्-स्राययति। रासं विद्यापरीत कः, स फुलति, पा ८,३, ७६। वि—कस्पनम्। प, प्रा मनुष्यवाचा विसाध्य**न्** विम्प्रातः, विष्पुरति। विम्पारयन् राजानम्, र २, १३। धनुः। क्रीधविम्फारितेचणः, भारत। स्मिट्—चु, प। १ भनादर:। स्पुरित्वः। ॰स्पूर्थः। स्पुरितः। स्पूर्तिः। २क्षेड:, वो। अप्रेटयति। श्रीसिम-स्फूर्णम्। स्कारः। स्कालः, पा 🛦, १, टत्। ४०। स्फूितुम्। स्फुल् (स्फुर्)। 😘 fraction water and स्मील् (प्रमील्। क्ष्मुक्—स्वूक्—स्क्की, स्वुकी, भ्वा, प। स्म – भ्या, प। चिन्ता। ध्यानम्। विस्तृति:। स्मृच्छेति, स्नूच्छेति, सारणम्। सारति। मातरं सारति बो । पुरस्पुचर्छ। स्प्राृच्छीता। (श्रा) स्फू च्छेतम्, स्फूणेम्। किए स्फू;, मातः सौरति, पा २, ३, ५२। सस्मार। स्फ्री। स्फ्चिंत प्रदीपमते स्फ्री। सस्मरतः, पा ७, ४, १०। ससार्थ। सस्मिरिव। सस्मार वार्णपतिः, स्फूर्ज् टुचीस्पुर्जा, स्वा, पा। u, ५०। यानं सस्यारः की वेरम्, भ ४, बर्जनिधीष:। बर्जनन् कगन्द:। १४५। सात्ती। सारिष्ट्रति। सार्थात्, स्मृजैति। पुस्फूर्जे। स्मृजिती। अस्-पा ४, २८। श्रमावीत्। श्रमार्ष्टाम्। श्रमार्षुः। श्रमार्षीद् अञ्चास्त्रम्, स फूर्जीत्। पुस्फूर्जियति। पोस्फूर्ज्यते। पास्फृति । स्मूर्जेयति । (या) समूर्जितम्, १५,८४। कर्मण, संख्ती स्वाहीष्ट। स्कूर्णम्। स्कूर्णः। (दु) स्कूर्णयः। सारिषोष्ट, बा ७, २, ४३। सुस्मूर्वते, स्मि—सिङ, स्वा, श्रा। ईषडसनम्। षा १, ३, ५०। साम्बर्धिते। साम्बर्हा स्मारयति। उत्कर्षापूर्वकस्मर्गे घटादिः। स्मयते। सिषियो। स्रोता। स्रोव्यते। स्मरवर्ति। अमस्मरत्, पा 🤏 🕏, ग्रसोष्टा ग्रसोषाताम्। अस्रोषता ८५। गुरुः शिष्यं भास्तं सारयति, सिस्मयिषते, पा ७, २, ७४। सेसी-यते। सेपायीति। स्नाध्यति। स्मिः दुर्गा। तेन यस्त मसार्थित सः, भ ७, १०८। सृत्या। स्मृत्यः स्मृतः। चु, भा। भनादरः। जुगुप्सा। स्नाय-यते। स्मिला। ०सिला। स्मितः। स्रातिः। सार्णम्। स्रात्म्। स्रात्ते। सारकः। तद्दानं साचिकं स्रातम्, गी स्मिति:। स्मयनम्। स्मय:। स्मेतुम्। ७, २०। तेन नारायणः स्रातः, मनु स्रायो। स्रोता। स्रोरः। काकुत्स्य १, १०। वि-विसारणम्। प्रसिन् देवत् सायमानः, भ २, ११। वि-चर्षे खलु विस्तृतं मयैतत्, शकु १, विसाय:। व्यसायन्त प्रवङ्गमाः, भ १७, ७०। इद्देशिया को भुवि न विसाधती

नरीयम्, मी ४, ८। तथीः प्रविखीन

१८। मस्त्रः वारं व्यक्तरम्, भ १७, १०। 1.600 स्मृ (स्मृ)।

सन्-सन्, था, पा। सनगम्। संबं, यस ्सन्स, यन्स । सा, चरणम्। स्राद्धते। सस्यन्दे। सस्य-लिह्बे,। सस्त्रत्ति। सस्त्रत्वे ग्रोणितं व्योम, भ १४, ८८। स्वन्दिता, स्वन्ता। स्वन्दिषते। सन्त्रिमि। •ते, पा इं,º १, ८२ वालं रवे: खन्त्यति, भ १२, ७७। तोवं मेहैं: खस्टियते, म १६.७। प्रसन्धित। प्रसन्धत्। •त। खन्दिषोष्ट, 'खन्त्मीष्ट। **परा**-दृत्। प्रसन्दिष्टं, प्रस्नेता। प्रसन्दिः षाताम्, प्रस्तन्त्याताम्। प्रस्तन्दिषत, प्रसन्तमत्। सिखन्दिषते। सिखन्त् ेते। साखवते। साखन्ति। खन्दयति। असस्यन्दत्। स्रन्दिता, •सन्ध । ख्यत्वा, पा ६, ४, ६१। खबः। खद्रिः। खन्दनम्। खन्दः। स्यन्द-श्चन्दितुम्। स्मन्तुम्। स्मन्दी। णः। ग्राम—द्रवीभावः। चरणम् । प्रमिखन्देत द्वद्यम्, उत्तर 1025 प्रभिद्यन्दते प्रभिष्यन्दते दुग्धम्। निष्य-क्ती निष्ठान्दते • मधु। परिष्ठान्दते परिष्यन्दते प्रतम्। विस्मन्दते विष्य-न्दते तेनम्। • संन्तते सत्यः, पा E, 3, 931 स्यम्—स्वमु, भ्वा, प। तु, प, वी। गब्दः। खेमति। संखाम। संख्या-तुः। खेमतुः, पा ६, ४, १२५ संस्थासु-रशिवाः खग्रः, भ १४, दश्। हरिया-चसाः खेमः, स १४, ७०। खमिता। खमिषति। प्रसमीत्। सिस्रमि-षति । वैविय्यते, पान्द्, १, १८। स्थम-यति। प्रतिस्थमत्। स्यम्, चु, मा। वितर्की:। स्थामयते। स्थामयति, वी। प्राम, पदन्तः। चू, प, वी। प्रदः। खमयति ।

्या। प्रसादः । यनवधानता । स्रयते । अक्षते। ससम्बो 🕳 स्विकता। पस्न-श्रिष्ट। सन्भु, भा, या। विष्वासः। शक्ता र किती भाव: । प्रारी णार्य विपूर्व: । विस्नाति। तालव्यादि रय सिलेके। विश्वभाते। खुङ् पद्ममत्। पद्मिष्ट। (उ) स्थाता, सब्धा। स्थः। स्थः गम। समाः। विस्तर्भः। संस्—सन्स (धन्स) था, या। प्रवस्त्रंसनम्। चुति:। प्रध:पतनम्। स्वन्तम्। भ्रंथः। प्रमन्तीमावः, वो। तालव्यान्तं इति कश्चित्। इत्रंपते। गार्खीवं संसते इस्तात्, गी १, ३०। सस्ते। संविता। संविष्यते। श्रक्तात, पा १, ३, ८१। ३, १, ५५। प्रक्रंतिष्ट (प्रमादे, प्रसंतिष्ट, यो)। नास्त्रसत वारियां ग्रेवम्, र ४, ४८। अस्तराः इतः। तेऽसं सवतासुकाः, भ १५,८। भावे संख्ते। असंसि। संसंसे गर-बन्धेन, स १४, ७२। सिस्तंसिवते। सनीस्त्रस्ति, पा ७, ४, ८४। सनी-संखि। संसयति । प्रससंसत्। वाती-ऽपि नासंसय दंशुकानि वाणिनीनामः र १, ७१। (उ) समिला, स्रस्ता। ०सारा। स्रदाः। स्रदाः। स्रांतनम्। संस:। सन्ता नितस्वात् काञ्चीम, कु २, ५५। संह सन्ह, खा, या, वी। विश्वासः। स्त्रंहते। सस्त्रंहै। सिम, सिमा (सम)। स्विव् स्विवु, हि, प। १ गतिः। श्योषणम्। स्रोद्यति। सिस्रेव। स्रे-विता। क्षिप् सूरं, स्वी, पा कु क्ष, २०। स्—भ्वाः प। १गतिः । २पवासः ।

() 那 () 3 形)

श्रमरणम्, वो । स्वति । स्वति । स्युवतः । स्कोय । सस्वतु , पा ७, २, १३ । यज्ञमूतं स्सुवु संयात्, भारत । स्रोता । स्वोयति । स्वयात् । यस्यु , वत्, पा ३, १, ४६ । सस्यति । सोस्यु , वत्, भ १५, ५६ । सस्यति । सोस्यु , यते । सोस्रोति । स्वावयति । प्रस्य-वत्, भिस्त्रवत् । स्यावयित्रति, सिस्ना-विषयित, पा ७, ४, ८१ । स्वला । स्रावः । स्वतः । स्रोतः । स्वणम् । स्रावः । स्वतः । स्रोत्म ।

स्रोक (सेक) स्रो (श्री)।
सङ्घल (किक) स्रा, प्रा। गृति।
सङ्घल (किक) स्रा, प्रा। गृति।
सङ्घल स्रा, स्रा, प्रा। परिषदः।
प्राक्षिण स्रम, स्रा, प्रा। परिषदः।
प्राक्षिण स्रम, स्रा, प्रा। परिषदः।
प्राक्षिण स्रम, प्रा, ७०। सस्रम, स्रम, ५३, ७०। सस्रम, सर्वे स्रम, सर्वे स्रम, स्रम,

खद (गद)।

खद खद बद, खद, खा, आ।

पाखादनम्। पनुभवः। कृतिः।

प्यमनुभवे मुकुम्भकः। कृतावक्रम्भः।

प्रोतिकरणम्। रसोपादानम्, दुर्गा।

खदने। खदने। खदने सारिधारा

(रोचने), ने ३, ८३। खद्ख हुआ। नि

(पनुभव)। खदने खित्रं खाँदः,
कृति ११८। सम्रदे। खदिना। खदि-

ष्यते। प्रखदिष्टु। निस्त्रदिष्यते। सा-स्वयते १ मास्ति । खद् च, प । १ छा-बादनम् । रसोपादानम् । रहेद्दश्रम्, वो । स्वादयति । श्रमिष्वदत् । स्वाद-यन्तः फलर्मम्, भ ७, ४०। प्रास्ता-दयति सर्वेषां विषयाणां स्वास्ति यः; कृषि १९६ । अं कुल्ला अर्थ होते । इति ं खन् (ध्वन्) भाः, पा । शब्दः। गाण्ड खनति। संखात्र । संखनतुः। खेन-तुः, पां ६, ४, १२५। वानराः खनुः में १४, ७० । पूर्णाः पेरा चलनुः, भ १४, १। खनिता। प्रवनीत, प्रवन-नीत्। सिखनिषति। पंसन्यते। संखन्ति। खनयति । खानयति, वी। प्रसिखनत्। भूष्यांची ू घटाहिः। श्रम्यत, स्वानवीत घेष्टाम्। प्रवन वि-भग्नव्दभोजनम्। प्रविवासि । विष्वणति। प्रवाष्वणत्। व्यवणत्। शब्दार्थि तु विस्तर्गति सदकः, पा द, ३, ६८:ि अवध्विष्याः विश्ववाग्राणाः ८, (१०१८) मा महान महरू। भोर माखेतः, म १४, ४। ज्ञ, पाखा-्तः, भूखनितः, पा ७,३,३८। खन, घटन्तः। चु. प. वो । प्रब्दः । खन बत्ति । स्वण्, जिल्ल्ण्, श्रदा, व्। श्रुवनम्। तिद्राः खपिति, पा ७, २, ७३। खपितः। समिता स्विपिषि । स्विप-्ति, यावद्यं तिकटे जतः स्विपिम ताबद्दं विम्पाति ते, काञ्चपकामः। स्वयन्ति बात्यवा में (दीर्घनिद्वां प्रवि-शक्ति), स १६, ११ कियात्। अस-पत् अखवीत् पा १ है, ८५, ६५। यस्विताम्। यस्यवन्। यस्वयः। अस्त-वोः। सञ्चाप। सर्वपतः। सञ्चापयः

मुख्यप्य । सुषुपिव । सुषुपु हुताः

(अमी पितताः), म १४, १०१। स्वसा।
स्वप्स्वति। सुप्यात्। सस्वाप्सीत्।
सस्वाप्ताम्। सस्वाप्साः। भावे, सुप्यते।
सस्वापि। सुप्रपति, पा १, २, ६।
सोप्रपते, पा ६, १, १८। सास्विति।
सोप्रियते, पा ६, १, १८। सास्विति।
सोप्रियते, पा ६, १, १८। सास्विति।
सोप्रियते, पा ६, १, १८।
सोप्रियते। सस्वुपत्, भ १५, ८८।
सुप्राप्यिवति। सस्वा। स्प्या। सुप्रा।
स्वाप्ता। स्वप्रम् । स्वप्ताः। स्वप्तः।
सम्म्। सप्रम् । स्वप्ताः। स्वप्तः।
सम्म्। सप्रम् । स्वप्ताः। स्वप्तः।
सस्वा। स्वप्रपतः, पा ६, ३, ६८।
सस्वा। स्वप्रपात्। स्वप्तः। विद्यतः।

स्तर-धदन्तः। चु, य । षाचेपः। स्तर्भ-चु, य । १गितः। २तद्वः, यो । सभयस्थितिः। स्तर्भवति। यत्रे इस्मेवे ।

्सद् (सद्)। सन्-वस्र (पेस्र) मा, प। गतिः। सस्कू-मा, पा, वो। गतिः। साद्-सा, पा।साद्(वद्)

ुषु, प । श्रासादमम्। सादते । स-सादे । सादयति । श्रीससदत् । सि-सादयिषति ।

सिद्—जिखिदा, खा, धा।
१ खेडनम्। २ मोचनम्। १ मोडनम्।
सेदते। सिखिदे। सिदिनः
स्वते। पसिदि। सिदिनः
स्वते। पसिद्वत्। पसिदिष्ट, पा १, १,
८८। '० सिद्धं सिद्दतमस्य। खिदा,
दि, प। गात्रमचरणम्। घमैचुतिः।
सेदादयोऽपि, दो। सिद्धति। न च
सिद्धति तस्याङ्कः, स्यायामार्जितमेदसः,
सिद्धेदिय। सेता। सेत्स्यति। श्रस्कः

इत्। प्रवत्ताधिवता स्विद्रम्, भ १५,

प्र•। सन् सिष्वित्सति, दिशदिरिनिट्। सिखेदिवते, सिखिदिवते। सेष्विद्वते। सेष्विद्वते। सेष्वद्वते। सेष्वद्वते। सेष्वद्वते। सेष्वेद्वति। सिखिदित्, सिखे-दियिति, पा ८, १, ६२। स्वेदिता, सिखा। सिझं स्वेदितं तेन, पा १,२,१८। ७, २, १६। स्विद्यः। स्वेदनम्। स्वेदा। स्विद्याङ्गितः संवद्वते सुसारी, र ७, २२। सिझमझसदाद्वतम्, स्वृतिः। सिद्यतिस्तु सिदितः को १४४।

स्रक्ष् (स्मृक्ष्)।

खु—भ्या, प। १ शब्दः। २ खपतापः। स्वरति। सस्वरिः। स्वरिः। स्वरिः। स्वरिः। स्वरिः। स्वरिः। स्वरिः। स्वरिः। सस्वरिः। सास्वरिः। सार्वः। स्वरिः। सार्वः। सस्वरिः। सस्वरिः।

खु कारा, पा अनिमम्। खृणाति। खेक् (सेक्)।

(夏)

इठ्-भ्वा, प। दीक्षः। इटति। इाटः। इाटकम्।

इट्—स्वा, प। १म्रुतिः। २ माळाम्। २ बजात्कारः। ४ कोले बन्धनम्, वे। इडिता। जहाउ। इडिता। भहरीत्, भहाठीत्। इडः।

इट्-भ्वा, या। पुरीषोत्सर्गः। भावत्यागः। उभयपदोति कथित्। इट्ति। ०ते। जड्दे। हसा। इत्-स्रते। इत्सोष्ट। प्रदत्त। प्रद्रतासम्

घरतात। जिल्लाते। जारदाते। जा-भूयो हृदयानासुदेजयै:, भ ६, ७८। इति। इदियति। धजीहदत्। इबः। प्रन्तः प्रज्ञार्षेखते । १ धन्तर्वन्ति, पाः इन्-बटा, घ। १ ईसा। ८, १, २२४। घन्तर्धनी देश:। अप-प्रपद्धातः। स्त्रंसनम्। प्रपहालि प्र≺ श्यति:। श्राहार:। तगडनम्। गती न प्रयुज्यते। सुरस्रोतिस्वनी मेव इत्ति तिम, उत्तर ५५। प्रभि माघात: । (याति) सम्पृति सादरम् इत्याही अस-प्रहारः। काद्नम्। पय-काण्डनम्। सर्वदोषः। इन्ति। इत:। श्रान्तः प्रकार: विद्नम् षा--प्रधित:। पा ७, ३, ५४। इंसि। हि, जहि, पा पार्वते स्तं वर्द्धाः । सु**ङ् पार्**वतः पह ६, ४, २६। माधर्म जिल्ल, भारत। १, २, १४। १, ४, ४४। मार्खीवी ष्ट्रसात्। यष्टन्। यष्ट्रताम्। यप्नन्। कनक्रशिकानिमं भुजाम्या शक्नम्। सूयस्तमन्न, भ, ८, ३३। विषयविनोचनस्य वद्यः, भा ११, ६३ यात्मनेपदं चिन्सम्। जघान । जघ्नतु: । जघनिय, जघन्या तृर्थमाञ्च रन्धे मं १, र७। व्या—व्याघात र तान जवान, भ २, ३१। विशिखिन कुमो जवान, र ५, ५०। जन रसं प्रतिवन्धः। न काचिट् व्याह्रकानी, छ-कटाचै, मा ३, १६। इन्सा । इनि-त्तर २२७। उप-उपदातः। विदातः। ष्यति, पा ७, २, ७०। बध्यात्, पा २, इविर्हेयङ्गवीनञ्ज नाष्य्पञ्चलित । राजन ४, ४२। भवधीत्। प्रविध्याम्। साः, म ५, १२। धनुषत्रन पिल्ट्र-चविष्युः, पा २, ४, ४३। पाविष्य व्यम, मनु ८, २०८। मि-निष्ठननम् । षावधिषाताम्। पावधिषत्। प्राप्ततः। वादनमा बर्स तस्य निष्टन्ति, भ ५, षाइस्तामः। चाइसत, पा २, 8, २०। कीणे भेर्यो निजिश्वर, स १४, ४४। वर्मिष, इन्यते। अञ्जी । इन्ला, १२। प्रणि—चौरचा प्रणिहिना धानिता । धानियते तेन महान् विष-चौरस्य निप्रवा चौरस्य निहन्ति, पा २, १, १६। राजसार्ग प्रणिक्रनिष् चः, भ १, २२। घानिषीष्ट, बिधवी-😕 प्रवानि, प्रविध । प्रविधवातामः ति, भ ८, १३१। अंश्विष स्रे प्रणि-प्रवस्तात्, प्रवानिवाताम्। प्रवधि-इन्सि, स २, ३५। परा प्राचातः। षत, प्रदेशत, प्रवान्धित। प्रवानि प्रदार:। प्र-विश्वनमः प्रकृतिमः, ताडका तैन, सं ५, १०। जिलासति, प्रक्रिस, पा ८, ४, २३। प्रक्रियात् । पा ६, ४, १६। जक्षन्त्रता (हिंसा-प्राचानियम रचांसि येन, सं ८, याम) कें भ्रोयते, की २०८। जहाँका । १०२। वि-विधातः। विज्ञन्ति रद्वीसि षातयति। सार्थे विच, की १९७। वने क्रत्य, सं १, १८। नाईकि षा ७, ३, ३२। चजीवतत्। इत्वाः में प्रणयं विद्वन्तुम्, र २, ५८। सम्-॰ इता । इतः । इति:। इतनम् । घातः । सङ्घात:। योग:। संइत्य इस्ती, मनु वधः। इन्तुम्। इन्ता। घाती। घात-7, 91 वाः। घातुकः। बद्धाः। घात्यः। इन्त-इस् — (द्रम) स्ता, प। गतिः। व्यः। इननीयः। अधिवान्, अधन्यान्, इय्-स्वा, पा श्यतिः। २ हामः। या ७, २, ६५। माखिभि ही हता ३ मिता। ४ मन्दः। उत्रति। अवस्यः। हर्य, भा, पं। श्राति। रकामितः। हर्यात । जहर्य। हरिता। प्रहर्थीत्। हर्ज-भ्या, प। विलेखनम्। क्रियम्। हर्जात। जहान्। हिन-

इस-इसे, भ्या, प्र। इसनम्। ज्यपूर्वप्रतोत्या , कपोसस्य विकस्ति।-कारपाम्। उपहासै:। उपहासे सक्-मेंक । इसित । इथिति साधव सी-रम, दुगी। जुडास । जुडसतुः । इसि-ता। इसियाति। (ए) पहसीत्, पा ७, २, ५ । जिहांसपति । जाइस्रते । जार्शस्त । शासयति । प्रजीहसत् इसिला। इसा। इसितः। इसनम्। हासः। इसित्म। हास्यं वसस्तद् यददं विवस्तः, र २, ४३। इसला-मलवंब मवेता रवेः, ने १, ६१। धवः, डप—डपङ्गसः। प्रि—प्रशिक्षाः प्र, विचयतिहास: । विहस्ति श्रुवति-संभा तव संबंखा, गीतगी ८, डा भोडान, डा. प्रात्याग जहांति। जहितः। जहोतः, पा ६, ४, ११६। जहितः। जहाति दुर्जनैः सङ्गम्, अवि २५८। हि, जहिहि, ज श्रीकि, जन्मानि, पा के, ४१०। जहात्, मा ६, ४, ११८। अजहात्। अजहिताम्, अजहीताम्। अजहः। जदीर जद्रतः। जद्रिय, जदाय। ज-दिवी हाता। हास्यति हेयात्। यहासीत्। यहासिष्टाम्। यहासि :। कर्मीण, श्रीयते। प्रश्नीय। जिल्ला-सति। जेंद्रीयते, पा इ, ४, इद्दे । जा-हिति। जाहार्ति। हापयिति। पूर्जी-हम्त्। हिला। हाय। हीनः। द्वानि:। द्वातम्। द्वातस्यम् । द्विय:।

बाहाड, हा, था। गति:। जिहाते। जिहाते। जिहते। जिहाते सकाना-त्रियम्, कवि २५८। यजिहाते। खिल-हाताम्। यजिहते। जहीं। जिहिते। दाता। हास्यते। हासीष्ट। यहास्त। यहासाताम्। यहासत्। कर्माण्, हा-यते। जिहासते। जाहायते। जाहित। हाता। हानः। हप-यागर्मनम्। हपाजिहीया न महीत्वे यदि, मा१, २७। हर्-द्यः। हिक्कहीते हिम्सिः, महाना ४, २५।

हि—सा, प। १गितः। प्रेरणम्।
रहे हिः। वर्षेने विरस्तप्रीणः, दुगि।
हिनीति। हिनैतः। हिन्दिन्। हिन्दिन्।
यात्। पर्षिनीत्। जिन्नारं, पा ७,
३, ५६। किन्यतः। हैर्ना। हैण्यतः।
होयात्। पर्षेपात्। पर्षेष्टाम्। प्रहेष्ठः। वर्मीण, हायते। प्रहायि। गदा
तन किन्यं, भ १४, ३१। किन्नीपतः।
केन्नीयते। क्रेन्नीतः। हाययति। प्रकीहयत्, पा ७, ३, ५६। हिला।
हित्स। हितः। हितः। हयनम्।
हेतुम। हेतुः। प्र—प्रेरणम्। प्रनीकं
प्रकिन्नाय बोहम्, भ १४, १९। प्रक्षां
क्रियामा प्रहिण स्वस्तुम्, भ १, २९।
प्रहिणोमि, पा द, ४, १५। वानराय
प्राहेपीत् परिचम्, भ १५, १२९।

डिका। डिक्यिति। ब्ते। डिक्, चु, भा। डिमा।

हिट्—भ्या, प। त्राक्तीयः। हिच्छ्—हिडि, भ्या, धा'। श्रातिः। इच्छन्देरः। हिच्छते। जिहिन्छे। हिच्छन्ते चत्रया रात्री, कवि १९१। हिच्होनं हिक्कोन (घान्दोन)। प्रोपनम्। चिन्वति। प्रोपनम्। चिन्वति। चिल्-ति, प। भावकरणम्। प्रभिप्रायम्चनम्। चिल्रति। चेल्रिता। चिस्क-(विष्क्ते)।

हिंस-हिंस (खड) क, प। हिंसा। हिंसन्ता। हिंस्ता। हिंस्ता। हिंस्ता। हिंस्ता। हिंस्ताना। हिंस्ताना। सिंस्ता। हिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंस्ताना। हिंस्ताना। हिंस्ताना। सिंस्ताना। सिंसा। हिंसना। सिंसा। हिंसना। सिंसा। हिंसना।

हिसित्वां। हिस्सा हिसितः। हिस्सम्। हिसान हिनस्ति ह्या जन्तन् त्येणा-न्यपि न हिसित। त सेव हिस्स्यत्येकं बस्तदाचा विलक्ष्यत्॥ कविष्ठ।

हिन्हा, पा १ दानम्। प्रचिपः। विषे पाधार देवतो है स्वतः हिन्द्यागः। होमः। २ पदनम्। १ पादानम्। ४ प्रौण-नम्। स्वट् सुद्दोति पा २, ४, ७५। सुद्दतः। सुद्धति। दि, सुद्द्धाः स्वटा-धरः पन् सुद्द्धीद पावत्रम्, भा १, ४४। सिङ् सुद्धाद्। सिङ् सुद्धाद्वी प्रसुद्धताम्। प्रसुद्धः। सिङ् सुद्धाद्वी प्रसुद्धताम्। प्रसुद्धः। सिङ् सुद्धाद्वी सत्।, सा २, १, ३६। सुद्धाद्वी सुद्धः सत्।, सुद्द्वीता। स्वट्र द्वीस्ति। प्रास्थित, स्वात्। सुद्ध

पडीबीत्। पडीछात्। पडीषुः। यी

मन्त्रपूरां तम् मण्यकीषीत्। र १३ 🛶

कंमीण, इंग्रेरी । सहावि। सन् कुहुए।

षति। येष् जीह्रवते। चौंस्वीति।

जोडीति। यिष् इतियति। अज्डेतत्। इति। उद्देश्य । इतः। इतिः। इतम्। इतः। इतः। डीतुम्। डोता। इतिः। डोत्यम्। इतनीयम्। इत्यम्। त्यम् इत्यं डीता व, तु र, १५। छो

भाइति.। इड् इड्, डोड, इड्, इड्, डोड्, भ्वा, प। बा, वी। गतिः। डीडित।

्ते। इड्, तुःषे वी। १सक्वनम्। २संडतिः। इड्ति। शुडोड इडिता। पद्वडोत्।

इष्ट्—इडि, श्वा, धा। १सङ्घातः। राम्रोकरणम् । राम्रोभावः । श्वरणम् । स्रोकारः । श्वरणम् । इष्टते । स्रुट्ट । इष्टिता । इष्टा इष्टितम् । इस्ट्र — (म्रस्त) भ्वा, प्राप्तः।

त्याच्छादनम्, वो । होतात । चुहीत्। हुड् (इड्)। हुच्छा, स्वा, प्रो सीटिखम्।

भगसरणम् । इच्छेति । जुड्च्छे । इच्छिता । (पा) इच्छितं इपम् तेन । इ:। इसे ।

हल्क्षेत्र् स्वरं हत्। एडस्प्स् ।

प्राचित्रम् । इ. स्वामानः । इस्वयम् ॥ इति। ति। इ. स्वा, प्राः स्वर्णम् ॥ इस्ति। ति। ज्ञारं । ज्ञारं ।

क्ती। हारी। दारकः। • इत्। • दरः। द्वार्थम । अर्गीयम । कर्त्तव्यम् । व्यति—व्यतिहारः। विवय्ययः। प्रनु—, धनुहरणम्। धनुकरणम्। पैद्यका सम्बा श्र तु इन्ने माळकं गावः। भप-र्भवहरणम्। श्रभ्यव – श्रभ्यवहारः। भाजनम्। व्यव-व्यवद्वारः। श्रा-भाइरणम्। भानग्रनम्। खदा-खदा-प्रखुद्य-प्रखुदा हरणम्। इरणम्। व्या-व्याहार:। उत्ति:। समा-समा-इतः। संबद्धः। उद्-धदारः। उप-**डपहार:। निर्—निर्हरणम्। प**रि-त्यागः। प्रतिवहनादि। तस्य निर्दे-रचादीनि सम्परितस्य कार्यित्वा, भाग-वतम्। वरि-परित्यामः। म-प्रशरः। बार्सत्रावाध वं: शक्त न प्रश्तु मना-गसि, शक् । निर्देशच प्रजर्दतः, स १४, १६०। वि-विशादः। सम्-संवादः। संज्ञियता सस्तम्, उत्तर ६। उपस्त्र-· खपसंदार:। समापनम्। असपसर्गेष भारतया बसादनीय गीयते। प्रशास-

श्वारमंश्वरविश्वारपरिशास्त्रत् ॥ द्वत्-श्रुष्ठ, स्वा, घ । १श्वशीकम् ।

मिखानरणम्। १ दर्धः। विक्तोबादः।

हो। इन्, दि, प। तीवः। पाइ दः।

हर्षः। श्रीमदर्षः। इर्वति। इचिति।

विश्वं इद्दापि सत्रूषां न मदर्पति य

दावा।, यदा महत्यति श्रुत्वा सत्
क्रावीनां सभाषितम्। कृषि २०८।

जद्वं। जद्ववतुः। जद्विविधाने । वहुः,

भ १४, ७। इविता। इविद्यति। भ्या,

पद्विति। सह्वदित्यन्ते। दि, मह
वत्, प्रद्विति। प्रद्विति। भ्या,

१५, १०४। प्रत्यं सद्द्वाने तते।

होशानि विद्वव , भारत। जिद्वित्वित्वाने ।

यति । अजदर्षेत्, अजीद्वषत् । (७) इषिता, हरा। • इय। इष्टः। प्रहर-स्मान्तिकं चितितः, दितो। न्य मा (लोमस्) इष्टाः द्विषताः निमाः। इष्टं च्चितं केशै:, अन्यत च्चितः, पारु, २, २८। द्वष्टो विप्रः। विस्मितः प्रति-इतो वा। इत्रो हम्म दत्यव इत्रि ग्रव्हात् मलधीयोऽत् इति संचित्ससा-रम्। णिच् इणितः। विसर्भियेद् र्य सुतजनाइधितः, र ३,२०। इधियम्। इषे:। इषितुम्। इषितय्यम्। हेट-भ्वा, प। बाधनम्। पौड्नम्। इंट्-भ्वा, प। इंट (एंट) भ्वा, या। विवाधा। शास्त्रम्। हिटति। •ते। जिहेट। • दे। हेटिता। पहेठीत्। पहेठिए। हेठयति। प्रजिहेठत्।

पविद्रोकरणम्। ईठात्। (इट् हेट्)। इड्—भ्जा, प। विष्टनम्।

हेट, तु, प, वो। १भूतपादुर्भाव:। क

हेडति। निष्ठेड। हेडिता। विष् इड्यर्श्त। श्रेनीइडत्, घटादिः। क्रमेंचि, श्रेड्डि, श्रेडिं। हेन्ड्रिके। हेन्सित।

हेडू-डोड्. स्वा, दा। प्रनादरः। इंडते। डोडते। घयं गस्त्रयोऽपि। इंडते प्रोत्तसम्पद्मा सान्यवानीय तान् कावः, कावि १९१।

हेट — (हेट, खर्च) क्राा, पा
भूतवादुमांवः। हेट्राति। हेट्राति।
हेट्राति, को १६८।
हेष्— क्रेष, हेष्टु, क्रेष्टु, (रेष्टु) भ्वा, पा।
प्रमान क्षेत्राच्दः। हेषा। हेषते। क्रेपते। जिहेषे। हया जिहेषिर, स
१४,६। सा १७,३१। हेषिता। पहि—
विष्टु। हेष्यति। प्रजिहेषत्। हृषा।
हेषा। होष्ट्—(हुड्, हेड्) होड् (हुड्)।

हुं इंड, ब्रंदा, बा। बपनयमम्। चपक्कवः। चौर्थ्यम्, बो। देवदस्राय इते, पा १, ४, ३४,। इति। इति। इति। इत्वीत। बहुत। यह्नुवाताम्। यह्नु-वतः। जुङ्गवे। इतोताः इतोस्वते। क्रीबोष्ट। पक्रोष्ट। पक्रीवाताम्। पक्रीवतं। यसस्याक्रोष्ट विक्रमम्, भ १५, ८८। जुक्रूवते। जोक्कूयते। जोक्रोति। क्रावयति। क्रुत्वा। •क्रुत्व। इतः। इतः। क्रवनम्। क्रवः। क्रोतुम्। पप-चपक्रवः। पपनापः। मोपनम्। गुवानपञ्चविद्याकम्, भ ५, ४४। षपञ्चवानस्य जनाय निजा-सधीरताम्, ने १, ४८। नि-श्रपक्रवः। चवनयनम्। चयसः निश्चवानीऽसी सीताये, भ ८, ३४। विभवसदेन निष्कु-तष्ट्रीः, स १०, ३६।

अल् (अल्)

क्रग्—क्षग, हुने, क्षगे (धने)।
भा, प। संवरणम्। आक्षाद्रनम्।
क्रगति। क्षगति। कक्षान्। क्रगिता।
(ए) कक्रगीत्, कक्षगीत्। क्रगयित,
क्षगयित, घटादी।

क्रप् (क्रप्)।

क्रम्—(तुम्) आ, प। १शक्दः। १ २ क्रांसः। अल्पोभावः। क्रमति। आयु क्रमति पादशः, मतु १, ८३। अक्रांस। जक्रमतुः। क्रमिता। अक्र-सीत्, यक्रांसीत्। क्रांसयति। धार्ल-क्रमत्। एकेकं क्रांसयत् पियकं क्षयो यक्ते च वर्षयेत्, मतु ११, २१६। क्रमितं सास्भाषितम्, भ १०, ६। क्रसम्।

काद्—स्वा, बा। प्रव्यवयब्दः। • वाद्यादिधोषः । कादते दुन्दुस्रः। बाक्यादिधोषः । कादते दुन्दुस्रः। बक्रादे। जक्रादे पटके स्वाम्, स १४, ४। ज्ञादिता। १ प्रज्ञादिष्ट । ज्ञादे:। ज्ञदः।

ही हा. पालका।

• जिड्डे ति। जिड्डीतः। जिड्डियति।
जिड्डे खतिष्ठन् यदि तातवाक्ये, भ २९
५१। जिड्डे ति नी चसक्नेभ्यः, कवि १८।
जिड्डीयात्। चिड्डे ते । चिड्डियतः। जिड्डे ताम्।
चिड्रियः। जिड्ड्याःचे जाह्रे ताः । जिड्ड्याः। च्रियाः। च्रियाः।

द्रीक्—स्वा, पा कळा। द्रोकति। द्रूष्—द्रुष्, दोष्ट्, द्रोष्ट्, द्रुष्ट्, स्वा, पा। गतिः। द्रोडते। द्रुष्टते।

हुँ प् हुँ ए, भा, पा। गति:। हुँ कु (हैं कु)।

हुँदि (हुड्) ह्नम् (हुम्)। ह्नप्—हुप्—डु, प। कथनम्। ह्नस्—(तुस) स्वा, प। शब्दक्ष

हार-हारी, श्वा, पा। १ स्वम्। प्रहादः। २ प्रथम् श्वरः। हादते जहादे। हादिता। प्रहादिष्ट। पिन् हादयति। प्रकिह्नदत्। वने तं न लिक्ह्नदत्, सं ६, २२। हादिला। १ हादा। (१) ह्वाः, पा ६, ४, ८५।

" IT PHILLIA . I °4° € 778 इयते। प्रशासिवाताम् प्रशासा-

कल् जाल् सा, प। चनवम्। ताम्। सन् जुङ्गवि। द्वलति। द्वानति। प्राद्वलत् चिति-को इयते। मण्डलम् सार् १०, १९९१ । विकासा । रज-इत्ता हिता। यहातीत्। इन-यति, इत्यति, पुष्ठवयति। ह्याल-यति, ज्ञालयति, प्रज्ञातयति। विद्वलो मलयत् अवम्, म् ६ । ४५ । ्ष्या वितः। हुन्म। हुन्म। का माज्य के कोरिकाम्। हिता। हिल्ला द्वायको । बहुन्तवाः। वस्तीकरणम्। कर्तत्। वहार । जन्न-क्षांडवः। प्रकृष्ट्राडावः। इया स्वर्धे। जिस्ती क्षेत्रिकी हतीत क्रिकिसित। क्रियोत् पाक्रु, श्रुव्यत् क्रिक्षाप्ति ।। प्रकार्शन । मह विति। जा इसेते। जिक्कि । द्वारम्बि । प्रजिद्धान कार्य हैं - क्या, प ि क्रम्तमा कोटिल्यम् ह्याकोति कस्पित्। क्रिज्ञ भारता १ सर्वा प्रामिसविच्छा। माजानम्। ३मन्द्रः

बिट् जुहाव। संद् इयति। जुड़ीय, जुड़िवय। जुड़िव, पा है, द इन्हें को पावतीति नामा जुड़ाव, कु १, ३६। जुट् हु।ता। जुट् हु।स्रति। माणियि, । इयावाः इसिष्ट लुङ् बहुत्, पा ३, १, ५३। हे अहुत

०ते ।

षद्वास्त्रक्ष पा कर्नार, प्रश्वी कामे वि ्यमारको यमीयं बहुविष्विपदाशक्याः संश्वितीऽह (क्) मो द्र्यं मदौकार स्थः सक्षातिपरवर्धः अष्याराधिती मे । पुरुष गुरुष पारं तटमिव जल्चे मी मनेषीद दयावान क । इ.स.मालो तं सहसं परिवित्वक्षं व्यक्तामी नमामि ॥

साम् उत्तर १४६।

•ते। यङ्

क्रोडवीति, जोडीति, पा

4, १, १३। जिंच क्राययति, पा ७,

३, ३०। पत्रहत्, पा ६, १, १३।

काष्यादीनां वेति इस्तिवनलः पज्राहत्

तो १८२। ुनुबावद्विवति। का ह्ला।

पा भर, महात्री के लाग का महिल्ला रहे हैं।

माड्यत्। रेवत्का सेन्मपति ।स्तुव-

दाक्यताम्। यक ३, ११ । , मल्नाइस्त

अविक्षेत्र १४, ४४, ४५ । उन्नेस्मी सम्बन

माह्य सन्त्राम् १ । अपर्यक्र मानुकान

भ १८, ४८। च्य, नि, नि, नि,

कथनम्। चाक्रामम् । जपद्वयते, पाद्

र, ११६) स्वादुएक्ये प्रीतं संक्यस

विविचित्रम्, सान्याक्ष्याः। त्रही बत्यं कापि वर्जात विनयः प्रदूर्यत

पुराभिभवेच्छा। शबु

ाष्ट्र गामिष्ट्रसम्गोतसम्बर्गामग्रहसम्बर्धामृतः।। इ ु एतीयेन तन्जन इतिनाभिनिवासिना ॥

ज्या प्रकार का समितार कविष्रेण बालकानों हिर्तेषिणां।

त्र नागाक्षाध्यमिते याक संस्कृतो गणदर्पणः ।

प्रमाद्यः प्रसीप्रदिनः।

(भू सत्तायाम्।) (१) भन भग क्रिटलायां गती। षच् व्यासो। षंगि इगि तगि त्वगि मगि र्गि रिगि सगि तिगिवगि वला अगि श्विग गत्यर्थाः। अज गतिचे पण्यी:। घट पट गती। षड उद्यमे। षड घट्ड मियोगी। त्रय काण काण धर्म ध्वा भण भ्रण मण रण वण त्रण मञ्दार्थाः। पत सातत्वगमने। षति चदि बन्धने। (२) ष्यन्त गतिषुजनयोः। ष्म मध्य वस्त्र गत्यर्थाः। षम गतिशब्दसंभितिषु। षर्व मुख्ये । षाचं यर्घे शिसायाम्। षचं पूजायाम्।

घजें वर्ज घजें ने। षदे गतियाचनपोड़ास । अवं गती। षर्वं पर्वे वर्वे हिंसायाम्। चई पूजावाम्। भूषणपर्यासिवार-पेषु । भवर चण-गति-का न्ति-प्रोति-खत्रावगसप्रवेश-व्यवपस्तास्यर्थ-याचन-क्रियेच्छादीस्यवास्या-लिक्न निष्य सादानभाग-हिंदिष्। षाचि पायामे। इ गती। विचिद्मं दीवं पठिस्ति १ इख इचि रेवि उत् डिंक एक एकि सक मिख रख रिख लख का बिख बख विश्व तथा विश्विगत्वर्थीः। . शिख इति के चित्।

इट किट करी गरी। (३) इदि परमेखर्थी। इविधासीं। र्ष वं स्थ्री सुर्ख्य रेसाबि: र्देश चंद्र । छच सेचने। चको उच्छे।(४) डिक् विवासी।(५) चंद्र वठ जुठ डवंचाते। सठ इस्रोबे। डवीं तुर्वी धर्वी- दुर्वी धुवी विसाधी । जुवी प्रत्येके। डव दाहै। उदिर् तुदिर् दुदिर् पर्दने । जव रजायाम्। भर गतिपापणयोः। एज कम्पने। घीख द्राख धाख राष् बाज् योगगासमध्योः। श्रीण श्रवमयने । °

(१) भू सत्तायामित्यस्य भूवादियोगिशकार्थं मादी पाठः। एव मन्धवापि बोध्यम्।

(२) घतीति तालं द्रविद्धाः पठिनाः। पार्थादय स्तु दान्तमिति धनपार्वः। डभय मिप मैत्रेय खामिका स्थापादयः। धति। धदि इदि विदि गहि पचैते न तिङ्विषया इति काध्यपादयः। पन्ये तुःतिङमपीच्छन्ति।

(३) र्वतार: कोदिती निष्ठाया , मिण्निवेधार्थः। विचित्तु रदितं मत्वा तुमि तति वाष्टतीत्यादि वदक्ति। वो १३१

(४) छञ्कः कार्ययु घादानम् । कार्यियाद्यक्षेत्रं ग्रिलं मिति याद्वः ।

(४) विवास: समाप्तिः। प्रायेणायं विपूर्वः।

[गणदर्पणः] भ्वादि-परस्म खादि-परस्रे 210 क्रीडुविद्वारी। विदृ खिट वासे। क्रुश आहाने, रोदने च। कंखे इसने। कित निवासे, सागापन-कारी नीचाते। (६) लिंदि परिदेवने। यने ची। काटे वर्णवरणयाः । चटे साधे निष्पाने। कीस बन्धने। चर मचलने। इस्मेने। कुच गब्दे तारै। ° वाढ खच्छजीवने । चि चये। (८) कुच सम्पर्चनकौटिस्वप्रति बाड मदे। वाडि इत्येवी। चीन प्रवासमञ्दे। श्चयं ष्टमा विलेखनेषु । वाडड कर्ड कावांग्रो। चीव चेव निरसने। ज्यादिः। क्षा रण गती। क्षुनंच ज़ुन्च कोटिखा-इत्येके। कदि सदि सदि पादाने, ची जें जे चये। ल्पीभावयोः। बीइने च। बन मर्थे। कुजु बुजु स्तेयकरचे। कानि दीप्तिकान्तिगतिषु। कुटि वैक्स्ये। कुडि च। खान गतिवैव खे। कृष्य खास्त्र गस्त्र घस्त खट का इ। याम्। क्कि प्रतिघाते। चान तस्त नस्त पस्त खद खेंथे इंसाभचगेष। कुचि पुधि सचि सुधि बाब मार्ग प्राव्य प्रस्व खर्ज पुजने च। चिंसासंसे मनयोः १ स्कि हिं सायाम्। बार्ट दन्दशुको। (१०) मुवि शाच्छादने। कार्ज व्ययने । बाबा सञ्जय । क्वा संस्वाने, वन्धुबु कार जुलित शब्दे। जुलित-खाद भचणे। च।(७) क्वचि मन्दि। बे बदने। (११) बूज बळाते गब्दे। कार्य खर्च गर्व घर्व चर्च खोत्रह खोल गतिप्रति-कूल यावर्षे। पर बर्व रावे सर्वे मर्वे चाते। लवि इंसा करणगतिष्। पर्व गती। गल सदने च। चात् क्षव विसेखने। कार्व खर्व गर्व दर्पे। श्रवहे। वेल खेल खेल क्रम मञ्दे। गड़ सेचने। वेल्ह वेश चलने। क्षाप खप जप भाष संब गहि बदमेवदेशे। की गी शब्दे। रिष्न क्ष वय अव भिष गद व्यक्तायां बाचि। कार् इच्छेने। (८) श्विंसार्थाः। गर्ज ग्रव्हे। क्रय क्रय क्षय अथ हिं-वस गती। गर्द नद गब्दे। सार्थी:। क्रय इत्येकी। वाचि साचि गसक्र गती। क्रसु षाद्रविचे पे । काष्ट्रायाम् । (4) नोचते रति प्रस्य प्रय मर्थे रति विशिष्य नोचते जियासामान्यार्थ त्यात्। क्रियामात्रेऽनेकार्थत्वादिति केचित्। (०) संस्यानं सङ्गातः। बन्ध्यक्टेन तद्त्र्यापारः। सम्बन्धोऽभिषीयते। (८) इच्छेन कोटिच्यम्। (८) धनार्भकः। यन्तर्भावित्यार्थे स्तु पनार्भकः। (१०) दंश हिंसादिकपायां दन्दंश्वक्रियाया सित्वर्थः। दंशने वदन्तु नीतं ताच्छी व्यायस्य ग्रही न स्थादिति प्रदीपः। (११) खदनं स्रोधैन, हिंसनस्।

नर्ज नर्म सम्ह परि-गनि ग्रंज ग्रंजि चव साम्खने । मुज मुजि शब्दार्थाः। भाषणतर्जनयोः 🕒 🕠 चमु इस् चमु समु भ-गुणि प्रव्यत्ते गब्दे। दने। जिसु दुर्खेके। जल चातने। (१६) गुपूरचर्षे। जि जये। (२०) चर गतिभचणयी:। गुर्वी उद्यमने । चर्च भर्च परिभाषण-नि चि ग्रीमभवे। (२१) ग्र पृ सेचने। तर्जनयोः। জিবি হিবি খিবি দিবি यु ग्ल्डु स्तेयक (गे। चर्व घटने। प्रीणनायरि 🛊 राज्य 🚉 म्बुचु गता विषे। जिषु सिषु विष्य सैचने । चत्र कम्पने। न्तुन् चुंगती। च इ परिकल्काने। (१४) कोव ग्राणकारणे । 👾 🙃 🔗 ग्लै को हर्षचये। (१२) च विशेष गती है है है है चिट परप्रेष्ये। घघ इसने। जुमि युमि विम् वजन 📭 -चिती संज्ञाने। धम्सः भदने। चित्र ग्रेशिखो, मावकर पैच। ज्बर शोगी **।** । हेर्डा हुए ह श्वविष् विभव्दने। (१३) ज्वन दोष्ठी । चटी चल्पीमावे। **चुत्र सङ्**षे । टल ढ्ल वैक्स्ये। वैस चुण्ड चुद्ड भावकर्णे ।(१५) यां ऋ गति बातुर्धे । धीन्हें चुड़ी चल्पीभावे। व्ये इति पाठान्तरम्। इत्येवी। दुन्द धन्वषणे। 🔻 😁 चुप मन्दायां गती ह घा गस्वीपादाने। चुवि वक्षाभंगोरी। षट हती। (२२)- . -चन द्रमौ। घटादिः। णट न्हती। घटादिः। चुत्त भावकर्षे। (१६) चष यण अण दाने। गद चळाते मध्दे 🕟 🦂 चुष पाने । भग गतावित्वन्धे। च्यतिर चासेचने। (१७) णस प्रह्वत्वे शब्दे च 🎁 📑 चदि पाश्चादे। चुतिर्द्रत्येके। गल गन्धें। वन्धने इस्त्रेवी क चन इंसायाम्। विच चुम्बने। 💮 🤊 नाज ना जि युद्धे। चन्चु तन्चु तन्चु स्तुचु जह भत्र संघाते। षिदि कुत्मायाम्। (२३) । स्तुन् इत् वत्तुन्य जिप जला व्यक्तायां वाचि। चित्र समाधी। हिन्द हिन्द (१२) इपंचयो धातुचय:। (१३) विश्रव्दनं प्रतिज्ञानम्। ततो स्यस्मिन्द्र्ये इत्येके। मन्दे इत्यन्ये पेठुः। (१४) परिवास्कानं दुवाः, माठाञ्च। (१५) भावकरणसभिष्ठायस्चनस्। 👉 🦈 (१६) भावकरण सिम्प्रायाकिकार:। इावकरण सिति वोपदेव: हा 🙃 🗉 (१७) तेचन मार्ट्रीकरणम् । प्राष्ट्रीवदर्धेऽभिन्यामी च । 💢 🔠 📜 (१५) (१८) मानमं इदयोचारणम्। (१८) मातनं तेल्लाम्। (२०) जय छत्कर्षप्राप्तिः । अक्मैकोऽयम् । ः (२१) चभिभवो न्यूनीकरणं न्यूनीभवनच् । ्राज्यो संवर्धकः १ हितीयिऽकर्सेकः । षध्ययनात् पराजयते, प्रतुं पराजयते। (२२) हतिनीं व्याम् वःक्यार्थीसनयो नाट्यम्। षटादी तु रति नृत्तम् रखद्य। पदार्थाभन्यो सत्तम् सावीवद्वेपमातं स्टबम्। (२१) योपदेशो वैचित्रार्थः। वा नियनिक्तनिन्दा मिति विकेन दति पदीपः।)

वन्चं गत्ययोः।

जय सामसे च। (१८)-

गल घटने ।

दल विशर्णे तक इसने। ध्वन खन शब्द । दह भस्तीवर्णे। ध्व इच्छेने। (२६) तिक सच्छानीवने। (ट) निंद सस्ही। मज खचने। (२३) 🗥 दाणु दाने। तच् तच् तन्मरणे। नील वर्षे। गील इति टान खराडने। दु दु गर्ती। तर उच्छाये। कातन्त्रः। दृशिर् प्रेम्बर्गे। पच परियहे। नप संन्तापे। नर्ज अत् सन । हह हिं हिंद हिंदी। पठ व्यतायां वाचि। हिंच शब्दे च। हिंच्य तर्द हिंसायाम्। पत्रख्याती। इत्येके। पथ गती। सार छद्यगती। दैप मोधने। पर्य गती । तिस गती। तिस इत्येके द्ये म्यक्स्यो। पस्यती। तुज हिंसायाम । १ तुकि पासने वसने च। द्रम इन्म मीन्द्र गती। पर्व पुर्व सर्व पूर्वी। पा पाने। मीस गब्दे च। तुड़ तोड़ने। तूड़ इखेके। श्राचि ध्वाचि विट मन्दर्भंचातयोः। त्रप तन्प व्य वन्प धीरवाणिते च। पिठ हिंसासंक्षी ग्रम्थी: चात क्रिसार्थाः । पिवि सिवि णिवि बेचने। का द्वायाम्। तुन्फ तुफ दुन्फ तुफ द्रै खन्ने। सेवने दति तरिक्वाम । श्विंगार्थाः । ह स्थामानाद्ययोः। तुवि सुवि पर्दमे। चिस्र पेस्र गती। धवि रवि रिवि गत्यधी:। तुस रम इस इस प्राप्त गब्दे। पीख प्रतिष्टको । (२७) तून निष्कर्व । (२४) धप सन्तापे। पीव मीव तीव नीव धूज धूजि धूज भूजि तृष तृष्टी। खीखे। ध्वत्र ध्वति गर्ती । र व प्रमुणच गती। पुन सङ्ख् । धेट पाने। ख प्रवनतर्णयी:। पुष पुष्टी। धा प्रव्हानिसंयोगयोः। तेज पासने। पून सङ्घाते। ध्यै चिन्तायाम् । 💮 खन हानी। पूष हडी। घ्रन गव्हे। वहि चेष्टायाम । पृष् वृष्येचनश्चिमाक्केमनेषु। लिंग कम्पने। भ्, खोर्यो । पर्य कुटादी पेल फेल शेल गती। गत्यचीऽपि । द्वि पासनवृज्नवी:। पेख जल इत्वेके। भ्रे दिसी। दन्य दशने। (२५) पैवे शोषणे। (२०) त्वचनं संवरणं ताची ग्रहणाचा। घरिग्रह इत्येके। (२४) निष्कर्षः निष्कोषणम् । तद्यान्तर्भतस्य बन्तिर्भः सारणम् । (२५) उपदेशे नाम्तीऽयम्। रसास्यामिति गलम्। नोपटेशफसम्तु यङ्तुिक दस्यान । दशने दित सामर्थाचनुक् । दशनं रंष्ट्राव्यापारः पृषोदरादिः । प्रतएक निवातनादिखने । तसाप्यतेव तात्वर्थम् प्रधनिईगस्य पाधनिकत्वात्। की १०४।

द्रिश दर्भनदंगमधी रित्यन्यत की १७६। (२६) इर्च्छणं कोटिसम्। (२७) प्रतिष्ठधो रोधः। 🕬 🥕 🕬 🕬

पैण सैण गतिप्रस्पन्ने-वर्षेषु । पौढ़ बन्धे। प्रमुख मिषु शिष दाष्ठे। पक्क नीचेगती। (२८) फण गती नि:खेड़े च। पास निष्यती। (जि) फबा विगर्गे। फन्न विकसने। बह खेर्चे। प्राणने. धान्याव-रोधने च। बिट शब्दे। बिट पान्नीशे। बिदि चवयवे। भिद्धि इति पाठान्तरम्। वस अवर्षे। (२८) बुध प्रवगमने। भट खती। भन हिं सायाम्। भभं इस्वेबी। भष भर्त मने। (१०) भूष प्रमङ्गारे। भ्रमु चलने। मधि मण्डने। मिड भूषायाम्। मधे विकोडने। (३१) मत्य विसोडने। मबं मदिनवासयो:। मव बन्धने। मध्य बन्धने ।

मग्र मिग घळ, रोष-कतेच। सञ्च पूजायाम्। ? मिष्ठ सेचने। मील श्मील स्मील निमेषणे। (३२) सुक प्रमादे। सुट सद्ने। सुडि पुडि खगड़ने। सुण्ड सदेने। सुवीं बन्धने।" मुर्का मोहसमुक्ययोः। स्तुल प्रतिष्ठायाम्। मूष स्तेये। सुष इत्येके। स्व हिंसायाम्। भूष इस्वेके। ब्रषु सेचनसङ्ग्योः। क्या चभ्यासे । संघाते। दुत्येके। मेड्ड डनारदे। स्तेष्क प्रव्यते गब्दे। कोटु छन्।दे। यभ मैथने। जभ च। यम खपरमे। यौट्र संखन्धे। रच पासने। रचा रोषे। संघाते दुत्ये ने । रट रठ परिक्षावर्ष । रह विलेखने। (३३) वट वेष्टने।

रप लप व्यक्तायां बाचि। रफ रिफ गती। रह खारी। रहि गती। कटि कुटि स्तेये। क्ठ परिभाषणे। 🔭 बिंठ लुठि स्तेये गती च रिंड लंडि स्तेये इति किंचिता है। रुष्ट्र वीजजनानिः, प्रादु-भविषाः रूष लुष भूषायाम्। रे शब्दे। रोड़ कोड़ डबादे । रोड चनादुरे। लगी सङ्गे। सघि शोषणे नहीं चा सक्र माक्रिस्त्रण। नज नजि भजेंगे। लट बाख्ये। लड विकास। स्य संवैगकी दुनयी: । खाज बाजि भर्त पने च। सुट विसीडने। लुठि पालस्ये प्रतिवाते च1- विकास दिल ल्ड सुस विकोडने। लुन्च प्रपमधीने । सुन्चु इत्येकी। रगि जङ्गायाम्। वन्न रोषे। संवाते इत्येकि। वज वज गती। 🤻

(२८) नीचे गीति सम्सगमन समस्यावहारस। 💯 💆 🥬

(२८) मैघणं खरवः। (३०) भवं सन मिह या-रवः।

(३१) विनोड्नं प्रतिघातः।

(३२) निमेषण सङ्घोषः पद्माभि यञ्च तदर्णम्। (३३) विजेखनं भेदः।

वर भट परिभावणे (१४) वटि विभाजने। वठ खीखे। वद खन्नायां वाचि। वन वय समाती। वनुव की चति । वनु व्यापारि संवी रि-त्येकी। 🐩 🔭 (ट) बम उद्गिरणे । ूर् वस निवासे। वाकि प्रकायाम् । विट मब्दे । 😁 🖽 🖫 विट पानोगे। शट , ब्लाविगर्षगत्य-वसादनेष । श्रठ कैतव इं मा संक्षेत्र नेषु। गर्क गतिन्दानिगातनेष्। र्वाद्यामिय की ८०। यल पुन गती। ्राव गरी। दन्स्रोष्टान्तः। ग्रम प्रतन्ती।

श्रप शासने, परं विभी-श्रमु सिंसायाम्। शनस स्तृती। (३५) शाखु आखु व्यासी। शिविषात्राणे। शिष्ट विक जनादर । ग्रीव समाधी।

श्वक गती। ग्रुख शोकी। गुच्च च्चा मभिववे (३६) श्रुठ श्रुठि प्रमिचाते। श्रुठि योषणे। गुड़ि खगड़ीनविमहनयीः। ग्रन्थ श्रुडी। भाष्यी । श्रुम श्रुन्म भागने चेत्वेन । डिं-साया मिलाची। संघोषे शूल रजागम, च। इंद्राप्त चेत्येके। शूष प्रसर्व। घूष इत्येके। सुध इति च। ये पाके। घोषु वर्षगर्योः। शोड़ गर्बे। यातिर चरचे। यकार-रहितोऽप्ययम्। (३७) यु खबणे गती च। कीण संघाते। स्रीण धाः खन खन्न प्राध्यसन् । (ट्रची) च्टिगितहारीः। वरी हरी इसी हरी संवर्णे। वच्च सङ्गे। षट भवयमे । हिस्स्य प्राह्म षद्ज विशर्गागत्वमा-दनेषु ।

षप समवाये। (१८) षम एम अवैक खे षक्ष गती। वस्त्र गती। विश्व गत्याम्। विधू शास्त्रो च।(१८) विशु विन्भु हिंबायाम्। ष प्रसवैष्वर्थयोः। (४०) षुभु ष्नुभु डिसायाम्। एक प्रतिघाते। प्रम वन गन्दे। ष्टे बेष्टने घोभायाचा। ष्ट्री मण्दसंघातयोः। ष्ठा गतिनिव्यती। ष्टिव निरसने। ष्णे बेष्टने। (जि) विदा श्रम् পিক্লিভা मन्दे। **जि**च्चिदा इत्वेते। सुभ सन्भ आसने, डिं-सायाचा । आवणे इत्येके । सूर्च पादरे। (४१) र्ख गती। स्ट्रपस् गती। स्कन्दिर् गतियोषगयौः। खबल सञ्चलने। स्ते ष्टे मन्दर्भघातयोः ।

Frank Provide (२४) वट वेष्टने भट भूता विति पठित्योः परिभाषणे मित्तार्थोः सुवादः । (३५) ब्रयं दुर्गता वर्षीतिदुर्गः। नुशंकी प्रातुक इत्यमरः। (३६) ब्रासिवदू: ब्रवयवानां शिथिसी करणम्, सुराशः सन्धानं वा, स्नानञ्च। (३७) दस्वादि रय मुपदेशे रचते दति प्रदीयः।

(३८) समवाय: सम्बन्धः, सम्बन्धवनीयो वा । (३८) यास्त्रं ग्रासनम् १ LETETE TO THE TOTAL (४०) प्रसवीऽभ्यनुत्रानम्।

(81) समादरे वति काचित्कीऽपयाडः। े यवज्ञावकेन मस्चेषसिकामरः।

खंश स्थाने। से या विष्टने शोभायाचा। समुच्छी विस्तृती। (टुर्बा) स्फुर्जा विवास-र्वीषे । स्फुटिर् विशर्षे। स्फुटि इत्यपि। स्मृचिक्तायाम्। खसु गव्हे। स्मुगती। 📒 📑 स्त्र गन्दोपैतापयोः। 🤝 इट दीती। इंड झुतियडलंबी:। बलात्कारे चेत्वे के। इय गती कामे भंतिय-व्दयोखेलोने। इयं गतिक्वान्यीः। इस विलेखने। इसे इसने। चिट पानांगी। हुड इंड होड़ गती। मुक्ति कीटिस्ये। . ः म्न संवर्षे । ऋषु प्रकीवी। हेट बाधे। हैठ विवाधायाम्। इंड वेष्टने। फ्रीक जन्मायाम्। ह्युकीटिक्ये।

हात हाल चलने।

इति ग्राब्विकरणा भूवा-दयः परस्रीपदिनः संमाप्ताः । भय भूवादय बालाने पदिनः। घिक सम्मरी। श्रीच सचि वधि गत्याः द्येपे। गुल्यारमा देखें-के। मधि कैतवे च। घट घट्ट घतिक्रमिं Him in सयो:। ग्रंडिं गती। श्रीव रिव लिवि शब्दे। म्रभि भव्दे। * ^{१ कि र}ि भय अयं तयं गयं पय मय वय गंती। घडिंगती। रंच दर्शन। 🕕 र्षेज गतिकुत्सनयी:। देजि इत्येके। र्षेष गति इसादर्भनेषु। र्षं इ चेष्टायाम्। उ**ट कुट खुट** गुड घड **एड** गब्दै। साङ वु ड इत्येके। **एदं माने** की इायाचा। जयो तन्तुसन्ताने। जाइ वितर्वे । मरन गतिस्थानाननी जैनेष् મદ (ज મૂઝો મર્જન । 1750000.3500000

F 41.46 A 41. 3.

एज भाज भे जुदीसी। ै रेजु इस्येकी।(१) एठ हेठ विवाधायाम्। (१) एध ब्रुडी। एषु जेष् पेषु पेषु गती। वावासी व्यो । (३) कि विकाटी का टीका ,तिक्रातीक वर्षि वीक्र विवा सस्क वस्क व्यव मानि गत्यर्थाः। कच बन्धने। 🕞 वाचि काचि दीसिबन्ध-नयो:। कठि मिठि शोके। (४) विडि मदे। कथि स्नाचन्याम्। कत्य ऋाघायाम्। कदि क्रदि केदि वैक्सव्ये, वैकर्षा देखें वे । कह व्रीद साद इत्यन्ये। किंपि चन्ने। कह वर्षे। वसुकाली। वल मञ्दरंख्यानयी:। वहां प्रव्यति गर्दे। (५) कार्यदीसीश दक्यान्ती-ऽपि। की एं शब्दं कुका यान् । कुवा हका पादाने। कुडिदाही

त्या ६ - अ। त्सर

(१) इड आज इत्यस्य पाठी अम्चादिवलाभावार्थः। तत्र राजिसाड-चर्यात् पापादेरेव यहपाम्। की ८७। (२) विकाधा शास्त्रम्।

(१) मीन्यं गर्व सावकासन (१) शोक दशध्यानम्।

(4) प्रावदे इति खामी । प्रावद क्यू खीशावः।

क्षार्टक्ट गुर्द्र गुद्र कोड़ा-यामैव।(६) क्कपुसामर्थे। कें प्रशिष्ट ग्लेष्ट कस्पने, गती च। केह्र के हैं खेह गेह ग्लेह पेव मेव स्बोह शेव पेव सेवन 🖈 क्रायो शब्दे, उन्देच। क्रव क्रवायां मती। क्लिटि परिदेवने (७) कीव श्रवार्षा। क्षोग भ्रव्यक्षायां वाचि। बाधनंडिंप । चानि गांतदानयी:। चमूष सहने। चीह मदे। चुभ सञ्चलने। स्त्रायी विधनने। ' ख्डि खंडो। . गर्च गल्च , कुत्सानाम्। गाङ्गती। गाष्ट्र प्रतिष्ठा विषयो घंस्ये च्। गाह विकाडने। मुव गोवसे। (८) ग्रह गर्हणे ग्लंहेन्छ। रीह को ह पेह मेह को ह शह षेष्ठ सेवने॥ की ६६

रीष् ग्रन्विच्छ।याम्।(८) ग्लोषु दुत्सेका। गोष्ट लाष्ट्र संघाते। यां कौटिखें। ग्रसु ग्लंसु घदन । ग्लीपू दैन्धे। घठ चेष्टायाम्। घट चलन । विश्व घृषि पृष्य । घट परिवर्त्तने। घुण घूण भ्रमणी। घाष कान्तिकरणे। अजि इत्येक। चक त्रांत्रप्रतिघात्योः। चाड़ कापे। चेष्ट चेष्टायाम्। च्छ च्यङ पुङ पुङ गतौ। जभी जृभि गावविनामे। जुह युह भार्मन । जे हुवाह वेह प्रयत्ने। (१०) जेहित गत्यथीऽपि। ज्यां ज्या विषया वता देशीप-नीतिषु। डोङ विदायमा गती। गम कोटिल्ये। गास रास मन्द्र। राष्ट्र इति दुगै: 1: 1000 मही तांच ताचने।

तायु सन्तानपाननयोः। तिज निमाने, चमायाञ्चा तिप्र तेष्ट ष्टिष्ठ ष्टेष्ट चर-णार्थाः । तेष्टं कम्पने च। तुडि तोड्ने। (११) तुम णभ हिंसायाम्। बाद्योऽभावेऽपि। तेव देव देवने। पूत्रव बजायाम्। वैड पासने। (जि) त्वरा संभामे (१२)। द्व हरी, मीवार्ध च। दच गति शिंसनयोः (१३) दद दाने। दध धारणे। दानगतिरचणाई-सादानेषु । 7 11 11 15 12 हीच मोख्रेज्योपनयम-निययव्रतादेशेषु । 🧳 देख रच्यो । चुत होसी। द्राष्ट्र शाष्ट्र सामर्थी। बाष्ट्र बत्यपि केचित्। द्राष्ट्र प्राष्ट्र विधरणे। 📑 द्राष्ट्र निद्राचये। निषेप इत्ये की। देश भें स शब्दोत्साइ-्यो: (१४) 🚋 🦠

(६) क्रीड़ाया मैबेखेवकारादन्यलार्थनिर्देशै नियमोऽनुमीयते इति प्रवीप:।

(७) परिदेवन मिन्न भोता:। प्रयं सकामैकाः।

(८) गुपे 'निन्दाया मिलादो गुपादिवनुबन्धकर्पसामध्यीत् सर्वन्तदाक्षाने-(८) प्रत्विच्छा प्रत्वेवणम्। (१०) बाह्य केवलोष्ठप्रादिः। वैद्व दन्योष्ठमादिः। डभावयोष्ट्रमदी इस्य के। दन्योष्ठमदी इस्यपरे।

(११) तोड्न दारणं चित्रमञ्जा (१२) पाकारोपीदानं वेचित्रमर्थं मिति प्रदीपः।

(१३) प्रधैविभेषे मिस्वाबेडियदमनुवानः। (१४) उद्यादो द्वविरोदस्यच । .

धच धिच सन्दीपनक्के-यनजीवनेषु । 💛 🗀 ष्टङ पवध्वं सनि। 💛 🤫 🤫 ध्वन्सु अन्सु सन्सु •धव-संपने। ध्वन्य गती च भन्य इत्यपि केचित् पेठुः। नाष नाष्ट्र याचजीप-ताप्रैष्वर्थाभी:व। पचि व्यत्तीकरणे। पडि गती। पण व्यवहारे स्तृती च। चन च। (१५) पर्द कुतिसिते शब्दे। (१६) पिडि सङ्घाते। पुङ पवने। पूर्यो विषर्षे दुर्गन्धे च। पेव मेह सेवने। पेव प्रयक्षे। (भो) प्यायी स्कायी वही। ष्येङ हडी। प्रय प्रस्थाने। प्रेम विस्तारे। प्रिंड गती। वध बन्धने।

बाध प्राप्नावे। (१७) बाध बोडने। भडि परिहासे। (१८)

भदि मालागे सुखे च। भल भन्न परिभाषण्डिन साद।नेषु । अभिन्दार का भाम क्रोधे। हैं है है भाष व्यक्तायां वाचि। भास दोप्ती। भिच। भिचायामनासे लाभेच। 🎺 🚟 😁 सुडि भर्षे। भ्यस भये। दुभाजृ दुसाम् दुमाम् दौरा । हा दन्यान्ताव पि। मिक सग्डने। मच मचि वाल्वने। (१३) मचि धारंगो च्छायपूजनेषु मदि स्तिमोदमदस्य-कान्तिगतिषु।ः 🚁 💮 सल मल धार्षे। मान पूजायाम् 🎼 🚈 😓 (जि) मिदा सेहने। सुठि प्रालने । सुष्डि मार्जने । सद इर्षे। 💮 👍 मुङ्बन्धने । मेङ प्रणिदाने। (२०) मेप्र रेष्ट्र लेप्र मही | 🖯 🖘 स्बद महन 🐚 🛪

वदि श्रक्षिवादनस्तुखोः। वचे दोष्ठी। वधं ष्ठ्यादि:। पर्ष इत्येके। (२४)

यती प्रयत्ने। रिष लिख गती। लीब भोजननिवसाविष् । रभ रामखे। रभि गब्दें। रसुक्रौडायाम्। 🧎 📑 रय गती। लय इत्येकी। रङ गतिरेषणयो । (२१) कच दौराविभग्रीती च। **र्ड लुँट लुठ प्रतिघाते ।** रिका गङ्गायाम्। रेस शब्दे। रेह प्रवगती । (२२) रेष हैष इष्ट्रेष प्रव्यक्षे मञ्दे। रेषु हकमञ्दे। चपरी प्रक्रमञ्जू (ड्) लभष् प्राप्ती। लोक दर्भने। 🏻 बीच दर्भते। विभा की दिखी। वटि एक क्योगम् (२३) वित एकचर्याधाम। विध विभाजने। मिंड च।

म्रेहने। . दन्यों-

(१५) स्तुना विस्वेव मम्बस्ति पृथङ् निर्देशात्। (१६) कुलितगब्दीऽधानगब्दः । (१७) चाम्रावः स्नानम्।

(१८) परिकास: स्निन्दोपालकानं परिभाषणम्।

(१८) कल्पान दमा: माठ्यच । कथन इत्येके ।

(२०) प्रणिदानं विनिमयः प्रत्यपेण्य । (२१) रेष्ट्रणं हिंसा।

(२२) म्रवगितः मुतगितः। (२३) एकचर्याः समहाधैगमनम्।

(२४) दम्योष्ठगदी। वेचित् प्रन्यी रोष्ठगदित्समाइः।

बह वल्ड परिभाषण-हिंसाच्छादनेषु । बल बल संवरणे, सञ्चरणे च। बल्भ भोजने। दन्योः ष्ठ्यादिः ॥ विह महि हही। विष् वेषु याचने। वृत्त वर्षे। हतु वर्त्तने। वृध वृद्धी। (टु) वेषृ कम्पने। विष्ट विष्टने। व्यव भवजनयी:। शकि शङ्घायाम्। शच व्यक्तायां वाचि। ग्राड़ि बजाधाम्, संघाते च । शस चलनसंत्ररणयी:। ग्रन्भ कराने। (बाल्ड) ग्रसि इच्छायाम्। शाह साधाय।म् । भिच विद्योपादि । गील सेचने। दन्यादि-रित्येके । ग्रीस कराने। चौसः चा शुभ दीसौ । मृघ् गब्दकुकायाम्।

प्रयेख् गती ।

यन्भु सन्भु प्रमादे। साम् कराग । स्रोक्त संघाते । (२५) खच खर्चि गती। विवता वर्षे । चिवदि गैस्ये। षच सेचन, सेवन च। वस्ज गती। षद्ध मर्घणे। षद चरणे। ष्टुच प्रसादे। ष्टुभु स्तमो। चिक् ईषडसने। व्यन्त परिवाहे। ष्वद ष्वदं पाखादने। (जि) खिदा सहनमी चनयो:। । खेडनमोड-नया रित्येके। निष्विदा दुत्धेवी। सेश सेश स्त्री स्वी स्रिक गती। स्क्रिंग प्रशिवस्थे। (२६) स्कृदि चाप्रवर्षे। (२७) सबद सबदने। (२८) साद कि चिचन ने। सार्वं संघर्षे। स्फुट विकसने।

स्मुडि विकसने । स्रम्द्र स्रवणे । स्नन्भु विम्बासे। 🔒 🤫 खाद-प्राखाटने। इट पुरीषोत्सर्गे । हिडि गत्यनादरयोः। इंडि वरणे। (२८) 📰 इंडि मंघाते। हेड् होड् घनादरे। 🏥 क्राइ प्रथक्ते गव्हे। क्रेप्ट यत्याम्। द्वादी सुखे च। चात् अध्यक्ते भव्दे। प्रव्विकरणा भूवादय षातानेपदिनः समाप्ताः। षय भूवादय सभय-पदिनः। कन्यु गती याचने च।

ष्य भूवादय उभय-पदिनः। प्रमृषु गती याचने च। पषु इस्प्रेके। प्रचीत्य-परे।(१) पंस गतिदीखादानेषु। प्रयं वान्तोऽपि। ऋव पादान संवर्षयीः। क्लिटि परिदेवने। खनु प्रवदार्षे। गुह्र संवर्षे।

श्री ग्रीथिवरी। स्मुट विक्रमन्। १९९१ महाती प्रश्नाः। स चेड ग्रव्यमानस्य स्थापारी ग्रन्थितः वी। प्राची-उन्तर्भकः। दितीये सन्तर्भकः।

(२६) नेचिकस्य टकार चौपटेशिक इत्याइः। तचाते, ष्टचते। टक्से।

- (३०) आप्रश्ण सुत्प्रवनसुद्धरण च। (२८) खबदनं विद्रावणम्।
- (२८) वरणं स्वीकारः। इरण भित्येकी।
- (१) प्रन्तु गतः वस्य पाठे कर्षं भिप्राये क्रिताफलेऽपि प्रसीवदमिति प्रदीष:। पूर्वपाठोऽस्य कर्षं भिप्राये क्रियाफलेऽपि परसोपदार्थः। ० ०

પાય જ બાધા .]. भद्गाद-परसा

चते चदे याचने। चव भच्चणे । चायु पूजानिशासनयोः। चीह यादामसंवरणयीः। छष हिंसायाम्। क्षव पादानसंवर्णयोः। षिष्ट पेह क्रवास मि-कार्धभीः। णीञ प्रापण । लिय दीशी। टान खराडने चार्जिके च दास दाने। धाव गतिश्रहारे! धर्ज कम्पने। ध्रञ धार्ये। (ड) पचष् पाके। प्रोय पर्य्याप्ती। ((उ) बुन्दिर् निमामने। भज सेवायाम् । स्घ भरते । भेषु भया। मतावित्येके। भव भूच घटने। प्राथेने। भूच प्राथपरे।

भच इत्यापर इति वाचित पाठः । खेषु भेषु गती। मान्त्र माने।

मिट मेह मेघा हिंसनयो:। यान्ताविमाविति स्नामी,

. घोन्ता विति न्यास:।

पदिनः समाप्ताः । (२) वीजसन्तानः केने वोजधिकरणम्, गर्भाधान छ।

(३) वास्त्रिश वासभाकस्य वादनार्यभादानं वादिवयश्यम् ॥

(४) प्राक्रो घो विव्हानुष्यानम्। (४) सर्घानं प्रथमम्, वो 🕻 (६) हरणं प्रापणम् ।। स्त्रीकारः स्त्रेय: नाप्रतक्षाः

सधु मधु उन्दने। मेष्ट सङ्गमे च । जिल्हा यज देवपूजासङ्गतिकारणः दानेषः। कि विकास

(ट) चाच याज्ञायीम्। रन्ज रागी। राज् दीप्ती ।

रेष्ट परिभाषणी। लय काम्सी।

(डु) वप वीजसन्ताने। (२) केंद्रनेऽपि ।

वह प्रापंचे। वृधिर् बोधने । THE EN

हञ वर्गाः A Market Maria वेञ तन्तु सन्ताने ।

वेण गतिज्ञानचिन्ताः निशामनवादित्रग्रहणेषु । मान्तीऽप्यक्रमः (अ)

व्यय गती । व्येञ संवरति।

गप अपक्रोगे। (१४) यान तेजने ।

श्रिज सेवायास 🕑 💆 👵 षेच समवाद्य।

सम बाधनसम्मन्धी: । (५) हिक प्रवाते गब्दे।

ह्वेञ् सर्वाधां ग्रब्दे च । 🥕

मध्यकरणा भूषादयः उभय-

हुअ हर्गा (६)

षा रच्ये 🕫 🕡 🧸 मा पूर्वी ।

प्राथचर्षाः 🚁 🌾

ब्रुज व्यतायां वाचि भा दोती ए

षथादादय परक्री- . पदिनः। षद अचले। चन प्राप्य है भस भुवि। इक् सार्थे। इण् गती। विकास जर्षज पाच्छादमे 🥫 🐪 क्षा मन्द्रे। (ट) च मच्दे। च्या तजने। ख्या प्रकायने । चकास होती। 🗥 🔒 जय भवण इस्तरोह ह जाग्रे निद्वाचरी। ण स्तृती। 🕒 📭 🖂 दरिद्राः दुर्भती 🐠 🏭 🥫 दाएं सवने।' इक्रान्टक्ष दिश जगचये । जमयः पद्में। . द्र प्रपूरणे । उसकपदी ह व् श्रीभगमने ।; द्रा कुत्सार्था गती। हिष प्रमीती। अभय पदी ।

388

२२०

सा मारी। सन् श्रुडी ! ... या प्रापणे।(१) यु मियणे, श्रीम्यणे च। रा द्राने। क्ष शब्दे । कदिर् प्रश्विमोचने। सा' ग्रादाने। दाने इति चन्द्रः। जिह् पासादने। _ देश्य-पदी । वच परिमाषणे । वश्वाम्सी। वा गतिगत्धनयोः। विद ज्ञाने। वो गांतकाशिपजनवान्य-सनखादनेख । त्येके।(२)। शास पन्यिष्टी। श्रा पाने। खस हाणने। खिख

कान्दमी।

षु असवैद्याययोः। (१)

(१) प्रसवोऽभ्यनुद्धानम्। (१) प्रयमनिदिदित्येव । तानव्यान्तोऽप्यनिदित्।

(३) इक्षागोऽनुदात्तो युजर्थः। इक्षार उद्घारकार्थं इति विचित्। इन्हिम नुड्।गमार्थ रखेने। वेदेषु उच्चारणार्थ रखन्छे। घत वहवस्तु हतीयसरो

भ्रमकारितः। किन्तु चतुर्थस्त्ररानुबन्धोऽयम्। किष्ठाया इम् निषेषार्थे इति दुर्गाः दाम्:। चर्चिङो डित्थारणेनानुदात्तेत्वनिमित्तस्यात्मनेषदस्यानिस्यतम्। प्रत-एव, तर्जयद्विव वेतुभिस्ति रखः ४, २८। स्फायद्विमीक स्थीत्यादि, को ११२।

(१) सम्पर्वन इत्येके। उपविश्वयन्त्रे। अध्यक्ते ग्रब्दे इतीत्री कि (४) वोधातुसमानार्थोऽयम्। गत्यादयस तदयोः।

ष्टुज स्तृती। षाा, ग्रीचे। षा प्रसवयो । (जि) सर्व भये। इन इंसागत्यीः। बदादयः परसा-इति पदिनः।

श्रयादादय बात्मनेपदिनः। साम उबवेशने। दुङ ग्रध्ययने। मित्य-मधिपूर्वः। ईड स्तृती। ईर गती। र्भा ऐख्यों।

कसि गतियामनयाः (१। चित्र व्यक्तायां वाचि। ष्यं दर्भनेऽपि (२)। ष्य मनिदिदिखेने।

व्यान्तोऽपि । णिजि शुषी। शिसि चुखने।

दीधीङ दीप्तिदेवनयी:। छ।ग्दसः।

(१) प्रापणसल गतिः। (२) प्रजनं गर्भवन्यस्यम्। श्रसनम् चेषणम्।

वन शाच्छादने। (ब्राङः) शासु इच्छायाम्। शिं शिंख शब्दे शब्दे । गोङ खप्ने। षुङ प्राणिगर्भविमी चने । इंड घपनयने। **९ त्यदा इय** पालाने-षादनः। श्रय जुहोत्यादयः। (इ दान दनयोः) ऋसः गती। (डु) दाष दाने । (हु) धाञ्ज धारवापीवण-

यो:। विजिन् श्रीचपीष-णयोः। डभयपदी । यु पालनपूरणयोः। इस्त

न्तोऽयसिति कंचित्।

fu जि वर्गे। एक त्येवी (३) पृत्ती सम्पर्वन । वेबाङ वेतना तुल्ये। (8)面1電明:1 वना वर्जन। व्यक्ति इत्येकी

(कि) भी भवे।

(डु) स्व धारणपोषणकोः,
दानेऽपीत्येके।
माङ माने, शब्दे च।
विजिर् पृथ्यमावे। दुमयपदी।
(षो) हाक त्यामी।
(षो) हाक त्यामी।
ह दानादनयोः। भादाने
चेत्येके। प्रीणनेऽपीति
भाष्यम्। (१)
हो कळायाम्।
जुहोत्यादयः समाप्ताः।

षय दिवादयः घरकीपदिनः।
(दिव कीडादी।)
षस चेपणे।
इष गती।
उच समवाये।
च्छ वडी।
क्षप क्रीधे।

संस् जानी। सिंद् पादीभावे। चम् सङ्गे। 🏨 📆 चिष प्रेरणे १८५० है। च्य वस्त्रायाम्। च्भ सञ्चलने। (जि) चित्रदा सेशनमी-चनयोः । हिन्द्र १५ गुध परिवैष्टने। गुप व्याकुत्तले। ग्टध् प्रभिकाङ्कायाम्। की केंद्रने। जस् मोचर्षे। ज्य भ्रष् वयोद्यानी। डिप चेपे। ण्य पदर्भने। णह बस्वने। जमयपदी। तमु वाङ्गायाम्। तसु उपचये। दसुच। तिम प्रिम श्रीम बाद्धीभावे। तुभ णभ हिंसायाम्। तुष प्रोती। त्व प्रीचने। (३) (ञि) त्यव विवासायाम्। वमी उद्वेग । दम् डवशमे। (४) दिव कीडाविजिगीया-व्यवहारद्यांतस्तुतिमादः मद्खप्रकान्तिगतिषु।

द्ष वैद्यारो । हपु इषेमो इनवी:। (म्) दु विदारे (💛 📑 🖂 🔻 दो प्रवास्त्रको। दुइ जिघीसायाम्। नृतौ गाव विचेषे। 🍍 🛒 पुथ हिंसायाम्। किन्न पुष पुष्टी। 🔒 🗁 🔑 पुष्प विकासने। मुष् दाहे। (६) गाः काः मुस दाहे। ध्य भन्य घघः पतने। भ्रम् प्रनवस्थाने। मदी इर्षे। मसी परिकासे। प्ररि-माणे इत्येके। समी-त्ये के। (जि) मिदा सेहने 🖡 सस खण्डने । सुइ वैचिखें। सग चन्नेष्मणे 👣 स्व तितिचायाम्। उभयन पदी ।। यसुप्रयत्। युपु रुपु लुपु विमोहने। रध हिंसासंराष्ट्री: । (0) रन्ज रागे । उभयपदी। राध साध संसिद्धे।

- ॰ (१) दानचे इ प्रचेष:। स च वैधे शाधारे इविषयेति स्वभावासभ्यते।।
- (१) प्रतीभावो दौर्गस्यम्। (२) द्वरणं कौटिखम्।
- (३) प्रीपनं रुपि स्तर्पण च। (४) उपग्रम इति णिजन्तस्य कप्म। तेन सकर्मकोऽर्यम्। न तु ग्रमियदकर्मकः। (४) सोइनं गर्वः।
- (६) पर्य पुषादि:। व्युषदाहि प्रृष्ट चेति परत पाठ: सिजधे:। तद् आदि-पाठेन गतार्थ मिति सुवचम्। (७) संराधिनिष्यात्तिः।

चास घटने। घाटाने कष रिष हिंसायाम। संद्रः विसोडमे। सुभ गार्बेग । (प) वसु स्तको । विस प्रेरेषे। वस डिलागे। व्यावरची। व्यष्टाई। प्रषच । व्यव विभागे। वृष च। व्यध ताडने। बीड चोटने जजायाचा । शक विभाषितो भषेषे। (८) श्रव पाक्रोंगे। उभयपदी। श्चिर् पूर्वीभावे। डभय-्षदी। (१०) श्रुथ गीचे। अव गोवर्षे। भो तन्त्रकरणे। श्रम तपिं, खेदे च। सिव या लिक्नने । वह वृह स्री। -विधु संरोडी। (११) 🦪 षिषु तन्तुसन्ताने। षो अन्तकर्मण। ष्टिव निरसने। वीचि-दिहेमं न पठिन्ता। षासु निरंसन्रे। ष्या इ. प्रोती । कुड्ड प्रदिताने । अपन (द) गार्चामाकाङ्घ।

इत्येके । अटभीने इत्यपरे। पार उतिर्ये। सिव गतिशोषणयोः। खिंदा गात्रपचरणे (१२) ह्रव तृष्टी। इति म्झन्विकरणा दिवा-टबः परस्रैपदिनः। दिवादय पासनी-चटिनः। चय प्राणने। दक्त्यान्तो-त्यधिखें वे। र्ड गती। काम्यदीसी। क्रिय उपतापे खिद दैन्छे। गुरी धरी श्रिंसागत्योः। षुरी जरी हिंसावयो-**'हान्धीः**। चरी टाई। ननौ प्रादुर्भावे। होस विश्वायसा गर्ती । तप ऐम्बर्थे वा। (१) तरी लर्गाइंसवीः। टोड चये। 😘 😁 🖂 दोवी दोसी।

धीक्र बाधारे। पद गती। पौड़ पाने। पूरी आप्यायने। प्रोड प्रोती। शयं सवार्मकः विट सत्तायामा व्ध श्रवगमने। सन जाने। माङ माने। मौङ हिंसायाम् । युध सम्प्रहारे। रीङ स्रवणे। (धनोः) रुध कामे । ः सिम चस्पीभावे। नीङ स्नेषण। वास्य मध्दे। हत् वर्षे। बहत् वर्षे इत्येके त्रीड हजोत्वर्धे। शुरी हिंसास्तकानयोः। स्रङ प्राणिप्रस्वे । द्रति प्यम्विकरणा दिवा-दय पातानेपदिन: । षथ स्वादय:। (घुज मभिषवे ।) षश् व्याप्ती, सङ्घाते च।

श्रयसात्मनेपदौ । चाप्ल व्यासी।

ि(८) विभाषित इत्युभयपदौत्यर्थः। प्रकाति ॰ते इदि प्रष्टुं भत्तः, की १३८। (१०) पूनीमावः क्रोटः।

(१२) प्रचरणं वर्मचुतिः। प्रयं जीदिति न्यास-(११) संराद्धि , निष्यत्ति:। बाराद्यः। निति चरदत्त।दयः।

(१) घर्य घातुः गैक्सस्ये वा तङ्खनौ सभते। अन्यया तु र्याव्यकारणपरसा-षदीत्यर्थः।

ऋधें हडी। क्षज हिंसायाम्। चि हिंसायाम्। चिञ चयने। तिक तिग गती, आस्क-न्दने च। खप प्रीपने। दन्भु द्रभो। (टु) दु डपतापे। भ्रुच कम्पने। दीर्घान्ती-ऽप्ययम्। (ञि) ध्वा प्रागस्यो। प्र प्रीती। (डु) मिञ प्रचेपरी। इल वर्षे। शक्ख शती। शिक निर्माने। श्रु अवणे। भयं स्वादी पढितः। षच हिंसायाम्। षिष बस्ते। षुज बभिषवे। (१) ष्टिच पास्तन्दने। प्रय-मात्मनेपदी। स्त्ञ पाच्छादने। सर प्रीतिपासनयोः। प्रीति-चनम्योरित्यन्ये। चलमं षीवनमिति खामी। हि गतिहद्योः। 🤲 🔭 इति युविकरणाः षाद्य:।

षथ तुदादयः परस्री-पदिन:। (तुद व्यवने। द्रल सम्बोपगयीः। द्युद्रच्छायाम्। 🔭 उक्ति उन्हें। उद्यो विवासी। उक्ता उसार्गे। उव्ज चार्जवे। **डम डन्म पूर्वी 🎼** ऋष स्तृती। ऋक गती न्द्रियप्रस्यस्ति-भावेषु । जरफ परन्फ डिंगवाम्। ऋषौ गती। 💆 🗁 काड मदै। किस ग्रीत्यक्रीडनधी: कुच सङ्घोचने। 🏧 🔀 ब्राट कोटिस्थे। क्षड वास्थे।. कुण प्रव्होपकरणयोः। 1 1 1 W कुर गक्दे। सङ्घनस्य । 🗥 🦠 🐬 क्षती छिदने। कुविचिपे। क्रंड सह निम्हानी। चि निवासगत्योः। चिद्र परिघाते । 🗆 💯 🤊 सुर विलेखने । खर छेदने। 💎 💎 गुपुरी वोद्यर्गे । 🚟 गुज भक्दे।

गुड रचायाम्। गुफ गुम्फ ग्रन्थ । गुनिगरणे। घुट प्रतिषाति । घुण घूर्ष भामणे। 🚗 घुर भौसार्थशब्दयोः। चर्च जर्ज सभी परिभा-षणभते सनयोः । चल विश्वसने। का चिसं वंसती। **चु**ट छुट छेदने। चुड बुड स्कुड संवरणे। चती हिंसाचत्यनयोः।, कुप स्पर्धे। कुर छेदने। जुट बन्धने । हिस्ति हास अस जुड गती। जुन इत्येकी। जुड बन्धुने । _{सिन्} दी असी (भाइत) डिप चेपे। माम्यामिक गा णिस गद्दनेश 👝 🚊 🙀 खद प्रेरचे । ९१) 🕝 णु स्तवने। तिस केहे। तुट बनइकर्मणि। तुष्ठ तोड़मे। 🖓 🗯 🚌 तुण कोटिस्थे। 📖 🐧 📖 तप तुन्प तुर्भ तुन्भ **चिमायाम्** । अक्षात्र र त्वव त्रम्भ स्त्री। त्रम इलेके। जी 🧸 वह सह दृद्ध दिसार्थाः। वट केंद्रने।

(१) प्रभिषयः स्वानम् पोड्नं सातं सरायाः सन्धानस्य। १ (१) यदापि खद इसयपदी वस्त्रते तथापि कर्त्तुगासिनि पुत्रेऽपि परसेपदार्थमि इ वाठः।

228 सु-परस्क म्रष्ट तुटादयः **मासने**ः स्य बामर्थने। (२) खूच संवर्णे। कत्यनयुद्धनिन्दा-पदिनः। रिफा युह स्थुह संवरणे। खुड़ हिंबादानिषु। कुड इत्येके। वजी भङ्गे। कुङ कुङ गब्दे। ह्य दृन्फ उत्सेशे। क्य रिश हिंमायाम्। गुरी उद्यमने । हमी ग्रम्थे। लिख प्रचरविन्यासे। जुवो प्रीतिसेवनयीः। दुण हिंसागतिकोटिख्येषु । लिय गती। दृङ घादरे। घिधारगो। घृञ ग्रवस्थाने i 🧦 🔭 नुठ संश्लेषणे । भू विभूनने। पृङ् व्यायामि। लुभ विमोइने। (३) गतिस्यैययोः ५ मृह्य प्राण्यामा । विक गती। इति पाठान्तरम्। बजी घोंसम्जी विध विधाने। (द्यो) पि रिगती। क्रीड़ायाम्। 💯 🗇 विस संवरण । (४) पिशं अवयवे। (भ्रो) विजी सयचनयीः। विग्र प्रवेशने। पुट संश्लेषणे । व्यव व्याजीकरणे। प्रायेणायसुत्पूर्वः । 🦈 🧖 पुड उत्सर्गे। (यो) व्रस्चु छेदने । इति तुदादय पाताने-पुण कर्मणि अभे। गर्ल गातने। पदिनः । ्षुर श्रग्रामने। भिन पिन उन्हें। पृष्ठ सङ् सुस्रने। श्रुन गती। पृष प्रीपने । हण च। ग्रुभ ग्रन्भ गोक्षार्थे। षाच तुदादय उभय-प्रक चीपायाम्। षद्ख विशारणगत्यवसादनेषु विस्त भेटने। ' पदिनः। षुर ऐख**र्थ**दीस्योत 🗠 मुद्ध डिटामनि।" क्षष विलेखने। षू प्रेररे। भुजो की टिल्ये। चिप प्रेरणे। सूज विसर्गे। भुड संवितिमं इत्योः 🗗 🗀 गुद प्रेरणे। स्थ्य संस्पर्यने। (टु) सस्जी गुजी। तुद व्यवने। स्परं विकसने। सिक डत्को शे। दिश ग्रतिसर्जने।

स्मर सम्बं महानने। मिल श्रेषणी। स्मृत् स्मृत्यो।समर स्मल सिव खडीयाम्। सुट पूर्विषप्रसद्देनयीः। इत्येवी। डिन भाववारणे। मुख प्रतिज्ञाने। रति तुद्दादयः प्रस्तीः सुन संवैष्टने।

मृण हिंसायाम्।

(२) पामर्थनं स्पर्धः।

भ्रम्ज पाने। मिल सङ्गमे। (१) मुच्ख मोचणी।

निय उपटेडि । (२) सुप्ख छेदने।

(३) विमोधनमानुसीकरणम्। (४) दन्योष्ठादिः पवर्गीयोदिनिस्यन्ते।

(१) मिन मंग्नेवण इति पठितस्य पुनः पाटः कर्चं भिवाये तङ्बँ।

चदिनः।

विद्रः जामे। सिच चरषे। इति प्रविकरणास्तुदाद्यः।

षय क्षादयः परसीपदिनः।
(क्षिग् षावरणे।
ष्यन्ज व्यत्तिमर्षणकान्तिगतिषु।
(जि) इस्थे दीत्रौ। ष्यात्मनीपदी।
खन्दी क्षेदने।
खतो वेष्टने।
खतो वेष्टने।
स्वद दैन्छे। ष्यात्मनीपदी।
तन्तु सङ्गोचने।
त्यह हिसि हिंसायाम्।

पिष्ट सचूर्णने। पृची सम्पर्के। भनजो ग्रामर्दने।

भुज पालनास्यवद्वारयोः। विद्विचारणे। भान्सने-

पदी। (श्री) विजी भयचल-

न्योः।

व्रजी वर्जने। शिष्ट विशेषणे।

इति विवादयः परसी-पटिनः।

पदिनः।

• (२) डपदेचो हाइ:। त्रय त्थादय उभय-पहिनः। चुदिर् सम्पेषणे। चिदिर् हैं भौकरणे। (ड) छृदिर् हो प्रिटेव-नयोः। (ड) ढदिर् हिंसानाइ-

्रयो:। भिदिर् विदारणे। युजिर् योगे।

रिचिर् विरेचने। रुधिर् आवरणे।

विचिर् पृथ्यभावे। इति कथादय:।

षय तनादय उभय-पदिन:। (तनु विस्तारे।) ऋषु गती।

(ड्) क्षञ'करणे। चर्णे चिंसायाम्। जिराच।

ष्टण दीसी। तनु विस्तारी।

त्यण घटने। सन् पनवोधने।

पदी। वतु याचने। **प्रांत**ने पदी। ^{स्थिति} अर

पदा। षणुदाने।

इति तनाद्यः।

भय क्यादयः परस्ते-। पदिनः। । (डु क्रीञ द्रव्यविनिमये।)

षध भोजने। इज धाभीच्छेर। (१) ऋगती।

THE TR

कुन्य संस्थेषणे। संसेषो इत्येते। कुचेति दुर्गे।

कुषं निष्क्तवें। वृष्टिं सायाम्। कृञ हिंसायाम्।

(ड्र) क्रीज द्रव्यविनिमय। क्रज शब्दे।

त्राण, यण्डा क्रीम् विवाधने । वै चीष् हिंसीयाम् । चित्र

द्रत्येके। चुभ सञ्चलने।

खच भूतप्रादुर्भावे। खव इत्येके। हेट च। (२) गुध रोषे।

गृ शब्दे । यन्य श्रम्य सन्दर्भे। यह उपादाने। उपग्र

पदी। जूबयोद्यानी। भृद्रेलकी।

भू इत्यन्ये। ज्ञा अवबोधने। ज्या वयोद्यानी। तुभ णभ हिंसायाम्।

द्रूञ हिंसायाम्। दृविदारुषे । भूज कम्पने ।

(१) भाभी च्यानं पीनः पुन्यम् भंशार्थी वा।

Determina

(२) भूत्रादुर्मावीऽतिक्रान्तीत्पत्तिः।

खोञ पाने।

षिजं बन्धने ।

उप्रसे उच्छे। **खका**र ्रत्। उकारी घालवः यवं इत्येकी। नृ नये। पुष्ट पुष्टी। पूज पवने। पृ पालनपूरपायी:। , प्रीज तर्पणे कान्ती प । (३) सें इनसेवत-गुष प्रव ष्रणेषु । श्ली गती। वस्य वस्थने।

वज वरेगो। बुवरणें। भरणें चैत्येके। स भवाने। भगगेऽपि। स्त्री भये। भरगे इत्येके। सन्य विलोड्ने । मीज हिंसायाम् । स्व स्तिये। सुद चोदे। संडुच् ष्ययं सुखेँऽपि ।

री गतिरेषणयी: 🖰 (४) सी संघर्षे। मुज होदने । विष विप्रयोगे । **इंड स्थाती**। त्री वर**ण्री** । ही वरणे।

सु डिंगायाम् ।

युज बन्धने।

मु - हिंसायाम् । स्थान विमोचनप्रतिहर्षयी: ।

(३) कान्ति: कामना।

ते भाषाकी:। प्रनेकाणी इति केचित्।

र्षंड स्तृती ।

(४) रेषणं हक्याव्हः।

(१) भासार्था दीसार्थाः । भाषार्थी इति पाठे भाषायां येऽवस्ति तेवां धातूनां

स्कू अ प्राप्ति ने । स्तुञ्बाच्हादने । इति याविकरणाः क्राग्रेदयः

चुरादंय: परसी-भर्य पदिन:। (चर खें ये।) पनि यहि निवि तड

दसिं पुरि नल मर भीश सिंह रवि रहि ब्ठ ब्रिंग ब्रिस लिख स्रिवा सिंड-भीवा

भासार्थाः । (१) षष्ट षुष्ट धनादरे। दोपंधः।

ष्यन्चु विशेषणे । श्रम रोगे। षक स्विन । ्र तपने

इत्ये के।

पदी 🕴

त्यों की।'

इस प्रेरणे।

षर्च पूजायाम्। पर्ज प्रतियति । प्रयमर्था-क्तरेऽपि ।

पार्व लकाने। उपचपदी

षदे हिंसायाम्। जमय-षड पूजायाम् ।

कुवि पाच्छादने। कुभि इत्वेंने। 'क्रंप युंती चित्रे करवेंने चे।'

कृत संभव्देने। (पार्डः) मान्द सातत्व।

इंद चेये।

उर्ज बलेपाणमधीः।

षोकार इदिलों के।

उकारादिरयमित्रको ।

कट वर्षी।

मृत्व एठायाम्।

कठि यो ने । उत्पूर्वी ध्य-

कड़ि खड़ खंडि भेदमे।

क्यां निमोलने। 👙 🗦

कल विन चिपे।

कुट केंद्रनभार्त्तनयों।

पूरणे इत्येकी।

कुड़ि रचणे।

कुद्धि घन्तमाष्ये।

कुप कुभि कुंसि गुंप घंट

घटि चीव पंद तक

तुनि वसि देशि धूव

पट पिंचि पिंसि पुर

पुष मंजि मिज सर्वि

लुनि लुट जीना जोंच

वर्ष वहाँ विक हतु हम

होहि भासायी:।

कीर वर्षे ।

पोलडि

उत्चिपगे ।

चिति कं च्छ्जीवने।

चपि चान्यामः। चन गीचनर्मण 🕪

मह मंवरणे। खुडि खण्डने। गज मार्ज मञ्दार्थी। सर्च च। मर्ज गर्द ग्रव्हे। मध् प्रशिकाङ्गयाम् 🛊 गर्ड विनिन्दने । मुख प्रेरणे मुडि वैष्टने। रचणे इत्येके। कुठि इत्यन्धे। चूर्णीकर्गे द्विक गुठि इत्यपरे। बुद्दं यूर्वं निकतने। ग्रत्यः वन्धने । ग्रत्यः इत्येकै । अस ग्रहणे। घट सङ्घाते। इन्तार्थस्। घट चलने। घुषिर् विकल्दने। ष्ट प्रस्तवणे। 'सावणे ् **दाह्येती**ः 🧓 चक चुक व्यथनेता चिक्र 'इत्येकी। 🙃 📜 चट स्मृट भेदने । चन यहोपहननयोहि-्रेबे । चिव गत्याम्। वा संग्रही । चर्च ग्रध्यवने । चल सती । चन्न प्रतिकल्क्नि। ज्या इ त्ये के । विञ चयने। विति सम्साम्।

चुट केंद्रने। चुटि क्रेटने । चुष्ट पुर यूलीभावें 🕨 चुट मचीटने। चुर स्तेथि। चुल मस्च्छावे 🛭 चूट छेटने। च्या सङ्गोचने। चर्ण पेषणे। चूर्ण वर्ण प्रेरण । वर्ण वण ने पत्यें के । चृत्र कृप हप सन्दीपने। च् सहने। इसने चेलेके। च्यस इत्येकी। क्द अपवार्गे। सभय-पटी। छदि संवर्षा। क्ट वसने। छ्दो मन्दीवने। जिभ नाश्राने। जन अधवार्गे। लज ्ड्रत्यें के। जिस रचणे। सोचणे इति वेचित्। जसु हिंसायाम्। जसु ताडमे 🕪 जुड प्रेरणें। ज्ञाय पश्तिकीयो ।:(३) जुबयो हानी। चित्र चु त्रप जाने जापने च। च्चप मिच। न्ना नियोगे। टिक बन्धने। डिप घेपे।

(२)) परितक्षण मुडो डिंसा वा ।। (३)) प्रवास्त्र नाट्यम्।

तड प्राघाते। तनु श्रहोपकरणयोः । उ सर्गाच देखें। तप दाहि'। 🖖 🤃 🔊 तन प्रतिष्ठायाम् 🍽 🚈 तसि भूष ग्रलङ्गर्षे । तिज नियाने ्रिक संस्ते । त्जि पिजि हिंसावना • दाननिनितनेषु । तुः पिनेति वेचित्। सवि लुजि इत्येकी। तुन उन्नाने । तुवि लुवि • श्रद्दर्भने। चर्ने इत्ये के। ल्हा। सन्दीपन इत्येके। त्रस धारणे। ग्रहण इत्येत्रे। वारणे इत्यन्धे दल विदारणें। दिवुं सदेने। दुल डत्चीपी। 🕝 🕒 हम पन्दर्भे । हमी सर्वे । 🐇 धकः नकः नामने।। ध्व वाग्यने । धूस का लिकरणें। धूज इत्येके। ध्या इत्ययरे। पृष प्रमञ्जने 🍇 **उभ्रम उच्छे। उनारो**ः धालवयव देखेने। ने न्तन्छेः। नट चवस्यन्दन । (३)

पच परिवरी। पचि विस्तारवचने। विडि पिस नांगने। पथि गती। प्रा बस्वने । पाल रचमें। विक क्षष्टने । विडिसेवाते। प्रिस गती। वीड घवगाइने । गुष धारचे । पुलसङ्खे । जाकह पुस प्रसिद्ध ने । पुस्त वस्त पादरागादः ्रयोः। पूज पूजायाम् 🕈 पुरी चाष्यायने । पूजसंघाते। पूर्ण इ.स्बे वि। पूर्व प्रत्यन्थे। प्रजि सम्बद्धजीवने। • पृष्य प्रसेषे । • प्रम इत्येकी। पु पूर्वे । प्रथ प्रख्याने। ्रे प्रीज तर्पेषे । वध संयमने। बन्धेति चान्द्रः। • बन प्राणने। विस भेदने। वृक्त भाषणे। बट हिंसायामे। बूस वर्ष हिंसायाम्। भन्न घटनै। भज वियायने।

कष रोषे। कट इलोकी। सडिक खाणी। भुवोऽवकस्वने। धवन-ल्कानं मियोकारणमि त्येके । चिन्तनमित्यन्ये। क्षपेश । मंडि भूषायाम्। इपंच। मान पूजायाम्। सार्गं चन्वेषणी। सिदि सेहने। मी गती। सुच प्रमोचने। मोदन च। सुट सञ्जूण ने। सुद संसर्गे। सुद्धा संघाते। मून रोषणे। मुज् ग्रीचा अक्षारयोः। स्व तितिचायाम्। डमय-पदी । मोच कसने। (४) सन्न संस्कृतं। क्को क्र प्रव्यक्षायां वाचि। यत निकारोपस्कारयाः। यत्रि सङ्घोचे । यस च परिवेषणे। (५) यु जुगुपायाम्। युज एच संयमने। रवा लग पास्तादने। रग दलीकी। रघचा रह खागे। रिच वियोजनसम्पर्चनयीः। रुज हिंसायाम्।

(५) पश्विष्णसिष्ठ वेष्ठनम्।

सङ उपसेवायाम । सच दर्मनाङ्गर्योः। साम शिक्षयोगी। सी द्वीकरणी। लिगि चित्रीकरणे। लुट सञ्चर्ण ने। लगढ स्तेये । लग्ड इत्येकि। सर्व (इंसायाम्। वच परिभाषणे। वज मार्गेणसंस्कारगत्योः। विट विभागने। विड पत्येके। वद सन्देशवचने। उभय-पदी। पामनेपदी एत्येकी। वर्षं केंद्रनपूरवयी:। वल्क जास्क परिभाषणे। वस स्टेडच्हेदापहर-गेषु। वा सुमाप्तिगतिसेवास्। हजी वर्जने। हुआ भावरणे। गढ वड चमंखार-गत्योः। म्बर्ठि इत्येवे। ग्रन्द उपसर्गादाविष्वारे च बाद् भाषणे। गिष समर्वीपयोगे। शोक सीक चामपंषे। चीक च। शुरु चासस्ये। 🖠 ग्रांठ भोषचे। 📍

ग्रुख गौचकमंगि। गुला चतिस्पर्यने। शुल्व माने। शूपे च। श्रुधु प्रहसने। ञ्चण दाने। पायेणायं विपूर्व:। ावधून.। ऋष प्रयक्षी प्रस्थाने इत्येने। श्रय मोचणे। हिंसाया-मित्येके। श्रम ग्रम सन्दर्भे । श्चिष श्लेषणे। षष्ट स्मिष्ट चुवि हिंसा-याम् । (बाङ:) षद पदार्थे। वस्व सम्बन्धने। श्रास्त च। साम्बद्रस्येके। षद्दमध्ये । षान्व सामप्रयोगे। ष्ट चरणे। हुन्यसुक्छाये। िणाइ स्तेइने। स्फिट इत्येके। षद प्राखादने। . इत्येके। स्यास्तरणे। सिट सेहगत्यो:। स्मिट इत्याम्। वधे भना-दरे चे त्येकी। साडि परिचासे, स्मृटि इति पाठान्तरम्। स्मिट भनादरे। •

स्वतं गलाम्। ऋभाच। हिसि हिसायाम्। ह्नव व्यक्तायां हाचि। क्राप इत्येती। इति सुरादयः परसौ पदिन:।

् गणदपणः]

चुरादय जाताने-चय पदिन:। कुट प्रभापने। कुत्स अवचीपणे। कुसा कुत्सितसायने। कूट भापदाने। श्रवसा-दने इत्येकी। कूण सङ्गाचे। कण च। गल स्वणे। गूर उद्यमने। मृ विज्ञाने। गर इत्यन्ये। चित सञ्चेतने। डप डिप संघाते। तित .कुट्रेबधार्णे। · चान्द्रांस्तु धातु**दयमिति** वदन्ति। वदानाः भर्ज भर्त्स तर्जने । तूग पूरणे। बुट केंद्रने। कुठ इत्येकै। द्शि दंशने। दिम दर्भनदंभनयोः। दस इत्येकै। दिवु परिक्रूजने। निष्का परिमाणे। भन पाभगडने।

स्त्रण आशाविशक्षयीः। . * मद हिंसियोगे। मन स्तभी। मित्रि गुप्तपरिभाषणे । यच पूजायाम्। शुं जुगुपायाम् । लल देपुसायाम्। वञ्च प्रक्रभाने। वस्त गुरुष घटने। विद चेतमाखानविवा-सेषु । विष्क हिंसायाम्। हिष्क इत्धेने। द्वष श्रामिवन्धने। (१) गठ साघायाम्। शम लच पालीचन। साम यहणसंञ्चेषणयी:। स्यम वितर्वे। इति चुरादय बात्मने-पदिनः।

भय भदन्तास्टादयः। पदे लच्चे च। श्रह पहु च। अघ पापकरणे। पन्ध दृष्ट्यपद्याते । भयं उपयाच्जायाम्। अवधीर अवज्ञायाम्। त्रं य प्रंस विभाजने 🔓 यं समाघाते। यान्दोन हिन्दोन हिन्नोन ं (न) **दोसने। (५**०० का है पिङ मनादरे। अस्त परिद्वापि।

•कत्र ग्रीयखे। क्राय वाकाप्रवन्धे। (१) कन गंती मंख्याने चु। याम सुगा लाणे। क्या गुण केतने ' च। कुग मङ्गीवनेऽपि। क्रमार कोडायाम्। कुमान इत्से के। बुह विसाधने। क्राट परितामे । परिदाही इत्यन्ये। यामकाषी च। परिकामे इति केचित। कूण सङ्घीचे। श्रावणे निमस्त्रणे। खप प्रेरणे। कोट होसे। कोट कोड इत्येके। ख व बुन्धने। खेट सची। खेट खोट इत्येने। ग्रमानमंख्या ने १ ग्रव माने। सवेष साग्रेषे। ग्रह ग्रहने। स्टब्ड ग्रन्डणे । गोम उपलेपने। साम यामळ्यो । च इपरिकल्लाने। (३) चित्र चित्रीकरणे। इट अपवारणे।

किङ कर्णभेदने। कारण- किल पानची। रूप रूपिक्तयायाम्। (३) भेटने इखन्धे । धालनारमिलन्य । लज प्रकाशनी। खनि बरखेके। छेट हैंधी कर में। सङ् साड पाचेपे। त्य शावरणे। लाभ प्रेरणी। टराइ टराइ निपालने। धिका टर्भीने। विभाजने । विक इत्येकी। (४) 可加 ध्वन गब्दे। वर ईएसायाम्। निकाम आच्छाइने। वर्ण वर्णक्रियाविस्तारगुणः पर वट, सन्ये। पत गती वा। वा गिजन्स:। वचनेषु । बल्क दर्भने। का शहला इत्वेके। वब्दः विष्ट्या दर्भने। पट गती। षण इरितभावे। वस निवासे । वात सुखसेवनयोः। यति-स्वनपवनयोः । स्खरवनिष्वत्ये के। द्रत्येके। पत्कल वत्कल पष अनुपसर्गति मतावि-वास उपसेवायाम । विडम्ब विडम्बने। त्येव । प्रमु इत्येवि । छार तीर वार्ससमाप्ती। बीज व्यजने। वेस कानोपदेशे। पुट मंसर्गे । प्रक्रीन चापलेड। दति पृथक धातुनित्यके। भाज पृथक असंणि। वित्तसमुत्नगः। व्यय भाम क्रीधे। वित्तः इति ष्ट्रयक्ष चात्र-मह पूजायाम्। रित्ये के। निय सम्पर्के । व्रष्ण गात्रविचर्णने। मृत प्रस्वयो । गठ खंड मस्यगवभाषणे । स्ग अन्वेषणी। शील उपधारणे। (१) रच प्रतियते। श्र वीर विकाली। रम पास्तादने। यय यय टीवंखे। €ह त्यागी। सङ्गेत पामन्त्रणे।

(१) प्राक्तटायनस्तु कथादीनां सर्व्वाप्य साहाः। तन्त्रते कथापयति मणा-प्रयतीत्यादि। (२) पहिकल्कानंदकाः प्राह्मचा

(१) इपर्य दर्भनं का इपिन्नया। (४) वटीत्यस्य भट्टनो पाठवकाददः जले इहि रिखनो । वटार्पयति । एवं इनीत्यत्रापि । (५) उपधारण मध्यासः।

संग्राम युंबे। अयमात्मेने-पदी। संत्रं सन्तानित्रयायाम्। सभाज प्रीतिदर्भनयोः। प्रीतिसेवनयों रित्यन्ये। साम सार्वेजप्रयोगि। सार क्षयं दींदेल्ये। सुख दुःख तत्रित्रयायाम्। सूच पैश्वन्ये। सूच पश्चने।

स्पैन गरी देवशब्दें।
स्तेन चौर्याः
स्तोम श्लांवायाम्।
स्पूर्ण प्रश्लंदायाम्।
स्पूरं देप्पायाम्।
स्पूरं विस्कृर्णे।
स्वरं शाचेपे।
हिस्नाव दोलने।
बहुनमेत्विद्यानम्। बाहुन नादन्येऽपि वार्थाः; बहुलमिलांहः। तेगा-पर्डिता प्रचि सोर्च-नीविवविदिका बीध्याः भंपरे तं नवंगणीवाठो बंदुर्लिमयों हुं:। तेना-पठितंभ्यो हिप र्केंचिर्त चिचे। स्वंधिं रामों राज्यं भर्चीकर्रियां हुरी इत्यंदन्तचुरादय:। संस्थिति या चिनीयो षातुपाठ: ।

प्रगद नीरीगले। श्रमधिति। भूषीयति । षं घु । श्रास्त्ररीयति। श्रध्वर। भनुक्लयंति। अनुक्रुन, कु व. ३८। श्रनुनीमयति । नीमान्यनुमाष्टि । श्रमिमग्रती श्रमिमनस्। श्रसिषेणयति। श्रस्यवेणयत्। श्रसिष-चेणायिषति । सेनयाभिम्खं याति । श्रायते। श्रमं वरोति। धम्तायते। पस्त मिवाचरति। श्रक्वर्धति। श्रक्वर संभागी। श्रार्थिति। यरर श्राराकर्मण। धनोकायते। भनीक। श्रवश्रीत। श्रवर। अप्रनायति। अप्रन। अश्रीतिषिबतीयति । श्रवयते। श्रवतर माच्छे। चम्बस्यति वडवा। अभा। षस्यति । •ते । षसुञ उपतापे । श्रविसयति। श्राविस। दरज्येति,। दरज् दैर्थायाम्। इरखति। इरम् ईर्षायाम। इर्थेशि। •ते। इरञ ईर्थायाम्। इषुध्यति । इषुधं शरधारणे । र्धत्युच्छयते। पुच्छ सुत्चिपति। **जन्सकायते। 'उत्सक।** उदंग्यति। उदक सिच्छति। उमानायते । उमानस्। डपवीणयति । वीणया उपनायति ।

उषस्यति । उषस् प्रभातीभावे । उषायते। उषाय सुद्दमति। पनायति। एना विचासे। षोजायवे। घोजस्। कराष्ट्रयति। ०ते। कराष्ट्रच गात्रविघर्षणे वाक्णायते। वाक्ण। कल्डायते। कल्ड। कष्टायते। कष्टाय क्रामते। किन किलायति। किलंतिखा। कुषुभ्यति। कुषुभ चेपे। क्षच्छायते। क्षच्छ । क्रपणायते। क्रपण। क्राचायते। क्राचा केसायति। केसा विसासी। चौरखति। चौर। खेलायति। खेला विलासे। गद्गदाति। गद्गद वाक् खलने। गंव्यति। गी। गोमयायते। भीमय। चपलायते। चपल। चरण्यति। चरण गती। चरितार्थयति । चरितार्थं। चित्रीयते हैमसूगः। चित्रह पासर्थे। चिरयति। चिरम्। चिरावति। ०ते। चिर। বিস্থারি। বিস্কা क्रुलयति। क्रुल । तन्तस्यति। तन्तस् दुःखे। र्तप्रवित । तपः वारोति ।

तरस्यति। तरसंगती। तिमिरयति। तिमिर गती। तिरस्यति। तिरस् अन्तर्दी। तुलयति। तुल्। त्यमायते। तमा दवयति । दूर। दाक्णायते। दाक्ण। दु:खायते । दु:खं वेदयते । दुःख्यति । दुःख तत्क्रियायाम् । दुर्भनायते । दुर्भनस् । दोलायते। दोन्। द्रवस्यति। द्रवस परितापपरिचर्षयोः। द्रमायते। द्रम । धनायति । धन । धमायते। ध्रम। नसस्यति। नमः करोति। निष्यवयति। निष्यव। नेदयति। श्रन्तिका। परपरायति। ०ते। पिष्डतायते। पिष्डत। पतीयति । पति । पैयस्यति । पयस् प्रस्ती । श्राद्धीभावे । परिकर्मयति। परिकर्मन। पक्षवयति । पक्षव । 👙 🖂 विश्वनयति । विश्वन । पुलक्षयति । पुलका । प्रतिकृत्यति। प्रतिकृत्। प्रतीपायते । प्रतीप । प्रसाण्यति । प्रमाण् । प्रायस्थितीयते। प्रायस्थित। फोनायति। •ते। फोनमदमति। भिचयति। भिच भिचायाम। भिषज्यति। भिषज् चिकित्साथाम्। भूमयति । भूमन् । स्थायते। यस्यो स्थी स्वति। स्रमायते। समत्।

मगध्यति । मगध्य बेष्टते । मद्रायति । ०ते । भद्र । 🛒 🛸 🥕 . मन्त्यति । मन्तु अपराधि । रोवेच । सन्दायति। ०ते। मन्द। मन्त्रयते। सन्त्र। मांलनयति। मांलनी महीयते। महीङ पूनायाम्। मित्रीयते। मित्र। 🔭 🕬 🕹 मुखरयति । सुखग्। केंद्रशे खगः। सृग्यति । सृग्यन्तः धदेशे खगः। मेघायते। मेघ। मेधायते। सेधा पाश्यवहणे। योक्तयति। योक्ताः रणकास्यति। रणमिच्छति। रहायते। रहस्। राजायते। राजेवाचरित । रेखायते। रेखा श्लाचासादनयोः। रीमन्यायते। रोमन्यं वर्त्तयति। लघयति। लघ्। लवणयति । लवणा । नवगस्यति। नवगा। 🥦 🔭 🧼 🥒 🛎 लाव्यति। लाट् जीवनी निव्यति। निट प्रत्यक्तत्वनयोः १ लेखायति। लेखाति। लेखा लेख विलासे खबनने च। बेद्यति। लोद्यति। लेट लोट धीर्स्थ पूर्वभावे खप्ने च। लेलायति । लेला दीप्ती । लोडितायति । ०ते । लोडित वरिवस्थति। वरिवम। वर्षायते। वर्षसा वल्गूयति । वला पूजामाध्ययोः । वाजयाति। वाज। वाध्यायते। वाष्य मुखमति। विच्चयति। विञ्च। वितृस्तयति। तृस्त। कीयान् विजटी-

. वारोति, पा ३, १,२१ ।

विधुरयति । विधुर । । विपाययति । पात्रं विमोचयति ।

विसन्तयति। विमन्।

हषस्यति । हष

• ह्यायते। हपा

वेलायति। वेला ।

विहायते। विहत्।

वैरायते। वैरं कारी ति।

प्रत्वति पयः । तन्माँ में भुङ्ती।

धव्यति। भवु।

भव्दायते। भव्दं करोति।

शिथिनयति । शिथिनं नरीति । शीम्रायते । सशीमः शीम्रो भवति ।

ग्रुचीयते। ग्रुचिस्।

श्यामायदे। श्याम।

श्रमणायते। श्रमण।

स्रच्यायति । स्रच्या ।

श्रुवायते। श्रय।

खेतयति। खेतः माचष्टे।

सत्याद्वयति । सत्य ।

सपर्थति । सपर् पूनायाम् । सफलयति । सफल ।

समानवति। समान्।

समुद्रायते । समुद्र ।

सञ्जाकत्यते । चीवराण्यर्जयति ।

सस्बर्धति । सस्बर सन्धरणे।

संभाण्ड्रयते । भाण्डानि समाचिनीति ।

सभ्ययस्यति । संभूयम् प्रभूतभावे । संत्रमेर्येति । वमेषा संनद्वाति ।

संवस्त्यति । वस्तेण समाच्छादयति ।

सिंहायते। सिंह दवाचरति।

सुखायते । सुख मनुभवति ।

मुख्यति। सुख तत्कियायाम् । सुख्येयुः

प्रक्षतयो च्यम्।

सुमनायते। सुमनम्।

सुख्यति । सुख्य । स्रजयति । स्विन् । इसायते । इसा । इरितायति । ०ते १ इरित । इसीयते । इसीङ गेषसे लक्जाया । ५ ।

सीवधातवः।

ऋति जुगुपायामिति बहवः। जापा-त्रहतीयते। त्रहतीयाञ्चली, याचे त्येवी। या ३, १, २८। इयङभावे तु परस्मैप-दम्। पानर्त्ते। पर्त्तिष्यति। पार्त्तीत्। तु, बदा, प। गतिव्रविश्विंसासु। जु, तु, दुग्ढ, भ्वादी गताः। कर्के हासे। वर्कटः। कर्केशः। चिक भ्यान्ती। चङ्गरः। मर्के गत्याम् । सर्कटः । सिक सेचने। सिकता। मर्च ग्रहणे। सर्वः। क्तजि जन्मनि। कन्नरः। पिता रोधे। पन्तरः। मिक ध्वनी। मञ्जरी। सञ्जलः। सञ्जा मट अवसादने। मटहः। वटि स्तेये। वग्टकः। कुठ छेदने। कुठार:। कुठेर:। कुटाकु:। **उड् संहती। उड्**पस्। वड भारो इणे। वड्भी। वड्भः। कुत पास्तर्ये। कृत्यः। पुत्त गती। पुत्तिका। सत प्रावाते। सता। सात सुखे। सातय:, पा २,१,१३८। उद प्राधाती पोदनः। उद्कम्। चद संवर्णे। चना। सुदि खुती। सुन्दरः। ^कपूली खे। कपोल:। सुप प्रवसादमे । सुपः 🕍

रिंफ चेपे कुक्षने च। रिफः। रेफः।

रिभ रवे। विरिच्धः, पा ७, २,१८। स्कन्भु स्कन्भु स्तन्भु स्तन्भु गताः। डिम हिंसायाम्। डिग्डिस:। धम ध्वाने। धमनि:। पीय प्रीणने। पीय्षम। **उर गतौ । उरगः ।** तद्वि सी हावसादयो: । तन्द्रा । तन्द्रि: । **उत्त दा**है। उत्तप:। उत्का लुल विमर्दने। लुलाप:। यल गमने। यलको। ऋग गतिस्तुत्योः। ऋग्यः। पश्र पम्पश्यते, पा ७, ४, ८६। रम् खने। रमना। नच युगी। नचत्रम्। भिष रग्जये। भिषक्। भेषजम्। युष भजने। योषित्। युषाद्। लूष चिंसने। लूषणम्। सीवधातवः समाप्ताः।

वैदिक्षधातवः।

दीधी इटिंगिस्टेबनयो:। वैवीङ वैतिना तुन्ये । षस् स्वस्ति स्वप्रे। वय काइती। च करीतश्च। इति घदादिः। ष्ट्र चरणदीसोः। ह प्रसद्धाहरणे। मर स्रामती। भम भर्त्सनदीखोः। कि जाने। तुर त्वरणे। भिष ग्रव्हे। धन धान्धे। जन जनने। गास्तती। इति जुडीत्यादयः। प्रप्रोती। स्य प्रीतिपालनयीः। स्म इत्येके। पह व्याप्ती । दघ घातने पालने च चसु भच्यो।

रिचि चिरि जिरि दायः इ हिंसाबाम्

इति खादिः।

स्वार्शसारि-धातुगणः।

• युत खिता जिसिटा जिखिटा जिखिटा क्च घुट क्ट लुट लुट ग्रम सुम गम तुम खन्स ध्वन्स ध्वन्स खन्स खन्म (धनु बघु म्यु स्थन्दू कपू) इति युत्तिदि बेतादिश्री युतादिभ्यो लुङि परस्तिदे ता खात्। परस्तिपदेश्ह्य, पा १, ३, ८१। ३, १, ५४। वतादोनान्तु स्थननाः परसौपदं वा स्थात्, पा १, ३, ८२। परसोपदे इट्प्रतिधेश्रय, पा ७, ३, ५८।

फणा राजृ दुश्चाजृ दुश्चाय दुश्चाय स्वमु •स्वन दित फणादिः। फणादीनां विटि एलाभ्यासनो मे वा स्थानाम्, पा ६, ४. १२५।

ज्यन जन चन टल दून ख्यन इन गन पन वन पुन कुन भन इन पत्छ क्षे पेथे मेथे टुवम स्मम चर घह रस पद्छ भद्छ क्ष्य कुच बुध कृह नस इति ज्यनादिः। ज्यनादिस्यो गाः स्थाद्या, पा ३०१,१४०। यज टुवप वह वस वैज को जै होड वद टुमोध्य इति यजादिः। यजादीनां किति सम्मसारणम, पादः,१,१४।

र विद्वि (अञ्चय म्बस म्रान जच इति वटाटिः। वटाटिभ्यः सार्वेधातुकी इट् पा७,२, ६६।

्र जन्म जार्ग्य दिन्द्रा चकास्त्र गासु दोधौ इति नन्नादिः। तत्पन्न सभ्यस्तिः सिंचा भिष्यं च यहादेगः, पा ७, १, ४।

पुत्र शात त्य दुव श्चित्र शका व्यादा काथ चुध शाव विघ् (रथ जाशू छ प हम हुइ सुद शाह क्यां ह इति रधादिः)। एथ्य इट्वा स्थात्, पा ७, २, ४५। (शस्त तम् दस् असु अपि चम् कास् मदो इति समाहिः)। पर्षा स्थान दीर्घः, पा ७, २, ७४। (श्वस्त यस् जस्त तस्त दस्त पस् वत्त व्याप व्याप स्म, इति विस कुस सुस सभी समी बुठ एव एश् अन्य हम क्या जिल्ला इति वस्त दिष डिप कुप गुप पुप कपु लुप लुभ लुभ गभ तुभ लिटू निमिदा निल्विदा ऋघु ग्रंधु • इति पुषादिदिवाद्यन्तर्गणः। पुषादीनां लुङि ग्रङ् स्थात्, पा ३, १, ५५।

षुड दूड दोड डोड घोड मोड रोड बोड बोड प्रति दिवादान्तर्गणः स्वादिः। ततफलं निष्ठानत्वम्, पा ८, २, ४५। की १३५ है

कृ गृहङ ष्टङ प्रक् इति किरादिस्तुदार्द्यन्तर्भणः, की १५५। एभ्यः स्नि इट् स्थात्, पा ७, २, ७५। कर्मकर्त्तरि न यक्ति ची, की २७७।

क्रिय प्रविच गुन गुड डिप छुर स्कृट सुट व्रट चुट छुट जुट खुट कड़ कुड़ कड़ पड़ घुट तुड घुड खुड खुड छुड स्कृर स्कृत (पुन) स्कृड़ चुड बुड कुड स्कृर स्कृत (पुन) स्कृड़ चुड बुड कुड स्कृर स्कृत (पुन) स्कृड़ चुड बुड कुड स्कृत कुड़ हित कुटाइट स्तुदाद्य न्तर्भणः। तत्फ लम् अणिति गुणाभावः पा १, २, १।

सुच् खुप् खिद् खिप लिप षिच क्वतो खिद पिश इति सुचादिस्तुद। यन्त-गैषा:। तत्फलं सार्वधातुके नुसागमः, पा ७, १, ५८।

पूज लूज स्तूज कृज वृज धूज शृपृ वृ भृ मृद् ज् भा धून कृ ऋ गृ ज्या ही सी बी भी जी भी जी ष्) इति पादि स्वीदि सा। तत्पाल ने सार्वधातुकी इस्तिम्। ए। ९, २, ८०। निष्ठानल स्व, पा ८, २, ४४।

कर्ण रण भण त्रण लुप हैठ। हायि वाणि लोटि लोपि। चानि लोठि इति काण्यादयः। एषां णी चङ्ग्रपधाया इस्बो वा, की १८२।

यस पुष दल पर पुर लुट तुनि मिनि पिनि लुनि मिनि लिघि त्रिसि कुसि दिश कुशि घर घरि हि वि वे बल्ह गुप धूप विक्र चौव पृथ लोक लोचे गर कुप तक हतु हुधु कर लिज श्रिन दिश स्टिश किश किस शोक नर पुरि निवि रिघ किश्व शिह्न रहि महि लिख तल नल पूरी कन प्वर द्रासासरीयाः। एभ्यः स्थावत् कर्मस्य प्व पिच्, की १९६।

युज एज अर्च पह देर ली हजी हज जू जि रिच शिष तप तथ छुटी चृप छुप हप हमी हम अथ मी ग्रन्थ सीक चीक अर्द हि सि अर्ड अड:— पद ग्रन्थ छद जुष धूज प्रोज अन्य ग्रन्थ आप्ल तनु चैण ब्रद वच मान भू गर्द मार्ग किं सजू स्थ धूष दत्याध्वीया:। एम्बः णिच् वा स्थात, की १७८।

चित दिश दिस दस उप डिप तित कुटुम्ब मित स्पर्ग तर्ज भन्ने वैस्त गन्ध विष्क इष्कि निष्क सस्त क्या त्रिया भ्रूष गठ यच स्थम ग्र गम सच कित्तक तुट. कुट गल भन कूट कुट वन्च विष मद दिवु गट विद मन यु कुसा दत्या कुसीया भ्रासन्पदिन:, की १९६।

पट रहत स्मा कु इ शूर वीर स्मूल अर्थ सत्न गर्व इत्यागर्वीयाः,। आगर्वादा-तानेपदं चित्र्विकत्यस्, की १८४।

इति स्वानुमारि-धातुगणः।

সাকৈতিক চিহ্ন।

() এই বন্ধনীর মধ্যে সে	ঘ ধাতৃ থাকিবে,	উ			্ উভয়পদী।
্) এই বন্ধার নত্য ত		অন্ৰ্	•••	•••	অনুৰ্যাব্য়।
আভীষ্ট ধাতু দ্বেখিতে		উত্তর	***	***	উত্তরচব্বিত।
প্ৰভ (চ্যুন্ত) অৰ্থাৎ প্ৰভ		কবি		•••	কবিবহস্ত।
পাঠে চ্যুঙ ধাতুর নিক		কু	***		কুমারসম্ভব।
	গ্ৰ অংশ উহ	কৌ	***		সিদ্ধান্তকৌ মুদী ি
		গী			গীতা।
		গীতগো		***	গীতগোবিন্দ 1
আছে। যথা খ্যাস্যতি 'খ্যাফ্র' এই অংশ		देम	•••		লৈমধকাব্য।
খ্যাস্থ্যতে এইরূপ ব্ঝিট		পা		•••	शा निन ।
— এই চিহের পূর্বে		প্রদীপ			ধাতৃপ্রদীপ।
•	- 11 X 1 - 1 - 1 1 X 1 1 1	&	•••	***	ভট্টিকাব্য।
অবস্থা লিখিত আছে।	.0.9	ভা		***********	ভাৱবিকাব্য।
ভূা •••	ভাদিগণীয়।	ভারত	***		যহাভারত। 🗸
অনা	অদ†দিগণীয়। হ্বাদিগণীয়।	मञ्ज	***	• ,	মহুদংহিতা।
ৰা .·· ···	र्या। गर्याप्र मिर्वामिश्रीय।	মহা	•••		মহানাটক।
n (n	चा पिशनीय।	মা	•••		মাঘকাব্য।
***************************************	তুদাদিগণীয়।	র ব	Mary Carpenter, and the second	enter de la constantina della	রঘুবংশ।
∑	क्रथां किश्रीय।	রত্না			রত্বাবলী ৷
	ত্ৰ দিগণীয়।	রামা			রামায়ণ।
	জ্ঞাদিগণীয়।	বো	•		বোপদেৰ !
কা ।	ভুরাদিগণীয়।	শকু			অভিজ্ঞানশকুন্তৰ
ξ	भूतरियमनी ।	হিত্যে হিত্যে		*****************************	হিতোপদেশ।
, প • • • • • • • • • • • • • • • • • •	আগুমেপদী	14001		-	
M	I to after the fit	ľ			